-: ভক্তিপ্রসন্নম্ :-

শ্রীমদ্ভগবদ্‌গীতা

.:.

..:: শ্রীগীতা সম্ভাষিণী ::..

(শ্রীমদ্ভগবদ্‌গীতার শ্লোকাবলী, দেবনাগরী ও বাংলা অক্ষরে, সাবলীল সন্ধিবিগ্রহ সমন্বয়ে)

. . .

শ্রী ভবতোষ ভট্টাচার্য্য

* * * * * * *

-: ভক্তিপ্রসন্নম্ :-

শ্রীমদ্ভগবদ্‌গীতা

.:.

..:: শ্রীগীতা সম্ভাষিণী ::..

(শ্রীমদ্ভগবদ্‌গীতার শ্লোকাবলী, দেবনাগরী ও বাংলা অক্ষরে, সাবলীল সন্ধিবিগ্রহ সমন্বয়ে)

. . .

শ্রী ভবতোষ ভট্টাচার্য্য

* * * * * * *

:: বিজ্ঞপ্তি ::

লেখকের দ্বারা সর্বসত্ব সংরক্ষিত। সত্বাধিকারীর পূর্বানুমতি ব্যতিরেকে এই প্রকাশনার কোন অংশ ইহ পুস্তক ব্যতীত অন্য কোন আকারে বা উপায়ে প্রকাশন, উৎপাদন, পরিবর্তন, রচনা, সংরক্ষণ, প্রেরণাদি, এবং ব্যবসায়িক, বিজ্ঞাপন, অনুষ্ঠান বা প্রচারাদি উদ্দেশ্যে ব্যবহার সম্পূর্ণরূপে অবৈধ; যাহার অন্যথায় কার্যকরী আইন লঙ্ঘনে সম্পর্কিত ব্যক্তি আইনানুগ ব্যবস্থার প্রতি দায়ী থাকবেন।

.:.

Shrimadbhagavadgita : Shreegita-Sambhashini

Author’s Name : Bhabatosh Bhattacharya
Published by : Bhabatosh Bhattacharya
Publisher’s Address : Indranagar, Agartala, Tripura
Printer’s Details : Self Printed
Edition Details : I
ISBN : 978-93-5469-187-4
Copyright @ Bhabatosh Bhattacharya

- - -

.:.

পিতা স্বর্গ পিতা ধর্ম পিতা হি পরমং তপঃ।
পিতরি প্রীতিমাপন্নে প্রিয়ন্তে সর্ব্বদেবতা ॥

...

যস্য কন্ঠে স্থিতো ব্রহ্মা
চক্ষুষাং বৈষ্ণবী-পতি।
শিবঃ ধ্যানে, মূলে বামা
পিতৃ-পদে নমস্যামি ॥

যাঁহার কন্ঠে স্বয়ং ব্রহ্মা
দৃষ্টির্মধ্যে বৈষ্ণবী-পতি।
শিব ধ্যানে, মূলে বামা
সেই পিতৃপদে করি প্রণতি ॥

"পিতৃ' চরণে অর্ঘ্যস্বরূপ"
– ভবতোষ ভট্টাচার্য্য (ভৃগু)

.:.

আমার পিতৃদেবের পরম স্নেহধন্যা

এবং

আমার একান্ত আদরের বুড়িমাই (বড়'মা)

সুশ্রী 'ভার্গবী ভট্টাচার্য্য' ('শ্রী')-র প্রতি

অশেষ স্নেহ ও আশীর্বাদ স্বরূপ

.....

-: প্রাক্কথন :-

যোগেশ্বর ভগবান শ্রীকৃষ্ণের শ্রীমুখ হইতে নিঃসৃত অদ্বৈতস্বরূপ অমৃতময় বাণীর সঙ্কলন এই শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা, যাঁহা ঋষি ব্যাসদেব কর্তৃক সযত্নে মহাভারতে গ্রথিত হইয়াছে। ধেনু'রূপ বেদ ও উপনিষদাদির পয়োনির্যাস অদ্য গীতা, যাহা ভগবান শ্রীকৃষ্ণ নিজে দোহন করিয়া, সুধীজনাদির শুভ'পোষণের নিমিত্তে প্রদান করিয়াছেন। ভারতবর্ষের পুণ্যভূমি হইতে উদ্ভূত 'অষ্টাদশাধ্যায়ী শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা' যুগ-যুগ ধরিয়া মানবজাতির শুভ আধ্যাত্মিক চেতনাবোধকে উন্নীত করিয়া মানবকুলের লৌকিক ও পারলৌকিক গতিপথে শ্রেয় ও কাম্য কর্মাদি নিষ্পাদনের লক্ষ্যে অগ্রদূতের ভূমিকা পালন করিয়া চলিয়াছেন। শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা প্রকৃতপক্ষে জীবশ্রেষ্ঠ মানবযোনির পরম অভ্যুদয়ে, আলোকপ্রসারী পূর্বগগন প্রান্তে চির-অব্যয় মহাসূর্যরশ্মি সম। ভগবদ্গীতার প্রতিটি পদ যেন, ইহ ধরিত্রীর প্রতি কোণে অবস্থিত শুভ'মানবজনের অধ্যাত্মবিষয়ক জিজ্ঞাস্যরূপ তৃষ্ণা-কাতরতা উপশমকারিণী পবিত্র স্রোতস্বিনী জাহ্নবীর এক-এক অমৃতময় জলবিন্দু। গীতাশাস্ত্র অধ্যয়নে, মননে, এবং অনুরূপ আচরণে, স্বীয় কর্ত্তব্যকর্ম সুনিয়ন্ত্রিত হইবার সাথে-সাথে, অদ্বৈত অক্ষয় পরমপদ প্রাপ্ত হয়; এতাদৃশ ভগবদ্বচন।

"আচার্য্য ভক্তি প্রসন্ন ন্যাস"–এর 'গীতা প্রচার সঙ্কল্প', নিম্নোক্ত চারি গ্রন্থের সূচনায় ব্রতী হইয়াছে, যথা :–

১) "শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা : শ্রীগীতা-সম্ভাষিণী" (সহজসাধ্য শ্লোকাবলী বিষয়ক);
২) "শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা : বিভুগীতা-সম্বাদিনী" (ত্রি'বাগ্বিধিতে তরজমা বিষয়ক);
৩) "শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা : প্রসন্নগীতা-সঞ্চারিণী" (পদ্যরূপ ছন্দময় রচনা বিষয়ক);
৪) "শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা : ভক্তিগীতা-তত্ত্বদর্শিনী" (তত্ত্ব-দর্শনগত অন্বেষণ বিষয়ক)।

অদ্য 'শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা:শ্রীগীতা-সম্ভাষিণী' গ্রন্থটি সুধী পাঠকগণের সহজসাধ্য গীতা-পঠনের অভিপ্রায়ে উপযোগী হউন, পুরুষোত্তম ভগবানের পাদপদ্মে ইহাই প্রার্থনা।

ধন্যবাদ।

বিনীত

আগরতলা, ১২ই মার্চ ২০২৫ ইং — শ্রী ভবতোষ ভট্টাচার্য্য

-: সূচীপত্র :-

বিবরণ			পৃষ্ঠাক্রম
➢ গীতা ধ্যান	(গীতা-ধ্যানম্)	. . .	002 – 009
➢ প্রথমোঽধ্যায়	(অর্জুন-বিষাদ-যোগ)	. . .	010 – 037
➢ দ্বিতীয়োঽধ্যায়	(সাংখ্য-যোগ)	. . .	038 – 079
➢ তৃতীয়োঽধ্যায়	(কর্ম-যোগ)	. . .	080 – 105
➢ চতুর্থোঽধ্যায়	(জ্ঞান-যোগ)	. . .	106 – 129
➢ পঞ্চমোঽধ্যায়	(সন্ন্যাস-যোগ)	. . .	130 – 147
➢ ষষ্ঠোঽধ্যায়	(ধ্যান-যোগ)	. . .	148 – 175
➢ সপ্তমোঽধ্যায়	(জ্ঞান-বিজ্ঞান-যোগ)	. . .	176 – 193
➢ অষ্টমোঽধ্যায়	(অক্ষর-ব্রহ্ম-যোগ)	. . .	194 – 209
➢ নবমোঽধ্যায়	(রাজবিদ্যা-রাজগুহ্য-যোগ)	. . .	210 – 229
➢ দশমোঽধ্যায়	(বিভূতি-যোগ)	. . .	230 – 253
➢ একাদশোঽধ্যায়	(বিশ্বরূপ-দর্শন-যোগ)	. . .	254 – 287
➢ দ্বাদশোঽধ্যায়	(ভক্তি-যোগ)	. . .	288 – 299
➢ ত্রয়োদশোঽধ্যায়	(ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞ-বিভাগ-যোগ)	. . .	300 – 319
➢ চতুর্দশোঽধ্যায়	(গুণত্রয়-বিভাগ-যোগ)	. . .	320 – 335
➢ পঞ্চদশোঽধ্যায়	(পুরুষোত্তম-যোগ)	. . .	336 – 347
➢ ষোড়শোঽধ্যায়	(দৈবাসুর-সম্পদ্-বিভাগ-যোগ)	. . .	348 – 361
➢ সপ্তদশোঽধ্যায়	(শ্রদ্ধাত্রয়-বিভাগ-যোগ)	. . .	362 – 377
➢ অষ্টাদশোঽধ্যায়	(মোক্ষ-যোগ)	. . .	378 – 419
➢ গীতা মাহাত্ম্য	(বরাহপুরাণোক্ত-গীতামাহাত্ম্যম্)	. . .	420 – 433

* * *

श्रीमद्भगवद्गीता

* * * * * * *

শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা

–: ॐ :–

–: ध्यानम् :–

ॐ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता नारायणेन स्वयं
व्यासेन ग्रथितां पुराणमुनिना मध्येमहाभारतम् ।
अद्वैतामृतवर्षिणीं भगवतीमष्टादशाध्यायिनीं
अम्ब त्वामनुसन्दधामि भगवद्गीते भवद्वेषिणीम् ॥१॥

["| ॐ | पार्थाय | प्रतिबोधितां | भगवता | नारायणेन | स्वयं |
| व्यासेन | ग्रथितां | पुराण + मुनिना | मध्ये + महाभारतम् |
| अद्वैत + अमृत + वर्षिणीं | भगवतीम् + अष्टादश + अध्यायिनीं |
| अम्ब | त्वाम् + अनुसन्दधामि | भगवत् + गीते | भव + द्वेषिणीम् |"]

–: ॐ :–

–: ধ্যানম্ :–

ওঁ পার্থায় প্রতিবোধিতাং ভগবতা নারায়ণেন স্বয়ং
ব্যাসেন গ্রথিতাং পুরাণমুনিনা মধ্যেমহাভারতম্ ।
অদ্বৈতামৃতবর্ষিনীং ভগবতীমষ্টাদশাধ্যায়িনীং
অম্ব ত্বামনুসন্দধামি ভগবদ্গীতে ভবদ্বেষিণীম্ ॥১॥

["| ওঁ | পার্থায় | প্রতিবোধিতাং | ভগবতা | নারায়ণেন | স্বয়ং |
| ব্যাসেন | গ্রথিতাং | পুরাণ + মুনিনা | মধ্যে + মহাভারতম্ |
| অদ্বৈত + অমৃত + বর্ষিনীং | ভগবতীম্ + অষ্টাদশ + অধ্যায়িনীং |
| অম্ব | ত্বাম্ + অনুসন্দধামি | ভগবৎ + গীতে | ভব + দ্বেষিণীম্ |"]

–: ॐ :–

नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र ।
येन त्वया भारततैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः ॥२॥

["| नमो + अस्तु | ते | व्यास | विशाल + बुद्धे | फुल्ल + अरविन्द + आयत + पत्र + नेत्र |
| येन | त्वया | भारत + तैल + पूर्णः | प्रज्वालितो | ज्ञानमयः | प्रदीपः |"]

प्रपन्नपारिजाताय तोत्रवेत्रैकपाणये ।
ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृतदुहे नमः ॥३॥

["| प्रपन्न + पारिजाताय | तोत्र + वेत्र + एक + पाणये |
| ज्ञान + मुद्राय | कृष्णाय | गीता + अमृत + दुहे | नमः |"]

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः ।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् ॥४॥

["| सर्व + उपनिषदो | गावो | दोग्धा | गोपाल + नन्दनः |
| पार्थो | वत्सः | सुधीः + भोक्ता | दुग्धं | गीता + अमृतं | महत् |"]

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥५॥

["| वसुदेव + सुतं | देवं | कंस + चाणूरम् + अर्दनम् |
| देवकी + परम + आनन्दं | कृष्णं | वन्दे | जगत् + गुरुम् |"]

–: ওঁ :–

নমোঽস্তু তে ব্যাস বিশালবুদ্ধে ফুল্লারবিন্দায়তপত্রনেত্র ।

যেন ত্বয়া ভারততৈলপূর্ণঃ প্রজ্বালিতো জ্ঞানময়ঃ প্রদীপঃ ॥২॥

["| নমো + অস্তু | তে | ব্যাস | বিশাল + বুদ্ধে | ফুল্ল + অরবিন্দ + আয়ত + পত্র + নেত্র |
| যেন | ত্বয়া | ভারত + তৈল + পূর্ণঃ | প্রজ্বালিতো | জ্ঞানময়ঃ | প্রদীপঃ |"]

প্রপন্নপারিজাতায় তোত্রবেত্রৈকপাণয়ে ।

জ্ঞানমুদ্রায় কৃষ্ণায় গীতামৃতদুহে নমঃ ॥৩॥

["| প্রপন্ন + পারিজাতায় | তোত্র + বেত্র + এক + পাণয়ে |
| জ্ঞান + মুদ্রায় | কৃষ্ণায় | গীতা + অমৃত + দুহে | নমঃ |"]

সর্বোপনিষদো গাবো দোগ্ধা গোপালনন্দনঃ ।

পার্থো বৎসঃ সুধীর্ভোক্তা দুগ্ধং গীতামৃতং মহৎ ॥৪॥

["| সর্ব + উপনিষদো | গাবো | দোগ্ধা | গোপাল + নন্দনঃ |
| পার্থো | বৎসঃ | সুধীঃ + ভোক্তা | দুগ্ধং | গীতা + অমৃতং | মহৎ |"]

বসুদেবসুতং দেবং কংসচাণূরমর্দ্দনম্ ।

দেবকীপরমানন্দং কৃষ্ণং বন্দে জগদ্গুরুম্ ॥৫॥

["| বসুদেব + সুতং | দেবং | কংস + চাণূরম্ + অর্দ্দনম্ |
| দেবকী + পরম + আনন্দং | কৃষ্ণং | বন্দে | জগৎ + গুরুম্ |"]

–: ॐ :–

भीष्मद्रोणतटा जयद्रथजला गान्धारनीलोपला
शल्यग्राहवती कृपेण वहनी कर्णेन वेलाकुला ।
अश्वत्थामविकर्णघोरमकरा दुर्योधनावर्तिनी
सोत्तीर्णा खलु पाण्डवै रणनदी कैवर्तके केशवे ॥६॥

["| भीष्म + द्रोण + तटा | जयद्रथ + जला | गान्धार + नील + उपला |
| शल्य + ग्राहवती | कृपेण | वहनी | कर्णेन | वेला + आकुला |
| अश्वत्थाम + विकर्ण + घोर + मकरा | दुर्योधन + आवर्तिनी |
| सा + उत्तीर्णा | खलु | पाण्डवै | रण + नदी | कैवर्तके | केशवे |"]

पाराशर्यवचःसरोजममलं गीतार्थगन्धोत्कटं
नानाख्यानककेशरं हरिकथासम्वोधनावोधितम् ।
लोके सज्जनषट्पदैरहरहः पेपीयमानं मुदा
भूयाद्भारतपङ्कजं कलिमलप्रध्वंसि नः श्रेयसे ॥७॥

["| पाराशर्य + वचः + सरोजम् + अमलं | गीता + अर्थ + गन्ध + उत्कटं |
| नाना + अख्यानक + केशरं | हरि + कथा + सम्वोधन + आवोधितम् |
| लोके | सत् + जन + षट् + पदैः + अहः + अहः | पेपीयमानं | मुदा |
| भूयात् + भारत + पङ्कजं | कलिमल + प्रध्वंसि | नः | श्रेयसे |"]

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ॥८॥

["| मूकं | करोति | वाचालं | पङ्गुं | लङ्घयते | गिरिम् |
| यत् + कृपा | तम् + अहं | वन्दे | परम + आनन्द + माधवम् |"]

–: ॐ :–

ভীষ্মদ্রোণতটা জয়দ্রথজলা গান্ধারনীলোপলা
শল্যগ্রাহবতী কৃপেণ বহনী কর্ণেন বেলাকুলা।
অশ্বত্থামবিকর্ণঘোরমকরা দুর্য্যোধনাবর্তিনী
সোত্তীর্ণা খলু পাণ্ডবৈ রণনদী কৈবর্তকে কেশবে ॥৬॥

["| ভীষ্ম + দ্রোণ + তটা | জয়দ্রথ + জলা | গান্ধার + নীল + উপলা |
| শল্য + গ্রাহবতী | কৃপেণ | বহনী | কর্ণেন | বেলা + আকুলা |
| অশ্বত্থাম + বিকর্ণ + ঘোর + মকরা | দুর্য্যোধন + আবর্তিনী |
| সা + উত্তীর্ণা | খলু | পাণ্ডবৈ | রণ + নদী | কৈবর্তকে | কেশবে |"]

পারাশর্যবচঃসরোজমমলং গীতার্থগন্ধোৎকটং
নানাখ্যানককেশরং হরিকথাসম্বোধনাবোধিতম্।
লোকে সজ্জনষট্পদৈরহরহঃ পেপীয়মানং মুদা
ভূয়াদ্ভারতপঙ্কজং কলিমলপ্রধ্বংসি নঃ শ্রেয়সে ॥৭॥

["| পারাশর্য + বচঃ + সরোজম্ + অমলং | গীতা + অর্থ + গন্ধ + উৎকটং |
| নানা + অখ্যানক + কেশরং | হরি + কথা + সম্বোধন + আবোধিতম্ |
| লোকে | সৎ + জন + ষট্ + পদৈঃ + অহঃ + অহঃ | পেপীয়মানং | মুদা |
| ভূয়াৎ + ভারত + পঙ্কজং | কলিমল + প্রধ্বংসি | নঃ | শ্রেয়সে |"]

মূকং করোতি বাচালং পঙ্গুং লঙ্ঘয়তে গিরিম্।
যৎকৃপা তমহং বন্দে পরমানন্দমাধবম্ ॥৮॥

["| মূকং | করোতি | বাচালং | পঙ্গুং | লঙ্ঘয়তে | গিরিম্ |
| যৎ + কৃপা | তম্ + অহং | বন্দে | পরম + আনন্দ + মাধবম্ |"]

–: ॐ :–

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥९॥

["| यं | ब्रह्मा + वरुण + इन्द्र + रुद्र + मरुतः | स्तुन्वन्ति | दिव्यैः | स्तवैः |
| वेदैः | स + अङ्ग + पद + क्रम + उपनिषदैः + गायन्ति | यं | साम + गाः |
| ध्यान + अवस्थित + तत् + गतेन | मनसा | पश्यन्ति | यं | योगिनो |
| यस्य + अन्तं | न | विदुः | सुर + असुर + गणा | देवाय | तस्मै | नमः |"]

ॐ नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

["| ॐ | नारायणं | नमः + कृत्य | नरं + च + एव | नर + उत्तमम् |
| देवीं | सरस्वतीं | व्यासं | ततो | जयम् + उदीरयेत् |"]

-: ॐ तत्सत् ॐ :-

* * * * * * *

–: ॐ :–

যং ব্রহ্মাবরুণেন্দ্রমরুতঃ স্তুন্বন্তি দিব্যৈঃ স্তবৈঃ

বেদৈঃ সাঙ্গপদক্রমোপনিষদৈর্গায়ন্তি যং সামগাঃ ।

ধ্যানাবস্থিততদ্‌গতেন মনসা পশ্যন্তি যং যোগিনো

যস্যান্তং ন বিদুঃ সুরাসুরগণা দেবায় তস্মৈ নমঃ ॥৯॥

["| যং | ব্রহ্মা + বরুণ + ইন্দ্র + মরুতঃ | স্তুন্বন্তি | দিব্যৈঃ | স্তবৈঃ |

| বেদৈঃ | স + অঙ্গ + পদ + ক্রম + উপনিষদৈঃ + গায়ন্তি | যং | সাম + গাঃ |

| ধ্যান + অবস্থিত + তৎ + গতেন | মনসা | পশ্যন্তি | যং | যোগিনো |

| যস্য + অন্তং | ন | বিদুঃ | সুর + অসুর + গণা | দেবায় | তস্মৈ | নমঃ |"]

ওঁ নারায়ণং নমস্কৃত্য নরঞ্চৈব নরোত্তমম্ ।

দেবীং সরস্বতীং ব্যাসং ততো জয়মুদীরয়েৎ ॥

["| ওঁ | নারায়ণং | নমঃ + কৃত্য | নরং + চ + এব | নর + উত্তমম্ |

| দেবীং | সরস্বতীং | ব্যাসং | ততো | জয়ম্ + উদীরয়েৎ |"]

-: ওঁ তৎসৎ ওঁ :-

* * * * * * *

–: ॐ :–

प्रथमोऽध्यायः
अर्जुनविषादयोग

धृतराष्ट्र उवाच :—
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ॥१-०१॥

["| धृतराष्ट्र | उवाच | धर्म + क्षेत्रे | कुरुक्षेत्रे | समवेता | युयुत्सवः |
| मामकाः | पाण्डवाः + च + एव | किम् + अकुर्वत | सञ्जय |"]

सञ्जय उवाच :—
दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ।
आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥१-०२॥

["| सञ्जय | उवाच | दृष्ट्वा | तु | पाण्डव + अनीकं | व्यूढं | दुर्योधनः | तदा |
| आचार्यम् + उपसङ्गम्य | राजा | वचनम् + अब्रवीत् |"]

–: ॐ :–

প্রথমোঽধ্যায়ঃ
অর্জুনবিষাদযোগ

ধৃতরাষ্ট্র উবাচ :—

ধর্মক্ষেত্রে কুরুক্ষেত্রে সমবেতা যুযুৎসবঃ ।

মামকাঃ পাণ্ডবাশ্চৈব কিমকুর্বত সঞ্জয় ॥১-০১॥

["| ধৃতরাষ্ট্র | উবাচ | ধর্মক্ষেত্রে | কুরুক্ষেত্রে | সমবেতা | যুযুৎসবঃ |
| মামকাঃ | পাণ্ডবাঃ + চ + এব | কিম্ + অকুর্বত | সঞ্জয় |"]

সঞ্জয় উবাচ :—

দৃষ্ট্বা তু পাণ্ডবানীকং ব্যূঢ়ং দুর্যোধনস্তদা ।

আচার্যমুপসঙ্গম্য রাজা বচনমব্রবীৎ ॥১-০২॥

["| সঞ্জয় | উবাচ | দৃষ্ট্বা | তু | পাণ্ডব + অনীকং | ব্যূঢ়ং | দুর্যোধনঃ + তদা |
| আচার্যম্ + উপসঙ্গম্য | রাজা | বচনম্ + অব্রবীৎ |"]

–: ॐ :–

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥१-०३॥

["| पश्य + एतां | पाण्डु + पुत्राणाम् + आचार्य | महतीं | चमूम् |
| व्यूढां | द्रुपद + पुत्रेण | तव | शिष्येण | धी + मता |"]

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥१-०४॥

["| अत्र | शूरा | महा + इष्वासा | भीम + अर्जुन + समा | युधि |
| युयुधानो | विराटः + च | द्रुपदः + च | महारथः |"]

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ।
पुरुजित् कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥१-०५॥

["| धृष्टकेतुः + चेकितानः | काशिराजः + च | वीर्यवान् |
| पुरुजित् | कुन्तिभोजः + च | शैब्यः + च | नरपुङ्गवः |"]

युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् ।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥१-०६॥

["| युधामन्युः + च | विक्रान्त | उत्तमौजाः + च | वीर्यवान् |
| सौभद्रो | द्रौपदेयाः | च | सर्व | एव | महारथाः |"]

–: ॐ :–

পশ্যৈতাং পাণ্ডুপুত্রাণামাচার্য মহতীং চমূম্ ।

ব্যূঢ়াং দ্রুপদপুত্রেণ তব শিষ্যেণ ধীমতা ॥১-০৩॥

["| পশ্য + এতাং | পাণ্ডু + পুত্রাণাম্ + আচার্য | মহতীং | চমূম্ |

| ব্যূঢ়াং | দ্রুপদ + পুত্রেণ | তব | শিষ্যেণ | ধী + মতা |"]

অত্র শূরা মহেষ্বাসা ভীমার্জুনসমা যুধি ।

যুযুধানো বিরাটশ্চ দ্রুপদশ্চ মহারথঃ ॥১-০৪॥

["| অত্র | শূরা | মহা + ইষ্বাসা | ভীম + অর্জুন + সমা | যুধি |

| যুযুধানো | বিরাটঃ + চ | দ্রুপদঃ + চ | মহারথঃ |"]

ধৃষ্টকেতুশ্চেকিতানঃ কাশিরাজশ্চ বীর্যবান্ ।

পুরুজিৎ কুন্তিভোজশ্চ শৈব্যশ্চ নরপুঙ্গবঃ ॥১-০৫॥

["| ধৃষ্টকেতুঃ + চেকিতানঃ | কাশিরাজঃ + চ | বীর্যবান্ |

| পুরুজিৎ | কুন্তিভোজঃ + চ | শৈব্যঃ + চ | নরপুঙ্গবঃ |"]

যুধামন্যুশ্চ বিক্রান্ত উত্তমৌজাশ্চ বীর্যবান্ ।

সৌভদ্রো দ্রৌপদেয়াশ্চ সর্ব এব মহারথাঃ ॥১-০৬॥

["| যুধামন্যুঃ + চ | বিক্রান্ত | উত্তমৌজাঃ + চ | বীর্যবান্ |

| সৌভদ্রো | দ্রৌপদেয়াঃ + চ | সর্ব | এব | মহারথাঃ |"]

–: ॐ :–

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम ।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥१-०७॥

["|अस्माकं | तु | विशिष्टा | ये | तान् + निबोध | द्विज + उत्तम |
| नायका | मम | सैन्यस्य | संज्ञा + अर्थं | तान् + ब्रवीमि | ते |"]

भवान् भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिञ्जयः ।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिर्जयद्रथः ॥१-०८॥

["| भवान् | भीष्मः + च | कर्णः + च | कृपः + च | समितिं + जयः |
| अश्वत्थामा | विकर्णः + च | सौमदत्तिः + जयद्रथः |"]

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः ।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥१-०९॥

["| अन्ये | च | बहवः | शूरा | मद् + अर्थे | त्यक्त + जीविताः |
| नाना + शस्त्र + प्रहरणाः | सर्वे | युद्ध + विशारदाः |"]

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् ॥१-१०॥

["| अपर्याप्तं | तद् + अस्माकं | बलं | भीष्म + अभिरक्षितम् |
| पर्याप्तं | तु + इदम् + एतेषां | बलं | भीम + अभिरक्षितम् |"]

–: ॐ :–

অস্মাকং তু বিশিষ্টা যে তান্নিবোধ দ্বিজোত্তম ।
নায়কা মম সৈন্যস্য সংজ্ঞার্থং তান্ব্রবীমি তে ॥১-০৭॥

["| অস্মাকং | তু | বিশিষ্টা | যে | তান্ + নিবোধ | দ্বিজ + উত্তম |
| নায়কা | মম | সৈন্যস্য | সংজ্ঞা + অর্থং | তান্ + ব্রবীমি | তে |"]

ভবান্ ভীষ্মশ্চ কর্ণশ্চ কৃপশ্চ সমিতিঞ্জয়ঃ ।
অশ্বত্থামা বিকর্ণশ্চ সৌমদত্তির্জয়দ্রথঃ ॥১-০৮॥

["| ভবান্ | ভীষ্মঃ + চ | কর্ণঃ + চ | কৃপঃ + চ | সমিতিং + জয়ঃ |
| অশ্বত্থামা | বিকর্ণঃ + চ | সৌমদত্তিঃ + জয়দ্রথঃ |"]

অন্যে চ বহবঃ শূরা মদর্থে ত্যক্তজীবিতাঃ ।
নানাশস্ত্রপ্রহরণাঃ সর্বে যুদ্ধবিশারদাঃ ॥১-০৯॥

["| অন্যে | চ | বহবঃ | শূরা | মদ্ + অর্থে | ত্যক্ত + জীবিতাঃ |
| নানা + শস্ত্র + প্রহরণাঃ | সর্বে | যুদ্ধ + বিশারদাঃ |"]

অপর্যাপ্তং তদস্মাকং বলং ভীষ্মাভিরক্ষিতম্ ।
পর্যাপ্তং ত্বিদমেতেষাং বলং ভীমাভিরক্ষিতম্ ॥১-১০॥

["| অপর্যাপ্তং | তদ্ + অস্মাকং | বলং | ভীষ্ম + অভিরক্ষিতম্ |
| পর্যাপ্তং | তু + ইদম্ + এতেষাং | বলং | ভীম + অভিরক্ষিতম্ |"]

–: ॐ :–

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिता: ।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्त: सर्व एव हि ॥१-११॥

["| अयनेषु | च | सर्वेषु | यथा + भागम् + अवस्थिता: |
| भीष्मम् + एव + अभिरक्षन्तु | भवन्त: | सर्व | एव | हि |"]

तस्य सञ्जनयन् हर्षं कुरुवृद्ध: पितामह: ।
सिंहनादं विनद्योच्चै: शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् ॥१-१२॥

["| तस्य | सञ्जनयन् | हर्षं | कुरु + वृद्ध: | पितामह: |
| सिंह + नादं | विनद्य + उच्चै: | शङ्खं | दध्मौ | प्रतापवान् |"]

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः ।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥१-१३॥

["| ततः | शङ्खाः + च | भेर्यः + च | पणव + आनक + गो + मुखाः |
| सहसा + एव + अभ्यहन्यन्त | स | शब्दः + तुमुलो + अभवत् |"]

ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः ॥१-१४॥

["| ततः | श्वेतैः + हयैः + युक्ते | महति | स्यन्दने | स्थितौ |
| माधवः | पाण्डवः + च + एव | दिव्यौ | शंखौ | प्रदध्मतुः |"]

–: ॐ :–

অয়নেষু চ সর্বেষু যথাভাগমবস্থিতাঃ ।

ভীষ্মমেবাভিরক্ষন্তু ভবন্তঃ সর্ব এব হি ॥১-১১॥

["| অয়নেষু | চ | সর্বেষু | যথা + ভাগম্ + অবস্থিতাঃ |
| ভীষ্মম্ + এব + অভিরক্ষন্তু | ভবন্তঃ | সর্ব | এব | হি |"]

তস্য সঞ্জনয়ন্ হর্ষং কুরুবৃদ্ধঃ পিতামহঃ ।

সিংহনাদং বিনদ্যোচ্চৈঃ শঙ্খং দধ্মৌ প্রতাপবান্ ॥১-১২॥

["| তস্য | সঞ্জনয়ন্ | হর্ষং | কুরু + বৃদ্ধঃ | পিতামহঃ |
| সিংহ + নাদং | বিনদ্য + উচ্চৈঃ | শঙ্খং | দধ্মৌ | প্রতাপবান্ |"]

ততঃ শঙ্খাশ্চ ভের্যশ্চ পণবানকগোমুখাঃ ।

সহসৈবাভ্যহন্যন্ত স শব্দস্তুমুলোঽভবৎ ॥১-১৩॥

["| ততঃ | শঙ্খাঃ + চ | ভের্যঃ + চ | পণব + আনক + গো + মুখাঃ |
| সহসা + এব + অভ্যহন্যন্ত | স | শব্দঃ + তুমুলো + অভবৎ |"]

ততঃ শ্বেতৈর্হয়ৈর্যুক্তে মহতি স্যন্দনে স্থিতৌ ।

মাধবঃ পাণ্ডবশ্চৈব দিব্যৌ শঙ্খৌ প্রদধ্মতুঃ ॥১-১৪॥

["| ততঃ | শ্বেতৈঃ + হয়ৈঃ + যুক্তে | মহতি | স্যন্দনে | স্থিতৌ |
| মাধবঃ | পাণ্ডবঃ + চ + এব | দিব্যৌ | শঙ্খৌ | প্রদধ্মতুঃ |"]

–: ॐ :–

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः ।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥१-१५॥

["| पाञ्चजन्यं | हृषीकेशो | देवदत्तं | धनञ्जयः |
| पौण्ड्रं | दध्मौ | महा + शङ्खं | भीम + कर्मा | वृकोदरः |"]

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥१-१६॥

["| अनन्तविजयं | राजा | कुन्ती + पुत्रो | युधिष्ठिरः |
| नकुलः | सहदेवः + च | सुघोष + मणिपुष्पकौ |"]

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः ।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥१-१७॥

["| काश्यः + च | परम + ईष्वासः | शिखण्डी | च | महा + रथः |
| धृष्टद्युम्नो | विराटः + च | सात्यकिः + च + अपराजितः |"]

द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते ।
सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान् दध्मुः पृथक् पृथक् ॥१-१८॥

["| द्रुपदो | द्रौपदेयाः + च | सर्वशः | पृथिवी + पते |
| सौभद्रः + च | महा + बाहुः | शङ्खान् | दध्मुः | पृथक् | पृथक् |"]

–: ॐ :–

পাঞ্চজন্যং হৃষীকেশো দেবদত্তং ধনঞ্জয়ঃ ।

পৌণ্ড্রং দধ্মৌ মহাশঙ্খং ভীমকর্মা বৃকোদরঃ ॥১-১৫॥

["| পাঞ্চজন্যং | হৃষীকেশো | দেবদত্তং | ধনঞ্জয়ঃ |
| পৌণ্ড্রং | দধ্মৌ | মহা + শঙ্খং | ভীম + কর্মা | বৃকোদরঃ |"]

অনন্তবিজয়ং রাজা কুন্তীপুত্রো যুধিষ্ঠিরঃ ।

নকুলঃ সহদেবশ্চ সুঘোষমণিপুষ্পকৌ ॥১-১৬॥

["| অনন্তবিজয়ং | রাজা | কুন্তী + পুত্রো | যুধিষ্ঠিরঃ |
| নকুলঃ | সহদেবঃ + চ | সুঘোষ + মণিপুষ্পকৌ |"]

কাশ্যশ্চ পরমেষ্বাসঃ শিখণ্ডী চ মহারথঃ ।

ধৃষ্টদ্যুম্নো বিরাটশ্চ সাত্যকিশ্চাপরাজিতঃ ॥১-১৭॥

["| কাশ্যঃ + চ | পরম + ঈষ্বাসঃ | শিখণ্ডী | চ | মহা + রথঃ |
| ধৃষ্টদ্যুম্নো | বিরাটঃ + চ | সাত্যকিঃ + চ + অপরাজিতঃ |"]

দ্রুপদো দ্রৌপদেয়াশ্চ সর্বশঃ পৃথিবীপতে ।

সৌভদ্রশ্চ মহাবাহুঃ শঙ্খান্ দধ্মুঃ পৃথক্ পৃথক্ ॥১-১৮॥

["| দ্রুপদো | দ্রৌপদেয়াঃ + চ | সর্বশঃ | পৃথিবী + পতে |
| সৌভদ্রঃ + চ | মহা + বাহুঃ | শঙ্খান্ | দধ্মুঃ | পৃথক্ | পৃথক্ |"]

–: ॐ :–

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।
नभश्च पृथिवीञ्चैव तुमुलोऽभ्यनुनादयन् ॥१-१९॥

["| स | घोषो | धार्तराष्ट्राणां | हृदयानि | व्यदारयत् |
| नभः + च | पृथिवीं + च + एव | तुमुलो + अभि + अनुनादयन् |"]

अथ व्यवस्थितान् दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः ।
प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥१-२०॥

["| अथ | व्यवस्थितान् | दृष्ट्वा | धार्तराष्ट्रान् | कपि + ध्वजः |
| प्रवृत्ते | शस्त्र + सम्पाते | धनुः + उद्यम्य | पाण्डवः |"]

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते ।
अर्जुन उवाच :—
सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥१-२१॥

["| हृषीकेशं | तदा | वाक्यम् + इदम् + आह | मही + पते |
| अर्जुन | उवाच | सेनयोः + उभयोः + मध्ये | रथं | स्थापय | मे + अच्युत |"]

–: ॐ :–

স ঘোষো ধার্তরাষ্ট্রাণাং হৃদয়ানি ব্যদারয়ৎ ।

নভশ্চ পৃথিবীঞ্চৈব তুমুলোঽভ্যনুনাদয়ন্ ॥১-১৯॥

["| স | ঘোষো | ধার্তরাষ্ট্রাণাং | হৃদয়ানি | ব্যদারয়ৎ |
| নভঃ + চ | পৃথিবীং + চ + এব | তুমুলো + অভি + অনুনাদয়ন্ |"]

অথ ব্যবস্থিতান্ দৃষ্ট্বা ধার্তরাষ্ট্রান্ কপিধ্বজঃ ।

প্রবৃত্তে শস্ত্রসম্পাতে ধনুরুদ্যম্য পাণ্ডবঃ ॥১-২০॥

["| অথ | ব্যবস্থিতান্ | দৃষ্ট্বা | ধার্তরাষ্ট্রান্ | কপি + ধ্বজঃ |
| প্রবৃত্তে | শস্ত্র + সম্পাতে | ধনুঃ + উদ্যম্য | পাণ্ডবঃ |"]

হৃষীকেশং তদা বাক্যমিদমাহ মহীপতে ।

অর্জুন উবাচ :—

সেনয়োরুভয়োর্মধ্যে রথং স্থাপয় মেঽচ্যুত ॥১-২১॥

["| হৃষীকেশং | তদা | বাক্যম্ + ইদম্ + আহ | মহী + পতে |
| অর্জুন | উবাচ | সেনয়োঃ + উভয়োঃ + মধ্যে | রথং | স্থাপয় | মে + অচ্যুত |"]

–: ॐ :–

यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान् ।
कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन् रणसमुद्यमे ॥१-२२॥

["| यावत् + एतान् + निरीक्षे + अहं | योद्धु + कामान् + अवस्थितान् |
| कैः + मया | सह | योद्धव्यम् + अस्मिन् | रण + समुद्यमे |"]

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः ।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥१-२३॥

["| योत्स्यमानान् + अवेक्षे + अहं | य | एते + अत्र | समागताः |
| धार्तराष्ट्रस्य | दुर्बुद्धेः + युद्धे | प्रिय + चिकीर्षवः |"]

सञ्जय उवाच :—
एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥१-२४॥

["| सञ्जय | उवाच | एवम् + उक्तो | हृषीकेशो | गुडाकेशेन | भारत |
| सेनयोः + उभयोः + मध्ये | स्थापयित्वा | रथ + उत्तमम् |"]

–: ॐ :–

যাবদেতান্নিরীক্ষেঽহং যোদ্ধুকামানবস্থিতান্ ।
কৈর্ময়া সহ যোদ্ধব্যমস্মিন্ রণসমুদ্যমে ॥১-২২॥

["| যাবৎ + এতান্ + নিরীক্ষে + অহং | যোদ্ধু + কামান্ + অবস্থিতান্ |
| কৈঃ + ময়া | সহ | যোদ্ধব্যম্ + অস্মিন্ | রণ + সমুদ্যমে |"]

যোৎস্যমানানবেক্ষেঽহং য এতেঽত্র সমাগতাঃ ।
ধার্তরাষ্ট্রস্য দুর্বদ্ধের্যুদ্ধে প্রিয়চিকীর্ষবঃ ॥১-২৩॥

["| যোৎস্যমানান্ + অবেক্ষে + অহং | য | এতে + অত্র | সমাগতাঃ |
| ধার্তরাষ্ট্রস্য | দুর্বদ্ধেঃ + যুদ্ধে | প্রিয় + চিকীর্ষবঃ |"]

সঞ্জয় উবাচ :—
এবমুক্তো হৃষীকেশো গুড়াকেশেন ভারত ।
সেনয়োরুভয়োর্মধ্যে স্থাপয়িত্বা রথোত্তমম্ ॥১-২৪॥

["| সঞ্জয় | উবাচ | এবম্ + উক্তো | হৃষীকেশো | গুড়াকেশেন | ভারত |
| সেনয়োঃ + উভয়োঃ + মধ্যে | স্থাপয়িত্বা | রথ + উত্তমম্ |"]

–: ॐ :–

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम् ।
उवाच पार्थ पश्यैतान् समवेतान् कुरूनिति ॥१-२५॥

["| भीष्म + द्रोण + प्रमुखतः | सर्वेषां | च | महीक्षिताम् |
| उवाच | पार्थ | पश्य + एतान् | समवेतान् | कुरून् + इति |"]

तत्रापश्यत् स्थितान् पार्थः पितृनथ पितामहान् ।
आचार्यान् मातुलान् भ्रातृन् पुत्रान् पौत्रान् सखींस्तथा ।
श्वशुरान् सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि ॥१-२६॥

["| तत्र + अपश्यत् | स्थितान् | पार्थः | पितृन् + अथ | पितामहान् |
| आचार्यान् | मातुलान् | भ्रातृन् | पुत्रान् | पौत्रान् | सखीं + तथा |
| श्वशुरान् | सुहृदः + च + एव | सेनयोः + उभयोः + अपि |"]

तान् समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान् बन्धूनवस्थितान् ।
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ॥१-२७॥

["| तान् | समीक्ष्य | स | कौन्तेयः | सर्वान् | बन्धून् + अवस्थितान् |
| कृपया | परया + आविष्टो | विषीदन् + इदम् + अब्रवीत् |"]

–: ॐ :–

ভীষ্মদ্রোণপ্রমুখতঃ সর্বেষাং চ মহীক্ষিতাম্ ।

উবাচ পার্থ পশ্যৈতান্ সমবেতান্ কুরূনিতি ॥১-২৫॥

["| ভীষ্ম + দ্রোণ + প্রমুখতঃ | সর্বেষাং | চ | মহীক্ষিতাম্ |
| উবাচ | পার্থ | পশ্য + এতান্ | সমবেতান্ | কুরূন্ + ইতি |"]

তত্রাপশ্যৎ স্থিতান্ পার্থঃ পিতৄনথ পিতামহান্ ।

আচার্যান্ মাতুলান্ ভ্রাতৄন্ পুত্রান্ পৌত্রান্ সখীংস্তথা ।

শ্বশুরান্ সুহৃদশ্চৈব সেনয়োরুভয়োরপি ॥১-২৬॥

["| তত্র + অপশ্যৎ | স্থিতান্ | পার্থঃ | পিতৄন্ + অথ | পিতামহান্ |
| আচার্যান্ | মাতুলান্ | ভ্রাতৄন্ | পুত্রান্ | পৌত্রান্ | সখীং + তথা |
| শ্বশুরান্ | সুহৃদঃ + চ + এব | সেনয়োঃ + উভয়োঃ + অপি |"]

তান্ সমীক্ষ্য স কৌন্তেয়ঃ সর্বান্ বন্ধূনবস্থিতান্ ।

কৃপয়া পরয়াবিষ্টো বিষীদন্নিদমব্রবীৎ ॥১-২৭॥

["| তান্ | সমীক্ষ্য | স | কৌন্তেয়ঃ | সর্বান্ | বন্ধূন্ + অবস্থিতান্ |
| কৃপয়া | পরয়া + আবিষ্টো | বিষীদন্ + ইদম্ + অব্রবীৎ |"]

–: ॐ :–

अर्जुन उवाच :—

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ।
सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति ॥१-२८॥

["| अर्जुन | उवाच | दृष्ट्वा + इमं | स्वजनं | कृष्ण | युयुत्सुं | समुपस्थितम् |
| सीदन्ति | मम | गात्राणि | मुखं | च | परिशुष्यति |"]

वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ।
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात् त्वक् चैव परिदह्यते ॥१-२९॥

["| वेपथुः + च | शरीरे | मे | रोम + हर्षः + च | जायते |
| गाण्डीवं | स्रंसते | हस्तात् | त्वक् | च + एव | परिदह्यते |"]

न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ।
निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ॥१-३०॥

["| न | च | शक्नोमि + अवस्थातुं | भ्रमति + इव | च | मे | मनः |
| निमित्तानि | च | पश्यामि | विपरीतानि | केशव |"]

–: ওঁ :–

অর্জুন উবাচ :—

দৃষ্ট্বেমং স্বজনং কৃষ্ণ যুযুৎসুং সমুপস্থিতম্ ।

সীদন্তি মম গাত্রাণি মুখং চ পরিশুষ্যতি ॥১-২৮॥

["| অর্জুন | উবাচ | দৃষ্ট্বা + ইমং | স্বজনং | কৃষ্ণ | যুযুৎসুং | সমুপস্থিতম্ |
| সীদন্তি | মম | গাত্রাণি | মুখং | চ | পরিশুষ্যতি |"]

বেপথুশ্চ শরীরে মে রোমহর্ষশ্চ জায়তে ।

গাণ্ডীবং স্রংসতে হস্তাৎ ত্বক্ চৈব পরিদহ্যতে ॥১-২৯॥

["| বেপথুঃ + চ | শরীরে | মে | রোম + হর্ষঃ + চ | জায়তে |
| গাণ্ডীবং | স্রংসতে | হস্তাৎ | ত্বক্ | চ + এব | পরিদহ্যতে |"]

ন চ শক্নোম্যবস্থাতুং ভ্রমতীব চ মে মনঃ ।

নিমিত্তানি চ পশ্যামি বিপরীতানি কেশব ॥১-৩০॥

["| ন | চ | শক্নোমি + অবস্থাতুং | ভ্রমতি + ইব | চ | মে | মনঃ |
| নিমিত্তানি | চ | পশ্যামি | বিপরীতানি | কেশব |"]

–: ॐ :–

न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ।
न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च ॥१-३१॥

["| न | च | श्रेयो + अनुपश्यामि | हत्वा | स्वजनम् + आहवे |
| न | काङ्क्षे | विजयं | कृष्ण | न | च | राज्यं | सुखानि | च |"]

किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ।
येषामर्थे काङक्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च ॥१-३२॥

["| किं | नो | राज्येन | गोविन्द | किं | भोगैः + जीवितेन | वा |
| येषाम् + अर्थे | काङक्षितं | नो | राज्यं | भोगाः | सुखानि | च |"]

त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च ।
आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा ॥१-३३॥

["| त | इमे + अवस्थिता | युद्धे | प्राणान् + त्यक्त्वा | धनानि | च |
| आचार्याः | पितरः | पुत्राः + तथा + एव | च | पितामहाः |
| मातुलाः | श्वशुराः | पौत्राः | श्यालाः | सम्बन्धिनः + तथा |"]

–: ॐ :–

ন চ শ্রেয়োঽনুপশ্যামি হত্বা স্বজনমাহবে ।

ন কাঙ্ক্ষে বিজয়ং কৃষ্ণ ন চ রাজ্যং সুখানি চ ॥১-৩১॥

["| ন | চ | শ্রেয়ো + অনুপশ্যামি | হত্বা | স্বজনম্ + আহবে |
| ন | কাঙ্ক্ষে | বিজয়ং | কৃষ্ণ | ন | চ | রাজ্যং | সুখানি | চ |"]

কিং নো রাজ্যেন গোবিন্দ কিং ভোগৈর্জীবিতেন বা ।

যেষামর্থে কাঙ্ক্ষিতং নো রাজ্যং ভোগাঃ সুখানি চ ॥১-৩২॥

["| কিং | নো | রাজ্যেন | গোবিন্দ | কিং | ভোগৈঃ + জীবিতেন | বা |
| যেষাম্ + অর্থে | কাঙ্ক্ষিতং | নো | রাজ্যং | ভোগাঃ | সুখানি | চ |"]

ত ইমেঽবস্থিতা যুদ্ধে প্রাণাংস্ত্যক্ত্বা ধনানি চ ।

আচার্যাঃ পিতরঃ পুত্রাস্তথৈব চ পিতামহাঃ ।

মাতুলাঃ শ্বশুরাঃ পৌত্রাঃ শ্যালাঃ সম্বন্ধিনস্তথা ॥১-৩৩॥

["| ত | ইমে + অবস্থিতা | যুদ্ধে | প্রাণান্ + ত্যক্ত্বা | ধনানি | চ |
| আচার্যাঃ | পিতরঃ | পুত্রাঃ + তথা + এব | চ | পিতামহাঃ |
| মাতুলাঃ | শ্বশুরাঃ | পৌত্রাঃ | শ্যালাঃ | সম্বন্ধিনঃ + তথা |"]

–: ॐ :–

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ॥१-३४॥

["| एतान् + न | हन्तुम् + इच्छामि | घ्नतो + अपि | मधुसूदन |
| अपि | त्रैलोक्य + राज्यस्य | हेतोः | किं | नु | मही + कृते |"]

निहत्य धार्तराष्ट्रान् नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन ।
पापमेवाश्रयेदस्मान् हत्वैतानाततायिनः ॥१-३५॥

["| निहत्य | धार्तराष्ट्रान् | नः | का | प्रीतिः | स्यात् + जनार्दन |
| पापम् + एव + आश्रयेत् + अस्मान् | हत्वा + एतान् + आततायिनः |"]

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान् सबान्धवान् ।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥१-३६॥

["| तस्मात् + न + अर्हा | वयं | हन्तुं | धार्तराष्ट्रान् | सबान्धवान् |
| स्वजनं | हि | कथं | हत्वा | सुखिनः | स्याम | माधव |"]

यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः ।
कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥१-३७॥

["| यदि + अपि + एते | न | पश्यन्ति | लोभ + उपहत + चेतसः |
| कुल + क्षय + कृतं | दोषं | मित्र + द्रोहे | च | पातकम् |"]

–: ॐ :–

এতান্ন হন্তুমিচ্ছামি ঘ্নতোঽপি মধুসূদন ।

অপি ত্রৈলোক্যরাজ্যস্য হেতোঃ কিং নু মহীকৃতে ॥১-৩৪॥

["| এতান্ + ন | হন্তুম্ + ইচ্ছামি | ঘ্নতো + অপি | মধুসূদন |
| অপি | ত্রৈলোক্য + রাজ্যস্য | হেতোঃ | কিং | নু | মহী + কৃতে |"]

নিহত্য ধার্তরাষ্ট্রান্ নঃ কা প্রীতিঃ স্যাজ্জনার্দন ।

পাপমেবাশ্রয়েদস্মান্ হত্বৈতানাততায়িনঃ ॥১-৩৫॥

["| নিহত্য | ধার্তরাষ্ট্রান্ | নঃ | কা | প্রীতিঃ | স্যাৎ + জনার্দন |
| পাপম্ + এব + আশ্রয়েৎ + অস্মান্ | হত্বা + এতান্ + আততায়িনঃ |"]

তস্মান্নার্হা বয়ং হন্তুং ধার্তরাষ্ট্রান্ সবান্ধবান্ ।

স্বজনং হি কথং হত্বা সুখিনঃ স্যাম মাধব ॥১-৩৬॥

["| তস্মাৎ + ন + অর্হা | বয়ং | হন্তুং | ধার্তরাষ্ট্রান্ | সবান্ধবান্ |
| স্বজনং | হি | কথং | হত্বা | সুখিনঃ | স্যাম | মাধব |"]

যদ্যপ্যেতে ন পশ্যন্তি লোভোপহতচেতসঃ ।

কুলক্ষয়কৃতং দোষং মিত্রদ্রোহে চ পাতকম্ ॥১-৩৭॥

["| যদি + অপি + এতে | ন | পশ্যন্তি | লোভ + উপহত + চেতসঃ |
| কুল + ক্ষয় + কৃতং | দোষং | মিত্র + দ্রোহে | চ | পাতকম্ |"]

–: ॐ :–

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् ।
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥१-३८॥

["| कथं | न | ज्ञेयम् + अस्माभिः | पापात् + अस्मात् + निवर्तितुम् |
| कुल + क्षय + कृतं | दोषं | प्रपश्यद्भिः + जनार्दन |"]

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥१-३९॥

["| कुल + क्षये | प्रणश्यन्ति | कुल + धर्माः | सनातनाः |
| धर्मे | नष्टे | कुलं | कृत्स्नम् + अधर्मो + अभिभवति + उत |"]

अधर्माभिभवात् कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः ।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥१-४०॥

["| अधर्म + अभिभवात् | कृष्ण | प्रदुष्यन्ति | कुल + स्त्रियः |
| स्त्रीषु | दुष्टासु | वार्ष्णेय | जायते | वर्ण + संकरः |"]

संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥१-४१॥

["| संकरो | नरकाय + एव | कुल + घ्नानां | कुलस्य | च |
| पतन्ति | पितरो | हि + एषां | लुप्त + पिण्ड + उदक + क्रियाः |"]

–: ॐ :–

কথং ন জ্ঞেয়মস্মাভিঃ পাপাদস্মান্নিবর্তিতুম্ ।

কুলক্ষয়কৃতং দোষং প্রপশ্যদ্ভির্জনার্দন ॥১-৩৮॥

["| কথং | ন | জ্ঞেয়ম্ + অস্মাভিঃ | পাপাৎ + অস্মাৎ + নিবর্তিতুম্ |
| কুল + ক্ষয় + কৃতং | দোষং | প্রপশ্যদ্ভিঃ + জনার্দন |"]

কুলক্ষয়ে প্রণশ্যন্তি কুলধর্মাঃ সনাতনাঃ ।

ধর্মে নষ্টে কুলং কৃৎস্নমধর্মোঽভিভবত্যুত ॥১-৩৯॥

["| কুল + ক্ষয়ে | প্রণশ্যন্তি | কুল + ধর্মাঃ | সনাতনাঃ |
| ধর্মে | নষ্টে | কুলং | কৃৎস্নম্ + অধর্মো + অভিভবতি + উত |"]

অধর্মাভিভবাৎ কৃষ্ণ প্রদুষ্যন্তি কুলস্ত্রিয়ঃ ।

স্ত্রীষু দুষ্টাসু বার্ষ্ণেয় জায়তে বর্ণসঙ্করঃ ॥১-৪০॥

["| অধর্ম + অভিভবাৎ | কৃষ্ণ | প্রদুষ্যন্তি | কুল + স্ত্রিয়ঃ |
| স্ত্রীষু | দুষ্টাসু | বার্ষ্ণেয় | জায়তে | বর্ণ + সঙ্করঃ |"]

সঙ্করো নরকায়ৈব কুলঘ্নানাং কুলস্য চ ।

পতন্তি পিতরো হ্যেষাং লুপ্তপিণ্ডোদকক্রিয়াঃ ॥১-৪১॥

["| সঙ্করো | নরকায় + এব | কুল + ঘ্নানাং | কুলস্য | চ |
| পতন্তি | পিতরো | হি + এষাং | লুপ্ত + পিণ্ড + উদক + ক্রিয়াঃ |"]

–: ॐ :–

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः ।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥१-४२॥

["| दोषैः + एतैः | कुल + घ्नानां | वर्ण + संकर + कारकैः |
| उत्साद्यन्ते | जाति + धर्माः | कुल + धर्माः + च | शाश्वताः |"]

उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन ।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥१-४३॥

["| उत्सन्न + कुल + धर्माणां | मनुष्याणां | जनार्दन |
| नरके + अनियतं | वासो | भवति + इति + अनूशुश्रुम |"]

अहो बत महत् पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् ।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥१-४४॥

["| अहो | बत | महत् | पापं | कर्तुं | व्यवसिता | वयम् |
| यत् + राज्य + सुख + लोभेन | हन्तुं | स्वजनम् + उद्यताः |"]

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥१-४५॥

["| यदि | माम् + अप्रतीकारम् + अशस्त्रं | शस्त्र + पाणयः |
| धार्तराष्ट्रा | रणे | हन्युः + तत् + मे | क्षेम + तरं | भवेत् |"]

–: ॐ :–

দোষৈরেতৈঃ কুলঘ্নানাং বর্ণসঙ্করকারকৈঃ ।

উৎসাদ্যন্তে জাতিধর্মাঃ কুলধর্মাশ্চ শাশ্বতাঃ ॥১-৪২॥

["| দোষৈঃ + এতৈঃ | কুল + ঘ্নানাং | বর্ণ + সঙ্কর + কারকৈঃ |
| উৎসাদ্যন্তে | জাতি + ধর্মাঃ | কুল + ধর্মাঃ + চ | শাশ্বতাঃ |"]

উৎসন্নকুলধর্মাণাং মনুষ্যাণাং জনার্দন ।

নরকেঽনিয়তং বাসো ভবতীত্যনুশুশ্রুম ॥১-৪৩॥

["| উৎসন্ন + কুল + ধর্মাণাং | মনুষ্যাণাং | জনার্দন |
| নরকে + অনিয়তং | বাসো | ভবতি + ইতি + অনুশুশ্রুম |"]

অহো বত মহৎ পাপং কর্তুং ব্যবসিতা বয়ম্ ।

যদ্রাজ্যসুখলোভেন হন্তুং স্বজনমুদ্যতাঃ ॥১-৪৪॥

["| অহো | বত | মহৎ | পাপং | কর্তুং | ব্যবসিতা | বয়ম্ |
| যৎ + রাজ্য + সুখ + লোভেন | হন্তুং | স্বজনম্ + উদ্যতাঃ |"]

যদি মামপ্রতীকারমশস্ত্রং শস্ত্রপাণয়ঃ ।

ধার্তরাষ্ট্রা রণে হন্যুস্তন্মে ক্ষেমতরং ভবেৎ ॥১-৪৫॥

["| যদি | মাম্ + অপ্রতীকারম্ + অশস্ত্রং | শস্ত্র + পাণয়ঃ |
| ধার্তরাষ্ট্রা | রণে | হন্যুঃ + তৎ + মে | ক্ষেম + তরং | ভবেৎ |"]

–: ॐ :–

सञ्जय उवाच :—

एवमुक्त्वार्जुनः सङ्‌ख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ।

विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥१-४६॥

["| सञ्जय | उवाच | एवम् + उक्त्वा + अर्जुनः | सङ्‌ख्ये | रथ + उपस्थ | उपाविशत् |
| विसृज्य | सशरं | चापं | शोक + संविग्न + मानसः |"]

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि

श्रीमद्भगवद्‌गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे

अर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः॥१॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | अर्जुन + विषाद + योगो | नाम | प्रथमो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

সঞ্জয় উবাচ :—

এবমুক্ত্বার্জুনঃ সংখ্যে রথোপস্থ উপাবিশৎ ।

বিসৃজ্য সশরং চাপং শোকসংবিগ্নমানসঃ ॥১-৪৬॥

["| সঞ্জয় | উবাচ | এবম্ + উক্ত্বা + অর্জুনঃ | সংখ্যে | রথ + উপস্থ | উপাবিশৎ |
| বিসৃজ্য | সশরং | চাপং | শোক + সংবিগ্ন + মানসঃ |"]

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্ব্বণি শ্রীমদ্ভগবদ্‌গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে অর্জুনবিষাদযোগো নাম প্রথমোঽধ্যায়ঃ ॥১॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্ব্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | অর্জুন + বিষাদ + যোগো | নাম | প্রথমো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

द्वितीयोऽध्यायः
सांख्ययोग

सञ्जय उवाच :—

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥२-०१॥

["| सञ्जय | उवाच | तं | तथा | कृपया + आविष्टम् + अश्रुपूर्ण + आकुल + ईक्षणम् |
| विषीदन्तम् + इदं | वाक्यम् + उवाच | मधुसूदनः |"]

श्रीभगवानुवाच :—

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥२-०२॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | कुतः + त्वा | कश्मलम् + इदं | विषमे | समुपस्थितम् |
| अनार्य + जुष्टम् + अस्वर्ग्यम् + अकीर्ति + करम् + अर्जुन |"]

–: ॐ :–

দ্বিতীয়োঽধ্যায়ঃ
সাংখ্যযোগ

সঞ্জয় উবাচ :—

তং তথা কৃপয়াবিষ্টমশ্রুপূর্ণাকুলেক্ষণম্ ।

বিষীদন্তমিদং বাক্যমুবাচ মধুসূদনঃ ॥২-০১॥

["। সঞ্জয় । উবাচ । তং । তথা । কৃপয়া + আবিষ্টম্ + অশ্রুপূর্ণ + আকুল + ঈক্ষণম্ ।
। বিষীদন্তম্ + ইদং । বাক্যম্ + উবাচ । মধুসূদনঃ ।"]

শ্রীভগবানুবাচ :—

কুতস্ত্বা কশ্মলমিদং বিষমে সমুপস্থিতম্ ।

অনার্যজুষ্টমস্বর্গ্যমকীর্তিকরমর্জুন ॥২-০২॥

["। শ্রী + ভগবান্ + উবাচ । কুতঃ + ত্বা । কশ্মলম্ + ইদং । বিষমে । সমুপস্থিতম্ ।
। অনার্য + জুষ্টম্ + অস্বর্গ্যম্ + অকীর্তি + করম্ + অর্জুন ।"]

–: ॐ :–

क्लैब्यं मास्म गमः पार्थ नैतत् त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप ॥२-०३॥

["| क्लैब्यं | मा + स्म | गमः | पार्थ | न + एतत् | त्वयि + उपपद्यते |
| क्षुद्रं | हृदय + दौर्बल्यं | त्यक्त्वा + उत्तिष्ठ | परम् + तप |"]

अर्जुन उवाच :—
कथं भीष्ममहं सङ्ख्ये द्रोणं च मधुसूदन ।
इषुभिः प्रतियोत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥२-०४॥

["| अर्जुन | उवाच | कथं | भीष्मम् + अहं | सङ्ख्ये | द्रोणं | च | मधुसूदन |
| इषुभिः | प्रतियोत्स्यामि | पूजार्हौ + अरि + सूदन |"]

गुरूनहत्वा हि महानुभावान् ; श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीहलोके ।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव ; भुञ्जीय भोगान् रुधिरप्रदिग्धान् ॥२-०५॥

["| गुरून् + अहत्वा | हि | महा + अनुभावान् | श्रेयो | भोक्तुं | भैक्ष्यम् + अपि + इह + लोके |
| हत्वा + अर्थ + कामान् + तु | गुरून् + इह + एव | भुञ्जीय | भोगान् | रुधिर + प्रदिग्धान् |"]

–: ॐ :–

ক্লৈব্যং মাস্ম গমঃ পার্থ নৈতৎ ত্বয্যুপপদ্যতে ।

ক্ষুদ্রং হৃদয়দৌর্বল্যং ত্যক্ত্বোত্তিষ্ঠ পরন্তপ ॥২-০৩॥

["| ক্লৈব্যং | মা + স্ম | গমঃ | পার্থ | ন + এতৎ | ত্বয়ি + উপপদ্যতে |

| ক্ষুদ্রং | হৃদয় + দৌর্বল্যং | ত্যক্ত্বা + উত্তিষ্ঠ | পরম্ + তপ |"]

অর্জুন উবাচ :—

কথং ভীষ্মমহং সংখ্যে দ্রোণং চ মধুসূদন ।

ইষুভিঃ প্রতিযোৎস্যামি পূজার্হাবরিসূদন ॥২-০৪॥

["| অর্জুন | উবাচ | কথং | ভীষ্মম্ + অহং | সংখ্যে | দ্রোণং | চ | মধুসূদন |

| ইষুভিঃ | প্রতিযোৎস্যামি | পূজার্হৌ + অরি + সূদন |"]

গুরূনহত্বা হি মহানুভাবান্ ; শ্রেয়ো ভোক্তুং ভৈক্ষ্যমপীহলোকে ।

হত্বার্থকামাংস্তু গুরূনিহৈব ; ভুঞ্জীয় ভোগান্ রুধিরপ্রদিগ্ধান্ ॥২-০৫॥

["| গুরূন্ + অহত্বা | হি | মহা + অনুভাবান্ | শ্রেয়ো | ভোক্তুং | ভৈক্ষ্যম্ + অপি + ইহ + লোকে |

| হত্বা + অর্থ + কামান্ + তু | গুরূন্ + ইহ + এব | ভুঞ্জীয় | ভোগান্ | রুধির + প্রদিগ্ধান্ |"]

–: ॐ :–

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो ; यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ।
यानेव हत्वा न जिजीविषाम- ; -स्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥२-०६॥

["| न | च + एतत् + विद्मः | कतरत् + नो | गरीयो | यत् + वा | जयेम | यदि | वा | नो | जयेयुः |
| यान + एव | हत्वा | न | जिजीविषामः + ते + अवस्थिताः | प्रमुखे | धार्तराष्ट्राः |"]

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः ; पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढ़चेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे ; शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥२-०७॥

["| कार्पण्य + दोष + उपहत + स्वभावः | पृच्छामि | त्वां | धर्म + सम्मूढ़ + चेताः |
| यत् + श्रेयः | स्यात् + निश्चितं | ब्रूहि | तत् + मे | शिष्यः + ते + अहं | शाधि | मां | त्वां | प्रपन्नम् |"]

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्यात् ; यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् ।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं ; राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ॥२-०८॥

["| न | हि | प्रपश्यामि | मम + अपनुद्यात् | यत् + शोकम् + उच्छोषणम् + इन्द्रियाणाम् |
| अवाप्य | भूमौ + असपत्नम् + ऋद्धं | राज्यं | सुराणाम् + अपि | च + अधिपत्यम् |"]

–: ॐ :–

ন চৈতদ্‌বিদ্মঃ কতরন্নো গরীয়ো ; যদ্‌বা জয়েম যদি বা নো জয়েয়ুঃ ।

যানেব হত্বা ন জিজীবিষাম- ; -স্তেঽবস্থিতাঃ প্রমুখে ধার্তরাষ্ট্রাঃ ॥২-০৬॥

["| ন | চ + এতৎ + বিদ্মঃ | কতরৎ + নো | গরীয়ো | যৎ + বা | জয়েম | যদি | বা | নো | জয়েয়ুঃ |

| যান্ + এব | হত্বা | ন | জিজীবিষামঃ + তে + অবস্থিতাঃ | প্রমুখে | ধার্তরাষ্ট্রাঃ |"]

কার্পণ্যদোষোপহতস্বভাবঃ ; পৃচ্ছামি ত্বাং ধর্মসম্মূঢ়চেতাঃ ।

যচ্ছ্রেয়ঃ স্যান্নিশ্চিতং ব্রূহি তন্মে ; শিষ্যস্তেঽহং শাধি মাং ত্বাং প্রপন্নম্ ॥২-০৭॥

["| কার্পণ্য + দোষ + উপহত + স্বভাবঃ | পৃচ্ছামি | ত্বাং | ধর্ম + সম্মূঢ় + চেতাঃ |

| যৎ + শ্রেয়ঃ | স্যাৎ + নিশ্চিতং | ব্রূহি | তৎ + মে | শিষ্যঃ + তে + অহং |

| শাধি | মাং | ত্বাং | প্রপন্নম্ |"]

ন হি প্রপশ্যামি মমাপনুদ্যাৎ ; যচ্ছোকমুচ্ছোষণমিন্দ্রিয়াণাম্ ।

অবাপ্য ভূমাবসপত্নমৃদ্ধং ; রাজ্যং সুরাণামপি চাধিপত্যম্ ॥২-০৮॥

["| ন | হি | প্রপশ্যামি | মম + অপনুদ্যাৎ | যৎ + শোকম্ + উচ্ছোষণম্ + ইন্দ্রিয়াণাম্ |

| অবাপ্য | ভূমৌ + অসপত্নম্ + ঋদ্ধং | রাজ্যং | সুরাণাম্ + অপি | চ + অধিপত্যম্ |"]

–: ॐ :–

सञ्जय उवाच :—
एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परन्तपः ।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ॥२-०९॥

["| सञ्जय | उवाच | एवम् + उक्त्वा | हृषीकेशं | गुडाकेशः | परन्तपः |
| न | योत्स्य | इति | गोविन्दम् + उक्त्वा | तूष्णीं | बभूव | ह |"]

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥२-१०॥

["| तम् + उवाच | हृषीकेशः | प्रहसन् + इव | भारत |
| सेनयोः + उभयोः + मध्ये | विषीदन्तम् + इदं | वचः |"]

श्रीभगवानुवाच :—
अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ॥२-११॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | अशोच्यान् + अन्वशोचः + त्वं | प्रज्ञा + वादान् + च | भाषसे |
| गत + असून् + अगत + असून् + च | न + अनुशोचन्ति | पण्डिताः |"]

–: ॐ :–

সঞ্জয় উবাচ :—

এবমুক্ত্বা হৃষীকেশং গুড়াকেশঃ পরন্তপঃ ।

ন যোৎস্য ইতি গোবিন্দমুক্ত্বা তুষ্ণীং বভূব হ ॥২-০৯॥

["| সঞ্জয় | উবাচ | এবম্ + উক্ত্বা | হৃষীকেশং | গুড়াকেশঃ | পরন্তপঃ |
| ন | যোৎস্য | ইতি | গোবিন্দম্ + উক্ত্বা | তুষ্ণীং | বভূব | হ |"]

তমুবাচ হৃষীকেশঃ প্রহসন্নিব ভারত ।

সেনয়োরুভয়োর্মধ্যে বিষীদন্তমিদং বচঃ ॥২-১০॥

["| তম্ + উবাচ | হৃষীকেশঃ | প্রহসন্ + ইব | ভারত |
| সেনয়োঃ + উভয়োঃ + মধ্যে | বিষীদন্তম্ + ইদং | বচঃ |"]

শ্রীভগবানুবাচ :—

অশোচ্যানন্বশোচস্ত্বং প্রজ্ঞাবাদাংশ্চ ভাষসে ।

গতাসূনগতাসূংশ্চ নানুশোচন্তি পণ্ডিতাঃ ॥২-১১॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | অশোচ্যান্ + অন্বশোচঃ + ত্বং | প্রজ্ঞা + বাদান্ + চ | ভাষসে |
| গত + অসূন্ + অগত + অসূন্ + চ | ন + অনুশোচন্তি | পণ্ডিতাঃ |"]

–: ॐ :–

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतःपरम् ॥२-१२॥

["| न | तु + एव + अहं | जातु | न + असं | न | त्वं | न + इमे | जन + अधिपाः |
| न | च + एव | न | भविष्यामः | सर्वे | वयम् + अतः + परम् |"]

देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥२-१३॥

["| देहिनः + अस्मिन् | यथा | देहे | कौमारं | यौवनं | जरा |
| तथा | देहान्तर + प्राप्तिः + धीरः + तत्र | न | मुह्यति |"]

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥२-१४॥

["| मात्रा + स्पर्शाः + तु | कौन्तेय | शीत + उष्ण + सुख + दुःख + दाः |
| आगम + अपायिनो + अनित्याः + तान् + तितिक्षस्व | भारत |"]

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥२-१५॥

["| यं | हि | न | व्यथयन्ति + एते | पुरुषं | पुरुषर्षभ |
| सम + दुःख + सुखं | धीरं | सो + अमृतत्वाय | कल्पते |"]

–: ॐ :–

ন ত্বেবাহং জাতু নাসং ন ত্বং নেমে জনাধিপাঃ ।

ন চৈব ন ভবিষ্যামঃ সর্বে বয়মতঃপরম্ ॥২-১২॥

["| ন | তু + এব + অহং | জাতু | ন + অসং | ন | ত্বং | ন + ইমে | জন + অধিপাঃ |

| ন | চ + এব | ন | ভবিষ্যামঃ | সর্বে | বয়ম্ + অতঃ + পরম্ |"]

দেহিনোঽস্মিন্ যথা দেহে কৌমারং যৌবনং জরা ।

তথা দেহান্তরপ্রাপ্তির্ধীরস্তত্র ন মুহ্যতি ॥২-১৩॥

["| দেহিনঃ + অস্মিন্ | যথা | দেহে | কৌমারং | যৌবনং | জরা |

| তথা | দেহান্তর + প্রাপ্তিঃ + ধীরঃ + তত্র | ন | মুহ্যতি |"]

মাত্রাস্পর্শাস্তু কৌন্তেয় শীতোষ্ণসুখদুঃখদাঃ ।

আগমাপায়িনোঽনিত্যাস্তাংস্তিতিক্ষস্ব ভারত ॥২-১৪॥

["| মাত্রা + স্পর্শাঃ + তু | কৌন্তেয় | শীত + উষ্ণ + সুখ + দুঃখ + দাঃ |

| আগম + অপায়িনো + অনিত্যাঃ + তান্ + তিতিক্ষস্ব | ভারত |"]

যং হি ন ব্যথয়ন্ত্যেতে পুরুষং পুরুষর্ষভ ।

সমদুঃখসুখং ধীরং সোঽমৃতত্বায় কল্পতে ॥২-১৫॥

["| যং | হি | ন | ব্যথয়ন্তি + এতে | পুরুষং | পুরুষর্ষভ |

| সম + দুঃখ + সুখং | ধীরং | সো + অমৃতত্বায় | কল্পতে |"]

–: ॐ :–

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ॥२-१६॥

["| न + असतो | विद्यते | भावो | न + अभावो | विद्यते | सतः |
| उभयोः + अपि | दृष्टो + अन्तः + तु + अनयोः + तत्त्व + दर्शिभिः |"]

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित् कर्तुमर्हति ॥२-१७॥

["| अविनाशि | तु | तत् + विद्धि | येन | सर्वम् + इदं | ततम् |
| विनाशम् + अव्ययस्य + अस्य | न | कश्चित् | कर्तुम् + अर्हति |"]

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥२-१८॥

["| अन्तवन्त | इमे | देहा | नित्यस्य + उक्ताः | शरीरिणः |
| अनाशिनो + अप्रमेयस्य | तस्मात् + युध्यस्व | भारत |"]

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥२-१९॥

["| य | एनं | वेत्ति | हन्तारं | यः + च + एनं | मन्यते | हतम् |
| उभौ | तौ | न | विजानीतो | न + अयं | हन्ति | न | हन्यते |"]

–: ॐ :–

নাসতো বিদ্যতে ভাবো নাভাবো বিদ্যতে সতঃ ।

উভয়োরপি দৃষ্টোঽন্তস্ত্বনয়োস্তত্ত্বদর্শিভিঃ ॥২-১৬॥

["| ন + অসতো | বিদ্যতে | ভাবো | ন + অভাবো | বিদ্যতে | সতঃ |
| উভয়োঃ + অপি | দৃষ্টো + অন্তঃ + তু + অনয়োঃ + তত্ত্ব + দর্শিভিঃ |"]

অবিনাশি তু তদ্বিদ্ধি যেন সর্বমিদং ততম্ ।

বিনাশমব্যয়স্যাস্য ন কশ্চিৎ কর্তুমর্হতি ॥২-১৭॥

["| অবিনাশি | তু | তৎ + বিদ্ধি | যেন | সর্বম্ + ইদং | ততম্ |
| বিনাশম্ + অব্যয়স্য + অস্য | ন | কশ্চিৎ | কর্তুম্ + অর্হতি |"]

অন্তবন্ত ইমে দেহা নিত্যস্যোক্তাঃ শরীরিণঃ ।

অনাশিনোঽপ্রমেয়স্য তস্মাদ্‌যুধ্যস্ব ভারত ॥২-১৮॥

["| অন্তবন্ত | ইমে | দেহা | নিত্যস্য + উক্তাঃ | শরীরিণঃ |
| অনাশিনো + অপ্রমেয়স্য | তস্মাৎ + যুধ্যস্ব | ভারত |"]

য এনং বেত্তি হন্তারং যশ্চৈনং মন্যতে হতম্ ।

উভৌ তৌ ন বিজানীতো নায়ং হন্তি ন হন্যতে ॥২-১৯॥

["| য | এনং | বেত্তি | হন্তারং | যঃ + চ + এনং | মন্যতে | হতম্ |
| উভৌ | তৌ | ন | বিজানীতো | ন + অয়ং | হন্তি | ন | হন্যতে |"]

–: ॐ :–

न जायते म्रियते वा कदाचिन्- ; -नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो ; न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२-२०॥

["| न | जायते | म्रियते | वा | कदाचित् + न + अयं | भूत्वा | भविता | वा | न | भूयः |
| अजो | नित्यः | शाश्वतो + अयं | पुराणो | न | हन्यते | हन्यमाने | शरीरे |"]

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् ।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥२-२१॥

["| वेद + अविनाशिनं | नित्यं | य | एनम् + अजम् + अव्ययम् |
| कथं | स | पुरुषः | पार्थ | कं | घातयति | हन्ति | कम् |"]

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय ; नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्य- ; -न्यानि संयाति नवानि देही ॥२-२२॥

["| वासांसि | जीर्णानि | यथा | विहाय | नवानि | गृह्णाति | नरो + अपराणि |
| तथा | शरीराणि | विहाय | जीर्णानि + अन्यानि | संयाति | नवानि | देही |"]

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥२-२३॥

["| न + एनं | छिन्दन्ति | शस्त्राणि | न + एनं | दहति | पावकः |
| न | च + एनं | क्लेदयन्ति + आपो | न | शोषयति | मारुतः |"]

–: ॐ :–

ন জায়তে ম্রিয়তে বা কদাচিন্- ; -নায়ং ভূত্বা ভবিতা বা ন ভূয়ঃ ।
অজো নিত্যঃ শাশ্বতোঽয়ং পুরাণো ; ন হন্যতে হন্যমানে শরীরে ॥২-২০॥

["| ন | জায়তে | ম্রিয়তে | বা | কদাচিৎ + ন + অয়ং | ভূত্বা | ভবিতা | বা | ন | ভূয়ঃ |
| অজো | নিত্যঃ | শাশ্বতো + অয়ং | পুরাণো | ন | হন্যতে | হন্যমানে | শরীরে |"]

বেদাবিনাশিনং নিত্যং য এনমজমব্যয়ম্ ।
কথং স পুরুষঃ পার্থ কং ঘাতয়তি হন্তি কম্ ॥২-২১॥

["| বেদ + অবিনাশিনং | নিত্যং | য | এনম্ + অজম্ + অব্যয়ম্ |
| কথং | স | পুরুষঃ | পার্থ | কং | ঘাতয়তি | হন্তি | কম্ |"]

বাসাংসি জীর্ণানি যথা বিহায় ; নবানি গৃহ্ণাতি নরোঽপরাণি ।
তথা শরীরাণি বিহায় জীর্ণান্য- ; -ন্যানি সংযাতি নবানি দেহী ॥২-২২॥

["| বাসাংসি | জীর্ণানি | যথা | বিহায় | নবানি | গৃহ্ণাতি | নরো + অপরাণি |
| তথা | শরীরাণি | বিহায় | জীর্ণানি + অন্যানি | সংযাতি | নবানি | দেহী |"]

নৈনং ছিন্দন্তি শস্ত্রাণি নৈনং দহতি পাবকঃ ।
ন চৈনং ক্লেদয়ন্ত্যাপো ন শোষয়তি মারুতঃ ॥২-২৩॥

["| ন + এনং | ছিন্দন্তি | শস্ত্রাণি | ন + এনং | দহতি | পাবকঃ |
| ন | চ + এনং | ক্লেদয়ন্তি + আপো | ন | শোষয়তি | মারুতঃ |"]

–: ॐ :–

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥२-२४॥

["| अच्छेद्यो + अयम् + अदाह्यो + अयम् + अक्लेद्यो + अशोष्य | एव | च |
| नित्यः | सर्व + गतः | स्थाणुः + अचलो + अयं | सनातनः |"]

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥२-२५॥

["| अव्यक्तो + अयम् + अचिन्त्यो + अयम् + अविकार्यो + अयम् + उच्यते |
| तस्मात् + एवं | विदित्वा + एनं | न + अनुशोचितुम् + अर्हसि |"]

अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।
तथापि त्वं महाबाहो नैनं शोचितुमर्हसि ॥२-२६॥

["| अथ | च + एनं | नित्य + जातं | नित्यं | वा | मन्यसे | मृतम् |
| तथा + अपि | त्वं | महा + बाहो | न + एनं | शोचितुम् + अर्हसि |"]

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥२-२७॥

["| जातस्य | हि | ध्रुवो | मृत्युः + ध्रुवं | जन्म | मृतस्य | च |
| तस्मात् + अपरिहार्ये + अर्थे | न | त्वं | शोचितुम् + अर्हसि |"]

–: ওঁ :–

অচ্ছেদ্যোঽয়মদাহ্যোঽয়মক্লেদ্যোঽশোষ্য এব চ ।

নিত্যঃ সর্বগতঃ স্থাণুরচলোঽয়ং সনাতনঃ ॥২-২৪॥

["| অচ্ছেদ্যো + অয়ম্ + অদাহ্যো + অয়ম্ + অক্লেদ্যো + অশোষ্য | এব | চ |
| নিত্যঃ | সর্ব + গতঃ | স্থাণুঃ + অচলো + অয়ং | সনাতনঃ |"]

অব্যক্তোঽয়মচিন্ত্যোঽয়মবিকার্যোঽয়মুচ্যতে ।

তস্মাদেবং বিদিত্বৈনং নানুশোচিতুমর্হসি ॥২-২৫॥

["| অব্যক্তো + অয়ম্ + অচিন্ত্যো + অয়ম্ + অবিকার্যো + অয়ম্ + উচ্যতে |
| তস্মাৎ + এবং | বিদিত্বা + এনং | ন + অনুশোচিতুম্ + অর্হসি |"]

অথ চৈনং নিত্যজাতং নিত্যং বা মন্যসে মৃতম্ ।

তথাপি ত্বং মহাবাহো নৈনং শোচিতুমর্হসি ॥২-২৬॥

["| অথ | চ + এনং | নিত্য + জাতং | নিত্যং | বা | মন্যসে | মৃতম্ |
| তথা + অপি | ত্বং | মহা + বাহো | ন + এনং | শোচিতুম্ + অর্হসি |"]

জাতস্য হি ধ্রুবো মৃত্যুর্ধ্রুবং জন্ম মৃতস্য চ ।

তস্মাদপরিহার্যেঽর্থে ন ত্বং শোচিতুমর্হসি ॥২-২৭॥

["| জাতস্য | হি | ধ্রুবো | মৃত্যুঃ + ধ্রুবং | জন্ম | মৃতস্য | চ |
| তস্মাৎ + অপরিহার্যে + অর্থে | ন | ত্বং | শোচিতুম্ + অর্হসি |"]

–: ॐ :–

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥२-२८॥

["| अव्यक्त + आदीनि | भूतानि | व्यक्त + मध्यानि | भारत |
| अव्यक्त + निधनानि + एव | तत्र | का | परिदेवना |"]

आश्चर्यवत् पश्यति कश्चिदेन- ; -माश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः ।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः श्रृणोति ; श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥२-२९॥

["| आश्चर्यवत् | पश्यति | कश्चित् + एनम् + आश्चर्यवत् + वदति | तथा + एव | च + अन्यः |
| आश्चर्यवत् + च + एनम् + अन्यः | श्रृणोति | श्रुत्वा + अपि + एनं | वेद | न | च + एव | कश्चित् |"]

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत ।
तस्मात् सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ॥२-३०॥

["| देही | नित्यम् + अवध्यो + अयं | देहे | सर्वस्य | भारत |
| तस्मात् | सर्वाणि | भूतानि | न | त्वं | शोचितुम् + अर्हसि |"]

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि ।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते ॥२-३१॥

["| स्व + धर्मम् + अपि | च + अवेक्ष्य | न | विकम्पितुम् + अर्हसि |
| धर्म्यात् + हि | युद्धात् + श्रेयो + अन्यत् | क्षत्रियस्य | न | विद्यते |"]

–: ॐ :–

অব্যক্তাদীনি ভূতানি ব্যক্তমধ্যানি ভারত ।

অব্যক্তনিধনান্যেব তত্র কা পরিদেবনা ॥২-২৮॥

["| অব্যক্ত + আদীনি | ভূতানি | ব্যক্ত + মধ্যানি | ভারত |
| অব্যক্ত + নিধনানি + এব | তত্র | কা | পরিদেবনা |"]

আশ্চর্যবৎ পশ্যতি কশ্চিদেন- ; -মাশ্চর্যবদ্‌বদতি তথৈব চান্যঃ ।

আশ্চার্যবচ্চৈনমন্যঃ শৃণোতি ; শ্রুত্বাপ্যেনং বেদ ন চৈব কশ্চিৎ ॥২-২৯॥

["| আশ্চর্যবৎ | পশ্যতি | কশ্চিৎ + এনম্ + আশ্চর্যবৎ + বদতি | তথা + এব | চ + অন্যঃ |
| আশ্চার্যবৎ + চ + এনম্ + অন্যঃ | শৃণোতি | শ্রুত্বা + অপি + এনং | বেদ | ন | চ + এব | কশ্চিৎ |"]

দেহী নিত্যমবধ্যোঽয়ং দেহে সর্বস্য ভারত ।

তস্মাৎ সর্বাণি ভূতানি ন ত্বং শোচিতুমর্হসি ॥২-৩০॥

["| দেহী | নিত্যম্ + অবধ্যো + অয়ং | দেহে | সর্বস্য | ভারত |
| তস্মাৎ | সর্বাণি | ভূতানি | ন | ত্বং | শোচিতুম্ + অর্হসি |"]

স্বধর্মমপি চাবেক্ষ্য ন বিকম্পিতুমর্হসি ।

ধর্ম্যাদ্ধি যুদ্ধাচ্ছ্রেয়োঽন্যৎ ক্ষত্রিয়স্য ন বিদ্যতে ॥২-৩১॥

["| স্ব + ধর্মম্ + অপি | চ + অবেক্ষ্য | ন | বিকম্পিতুম্ + অর্হসি |
| ধর্ম্যাৎ + হি | যুদ্ধাৎ + শ্রেয়ো + অন্যৎ | ক্ষত্রিয়স্য | ন | বিদ্যতে |"]

–: ॐ :–

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥२-३२॥

["| यदृच्छया | च + उपपन्नं | स्वर्ग + द्वारम् + अपावृतम् |
| सुखिनः | क्षत्रियाः | पार्थ | लभन्ते | युद्धम् + ईदृशम् |"]

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि ।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥२-३३॥

["| अथ | चेत् + त्वम् + इमं | धर्म्यं | संग्रामं | न | करिष्यसि |
| ततः | स्व + धर्मं | कीर्तिं | च | हित्वा | पापम् + अवाप्स्यसि |"]

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् ।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥२-३४॥

["| अकीर्तिं | च + अपि | भूतानि | कथयिष्यन्ति | ते + अव्ययाम् |
| सम्भावितस्य | च + अकीर्तिः + मरणात् + अतिरिच्यते |"]

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः ।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ॥२-३५॥

["| भयात् + रणात् + उपरतं | मंस्यन्ते | त्वां | महा + रथाः |
| येषां | च | त्वं | बहु + मतो | भूत्वा | यास्यसि | लाघवम् |"]

–: ॐ :–

যদৃচ্ছয়া চোপপন্নং স্বর্গদ্বারমপাবৃতম্ ।

সুখিনঃ ক্ষত্রিয়াঃ পার্থ লভন্তে যুদ্ধমীদৃশম্ ॥২-৩২॥

["| যদৃচ্ছয়া | চ + উপপন্নং | স্বর্গ + দ্বারম্ + অপাবৃতম্ |

| সুখিনঃ | ক্ষত্রিয়াঃ | পার্থ | লভন্তে | যুদ্ধম্ + ঈদৃশম্ |"]

অথ চেত্ত্বমিমং ধর্ম্ম্যং সংগ্রামং ন করিষ্যসি ।

ততঃ স্বধর্ম্মং কীর্ত্তিং চ হিত্বা পাপমবাপ্স্যসি ॥২-৩৩॥

["| অথ | চেৎ + ত্বম্ + ইমং | ধর্ম্ম্যং | সংগ্রামং | ন | করিষ্যসি |

| ততঃ | স্ব + ধর্ম্মং | কীর্ত্তিং | চ | হিত্বা | পাপম্ + অবাপ্স্যসি |"]

অকীর্ত্তিং চাপি ভূতানি কথয়িষ্যন্তি তেঽব্যয়াম্ ।

সম্ভাবিতস্য চাকীর্ত্তির্ম্মরণাদতিরিচ্যতে ॥২-৩৪॥

["| অকীর্ত্তিং | চ + অপি | ভূতানি | কথয়িষ্যন্তি | তে + অব্যয়াম্ |

| সম্ভাবিতস্য | চ + অকীর্ত্তিঃ + মরণাৎ + অতিরিচ্যতে |"]

ভয়াদ্রণাদুপরতং মংস্যন্তে ত্বাং মহারথাঃ ।

যেষাং চ ত্বং বহুমতো ভূত্বা যাস্যসি লাঘবম্ ॥২-৩৫॥

["| ভয়াৎ + রণাৎ + উপরতং | মংস্যন্তে | ত্বাং | মহা + রথাঃ |

| যেষাং | চ | ত্বং | বহু + মতো | ভূত্বা | যাস্যসি | লাঘবম্ |"]

–: ॐ :–

अवाच्यवादांश्च बहून् वदिष्यन्ति तवाहिताः ।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ॥२-३६॥

["| अवाच्य + वादान् + च | बहून् | वदिष्यन्ति | तव + अहिताः |
| निन्दन्तः + तव | सामर्थ्यं | ततो | दुःखतरं | नु | किम् |"]

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥२-३७॥

["| हतो | वा | प्राप्स्यसि | स्वर्गं | जित्वा | वा | भोक्ष्यसे | महीम् |
| तस्मात् + उत्तिष्ठ | कौन्तेय | युद्धाय | कृत + निश्चयः |"]

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥२-३८॥

["| सुख + दुःखे | समे | कृत्वा | लाभ + अलाभौ | जय + अजयौ |
| ततो | युद्धाय | युज्यस्व | न + एवं | पापम् + अवाप्स्यसि |"]

एषा तेऽभिहिता साङ्ख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां श्रृणु ।
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ॥२-३९॥

["| एषा | ते + अभिहिता | साङ्ख्ये | बुद्धिः + योगे | तु + इमां | श्रृणु |
| बुद्ध्या | युक्तो | यया | पार्थ | कर्म + बन्धं | प्रहास्यसि |"]

–: ॐ :–

অবাচ্যবাদাংশ্চ বহূন্ বদিষ্যন্তি তবাহিতাঃ ।
নিন্দন্তস্তব সামর্থ্যং ততো দুঃখতরং নু কিম ॥২-৩৬॥

["| অবাচ্য + বাদান্ + চ | বহূন্ | বদিষ্যন্তি | তব + অহিতাঃ |
| নিন্দন্তঃ + তব | সামর্থ্যং | ততো | দুঃখতরং | নু | কিম |"]

হতো বা প্রাপ্স্যসি স্বর্গং জিত্বা বা ভোক্ষ্যসে মহীম্ ।
তস্মাদুত্তিষ্ঠ কৌন্তেয় যুদ্ধায় কৃতনিশ্চয়ঃ ॥২-৩৭॥

["| হতো | বা | প্রাপ্স্যসি | স্বর্গং | জিত্বা | বা | ভোক্ষ্যসে | মহীম্ |
| তস্মাৎ + উত্তিষ্ঠ | কৌন্তেয় | যুদ্ধায় | কৃত + নিশ্চয়ঃ |"]

সুখদুঃখে সমে কৃত্বা লাভালাভৌ জয়াজয়ৌ ।
ততো যুদ্ধায় যুজ্যস্ব নৈবং পাপমবাপ্স্যসি ॥২-৩৮॥

["| সুখ + দুঃখে | সমে | কৃত্বা | লাভ + অলাভৌ | জয় + অজয়ৌ |
| ততো | যুদ্ধায় | যুজ্যস্ব | ন + এবং | পাপম্ + অবাপ্স্যসি |"]

এষা তেঽভিহিতা সাংখ্যে বুদ্ধির্যোগে ত্বিমাং শৃণু ।
বুদ্ধ্যা যুক্তো যয়া পার্থ কর্মবন্ধং প্রহাস্যসি ॥২-৩৯॥

["| এষা | তে + অভিহিতা | সাংখ্যে | বুদ্ধিঃ + যোগে | তু + ইমাং | শৃণু |
| বুদ্ধ্যা | যুক্তো | যয়া | পার্থ | কর্ম + বন্ধং | প্রহাস্যসি |"]

–: ॐ :–

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥२-४०॥

["| न + इह + अभिक्रम + नाशो + अस्ति | प्रत्यवायो | न | विद्यते |
| स्वल्पम् + अपि + अस्य | धर्मस्य | त्रायते | महतो | भयात् |"]

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ॥२-४१॥

["| व्यवसाय + आत्मिका | बुद्धिः + एका + इह | कुरु + नन्दन |
| बहु + शाखा | हि + अनन्ताः + च | बुद्धयो + अव्यवसायिनाम् |"]

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः ।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥२-४२॥

["| याम् + इमां | पुष्पितां | वाचं | प्रवदन्ति + अविपश्चितः |
| वेदवादरताः | पार्थ | न + अन्यत् + अस्ति + इति | वादिनः |"]

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥२-४३॥

["| काम + आत्मानः | स्वर्गपरा | जन्म + कर्म + फल + प्रदाम् |
| क्रिया + विशेष + बहुलां | भोग + ऐश्वर्य + गतिं | प्रति |"]

–: ॐ :–

নেহাভিক্রমনাশোঽস্তি প্রত্যবায়ো ন বিদ্যতে ।

স্বল্পমপ্যস্য ধর্মস্য ত্রায়তে মহতো ভয়াৎ ॥২-৪০॥

["| ন + ইহ + অভিক্রম + নাশো + অস্তি | প্রত্যবায়ো | ন | বিদ্যতে |

| স্বল্পম্ + অপি + অস্য | ধর্মস্য | ত্রায়তে | মহতো | ভয়াৎ |"]

ব্যবসায়াত্মিকা বুদ্ধিরেকেহ কুরুনন্দন ।

বহুশাখা হ্যনন্তাশ্চ বুদ্ধয়োঽব্যবসায়িনাম্ ॥২-৪১॥

["| ব্যবসায় + আত্মিকা | বুদ্ধিঃ + একা + ইহ | কুরু + নন্দন |

| বহু + শাখা | হি + অনন্তাঃ + চ | বুদ্ধয়ো + অব্যবসায়িনাম্ |"]

যামিমাং পুষ্পিতাং বাচং প্রবদন্ত্যবিপশ্চিতঃ ।

বেদবাদরতাঃ পার্থ নান্যদস্তীতি বাদিনঃ ॥২-৪২॥

["| যাম্ + ইমাং | পুষ্পিতাং | বাচং | প্রবদন্তি + অবিপশ্চিতঃ |

| বেদবাদরতাঃ | পার্থ | ন + অন্যৎ + অস্তি + ইতি | বাদিনঃ |"]

কামাত্মানঃ স্বর্গপরা জন্মকর্মফলপ্রদাম্ ।

ক্রিয়াবিশেষবহুলাং ভোগৈশ্বর্যগতিং প্রতি ॥২-৪৩॥

["| কাম + আত্মানঃ | স্বর্গপরা | জন্ম + কর্ম + ফল + প্রদাম্ |

| ক্রিয়া + বিশেষ + বহুলাং | ভোগ + ঐশ্বর্য + গতিং | প্রতি |"]

–: ॐ :–

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् ।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥२-४४॥

["| भोग + ऐश्वर्य + प्रसक्तानां | तया + अपहृत + चेतसाम् |
| व्यवसाय + आत्मिका | बुद्धिः | समाधौ | न | विधीयते |"]

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ॥२-४५॥

["| त्रै + गुण्य + विषया | वेदा | निः + त्रै + गुण्यो | भव + अर्जुन |
| निः + द्वन्द्वो | नित्य + सत्त्व + स्थो | निः + योग + क्षेम | आत्मवान् |"]

यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्प्लुतोदके ।
तावान् सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥२-४६॥

["| यावान् + अर्थ | उदपाने | सर्वतः | सम्प्लुत + उदके |
| तावान् | सर्वेषु | वेदेषु | ब्राह्मणस्य | विजानतः |"]

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥२-४७॥

["| कर्मणि + एव + अधिकारः + ते | मा | फलेषु | कदाचन |
| मा | कर्म + फल + हेतुः + भूः + मा | ते | संगो + अस्तु + अकर्मणि |"]

–: ॐ :–

ভোগৈশ্বর্যপ্রসক্তানাং তয়াপহৃতচেতসাম্ ।
ব্যবসায়াত্মিকা বুদ্ধিঃ সমাধৌ ন বিধীয়তে ॥২-৪৪॥

["| ভোগ + ঐশ্বর্য + প্রসক্তানাং | তয়া + অপহৃত + চেতসাম্ |
| ব্যবসায় + আত্মিকা | বুদ্ধিঃ | সমাধৌ | ন | বিধীয়তে |"]

ত্রৈগুণ্যবিষয়া বেদা নিস্ত্রৈগুণ্যো ভবার্জুন ।
নির্দ্বন্দ্বো নিত্যসত্ত্বস্থো নির্যোগক্ষেম আত্মবান্ ॥২-৪৫॥

["| ত্রৈ + গুণ্য + বিষয়া | বেদা | নিঃ + ত্রৈ + গুণ্যো | ভব + অর্জুন |
| নিঃ + দ্বন্দ্বো | নিত্য + সত্ত্ব + স্থো | নিঃ + যোগ + ক্ষেম | আত্মবান্ |"]

যবানর্থ উদপানে সর্বতঃ সম্প্লুতোদকে ।
তাবান্ সর্বেষু বেদেষু ব্রাহ্মণস্য বিজানতঃ ॥২-৪৬॥

["| যবান্ + অর্থ | উদপানে | সর্বতঃ | সম্প্লুত + উদকে |
| তাবান্ | সর্বেষু | বেদেষু | ব্রাহ্মণস্য | বিজানতঃ |"]

কর্মণ্যেবাধিকারস্তে মা ফলেষু কদাচন ।
মা কর্মফলহেতুর্ভূর্মা তে সঙ্গোঽস্ত্বকর্মণি ॥২-৪৭॥

["| কর্মণি + এব + অধিকারঃ + তে | মা | ফলেষু | কদাচন |
| মা | কর্ম + ফল + হেতুঃ + ভূঃ + মা | তে | সঙ্গো + অস্তু + অকর্মণি |"]

–: ॐ :–

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥२-४८॥

["| योग + स्थः | कुरु | कर्माणि | सङ्गं | त्यक्त्वा | धनञ्जय |
| सिद्धि + असिद्ध्योः | समो | भूत्वा | समत्वं | योग | उच्यते |"]

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय ।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥२-४९॥

["| दूरेण | हि + अवरं | कर्म | बुद्धि + योगात् + धनञ्जय |
| बुद्धौ | शरणम् + अन्विच्छ | कृपणाः | फल + हेतवः |"]

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥२-५०॥

["| बुद्धि + युक्तो | जहाति + इह | उभे | सुकृत + दुष्कृते |
| तस्मात् + योगाय | युज्यस्व | योगः | कर्मसु | कौशलम् |"]

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥२-५१॥

["| कर्मजं | बुद्धि + युक्ता | हि | फलं | त्यक्त्वा | मनीषिणः |
| जन्म + बन्ध + विनिर्मुक्ताः | पदं | गच्छन्ति + अनामयम् |"]

–: ॐ :–

যোগস্থঃ কুরু কর্মাণি সঙ্গং ত্যক্ত্বা ধনঞ্জয় ।

সিদ্ধ্যসিদ্ধ্যোঃ সমো ভূত্বা সমত্বং যোগ উচ্যতে ॥২-৪৮॥

["| যোগ + স্থঃ | কুরু | কর্মাণি | সঙ্গং | ত্যক্ত্বা | ধনঞ্জয় |
| সিদ্ধি + অসিদ্ধ্যোঃ | সমো | ভূত্বা | সমত্বং | যোগ | উচ্যতে |"]

দূরেণ হ্যবরং কর্ম বুদ্ধিযোগাদ্ধনঞ্জয় ।

বুদ্ধৌ শরণমন্বিচ্ছ কৃপণাঃ ফলহেতবঃ ॥২-৪৯॥

["| দূরেণ | হি + অবরং | কর্ম | বুদ্ধি + যোগাৎ + ধনঞ্জয় |
| বুদ্ধৌ | শরণম্ + অন্বিচ্ছ | কৃপণাঃ | ফল + হেতবঃ |"]

বুদ্ধিযুক্তো জহাতীহ উভে সুকৃতদুষ্কৃতে ।

তস্মাদ্‌যোগায় যুজ্যস্ব যোগঃ কর্মসু কৌশলম্ ॥২-৫০॥

["| বুদ্ধি + যুক্তো | জহাতি + ইহ | উভে | সুকৃত + দুষ্কৃতে |
| তস্মাৎ + যোগায় | যুজ্যস্ব | যোগঃ | কর্মসু | কৌশলম্ |"]

কর্মজং বুদ্ধিযুক্তা হি ফলং ত্যক্ত্বা মনীষিণঃ ।

জন্মবন্ধবিনির্মুক্তাঃ পদং গচ্ছন্ত্যনাময়ম্ ॥২-৫১॥

["| কর্মজং | বুদ্ধি + যুক্তা | হি | ফলং | ত্যক্ত্বা | মনীষিণঃ |
| জন্ম + বন্ধ + বিনির্মুক্তাঃ | পদং | গচ্ছন্তি + অনাময়ম্ |"]

–: ॐ :–

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥२-५२॥

["| यदा | ते | मोह + कलिलं | बुद्धिः + व्यतितरिष्यति |
| तदा | गन्तासि | निर्वेदं | श्रोतव्यस्य | श्रुतस्य | च |"]

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥२-५३॥

["| श्रुति + विप्रतिपन्ना | ते | यदा | स्थास्यति | निश्चला |
| समाधौ + अचला | बुद्धिः + तदा | योगम् + अवाप्स्यसि |"]

अर्जुन उवाच :—
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥२-५४॥

["| अर्जुन + उवाच | स्थित + प्रज्ञस्य | का | भाषा | समाधिस्थस्य | केशव |
| स्थित + धीः | किं | प्रभाषेत | किम् + आसीत | व्रजेत | किम् |"]

–: ॐ :–

যদা তে মোহকলিলং বুদ্ধির্ব্যতিতরিষ্যতি ।

তদা গন্তাসি নির্বেদং শ্রোতব্যস্য শ্রুতস্য চ ॥২-৫২॥

["| যদা | তে | মোহ + কলিলং | বুদ্ধিঃ + ব্যতিতরিষ্যতি |
| তদা | গন্তাসি | নির্বেদং | শ্রোতব্যস্য | শ্রুতস্য | চ |"]

শ্রুতিবিপ্রতিপন্না তে যদা স্থাস্যতি নিশ্চলা ।

সমাধাবচলা বুদ্ধিস্তদা যোগমবাপ্স্যসি ॥২-৫৩॥

["| শ্রুতি + বিপ্রতিপন্না | তে | যদা | স্থাস্যতি | নিশ্চলা |
| সমাধৌ + অচলা | বুদ্ধিঃ + তদা | যোগম্ + অবাপ্স্যসি |"]

অর্জুন উবাচ :—

স্থিতপ্রজ্ঞস্য কা ভাষা সমাধিস্থস্য কেশব ।

স্থিতধীঃ কিং প্রভাষেত কিমাসীত ব্রজেত কিম্ ॥২-৫৪॥

["| অর্জুন + উবাচ | স্থিত + প্রজ্ঞস্য | কা | ভাষা | সমাধিস্থস্য | কেশব |
| স্থিত + ধীঃ | কিং | প্রভাষেত | কিম্ + আসীত | ব্রজেত | কিম্ |"]

–: ॐ :–

श्रीभगवानुवाच :—

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥२-५५॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | प्रजहाति | यदा | कामान् | सर्वान् | पार्थ | मनो + गतान् |
| आत्मनि + एव + आत्मना | तुष्टः | स्थित + प्रज्ञः + तदा + उच्यते |"]

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥२-५६॥

["| दुःखेषु + अनुद्विग्न + मनाः | सुखेषु | विगत + स्पृहः |
| वीत + राग + भय + क्रोधः | स्थित + धीः + मुनिः + उच्यते |"]

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत् प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥२-५७॥

["| यः | सर्वत्र + अनभिस्नेहः + तत् + त्तत् | प्राप्य | शुभ + अशुभम् |
| न + अभिनन्दति | न | द्वेष्टि | तस्य | प्रज्ञा | प्रतिष्ठिता |"]

–: ॐ :–

শ্রীভগবানুবাচ :—

প্রজহাতি যদা কামান্ সর্বান্ পার্থ মনোগতান্ ।

আত্মন্যেবাত্মনা তুষ্টঃ স্থিতপ্রজ্ঞস্তদোচ্যতে ॥২-৫৫॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | প্রজহাতি | যদা | কামান্ | সর্বান্ | পার্থ | মনো + গতান্ |
| আত্মনি + এব + আত্মনা | তুষ্টঃ | স্থিত + প্রজ্ঞঃ + তদা + উচ্যতে |"]

দুঃখেষ্বনুদ্বিগ্নমনাঃ সুখেষু বিগতস্পৃহঃ ।

বীতরাগভয়ক্রোধঃ স্থিতধীর্মুনিরুচ্যতে ॥২-৫৬॥

["| দুঃখেষু + অনুদ্বিগ্ন + মনাঃ | সুখেষু | বিগত + স্পৃহঃ |
| বীত + রাগ + ভয় + ক্রোধঃ | স্থিত + ধীঃ + র্মুনিঃ + উচ্যতে |"]

যঃ সর্বত্রানভিস্নেহস্তত্তৎ প্রাপ্য শুভাশুভম্ ।

নাভিনন্দতি ন দ্বেষ্টি তস্য প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা ॥২-৫৭॥

["| যঃ | সর্বত্র + অনভিস্নেহঃ + তৎ + তৎ | প্রাপ্য | শুভ + অশুভম্ |
| ন + অভিনন্দতি | ন | দ্বেষ্টি | তস্য | প্রজ্ঞা | প্রতিষ্ঠিতা |"]

–: ॐ :–

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥२-५८॥

["| यदा | संहरते | च + अयं | कूर्मो + अङ्गानि + इव | सर्वशः |
| इन्द्रियाणि + इन्द्रिय + अर्थेभ्यः + तस्य | प्रज्ञा | प्रतिष्ठिता |"]

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥२-५९॥

["| विषया | विनिवर्तन्ते | निः + आहारस्य | देहिनः |
| रस + वर्जं | रसो + अपि + अस्य | परं | दृष्ट्वा | निवर्तते |"]

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥२-६०॥

["| यततो | हि + अपि | कौन्तेय | पुरुषस्य | विपश्चितः |
| इन्द्रियाणि | प्रमाथीनि | हरन्ति | प्रसभं | मनः |"]

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥२-६१॥

["| तानि | सर्वाणि | संयम्य | युक्त | आसीत | मत्परः |
| वशे | हि | यस्य + इन्द्रियाणि | तस्य | प्रज्ञा | प्रतिष्ठिता |"]

–: ॐ :–

যদা সংহরতে চায়ং কূর্ম্মোঽঙ্গানীব সর্বশঃ ।
ইন্দ্রিয়াণীন্দ্রিয়ার্থেভ্যস্তস্য প্রজ্ঞা প্রতিষ্টিতা ॥২-৫৮॥

["| যদা | সংহরতে | চ + অয়ং | কূর্ম্মো + অঙ্গানি + ইব | সর্বশঃ |
| ইন্দ্রিয়াণি + ইন্দ্রিয় + অর্থেভ্যঃ + তস্য | প্রজ্ঞা | প্রতিষ্টিতা |"]

বিষয়া বিনিবর্তন্তে নিরাহারস্য দেহিনঃ ।
রসবর্জং রসোঽপ্যস্য পরং দৃষ্ট্বা নিবর্ততে ॥২-৫৯॥

["| বিষয়া | বিনিবর্তন্তে | নিঃ + আহারস্য | দেহিনঃ |
| রস + বর্জং | রসো + অপি + অস্য | পরং | দৃষ্ট্বা | নিবর্ততে |"]

যততো হ্যপি কৌন্তেয় পুরুষস্য বিপশ্চিতঃ ।
ইন্দ্রিয়াণি প্রমাথীনি হরন্তি প্রসভং মনঃ ॥২-৬০॥

["| যততো | হি + অপি | কৌন্তেয় | পুরুষস্য | বিপশ্চিতঃ |
| ইন্দ্রিয়াণি | প্রমাথীনি | হরন্তি | প্রসভং | মনঃ |"]

তানি সর্বাণি সংযম্য যুক্ত আসীত মৎপরঃ ।
বশে হি যস্যেন্দ্রিয়াণি তস্য প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা ॥২-৬১॥

["| তানি | সর্বাণি | সংযম্য | যুক্ত | আসীত | মৎপরঃ |
| বশে | হি | যস্য + ইন্দ্রিয়াণি | তস্য | প্রজ্ঞা | প্রতিষ্ঠিতা |"]

–: ॐ :–

ध्यायतो विषयान् पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात् सञ्जायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते ॥२-६२॥

["| ध्यायतो | विषयान् | पुंसः | सङ्गः + तेषु + उपजायते |
| सङ्गात् | सञ्जायते | कामः | कामात् | क्रोधो + अभिजायते |"]

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ॥२-६३॥

["| क्रोधात् + भवति | सम्मोहः | सम्मोहात् | स्मृति + विभ्रमः |
| स्मृति + भ्रंशात् + बुद्धि + नाशो | बुद्धि + नाशात् | प्रणश्यति |"]

रागद्वेषविमुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥२-६४॥

["| राग + द्वेष + विमुक्तैः + तु | विषयान् + इन्द्रियैः + चरन् |
| आत्म + वश्यैः + विधेय + आत्मा | प्रसादम् + अधिगच्छति |"]

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसोह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥२-६५॥

["| प्रसादे | सर्व + दुःखानां | हानिः + अस्य + उपजायते |
| प्रसन्न + चेतसो + हि + आशु | बुद्धिः | परि + अवतिष्ठते |"]

–: ॐ :–

ধ্যায়তো বিষয়ান্ পুংসঃ সঙ্গস্তেষূপজায়তে ।

সঙ্গাৎ সঞ্জায়তে কামঃ কামাৎ ক্রোধোঽভিজায়তে ॥২-৬২॥

["| ধ্যায়তো | বিষয়ান্ | পুংসঃ | সঙ্গঃ + তেষু + উপজায়তে |
| সঙ্গাৎ | সঞ্জায়তে | কামঃ | কামাৎ | ক্রোধো + অভিজায়তে |"]

ক্রোধাদ্ভবতি সম্মোহঃ সম্মোহাৎ স্মৃতিবিভ্রমঃ ।

স্মৃতিভ্রংশাদ্বুদ্ধিনাশো বুদ্ধিনাশাৎ প্রণশ্যতি ॥২-৬৩॥

["| ক্রোধাৎ + ভবতি | সম্মোহঃ | সম্মোহাৎ | স্মৃতি + বিভ্রমঃ |
| স্মৃতি + ভ্রংশাৎ + বুদ্ধি + নাশো | বুদ্ধি + নাশাৎ | প্রণশ্যতি |"]

রাগদ্বেষবিমুক্তৈস্তু বিষয়ানিন্দ্রিয়ৈশ্চরন্ ।

আত্মবশ্যৈর্বিধেয়াত্মা প্রসাদমধিগচ্ছতি ॥২-৬৪॥

["| রাগ + দ্বেষ + বিমুক্তৈঃ + তু | বিষয়ান্ + ইন্দ্রিয়ৈঃ + চরন্ |
| আত্ম + বশ্যৈঃ + বিধেয় + আত্মা | প্রসাদম্ + অধিগচ্ছতি |"]

প্রসাদে সর্বদুঃখানাং হানিরস্যোপজায়তে ।

প্রসন্নচেতসোহ্যাশু বুদ্ধিঃ পর্যবতিষ্ঠতে ॥২-৬৫॥

["| প্রসাদে | সর্ব + দুঃখানাং | হানিঃ + অস্য + উপজায়তে |
| প্রসন্ন + চেতসো + হি + আশু | বুদ্ধিঃ | পরি + অবতিষ্ঠতে |"]

–: ॐ :–

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥२-६६॥

["| न + अस्ति | बुद्धिः + अयुक्तस्य | न | च + अयुक्तस्य | भावना |
| न | च + अभावयतः | शान्तिः + अशान्तस्य | कुतः | सुखम् |"]

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते ।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥२-६७॥

["| इन्द्रियाणां | हि | चरतां | यत् + मनो + अनुविधीयते |
| तत् + अस्य | हरति | प्रज्ञां | वायुः + नावम् + इव + अम्भसि |"]

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥२-६८॥

["| तस्मात् + यस्य | महा + बाहो | निगृहीतानि | सर्वशः |
| इन्द्रियाणि + इन्द्रिय + अर्थेभ्यः + तस्य | प्रज्ञा | प्रतिष्ठिता |"]

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥२-६९॥

["| या | निशा | सर्व + भूतानां | तस्यां | जागर्ति | संयमी |
| यस्यां | जाग्रति | भूतानि | सा | निशा | पश्यतो | मुनेः |"]

–: ॐ :–

নাস্তি বুদ্ধিরযুক্তস্য ন চাযুক্তস্য ভাবনা ।

ন চাভাবয়তঃ শান্তিরশান্তস্য কুতঃ সুখম্ ॥২-৬৬॥

["| ন + অস্তি | বুদ্ধিঃ + অযুক্তস্য | ন | চ + অযুক্তস্য | ভাবনা |
| ন | চ + অভাবয়তঃ | শান্তিঃ + অশান্তস্য | কুতঃ | সুখম্ |"]

ইন্দ্রিয়াণাং হি চরতাং যন্মনোঽনুবিধীয়তে ।

তদস্য হরতি প্রজ্ঞাং বায়ুর্নাবমিবাম্ভসি ॥২-৬৭॥

["| ইন্দ্রিয়াণাং | হি | চরতাং | যৎ + মনো + অনুবিধীয়তে |
| তৎ + অস্য | হরতি | প্রজ্ঞাং | বায়ুঃ + নাবম্ + ইব + অম্ভসি |"]

তস্মাদ্‌যস্য মহাবাহো নিগৃহীতানি সর্বশঃ ।

ইন্দ্রিয়াণীন্দ্রিয়ার্থেভ্যস্তস্য প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা ॥২-৬৮॥

["| তস্মাৎ + যস্য | মহা + বাহো | নিগৃহীতানি | সর্বশঃ |
| ইন্দ্রিয়াণি + ইন্দ্রিয় + অর্থেভ্যঃ + তস্য | প্রজ্ঞা | প্রতিষ্ঠিতা |"]

যা নিশা সর্বভূতানাং তস্যাং জাগর্তি সংযমী ।

যস্যাং জাগ্রতি ভূতানি সা নিশা পশ্যতো মুনেঃ ॥২-৬৯॥

["| যা | নিশা | সর্ব + ভূতানাং | তস্যাং | জাগর্তি | সংযমী |
| যস্যাং | জাগ্রতি | ভূতানি | সা | নিশা | পশ্যতো | মুনেঃ |"]

–: ॐ :–

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥२-६९॥

["| या | निशा | सर्व + भूतानां | तस्यां | जागर्ति | संयमी |
| यस्यां | जाग्रति | भूतानि | सा | निशा | पश्यतो | मुनेः |"]

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं ; समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत् कामा यं प्रविशन्ति सर्वे ; स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥२-७०॥

["| आपूर्यमाणम् + अचल + प्रतिष्ठं | समुद्रम् + आपः | प्रविशन्ति | यद्वत् |
| तद्वत् | कामा | यं | प्रविशन्ति | सर्वे | स | शान्तिम् + आप्नोति | न | काम + कामी |"]

विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति ॥२-७१॥

["| विहाय | कामान् | यः | सर्वान् | पुमान् + चरति | निः + स्पृहः |
| निर्ममो | निः + अहंकारः | स | शान्तिम् + अधिगच्छति |"]

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥२-७२॥

["| एषा | ब्राह्मी | स्थितिः | पार्थ | न + एनां | प्राप्य | विमुह्यति |
| स्थित्वा + अस्याम् + अन्त + काले + अपि | ब्रह्म + निर्वाणम् + ऋच्छति |"]

–: ॐ :–

যা নিশা সর্বভূতানাং তস্যাং জাগর্তি সংযমী ।
যস্যাং জাগ্রতি ভূতানি সা নিশা পশ্যতো মুনেঃ ॥২-৬৯॥

["| যা | নিশা | সর্ব + ভূতানাং | তস্যাং | জাগর্তি | সংযমী |
| যস্যাং | জাগ্রতি | ভূতানি | সা | নিশা | পশ্যতো | মুনেঃ |"]

আপূর্যমাণমচলপ্রতিষ্ঠং ; সমুদ্রমাপঃ প্রবিশন্তি যদ্বৎ ।
তদ্বৎ কামা যং প্রবিশন্তি সর্বে ; স শান্তিমাপ্নোতি ন কামকামী ॥২-৭০॥

["| আপূর্যমাণম্ + অচল + প্রতিষ্ঠং | সমুদ্রমম্ + আপঃ | প্রবিশন্তি | যদ্বৎ |
| তদ্বৎ | কামা | যং | প্রবিশন্তি | সর্বে | স | শান্তিম্ + আপ্নোতি | ন | কাম + কামী |"]

বিহায় কামান্ যঃ সর্বান্ পুমাংশ্চরতি নিঃস্পৃহঃ ।
নির্মমো নিরহঙ্কারঃ স শান্তিমধিগচ্ছতি ॥২-৭১॥

["| বিহায় | কামান্ | যঃ | সর্বান্ | পুমান্ + চরতি | নিঃ + স্পৃহঃ |
| নির্মমো | নিঃ + অহঙ্কারঃ | স | শান্তিম্ + অধিগচ্ছতি |"]

এষা ব্রাহ্মী স্থিতিঃ পার্থ নৈনাং প্রাপ্য বিমুহ্যতি ।
স্থিত্বাস্যামন্তকালেঽপি ব্রহ্মনির্বাণমৃচ্ছতি ॥২-৭২॥

["| এষা | ব্রাহ্মী | স্থিতিঃ | পার্থ | ন + এনাং | প্রাপ্য | বিমুহ্যতি |
| স্থিত্বা + অস্যাম্ + অন্ত + কালে + অপি | ব্রহ্ম + নির্বাণম্ + ঋচ্ছতি |"]

–: ॐ :–

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे सांख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः॥२॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | सांख्य + योगो | नाम | द्वितीयो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে সাংখ্যযোগো নাম দ্বিতীয়োঽধ্যায়ঃ ॥২॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | সাংখ্য + যোগো | নাম | দ্বিতীয়ো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

तृतीयोऽध्यायः
कर्मयोग

अर्जुन उवाच :—
ज्यायसी चेत् कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन ।
तत् किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ॥३-०१॥

["| अर्जुन | उवाच | ज्यायसी | चेत् | कर्मणः + ते | मता | बुद्धिः + जनार्दन |
| तत् | किं | कर्मणि | घोरे | मां | नियोजयसि | केशव |"]

व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे ।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ॥३-०२॥

["| व्यामिश्रेण + इव | वाक्येन | बुद्धिं | मोहयसि + इव | मे |
| तत् + एकं | वद | निश्चित्य | येन | श्रेयो + अहम् + आप्नुयाम् |"]

–: ওঁ :–

তৃতীয়োঽধ্যায়ঃ
কর্ম্মযোগ

অর্জুন উবাচ :—

জ্যায়সী চেৎ কর্ম্মণস্তে মতা বুদ্ধির্জনার্দন ।

তৎ কিং কর্ম্মণি ঘোরে মাং নিয়োজয়সি কেশব ॥৩-০১॥

["| অর্জুন | উবাচ | জ্যায়সী | চেৎ | কর্ম্মণঃ + তে | মতা | বুদ্ধিঃ + জনার্দন |
| তৎ | কিং | কর্ম্মণি | ঘোরে | মাং | নিয়োজয়সি | কেশব |"]

ব্যামিশ্রেণেব বাক্যেন বুদ্ধিং মোহয়সীব মে ।

তদেকং বদ নিশ্চিত্য যেন শ্রেয়োঽহমাপ্নুয়াম্ ॥৩-০২॥

["| ব্যামিশ্রেণ + ইব | বাক্যেন | বুদ্ধিং | মোহয়সি + ইব | মে |
| তৎ + একং | বদ | নিশ্চিত্য | যেন | শ্রেয়ো + অহম্ + আপ্নুয়াম্ |"]

–: ॐ :–

श्रीभगवानुवाच :—
लोकेऽस्मिन् द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ ।
ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥३-०३॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | लोके + अस्मिन् | द्वि + विधा | निष्ठा | पुरा | प्रोक्ता | मया + अनघ |
| ज्ञान + योगेन | सांख्यानां | कर्म + योगेन | योगिनाम् |"]

न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते ।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥३-०४॥

["| न | कर्मणाम् + अनारम्भात् + नैष्कर्म्यं | पुरुषो + अश्नुते |
| न | च | संन्यसनात् + एव | सिद्धिं | समधिगच्छति |"]

न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥३-०५॥

["| न | हि | कश्चित् | क्षणम् + अपि | जातु | तिष्ठति + अकर्म + कृत् |
| कार्यते | हि + अवशः | कर्म | सर्वः | प्रकृति + जैः + गुणैः |"]

–: ওঁ :–

শ্রীভগবানুবাচ :—

লোকেঽস্মিন্ দ্বিবিধা নিষ্ঠা পুরা প্রোক্তা ময়ানঘ ।

জ্ঞানযোগেন সাংখ্যানাং কর্মযোগেন যোগিনাম্ ॥৩-০৩॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | লোকে + অস্মিন্ | দ্বি + বিধা | নিষ্ঠা | পুরা | প্রোক্তা | ময়া + অনঘ |
| জ্ঞান + যোগেন | সাংখ্যানাং | কর্ম + যোগেন | যোগিনাম্ |"]

ন কর্মণামনারম্ভান্নৈষ্কর্ম্যং পুরুষোঽশ্নুতে ।

ন চ সন্ন্যসনাদেব সিদ্ধিং সমধিগচ্ছতি ॥৩-০৪॥

["| ন | কর্মণাম্ + অনারম্ভাৎ + নৈষ্কর্ম্যং | পুরুষো + অশ্নুতে |
| ন | চ | সন্ন্যসনাৎ + এব | সিদ্ধিং | সমধিগচ্ছতি |"]

ন হি কশ্চিৎ ক্ষণমপি জাতু তিষ্ঠত্যকর্মকৃৎ ।

কার্যতে হ্যবশঃ কর্ম সর্বঃ প্রকৃতিজৈর্গুণৈঃ ॥৩-০৫॥

["| ন | হি | কশ্চিৎ | ক্ষণম্ + অপি | জাতু | তিষ্ঠতি + অকর্ম + কৃৎ |
| কার্যতে | হি + অবশঃ | কর্ম | সর্বঃ | প্রকৃতি + জৈঃ + গুণৈঃ |"]

–: ॐ :–

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान् विमूढ़ात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥३-०६॥

["| कर्म + इन्द्रियाणि | संयम्य | य | आस्ते | मनसा | स्मरन् |
| इन्द्रिय + अर्थान् | विमूढ़ + आत्मा | मिथ्या + आचारः | स | उच्यते |"]

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन ।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥३-०७॥

["| यः + तु + इन्द्रियाणि | मनसा | नियम्य + आरभते + अर्जुन |
| कर्म + इन्द्रियैः | कर्म + योगम् + असक्तः | स | विशिष्यते |"]

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥३-०८॥

["| नियतं | कुरु | कर्म | त्वं | कर्म | ज्यायो | हि + अकर्मणः |
| शरीर + यात्रा + अपि | च | ते | न | प्रसिद्ध्येत् + अकर्मणः |"]

यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥३-०९॥

["| यज्ञ + अर्थात् | कर्मणो + अन्यत्र | लोको + अयं | कर्म + बन्धनः |
| तत् + अर्थं | कर्म | कौन्तेय | मुक्त + सङ्गः | समाचर |"]

–: ॐ :–

কর্মেন্দ্রিয়াণি সংযম্য য আস্তে মনসা স্মরন্ ।

ইন্দ্রিয়ার্থান্ বিমূঢ়াত্মা মিথ্যাচারঃ স উচ্যতে ॥৩-০৬॥

["| কর্ম + ইন্দ্রিয়াণি | সংযম্য | য | আস্তে | মনসা | স্মরন্ |
| ইন্দ্রিয় + অর্থান্ | বিমূঢ় + আত্মা | মিথ্যা + আচারঃ | স | উচ্যতে |"]

যস্ত্বিন্দ্রিয়াণি মনসা নিয়ম্যারভতেঽর্জুন ।

কর্মেন্দ্রিয়ৈঃ কর্মযোগমসক্তঃ স বিশিষ্যতে ॥৩-০৭॥

["| যঃ + তু + ইন্দ্রিয়াণি | মনসা | নিয়ম্য + আরভতে + অর্জুন |
| কর্ম + ইন্দ্রিয়ৈঃ | কর্ম + যোগম্ + অসক্তঃ | স | বিশিষ্যতে |"]

নিয়তং কুরু কর্ম ত্বং কর্ম জ্যায়ো হ্যকর্মণঃ ।

শরীরযাত্রাপি চ তে ন প্রসিদ্ধ্যেদকর্মণঃ ॥৩-০৮॥

["| নিয়তং | কুরু | কর্ম | ত্বং | কর্ম | জ্যায়ো | হি + অকর্মণঃ |
| শরীর + যাত্রা + অপি | চ | তে | ন | প্রসিদ্ধ্যেৎ + অকর্মণঃ |"]

যজ্ঞার্থাৎ কর্মণোঽন্যত্র লোকোঽয়ং কর্মবন্ধনঃ ।

তদর্থং কর্ম কৌন্তেয় মুক্তসঙ্গঃ সমাচর ॥৩-০৯॥

["| যজ্ঞ + অর্থাৎ | কর্মণো + অন্যত্র | লোকো + অয়ং | কর্ম + বন্ধনঃ |
| তৎ + অর্থং | কর্ম | কৌন্তেয় | মুক্ত + সঙ্গঃ | সমাচর |"]

–: ॐ :–

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥३-१०॥

["| सह + यज्ञाः | प्रजाः | सृष्ट्वा | पुरा + उवाच | प्रजा + पतिः |
| अनेन | प्रसविष्यध्वम् + एष | वो + अस्तु + इष्ट + कामधुक् |"]

देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥३-११॥

["| देवान् | भावयता + अनेन | ते | देवा | भावयन्तु | वः |
| परस्परं | भावयन्तः | श्रेयः | परम् + अवाप्स्यथ |"]

इष्टान् भोगान् हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः ।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः ॥३-१२॥

["| इष्टान् | भोगान् | हि | वो | देवा | दास्यन्ते | यज्ञ + भाविताः |
| तैः + दत्तान् + अप्रदाय + एभ्यो | यो | भुङ्क्ते | स्तेन | एव | सः |"]

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥३-१३॥

["| यज्ञ + शिष्ट + अशिनः | सन्तो | मुच्यन्ते | सर्व + किल्बिषैः |
| भुञ्जते | ते | तु + अघं | पापा | ये | पचन्ति + आत्म + कारणात् |"]

–: ॐ :–

সহযজ্ঞাঃ প্রজাঃ সৃষ্ট্বা পুরোবাচ প্রজাপতিঃ ।

অনেন প্রসবিষ্যধ্বমেষ বোঽস্ত্বিষ্টকামধুক্ ॥৩-১০॥

["| সহ + যজ্ঞাঃ | প্রজাঃ | সৃষ্ট্বা | পুরা + উবাচ | প্রজা + পতিঃ |
| অনেন | প্রসবিষ্যধ্বম্ + এষ | বো + অস্তু + ইষ্ট + কামধুক্ |"]

দেবান্ ভাবয়তানেন তে দেবা ভাবয়ন্তু বঃ ।

পরস্পরং ভাবয়ন্তঃ শ্রেয়ঃ পরমবাপ্স্যথ ॥৩-১১॥

["| দেবান্ | ভাবয়তা + অনেন | তে | দেবা | ভাবয়ন্তু | বঃ |
| পরস্পরং | ভাবয়ন্তঃ | শ্রেয়ঃ | পরম্ + অবাপ্স্যথ |"]

ইষ্টান্ ভোগান্ হি বো দেবা দাস্যন্তে যজ্ঞভাবিতাঃ ।

তৈর্দত্তানপ্রদায়ৈভ্যো যো ভুঙ্‌ক্তে স্তেন এব সঃ ॥৩-১২॥

["| ইষ্টান্ | ভোগান্ | হি | বো | দেবা | দাস্যন্তে | যজ্ঞ + ভাবিতাঃ |
| তৈঃ + দত্তান্ + অপ্রদায় + এভ্যো | যো | ভুঙ্‌ক্তে | স্তেন | এব | সঃ |"]

যজ্ঞশিষ্টাশিনঃ সন্তো মুচ্যন্তে সর্বকিল্বিষৈঃ ।

ভুঞ্জতে তে ত্বঘং পাপা যে পচন্ত্যাত্মকারণাৎ ॥৩-১৩॥

["| যজ্ঞ + শিষ্ট + অশিনঃ | সন্তো | মুচ্যন্তে | সর্ব + কিল্বিষৈঃ |
| ভুঞ্জতে | তে | তু + অঘং | পাপা | যে | পচন্তি + আত্ম + কারণাৎ |"]

–: ॐ :–

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः ।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥३-१४॥

["| अन्नात् + भवन्ति | भूतानि | पर्जन्यात् + अन्न + सम्भवः |
| यज्ञात् + भवति | पर्जन्यो | यज्ञः | कर्म + समुद्भवः |"]

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।
तस्मात् सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥३-१५॥

["| कर्म | ब्रह्म + उद्भवं | विद्धि | ब्रह्म + अक्षर + समुद्भवम् |
| तस्मात् | सर्व + गतं | ब्रह्म | नित्यं | यज्ञे | प्रतिष्ठितम् |"]

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः ।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ॥३-१६॥

["| एवं | प्रवर्तितं | चक्रं | न + अनुवर्तयति + इह | यः |
| अघ + आयुः + इन्द्रिय + आरामो | मोघं | पार्थ | स | जीवति |"]

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः ।
आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥३-१७॥

["| यः + तु + आत्म + रतिः + एव | स्यात् + आत्म + तृप्तः + च | मानवः |
| आत्मनि + एव | च | सन्तुष्टः + तस्य | कार्यं | न | विद्यते |"]

–: ॐ :–

অন্নাদ্ভবন্তি ভূতানি পর্জন্যাদন্নসম্ভবঃ ।

যজ্ঞাদ্ভবতি পর্জন্যো যজ্ঞঃ কর্মসমুদ্ভবঃ ॥৩-১৪॥

["| অন্নাৎ + ভবন্তি | ভূতানি | পর্জন্যাৎ + অন্ন + সম্ভবঃ |
| যজ্ঞাৎ + ভবতি | পর্জন্যো | যজ্ঞঃ | কর্ম + সমুদ্ভবঃ |"]

কর্ম ব্রহ্মোদ্ভবং বিদ্ধি ব্রহ্মাক্ষরসমুদ্ভবম্ ।

তস্মাৎ সর্বগতং ব্রহ্ম নিত্যং যজ্ঞে প্রতিষ্ঠিতম্ ॥৩-১৫॥

["| কর্ম | ব্রহ্ম + উদ্ভবং | বিদ্ধি | ব্রহ্ম + অক্ষর + সমুদ্ভবম্ |
| তস্মাৎ | সর্ব + গতং | ব্রহ্ম | নিত্যং | যজ্ঞে | প্রতিষ্ঠিতম্ |"]

এবং প্রবর্তিতং চক্রং নানুবর্তয়তীহ যঃ ।

অঘায়ুরিন্দ্রিয়ারামো মোঘং পার্থ স জীবতি ॥৩-১৬॥

["| এবং | প্রবর্তিতং | চক্রং | ন + অনুবর্তয়তি + ইহ | যঃ |
| অঘ + আয়ুঃ + ইন্দ্রিয় + আরামো | মোঘং | পার্থ | স | জীবতি |"]

যস্ত্বাত্মরতিরেব স্যাদাত্মতৃপ্তশ্চ মানবঃ ।

আত্মন্যেব চ সন্তুষ্টস্তস্য কার্যং ন বিদ্যতে ॥৩-১৭॥

["| যঃ + তু + আত্ম + রতিঃ + এব | স্যাৎ + আত্ম + তৃপ্তঃ + চ | মানবঃ |
| আত্মনি + এব | চ | সন্তুষ্টঃ + তস্য | কার্যং | ন | বিদ্যতে |"]

–: ॐ :–

नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन ।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥३-१८॥

["| न + एव | तस्य | कृतेन + अर्थो | न + अकृतेन + इह | कश्चन |
| न | च + अस्य | सर्व + भूतेषु | कश्चित् + अर्थ + व्यपाश्रयः |"]

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ।
असक्तो ह्याचरन् कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥३-१९॥

["| तस्मात् + असक्तः | सततं | कार्यं | कर्म | समाचर |
| असक्तो | हि + आचरन् | कर्म | परम् + आप्नोति | पूरुषः |"]

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन् कर्तुमर्हसि ॥३-२०॥

["| कर्मणा + एव | हि | संसिद्धिम् + आस्थिता | जनक + आदयः |
| लोक + संग्रहम् + एव + अपि | संपश्यन् | कर्तुम् + अर्हसि |"]

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥३-२१॥

["| यत् + यत् + आचरति | श्रेष्ठः + तत् + तत् + एव + इतरो | जनः |
| स | यत् | प्रमाणं | कुरुते | लोकः + तत् + अनुवर्तते |"]

–: ॐ :–

নৈব তস্য কৃতেনার্থো নাকৃতেনেহ কশ্চন ।

ন চাস্য সর্বভূতেষু কশ্চিদর্থব্যপাশ্রয়ঃ ॥৩-১৮॥

["| ন + এব | তস্য | কৃতেন + অর্থো | ন + অকৃতেন + ইহ | কশ্চন |
| ন | চ + অস্য | সর্ব + ভূতেষু | কশ্চিৎ + অর্থ + ব্যপাশ্রয়ঃ |"]

তস্মাদসক্তঃ সততং কার্যং কর্ম সমাচর ।

অসক্তো হ্যাচরন্ কর্ম পরমাপ্নোতি পুরুষঃ ॥৩-১৯॥

["| তস্মাৎ + অসক্তঃ | সততং | কার্যং | কর্ম | সমাচর |
| অসক্তো | হি + আচরন্ | কর্ম | পরম্ + আপ্নোতি | পুরুষঃ |"]

কর্মণৈব হি সংসিদ্ধিমাস্থিতা জনকাদয়ঃ ।

লোকসংগ্রহমেবাপি সংপশ্যন্ কর্তুমর্হসি ॥৩-২০॥

["| কর্মণা + এব | হি | সংসিদ্ধিম্ + আস্থিতা | জনক + আদয়ঃ |
| লোক + সংগ্রহম্ + এব + অপি | সংপশ্যন্ | কর্তুম্ + অর্হসি |"]

যদ্যদাচরতি শ্রেষ্ঠস্তত্তদেবেতরো জনঃ ।

স যৎ প্রমাণং কুরুতে লোকস্তদনুবর্ততে ॥৩-২১॥

["| যৎ + যৎ + আচরতি | শ্রেষ্ঠঃ + তৎ + তৎ + এব + ইতরো | জনঃ |
| স | যৎ | প্রমাণং | কুরুতে | লোকঃ + তৎ + অনুবর্ততে |"]

–: ॐ :–

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन ।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥३-२२॥

["| न | मे | पार्थ + अस्ति | कर्तव्यं | त्रिषु | लोकेषु | किञ्चन |
| न + अनवाप्तम् + अवाप्तव्यं | वर्त | एव | च | कर्मणि |"]

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥३-२३॥

["| यदि | हि + अहं | न | वर्तेयं | जातु | कर्मणि + अतन्द्रितः |
| मम | वर्त्म + अनुवर्तन्ते | मनुष्याः | पार्थ | सर्वशः |"]

उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम् ।
सङ्करस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः ॥३-२४॥

["| उत्सीदेयुः + इमे | लोका | न | कुर्यां | कर्म | चेत् + अहम् |
| सङ्करस्य | च | कर्ता | स्याम् + उपहन्याम् + इमाः | प्रजाः |"]

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत ।
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ॥३-२५॥

["| सक्ताः | कर्मणि + अविद्वांसो | यथा | कुर्वन्ति | भारत |
| कुर्यात् + विद्वान् + तथा + असक्तः + चिकीर्षुः + लोक + संग्रहम् |"]

–: ওঁ :–

ন মে পার্থাস্তি কর্তব্যং ত্রিষু লোকেষু কিঞ্চন ।
নানবাপ্তমবাপ্তব্যং বর্ত এব চ কর্মণি ॥৩-২২॥

["| ন | মে | পার্থ + অস্তি | কর্তব্যং | ত্রিষু | লোকেষু | কিঞ্চন |
| ন + অনবাপ্তম্ + অবাপ্তব্যং | বর্ত | এব | চ | কর্মণি |"]

যদি হ্যহং ন বর্তেয়ং জাতু কর্মণ্যতন্দ্রিতঃ ।
মম বর্ত্মানুবর্তন্তে মনুষ্যাঃ পার্থ সর্বশঃ ॥৩-২৩॥

["| যদি | হি + অহং | ন | বর্তেয়ং | জাতু | কর্মণি + অতন্দ্রিতঃ |
| মম | বর্ত্ম + অনুবর্তন্তে | মনুষ্যাঃ | পার্থ | সর্বশঃ |"]

উৎসীদেয়ুরিমে লোকা ন কুর্যাং কর্ম চেদহম্ ।
সঙ্করস্য চ কর্তা স্যামুপহন্যামিমাঃ প্রজাঃ ॥৩-২৪॥

["| উৎসীদেয়ুঃ + ইমে | লোকা | ন | কুর্যাং | কর্ম | চেৎ + অহম্ |
| সঙ্করস্য | চ | কর্তা | স্যাম্ + উপহন্যাম্ + ইমাঃ | প্রজাঃ |"]

সক্তাঃ কর্মণ্যবিদ্বাংসো যথা কুর্বন্তি ভারত ।
কুর্যাদ্বিদ্বাংস্তথাসক্তশ্চিকীর্ষুর্লোকসংগ্রহম্ ॥৩-২৫॥

["| সক্তাঃ | কর্মণি + অবিদ্বাংসো | যথা | কুর্বন্তি | ভারত |
| কুর্যাৎ + বিদ্বান্ + তথা + অসক্তঃ + চিকীর্ষুঃ + লোক + সংগ্রহম্ |"]

–: ॐ :–

न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् ।
जोषयेत् सर्वकर्माणि विद्वान् युक्तः समाचरन् ॥३-२६॥

["| न | बुद्धि + भेदं | जनयेत् + अज्ञानां | कर्म + सङ्गिनाम् |
| जोषयेत् | सर्व + कर्माणि | विद्वान् | युक्तः | समाचरन् |"]

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहङ्कारविमूढ़ात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥३-२७॥

["| प्रकृतेः | क्रियमाणानि | गुणैः | कर्माणि | सर्वशः |
| अहङ्कार + विमूढ़ + आत्मा | कर्ता + अहम् + इति | मन्यते |"]

तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः ।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते ॥३-२८॥

["| तत्त्व + वित् + तु | महा + बाहो | गुण + कर्म + विभागयोः |
| गुणा | गुणेषु | वर्तन्त | इति | मत्वा | न | सज्जते |"]

प्रकृतेर्गुणसंमूढ़ाः सज्जन्ते गुणकर्मसु ।
तानकृत्स्नविदो मन्दान् कृत्स्नविन्न विचालयेत् ॥३-२९॥

["| प्रकृतेः + गुण + संमूढ़ाः | सज्जन्ते | गुण + कर्मसु |
| तान् + अकृत्स्न + विदो | मन्दान् | कृत्स्न + वित् + न | विचालयेत् |"]

–: ॐ :–

ন বুদ্ধিভেদং জনয়েদজ্ঞানাং কর্ম্মসঙ্গিনাম্ ।

জোষয়েৎ সর্বকর্ম্মাণি বিদ্বান্ যুক্তঃ সমাচরন্ ॥৩-২৬॥

["| ন | বুদ্ধি + ভেদং | জনয়েৎ + অজ্ঞানাং | কর্ম্ম + সঙ্গিনাম্ |
| জোষয়েৎ | সর্ব + কর্ম্মাণি | বিদ্বান্ | যুক্তঃ | সমাচরন্ |"]

প্রকৃতেঃ ক্রিয়মাণানি গুণৈঃ কর্ম্মাণি সর্বশঃ ।

অহঙ্কারবিমূঢ়াত্মা কর্তাহমিতি মন্যতে ॥৩-২৭॥

["| প্রকৃতেঃ | ক্রিয়মাণানি | গুণৈঃ | কর্ম্মাণি | সর্বশঃ |
| অহঙ্কার + বিমূঢ় + আত্মা | কর্তা + অহম্ + ইতি | মন্যতে |"]

তত্ত্ববিত্তু মহাবাহো গুণকর্মবিভাগয়োঃ ।

গুণা গুণেষু বর্তন্ত ইতি মত্বা ন সজ্জতে ॥৩-২৮॥

["| তত্ত্ব + বিৎ + তু | মহা + বাহো | গুণ + কর্ম + বিভাগয়োঃ |
| গুণা | গুণেষু | বর্তন্ত | ইতি | মত্বা | ন | সজ্জতে |"]

প্রকৃতের্গুণসংমূঢ়াঃ সজ্জন্তে গুণকর্ম্মসু ।

তানকৃৎস্নবিদো মন্দান্ কৃৎস্নবিন্ন বিচালয়েৎ ॥৩-২৯॥

["| প্রকৃতেঃ + গুণ + সংমূঢ়াঃ | সজ্জন্তে | গুণ + কর্ম্মসু |
| তান্ + অকৃৎস্ন + বিদো | মন্দান্ | কৃৎস্ন + বিৎ + ন | বিচালয়েৎ |"]

–: ॐ :–

मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा ।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥३-३०॥

["| मयि | सर्वाणि | कर्माणि | संन्यस्य + अध्यात्म + चेतसा |
| निराशीः + निर्ममो | भूत्वा | युध्यस्व | विगत + ज्वरः |"]

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः ।
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः ॥३-३१॥

["| ये | मे | मतम् + इदं | नित्यम् + अनुतिष्ठन्ति | मानवाः |
| श्रद्धा + वन्तो + अनसूयन्तो | मुच्यन्ते | ते + अपि | कर्मभिः |"]

ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् ।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान् विद्धि नष्टानचेतसः ॥३-३२॥

["| ये | तु + एतत् + अभ्यसूयन्तो | न + अनुतिष्ठन्ति | मे | मतम् |
| सर्व + ज्ञान + विमूढ़ान् + तान् | विद्धि | नष्टान् + अचेतसः |"]

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ।
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥३-३३॥

["| सदृशं | चेष्टते | स्वस्याः | प्रकृतेः + ज्ञान + वान् + अपि |
| प्रकृतिं | यान्ति | भूतानि | निग्रहः | किं | करिष्यति |"]

–: ॐ :–

মযি সর্বাণি কর্মাণি সংন্যস্যাধ্যাত্মচেতসা ।
নিরাশীর্নির্মমো ভূত্বা যুধ্যস্ব বিগতজ্বরঃ ॥৩-৩০॥

["| মযি | সর্বাণি | কর্মাণি | সংন্যস্য + অধ্যাত্ম + চেতসা |
| নিরাশীঃ + নির্মমো | ভূত্বা | যুধ্যস্ব | বিগত + জ্বরঃ |"]

যে মে মতমিদং নিত্যমনুতিষ্ঠন্তি মানবাঃ ।
শ্রদ্ধাবন্তোঽনসূয়ন্তো মুচ্যন্তে তেঽপি কর্মভিঃ ॥৩-৩১॥

["| যে | মে | মতম্ + ইদং | নিত্যম্ + অনুতিষ্ঠন্তি | মানবাঃ |
| শ্রদ্ধা + বন্তো + অনসূয়ন্তো | মুচ্যন্তে | তে + অপি | কর্মভিঃ |"]

যে ত্বেতদভ্যসূয়ন্তো নানুতিষ্ঠন্তি মে মতম্ ।
সর্বজ্ঞানবিমূঢ়াংস্তান্ বিদ্ধি নষ্টানচেতসঃ ॥৩-৩২॥

["| যে | তু + এতৎ + অভ্যসূয়ন্তো | ন + অনুতিষ্ঠন্তি | মে | মতম্ |
| সর্ব + জ্ঞান + বিমূঢ়ান্ + তান্ | বিদ্ধি | নষ্টান্ + অচেতসঃ |"]

সদৃশং চেষ্টতে স্বস্যাঃ প্রকৃতের্জ্ঞানবানপি ।
প্রকৃতিং যান্তি ভূতানি নিগ্রহঃ কিং করিষ্যতি ॥৩-৩৩॥

["| সদৃশং | চেষ্টতে | স্বস্যাঃ | প্রকৃতেঃ + জ্ঞান + বান্ + অপি |
| প্রকৃতিং | যান্তি | ভূতানি | নিগ্রহঃ | কিং | করিষ্যতি |"]

–: ॐ :–

इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ ।
तयोर्न वशमागच्छेत् तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ॥३-३४॥

["| इन्द्रियस्य + इन्द्रियस्य + अर्थे | राग + द्वेषौ | व्यवस्थितौ |
| तयोः + न | वशम् + आगच्छेत् | तौ | हि + अस्य | परिपन्थिनौ |"]

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥३-३५॥

["| श्रेयान् | स्व + धर्मो | विगुणः | पर + धर्मात् | सु + अनुष्ठितात् |
| स्व + धर्मे | निधनं | श्रेयः | पर + धर्मो | भयावहः |"]

अर्जुन उवाच :—
अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः ।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः ॥३-३६॥

["| अर्जुन | उवाच | अथ | केन | प्रयुक्तो + अयं | पापं | चरति | पूरुषः |
| अनिच्छन् + अपि | वार्ष्णेय | बलात् + इव | नियोजितः |"]

–: ওঁ :–

ইন্দ্রিয়স্যেন্দ্রিয়স্যার্থে রাগদ্বেষৌ ব্যবস্থিতৌ ।

তয়োর্ন বশমাগচ্ছেৎ তৌ হ্যস্য পরিপন্থিনৌ ॥৩-৩৪॥

["| ইন্দ্রিয়স্য + ইন্দ্রিয়স্য + অর্থে | রাগ + দ্বেষৌ | ব্যবস্থিতৌ |

| তয়োঃ + ন | বশম্ + আগচ্ছেৎ | তৌ | হি + অস্য | পরিপন্থিনৌ |"]

শ্রেয়ান্ স্বধর্মো বিগুণঃ পরধর্মাৎ স্বনুষ্ঠিতাৎ ।

স্বধর্মে নিধনং শ্রেয়ঃ পরধর্মো ভয়াবহঃ ॥৩-৩৫॥

["| শ্রেয়ান্ | স্ব + ধর্মো | বিগুণঃ | পর + ধর্মাৎ | সু + অনুষ্ঠিতাৎ |

| স্ব + ধর্মে | নিধনং | শ্রেয়ঃ | পর + ধর্মো | ভয়াবহঃ |"]

অর্জুন উবাচ :—

অথ কেন প্রযুক্তোঽয়ং পাপং চরতি পূরুষঃ ।

অনিচ্ছন্নপি বার্ষ্ণেয় বলাদিব নিয়োজিতঃ ॥৩-৩৬॥

["| অর্জুন | উবাচ | অথ | কেন | প্রযুক্তো + অয়ং | পাপং | চরতি | পূরুষঃ |

| অনিচ্ছন্ + অপি | বার্ষ্ণেয় | বলাৎ + ইব | নিয়োজিতঃ |"]

–: ॐ :–

श्रीभगवानुवाच :—
काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ॥३-३७॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | काम | एष | क्रोध | एष | रजो + गुण + समुद्भवः |
| महा + अशनो | महा + पाप्मा | विद्धि + एनम् + इह | वैरिणम् |"]

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च ।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ॥३-३८॥

["| धूमेन + आव्रियते | वह्निः + यथा + आदर्शो | मलेन | च |
| यथा + उल्बेन + आवृतो | गर्भः + तथा | तेन + इदम् + आवृतम् |"]

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा ।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥३-३९॥

["| आवृतं | ज्ञानम् + एतेन | ज्ञानिनो | नित्य + वैरिणा |
| काम + रूपेण | कौन्तेय | दुष्पूरेण + अनलेन | च |"]

–: ॐ :–

শ্রীভগবানুবাচ :—

কাম এষ ক্রোধ এষ রজোগুণসমুদ্ভবঃ ।

মহাশনো মহাপাপ্মা বিদ্ধ্যেনমিহ বৈরিণম্ ॥৩-৩৭॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | কাম | এষ | ক্রোধ | এষ | রজো + গুণ + সমুদ্ভবঃ |
| মহা + অশনো | মহা + পাপ্মা | বিদ্ধি + এনম্ + ইহ | বৈরিণম্ |"]

ধূমেনাব্রিয়তে বহ্নির্যথাদর্শো মলেন চ ।

যথোল্বেনাবৃতো গর্ভস্তথা তেনেদমাবৃতম্ ॥৩-৩৮॥

["| ধূমেন + আব্রিয়তে | বহ্নিঃ + যথা + আদর্শো | মলেন | চ |
| যথা + উল্বেন + আবৃতো | গর্ভঃ + তথা | তেন + ইদম্ + আবৃতম্ |"]

আবৃতং জ্ঞানমেতেন জ্ঞানিনো নিত্যবৈরিণা ।

কামরূপেণ কৌন্তেয় দুষ্পূরেণানলেন চ ॥৩-৩৯॥

["| আবৃতং | জ্ঞানম্ + এতেন | জ্ঞানিনো | নিত্য + বৈরিণা |
| কাম + রূপেণ | কৌন্তেয় | দুষ্পূরেণ + অনলেন | চ |"]

–: ॐ :–

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥३-४०॥

["| इन्द्रियाणि | मनो | बुद्धिः + अस्य + अधिष्ठानम् + उच्यते |
| एतैः + विमोहयति + एष | ज्ञानम् + आवृत्य | देहिनम् |"]

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥३-४१॥

["| तस्मात् + त्वम् + इन्द्रियाणि + आदौ | नियम्य | भरत + ऋषभ |
| पाप्मानं | प्रजहि | हि + एनं | ज्ञान + विज्ञान + नाशनम् |"]

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥३-४२॥

["| इन्द्रियाणि | पराणि + आहुः + इन्द्रियेभ्यः | परं | मनः |
| मनसः + तु | परा | बुद्धिः + यो | बुद्धेः | परतः + तु | सः |"]

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥३-४३॥

["| एवं | बुद्धेः | परं | बुद्ध्वा | संस्तभ्य + आत्मानम् + आत्मना |
| जहि | शत्रुं | महा + बाहो | काम + रूपं | दुरासदम् |"]

–: ॐ :–

ইন্দ্রিয়াণি মনো বুদ্ধিরস্যাধিষ্ঠানমুচ্যতে ।
এতৈর্বিমোহয়ত্যেষ জ্ঞানমাবৃত্য দেহিনম্ ॥৩-৪০॥

["| ইন্দ্রিয়াণি | মনো | বুদ্ধিঃ + অস্য + অধিষ্ঠানম্ + উচ্যতে |
| এতৈঃ + বিমোহয়তি + এষ | জ্ঞানম্ + আবৃত্য | দেহিনম্ |"]

তস্মাত্ত্বমিন্দ্রিয়াণ্যাদৌ নিয়ম্য ভরতর্ষভ ।
পাপ্মানং প্রজহি হ্যেনং জ্ঞানবিজ্ঞাননাশনম্ ॥৩-৪১॥

["| তস্মাৎ + ত্বম্ + ইন্দ্রিয়াণি + আদৌ | নিয়ম্য | ভরত + ঋষভ |
| পাপ্মানং | প্রজহি | হি + এনং | জ্ঞান + বিজ্ঞান + নাশনম্ |"]

ইন্দ্রিয়াণি পরাণ্যাহুরিন্দ্রিয়েভ্যঃ পরং মনঃ ।
মনসস্তু পরা বুদ্ধির্যো বুদ্ধেঃ পরতস্তু সঃ ॥৩-৪২॥

["| ইন্দ্রিয়াণি | পরাণি + আহুঃ + ইন্দ্রিয়েভ্যঃ | পরং | মনঃ |
| মনসঃ + তু | পরা | বুদ্ধিঃ + যো | বুদ্ধেঃ | পরতঃ + তু | সঃ |"]

এবং বুদ্ধেঃ পরং বুদ্ধ্বা সংস্তভ্যাত্মানমাত্মনা ।
জহি শত্রুং মহাবাহো কামরূপং দুরাসদম্ ॥৩-৪৩॥

["| এবং | বুদ্ধেঃ | পরং | বুদ্ধ্বা | সংস্তভ্য + আত্মানম্ + আত্মনা |
| জহি | শত্রুং | মহা + বাহো | কাম + রূপং | দুরাসদম্ |"]

–: ॐ :–

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः॥३॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | कर्म + योगो | नाम | तृतीयो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে কর্মযোগো নাম তৃতীয়োঽধ্যায়ঃ ॥৩॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | কর্ম + যোগো | নাম | তৃতীয়ো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

चतुर्थोऽध्यायः
ज्ञानयोग

श्रीभगवानुवाच :—
इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान् मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥४-०१॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | इमं | विवस्वते | योगं | प्रोक्तवान् + अहम् + अव्ययम् |
| विवस्वान् | मनवे | प्राह | मनुः + इक्ष्वाकवे + अब्रवीत् |"]

एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः ।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परन्तप ॥४-०२॥

["| एवं | परम्परा + प्राप्तम् + इमं | राज + ऋषयो | विदुः |
| स | कालेन + इह | महता | योगो | नष्टः | परन्तप |"]

–: ॐ :–

চতুর্থোঽধ্যায়ঃ

জ্ঞানযোগ

শ্রীভগবানুবাচ :—

ইমং বিবস্বতে যোগং প্রোক্তবানহমব্যয়ম্ ।

বিবস্বান্ মনবে প্রাহ মনুরিক্ষ্বাকবেঽব্রবীৎ ॥৪-০১॥

["। শ্রী + ভগবান্ + উবাচ । ইমং । বিবস্বতে । যোগং । প্রোক্তবান্ + অহম্ + অব্যয়ম্ ।
। বিবস্বান্ । মনবে । প্রাহ । মনুঃ + ইক্ষ্বাকবে + অব্রবীৎ ।"]

এবং পরম্পরাপ্রাপ্তমিমং রাজর্ষয়ো বিদুঃ ।

স কালেনেহ মহতা যোগো নষ্টঃ পরন্তপ ॥৪-০২॥

["। এবং । পরম্পরা + প্রাপ্তম্ + ইমং । রাজ + ঋষয়ো । বিদুঃ ।
। স । কালেন + ইহ । মহতা । যোগো । নষ্টঃ । পরন্তপ ।"]

–:ॐ :–

स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः ।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ॥४-०३॥

["| स | एव + अयं | मया | ते + अद्य | योगः | प्रोक्तः | पुरातनः |
| भक्तो + असि | मे | सखा | च + इति | रहस्यं | हि + एतत् + उत्तमम् |"]

अर्जुन उवाच :—
अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः ।
कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥४-०४॥

["| अर्जुन | उवाच | अपरं | भवतो | जन्म | परं | जन्म | विवस्वतः |
| कथम् + एतत् + विजानीयां | त्वम् + आदौ | प्रोक्तवान् + इति |"]

श्रीभगवानुवाच :—
बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप ॥४-०५॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | बहूनि | मे | व्यतीतानि | जन्मानि | तव | च + अर्जुन |
| तानि + अहं | वेद | सर्वाणि | न | त्वं | वेत्थ | परन्तप |"]

–:ॐ :–

স এবায়ং ময়া তেঽদ্য যোগঃ প্রোক্তঃ পুরাতনঃ ।

ভক্তোঽসি মে সখা চেতি রহস্যং হ্যেতদুত্তমম্ ॥৪-০৩॥

["| স | এব + অয়ং | ময়া | তে + অদ্য | যোগঃ | প্রোক্তঃ | পুরাতনঃ |
| ভক্তো + অসি | মে | সখা | চ + ইতি | রহস্যং | হি + এতৎ + উত্তমম্ |"]

অর্জুন উবাচ :—

অপরং ভবতো জন্ম পরং জন্ম বিবস্বতঃ ।

কথমেতদ্বিজানীয়াং ত্বমাদৌ প্রোক্তবানিতি ॥৪-০৪॥

["| অর্জুন | উবাচ | অপরং | ভবতো | জন্ম | পরং | জন্ম | বিবস্বতঃ |
| কথম্ + এতৎ + বিজানীয়াং | ত্বম্ + আদৌ | প্রোক্তবান্ + ইতি |"]

শ্রীভগবানুবাচ :—

বহূনি মে ব্যতীতানি জন্মানি তব চার্জুন ।

তান্যহং বেদ সর্বাণি ন ত্বং বেত্থ পরন্তপ ॥৪-০৫॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | বহূনি | মে | ব্যতীতানি | জন্মানি | তব | চ + অর্জুন |
| তানি + অহং | বেদ | সর্বাণি | ন | ত্বং | বেত্থ | পরন্তপ |"]

–: ॐ :–

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन् ।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया ॥४-०६॥

["| अजो + अपि | सन् + अव्यय + आत्मा | भूतानाम् + ईश्वरो + अपि | सन् |
| प्रकृतिं | स्वाम् + अधिष्ठाय | सम्भवामि + आत्म + मायया |"]

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥४-०७॥

["| यदा | यदा | हि | धर्मस्य | ग्लानिः + भवति | भारत |
| अभ्युत्थानम् + अधर्मस्य | तदा + आत्मानं | सृजामि + अहम् |"]

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥४-०८॥

["| परित्राणाय | साधूनां | विनाशाय | च | दुष्कृताम् |
| धर्म + संस्थापन + अर्थाय | सम्भवामि | युगे | युगे |"]

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥४-०९॥

["| जन्म | कर्म | च | मे | दिव्यम् + एवं | यो | वेत्ति | तत्त्वतः |
| त्यक्त्वा | देहं | पुनः + जन्म | न + एति | माम् + एति | सो + अर्जुन |"]

–: ওঁ :–

অজোঽপি সন্নব্যয়াত্মা ভূতানামীশ্বরোঽপি সন্ ।
প্রকৃতিং স্বামধিষ্ঠায় সম্ভবাম্যাত্মমায়য়া ॥৪-০৬॥

["| অজো + অপি | সন্ + অব্যয় + আত্মা | ভূতানাম্ + ঈশ্বরো + অপি | সন্ |
| প্রকৃতিং | স্বাম্ + অধিষ্ঠায় | সম্ভবামি + আত্ম + মায়য়া |"]

যদা যদা হি ধর্মস্য গ্লানির্ভবতি ভারত ।
অভ্যুত্থানমধর্মস্য তদাত্মনং সৃজাম্যহম্ ॥৪-০৭॥

["| যদা | যদা | হি | ধর্মস্য | গ্লানিঃ + ভবতি | ভারত |
| অভ্যুত্থানম্ + অধর্মস্য | তদা + আত্মনং | সৃজামি + অহম্ |"]

পরিত্রাণায় সাধূনাং বিনাশায় চ দুষ্কৃতাম্ ।
ধর্মসংস্থাপনার্থায় সম্ভবামি যুগে যুগে ॥৪-০৮॥

["| পরিত্রাণায় | সাধূনাং | বিনাশায় | চ | দুষ্কৃতাম্ |
| ধর্ম + সংস্থাপন + অর্থায় | সম্ভবামি | যুগে | যুগে |"]

জন্ম কর্ম চ মে দিব্যমেবং যো বেত্তি তত্ত্বতঃ ।
ত্যক্ত্বা দেহং পুনর্জন্ম নৈতি মামেতি সোঽর্জুন ॥৪-০৯॥

["| জন্ম | কর্ম | চ | মে | দিব্যম্ + এবং | যো | বেত্তি | তত্ত্বতঃ |
| ত্যক্ত্বা | দেহং | পুনঃ + জন্ম | ন + এতি | মাম্ + এতি | সো + অর্জুন |"]

–: ॐ :–

वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः ।
बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ॥४-१०॥

["| वीत + राग + भय + क्रोधा | मत् + मया | माम् + उपाश्रिताः |
| बहवो | ज्ञान + तपसा | पूता | मत् + भावम् + आगताः |"]

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥४-११॥

["| ये | यथा | मां | प्रपद्यन्ते | तान् + तथा + एव | भजामि + अहम् |
| मम | वर्त्म + अनुवर्तन्ते | मनुष्याः | पार्थ | सर्वशः |"]

काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः ।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥४-१२॥

["| काङ्क्षन्तः | कर्मणां | सिद्धिं | यजन्त | इह | देवताः |
| क्षिप्रं | हि | मानुषे | लोके | सिद्धिः + भवति | कर्मजा |"]

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥४-१३॥

["| चातुः + वर्ण्यं | मया | सृष्टं | गुण + कर्म + विभागशः |
| तस्य | कर्तारम् + अपि | मां | विद्धि + अकर्तारम् + अव्ययम् |"]

–: ॐ :–

বীতরাগভয়ক্রোধা মন্ময়া মামুপাশ্রিতাঃ ।

বহবো জ্ঞানতপসা পূতা মদ্ভাবমাগতাঃ ॥৪-১০॥

["| বীত + রাগ + ভয় + ক্রোধা | মৎ + ময়া | মাম্ + উপাশ্রিতাঃ |
| বহবো | জ্ঞান + তপসা | পূতা | মৎ + ভাবম্ + আগতাঃ |"]

যে যথা মাং প্রপদ্যন্তে তাংস্তথৈব ভজাম্যহম্ ।

মম বর্ত্মানুবর্তন্তে মনুষ্যাঃ পার্থ সর্বশঃ ॥৪-১১॥

["| যে | যথা | মাং | প্রপদ্যন্তে | তান্ + তথা + এব | ভজামি + অহম্ |
| মম | বর্ত্ম + অনুবর্তন্তে | মনুষ্যাঃ | পার্থ | সর্বশঃ |"]

কাঙ্ক্ষন্তঃ কর্মণাং সিদ্ধিং যজন্ত ইহ দেবতাঃ ।

ক্ষিপ্রং হি মানুষে লোকে সিদ্ধির্ভবতি কর্মজা ॥৪-১২॥

["| কাঙ্ক্ষন্তঃ | কর্মণাং | সিদ্ধিং | যজন্ত | ইহ | দেবতাঃ |
| ক্ষিপ্রং | হি | মানুষে | লোকে | সিদ্ধিঃ + ভবতি | কর্মজা |"]

চাতুর্বর্ণ্যং ময়া সৃষ্টং গুণকর্মবিভাগশঃ ।

তস্য কর্তারমপি মাং বিদ্ধ্যকর্তারমব্যয়ম্ ॥৪-১৩॥

["| চাতুঃ + বর্ণ্যং | ময়া | সৃষ্টং | গুণ + কর্ম + বিভাগশঃ |
| তস্য | কর্তারম্ + অপি | মাং | বিদ্ধি + অকর্তারম্ + অব্যয়ম্ |"]

–: ॐ :–

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा ।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते ॥४-१४॥

["| न | मां | कर्माणि | लिम्पन्ति | न | मे | कर्म + फले | स्पृहा |
| इति | मां | यो + अभिजानाति | कर्मभिः + न | स | बध्यते |"]

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः ।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ॥४-१५॥

["| एवं | ज्ञात्वा | कृतं | कर्म | पूर्वैः + अपि | मुमुक्षुभिः |
| कुरु | कर्म + एव | तस्मात् + त्वं | पूर्वैः | पूर्वतरं | कृतम् |"]

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः ।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥४-१६॥

["| किं | कर्म | किम् + अकर्मेति | कवयो + अपि + अत्र | मोहिताः |
| तत् + ते | कर्म | प्रवक्ष्यामि | यत् + ज्ञात्वा | मोक्ष्यसे + अशुभात् |"]

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यञ्च विकर्मणः ।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ॥४-१७॥

["| कर्मणो | हि + अपि | बोद्धव्यं | बोद्धव्यं + च | विकर्मणः |
| अकर्मणः + च | बोद्धव्यं | गहना | कर्मणो | गतिः |"]

–: ॐ :–

ন মাং কর্মাণি লিম্পন্তি ন মে কর্মফলে স্পৃহা ।
ইতি মাং যোঽভিজানাতি কর্মভির্ন স বধ্যতে ॥৪-১৪॥

["| ন | মাং | কর্মাণি | লিম্পন্তি | ন | মে | কর্ম + ফলে | স্পৃহা |
| ইতি | মাং | যো + অভিজানাতি | কর্মভিঃ + ন | স | বধ্যতে |"]

এবং জ্ঞাত্বা কৃতং কর্ম পূর্বৈরপি মুমুক্ষুভিঃ ।
কুরু কর্মৈব তস্মাত্ত্বং পূর্বৈঃ পূর্বতরং কৃতম্ ॥৪-১৫॥

["| এবং | জ্ঞাত্বা | কৃতং | কর্ম | পূর্বৈঃ + অপি | মুমুক্ষুভিঃ |
| কুরু | কর্ম + এব | তস্মাৎ + ত্বং | পূর্বৈঃ | পূর্বতরং | কৃতম্ |"]

কিং কর্ম কিমকর্মেতি কবয়োঽপ্যত্র মোহিতাঃ ।
তত্তে কর্ম প্রবক্ষ্যামি যজ্জ্ঞাত্বা মোক্ষ্যসেঽশুভাৎ ॥৪-১৬॥

["| কিং | কর্ম | কিম্ + অকর্মেতি | কবয়ো + অপি + অত্র | মোহিতাঃ |
| তৎ + তে | কর্ম | প্রবক্ষ্যামি | যৎ + জ্ঞাত্বা | মোক্ষ্যসে + অশুভাৎ |"]

কর্মণো হ্যপি বোদ্ধব্যং বোদ্ধব্যঞ্চ বিকর্মণঃ ।
অকর্মণশ্চ বোদ্ধব্যং গহনা কর্মণো গতিঃ ॥৪-১৭॥

["| কর্মণো | হি + অপি | বোদ্ধব্যং | বোদ্ধব্যং + চ | বিকর্মণঃ |
| অকর্মণঃ + চ | বোদ্ধব্যং | গহনা | কর্মণো | গতিঃ |"]

–: ॐ :–

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥४-१८॥

["| कर्मणि + अकर्म | यः | पश्येत् + अकर्मणि | च | कर्म | यः |
| स | बुद्धिमान् + मनुष्येषु | स | युक्तः | कृत्स्न + कर्म + कृत् |"]

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः ।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः ॥४-१९॥

["| यस्य | सर्वे | समारम्भाः | काम + संकल्प + वर्जिताः |
| ज्ञान + अग्नि + दग्ध + कर्माणं | तम् + आहुः | पण्डितं | बुधाः |"]

त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः ।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित् करोति सः ॥४-२०॥

["| त्यक्त्वा | कर्म + फल + आसङ्गं | नित्य + तृप्तो | निः + आश्रयः |
| कर्मणि + अभिप्रवृत्तो + अपि | न + एव | किञ्चित् | करोति | सः |"]

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः ।
शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥४-२१॥

["| निराशीः + यत + चित्त + आत्मा | त्यक्त + सर्व + परिग्रहः |
| शारीरं | केवलं | कर्म | कुर्वन् + न + आप्नोति | किल्बिषम् |"]

–: ॐ :–

কর্মণ্যকর্ম যঃ পশ্যেদকর্মণি চ কর্ম যঃ ।

স বুদ্ধিমান্মনুষ্যেষু স যুক্তঃ কৃৎস্নকর্মকৃৎ ॥৪-১৮॥

["| কর্মণি + অকর্ম | যঃ | পশ্যেৎ + অকর্মণি | চ | কর্ম | যঃ |

| স | বুদ্ধিমান্ + মনুষ্যেষু | স | যুক্তঃ | কৃৎস্ন + কর্ম + কৃৎ |"]

যস্য সর্বে সমারম্ভাঃ কামসংকল্পবর্জিতাঃ ।

জ্ঞানাগ্নিদগ্ধকর্মাণং তমাহুঃ পণ্ডিতং বুধাঃ ॥৪-১৯॥

["| যস্য | সর্বে | সমারম্ভাঃ | কাম + সংকল্প + বর্জিতাঃ |

| জ্ঞান + অগ্নি + দগ্ধ + কর্মাণং | তম্ + আহুঃ | পণ্ডিতং | বুধাঃ |"]

ত্যক্তা কর্মফলাসঙ্গং নিত্যতৃপ্তো নিরাশ্রয়ঃ ।

কর্মণ্যভিপ্রবৃত্তোঽপি নৈব কিঞ্চিৎ করোতি সঃ ॥৪-২০॥

["| ত্যক্তা | কর্ম + ফল + আসঙ্গং | নিত্য + তৃপ্তো | নিঃ + আশ্রয়ঃ |

| কর্মণি + অভিপ্রবৃত্তো + অপি | ন + এব | কিঞ্চিৎ | করোতি | সঃ |"]

নিরাশীর্যতচিত্তাত্মা ত্যক্তসর্বপরিগ্রহঃ ।

শারীরং কেবলং কর্ম কুর্বন্নাপ্নোতি কিল্বিষম্ ॥৪-২১॥

["| নিরাশীঃ + যত + চিত্ত + আত্মা | ত্যক্ত + সর্ব + পরিগ্রহঃ |

| শারীরং | কেবলং | কর্ম | কুর্বন্ + ন + আপ্নোতি | কিল্বিষম্ |"]

–: ॐ :–

यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥४-२२॥

["| यदृच्छा + लाभ + सन्तुष्टो | द्वन्द्व + अतीतो | विमत्सरः |
| समः | सिद्धौ + असिद्धौ | च | कृत्वा + अपि | न | निबध्यते |"]

गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः ।
यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ॥४-२३॥

["| गत + सङ्गस्य | मुक्तस्य | ज्ञान + अवस्थित + चेतसः |
| यज्ञाय + आचरतः | कर्म | समग्रं | प्रविलीयते |"]

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥४-२४॥

["| ब्रह्म + अर्पणं | ब्रह्म | हविः + ब्रह्म + अग्नौ | ब्रह्मणा | हुतम् |
| ब्रह्म + एव | तेन | गन्तव्यं | ब्रह्म + कर्म + समाधिना |"]

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते ।
ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति ॥४-२५॥

["| दैवम् + एव + अपरे | यज्ञं | योगिनः | पर्युपासते |
| ब्रह्म + अग्नौ + अपरे | यज्ञं | यज्ञेन + एव + उपजुह्वति |"]

–: ওঁ :–

যদৃচ্ছালাভসন্তুষ্টো দন্দ্বাতীতো বিমৎসরঃ ।
সমঃ সিদ্ধাবসিদ্ধৌ চ কৃত্বাপি ন নিবধ্যতে ॥৪-২২॥

["| যদৃচ্ছা + লাভ + সন্তুষ্টো | দন্দ্ব + অতীতো | বিমৎসরঃ |
| সমঃ | সিদ্ধৌ + অসিদ্ধৌ | চ | কৃত্বা + অপি | ন | নিবধ্যতে |"]

গতসঙ্গস্য মুক্তস্য জ্ঞানাবস্থিতচেতসঃ ।
যজ্ঞায়াচরতঃ কর্ম সমগ্রং প্রবিলীয়তে ॥৪-২৩॥

["| গত + সঙ্গস্য | মুক্তস্য | জ্ঞান + অবস্থিত + চেতসঃ |
| যজ্ঞায় + আচরতঃ | কর্ম | সমগ্রং | প্রবিলীয়তে |"]

ব্রহ্মার্পণং ব্রহ্ম হবির্ব্রহ্মাগ্নৌ ব্রহ্মণা হুতম্ ।
ব্রহ্মৈব তেন গন্তব্যং ব্রহ্মকর্মসমাধিনা ॥৪-২৪॥

["| ব্রহ্ম + অর্পণং | ব্রহ্ম | হবিঃ + ব্রহ্ম + অগ্নৌ | ব্রহ্মণা | হুতম্ |
| ব্রহ্ম + এব | তেন | গন্তব্যং | ব্রহ্ম + কর্ম + সমাধিনা |"]

দৈবমেবাপরে যজ্ঞং যোগিনঃ পর্যুপাসতে ।
ব্রহ্মাগ্নাবপরে যজ্ঞং যজ্ঞেনৈবোপজুহ্বতি ॥৪-২৫॥

["| দৈবম্ + এব + অপরে | যজ্ঞং | যোগিনঃ | পর্যুপাসতে |
| ব্রহ্ম + অগ্নৌ + অপরে | যজ্ঞং | যজ্ঞেন + এব + উপজুহ্বতি |"]

–: ॐ :–

श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति ।
शब्दादीन् विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ॥४-२६॥

["| श्रोत्र + आदीनि + इन्द्रियाणि + अन्ये | संयम + अग्निषु | जुह्वति |
| शब्द + आदीन् | विषयान् + अन्य | इन्द्रिय + अग्निषु | जुह्वति |"]

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे ।
आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ॥४-२७॥

["| सर्वाणि + इन्द्रिय + कर्माणि | प्राण + कर्माणि | च + अपरे |
| आत्म + संयम + योग + अग्नौ | जुह्वति | ज्ञान + दीपिते |"]

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे ।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ॥४-२८॥

["| द्रव्य + यज्ञाः + तपो + यज्ञा | योग + यज्ञाः + तथा + अपरे |
| स्वाध्याय + ज्ञान + यज्ञाः + च | यतयः | संशित + व्रताः |"]

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे ।
प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः ॥४-२९॥

["| अपाने | जुह्वति | प्राणं | प्राणे + अपानं | तथा + अपरे |
| प्राण + अपान + गती | रुद्ध्वा | प्राणायाम + परायणाः |"]

–: ॐ :–

শ্রোত্রাদীনীন্দ্রিয়াণ্যন্যে সংযমাগ্নিষু জুহ্বতি ।

শব্দাদীন্ বিষয়াননন্য ইন্দ্রিয়াগ্নিষু জুহুতি ॥৪-২৬॥

["| শ্রোত্র + আদীনি + ইন্দ্রিয়াণি + অন্যে | সংযম + অগ্নিষু | জুহ্বতি |
| শব্দ + আদীন্ | বিষয়ান্ + অন্য | ইন্দ্রিয় + অগ্নিষু | জুহ্বতি |"]

সর্বাণীন্দ্রিয়কর্মাণি প্রাণকর্মাণি চাপরে ।

আত্মসংযমযোগাগ্নৌ জুহ্বতি জ্ঞানদীপিতে ॥৪-২৭॥

["| সর্বাণি + ইন্দ্রিয় + কর্মাণি | প্রাণ + কর্মাণি | চ + অপরে |
| আত্ম + সংযম + যোগ + অগ্নৌ | জুহ্বতি | জ্ঞান + দীপিতে |"]

দ্রব্যযজ্ঞাস্তপোযজ্ঞা যোগযজ্ঞাস্তথাপরে ।

স্বাধ্যায়জ্ঞানযজ্ঞাশ্চ যতয়ঃ সংশিতব্রতাঃ ॥৪-২৮॥

["| দ্রব্য + যজ্ঞাঃ + তপো + যজ্ঞা | যোগ + যজ্ঞাঃ + তথা + অপরে |
| স্বাধ্যায় + জ্ঞান + যজ্ঞাঃ + চ | যতয়ঃ | সংশিত + ব্রতাঃ |"]

অপানে জুহ্বতি প্রাণং প্রাণেঽপানং তথাপরে ।

প্রাণাপানগতী রুদ্ধ্বা প্রাণায়ামপরায়ণাঃ ॥৪-২৯॥

["| অপানে | জুহ্বতি | প্রাণং | প্রাণে + অপানং | তথা + অপরে |
| প্রাণ + অপান + গতী | রুদ্ধ্বা | প্রাণায়াম + পরায়ণাঃ |"]

–: ॐ :–

अपरे नियताहाराः प्राणान् प्राणेषु जुह्वति ।
सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः ॥४-३०॥

["| अपरे | नियत + आहाराः | प्राणान् | प्राणेषु | जुह्वति |
| सर्वे + अपि + एते | यज्ञ + विदो | यज्ञ + क्षपित + कल्मषाः |"]

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम् ।
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ॥४-३१॥

["| यज्ञ + शिष्ट + अमृत + भुजो | यान्ति | ब्रह्म | सनातनम् |
| न + अयं | लोको + अस्ति + अयज्ञस्य | कुतो + अन्यः | कुरु + सत्तम |"]

एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे ।
कर्मजान् विद्धि तान् सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे ॥४-३२॥

["| एवं | बहु + विधा | यज्ञा | वितता | ब्रह्मणो | मुखे |
| कर्मजान् | विद्धि | तान् | सर्वान् + एवं | ज्ञात्वा | विमोक्ष्यसे |"]

श्रेयान् द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप ।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥४-३३॥

["| श्रेयान् | द्रव्य + मयात् + यज्ञात् + ज्ञान + यज्ञः | परन्तप |
| सर्वं | कर्म + अखिलं | पार्थ | ज्ञाने | परिसमाप्यते |"]

–: ॐ :–

অপরে নিয়তাহারাঃ প্রাণান্ প্রাণেষু জুহ্বতি ।

সর্বেঽপ্যেতে যজ্ঞবিদো যজ্ঞক্ষপিতকল্মষাঃ ॥৪-৩০॥

["| অপরে | নিয়ত + আহারাঃ | প্রাণান্ | প্রাণেষু | জুহ্বতি |
| সর্বে + অপি + এতে | যজ্ঞ + বিদো | যজ্ঞ + ক্ষপিত + কল্মষাঃ |"]

যজ্ঞশিষ্টামৃতভুজো যান্তি ব্রহ্ম সনাতনম্ ।

নায়ং লোকোঽস্ত্যযজ্ঞস্য কুতোঽন্যঃ কুরুসত্তম ॥৪-৩১॥

["| যজ্ঞ + শিষ্ট + অমৃত + ভুজো | যান্তি | ব্রহ্ম | সনাতনম্ |
| ন + অয়ং | লোকো + অস্তি + অযজ্ঞস্য | কুতো + অন্যঃ | কুরু + সত্তম |"]

এবং বহুবিধা যজ্ঞা বিততা ব্রহ্মণো মুখে ।

কর্মজান্ বিদ্ধি তান্ সর্বানেবং জ্ঞাত্বা বিমোক্ষ্যসে ॥৪-৩২॥

["| এবং | বহু + বিধা | যজ্ঞা | বিততা | ব্রহ্মণো | মুখে |
| কর্মজান্ | বিদ্ধি | তান্ | সর্বান্ + এবং | জ্ঞাত্বা | বিমোক্ষ্যসে |"]

শ্রেয়ান্ দ্রব্যময়াদ্যজ্ঞাজ্জ্ঞানযজ্ঞঃ পরন্তপ ।

সর্বং কর্মাখিলং পার্থ জ্ঞানে পরিসমাপ্যতে ॥৪-৩৩॥

["| শ্রেয়ান্ | দ্রব্য + ময়াৎ + যজ্ঞাৎ + জ্ঞান + যজ্ঞঃ | পরন্তপ |
| সর্বং | কর্ম + অখিলং | পার্থ | জ্ঞানে | পরিসমাপ্যতে |"]

–: ॐ :–

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥४-३४॥

["| तत् + विद्धि | प्रणिपातेन | परिप्रश्नेन | सेवया |
| उपदेक्ष्यन्ति | ते | ज्ञानं | ज्ञानिनः + तत्त्व + दर्शिनः |"]

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव ।
येन भूतान्यशेषाणि द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि ॥४-३५॥

["| यत् + ज्ञात्वा | न | पुनः + मोहम् + एवं | यास्यसि | पाण्डव |
| येन | भूतानि + अशेषाणि | द्रक्ष्यसि + आत्मनि + अथो | मयि |"]

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि ॥४-३६॥

["| अपि | चेत् + असि | पापेभ्यः | सर्वेभ्यः | पाप + कृत् + तमः |
| सर्वं | ज्ञान + प्लवेन + एव | वृजिनं | सन्तरिष्यसि |"]

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन ।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा ॥४-३७॥

["| यथा + एधांसि | समिद्धः + अग्निः + भस्मसात् | कुरुते + अर्जुन |
| ज्ञान + अग्निः | सर्व + कर्माणि | भस्मसात् | कुरुते | तथा |"]

–: ॐ :–

তদ্‌বিদ্ধি প্রণিপাতেন পরিপ্রশ্নেন সেবয়া ।
উপদেক্ষ্যন্তি তে জ্ঞানং জ্ঞানিনস্তত্ত্বদর্শিনঃ ॥৪-৩৪॥

["| তৎ + বিদ্ধি | প্রণিপাতেন | পরিপ্রশ্নেন | সেবয়া |
| উপদেক্ষ্যন্তি | তে | জ্ঞানং | জ্ঞানিনঃ + তত্ত্ব + দর্শিনঃ |"]

যজ্‌জ্ঞাত্বা ন পুনর্মোহমেবং যাস্যসি পাণ্ডব ।
যেন ভূতান্যশেষাণি দ্রক্ষ্যস্যাত্মন্যথো ময়ি ॥৪-৩৫॥

["| যৎ + জ্ঞাত্বা | ন | পুনঃ + মোহম্ + এবং | যাস্যসি | পাণ্ডব |
| যেন | ভূতানি + অশেষাণি | দ্রক্ষ্যসি + আত্মনি + অথো | ময়ি |"]

অপি চেদসি পাপেভ্যঃ সর্বেভ্যঃ পাপকৃত্তমঃ ।
সর্বং জ্ঞানপ্লবেনৈব বৃজিনং সন্তরিষ্যসি ॥৪-৩৬॥

["| অপি | চেৎ + অসি | পাপেভ্যঃ | সর্বেভ্যঃ | পাপ + কৃৎ + তমঃ |
| সর্বং | জ্ঞান + প্লবেন + এব | বৃজিনং | সন্তরিষ্যসি |"]

যথৈধাংসি সমিদ্ধোঽগ্নির্ভস্মসাৎ কুরুতেঽর্জুন ।
জ্ঞানাগ্নিঃ সর্বকর্মাণি ভস্মসাৎ কুরুতে তথা ॥৪-৩৭॥

["| যথা + এধাংসি | সমিদ্ধঃ + অগ্নিঃ + ভস্মসাৎ | কুরুতে + অর্জুন |
| জ্ঞান + অগ্নিঃ | সর্ব + কর্মাণি | ভস্মসাৎ | কুরুতে | তথা |"]

–: ॐ :–

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत् स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ॥४-३८॥

["| न | हि | ज्ञानेन | सदृशं | पवित्रम् + इह | विद्यते |
| तत् | स्वयं | योग + संसिद्धः | कालेन + आत्मनि | विन्दति |"]

श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥४-३९॥

["| श्रद्धावान् | लभते | ज्ञानं | तत् + परः | संयत + इन्द्रियः |
| ज्ञानं | लब्ध्वा | परां | शान्तिम् + अचिरेण + अधिगच्छति |"]

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥४-४०॥

["| अज्ञः + च + अश्रद्दधानः + च | संशय + आत्मा | विनश्यति |
| न + अयं | लोको + अस्ति | न | परो | न | सुखं | संशय + आत्मनः |"]

योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्नसंशयम् ।
आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ॥४-४१॥

["| योग + संन्यस्त + कर्माणं | ज्ञान +संछिन्न + संशयम् |
| आत्मवन्तं | न | कर्माणि | निबध्नन्ति | धनंजय |"]

–: ॐ :–

ন হি জ্ঞানেন সদৃশং পবিত্রমিহ বিদ্যতে ।

তৎ স্বয়ং যোগসংসিদ্ধঃ কালেনাত্মনি বিন্দতি ॥৪-৩৮॥

["| ন | হি | জ্ঞানেন | সদৃশং | পবিত্রম্ + ইহ | বিদ্যতে |
| তৎ | স্বয়ং | যোগ + সংসিদ্ধঃ | কালেন + আত্মনি | বিন্দতি |"]

শ্রদ্ধাবান্ লভতে জ্ঞানং তৎপরঃ সংযতেন্দ্রিয়ঃ ।

জ্ঞানং লব্ধা পরাং শান্তিমচিরেণাধিগচ্ছতি ॥৪-৩৯॥

["| শ্রদ্ধাবান্ | লভতে | জ্ঞানং | তৎ + পরঃ | সংযত + ইন্দ্রিয়ঃ |
| জ্ঞানং | লব্ধা | পরাং | শান্তিম্ + অচিরেণ + অধিগচ্ছতি |"]

অজ্ঞশ্চাশ্রদ্দধানশ্চ সংশয়াত্মা বিনশ্যতি ।

নায়ং লোকোঽস্তি ন পরো ন সুখং সংশয়াত্মনঃ ॥৪-৪০॥

["| অজ্ঞঃ + চ + অশ্রদ্দধানঃ + চ | সংশয় + আত্মা | বিনশ্যতি |
| ন + অয়ং | লোকো + অস্তি | ন | পরো | ন | সুখং | সংশয় + আত্মনঃ |"]

যোগসংন্যস্তকর্মাণং জ্ঞানসংছিন্নসংশয়ম্ ।

আত্মবন্তং ন কর্মাণি নিবধ্নন্তি ধনঞ্জয় ॥৪-৪১॥

["| যোগ + সংন্যস্ত + কর্মাণং | জ্ঞান + সংছিন্ন + সংশয়ম্ |
| আত্মবন্তং | ন | কর্মাণি | নিবধ্নন্তি | ধনঞ্জয় |"]

–: ॐ :–

तस्मादज्ञानसम्भूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः ।
छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ॥४-४२॥

["| तस्मात् + अज्ञान + सम्भूतं | हृत् + स्थं | ज्ञान + असिना + आत्मनः |
| छित्त्वा + एनं | संशयं | योगम् + आतिष्ठ + उत्तिष्ठ | भारत |"]

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि
श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे
ज्ञानयोगो नाम चतुर्थोऽध्यायः॥४॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | ज्ञान + योगो | नाम | चतुर्थो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

তস্মাদজ্ঞানসম্ভূতং হৃৎস্থং জ্ঞানাসিনাত্মনঃ ।
ছিত্ত্বৈনং সংশয়ং যোগমাতিষ্ঠোত্তিষ্ঠ ভারত ॥৪-৪২॥

["| তস্মাৎ + অজ্ঞান + সম্ভূতং | হৃৎ + স্থং | জ্ঞান + অসিনা + আত্মনঃ |
| ছিত্ত্বা + এনং | সংশয়ং | যোগম্ + আতিষ্ঠ + উত্তিষ্ঠ | ভারত |"]

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি
শ্রীমদ্ভগবদ্‌গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে
জ্ঞানযোগো নাম চতুর্থোঽধ্যায়ঃ ॥৪॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | জ্ঞান + যোগো | নাম | চতুর্থো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

पञ्चमोऽध्यायः
संन्यासयोग

अर्जुन उवाच :—
संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगञ्च शंससि ।
यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मेब्रूहि सुनिश्चितम् ॥५-०१॥

["| अर्जुन | उवाच | संन्यासं | कर्मणां | कृष्ण | पुनः + योगं + च | शंससि |
| यत् + श्रेय | एतयोः + एकं | तत् + में + ब्रूहि | सुनिश्चितम् |"]

श्रीभगवानुवाच :—
संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात् कर्मयोगो विशिष्यते ॥५-०२॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | संन्यासः | कर्म + योगः + च | निःश्रेयस + करौ + उभौ |
| तयोः + तु | कर्म + संन्यासात् | कर्म + योगो | विशिष्यते |"]

–: ॐ :–

পঞ্চমোঽধ্যায়ঃ

সন্ন্যাসযোগ

অর্জুন উবাচ :—

সন্ন্যাসং কর্মণাং কৃষ্ণ পুনর্যোগঞ্চ শংসসি ।

যচ্ছ্রেয় এতয়োরেকং তন্মেব্রূহি সুনিশ্চিতম্ ॥৫-০১॥

["। অর্জুন । উবাচ । সন্ন্যাসং । কর্মণাং । কৃষ্ণ । পুনঃ + যোগং + চ । শংসসি ।
। যৎ + শ্রেয় । এতয়োঃ + একং । তৎ + মে + ব্রূহি । সুনিশ্চিতম্ ।"]

শ্রীভগবানুবাচ :—

সন্ন্যাসঃ কর্মযোগশ্চ নিঃশ্রেয়সকরাবুভৌ ।

তয়োস্তু কর্মসন্ন্যাসাৎ কর্মযোগো বিশিষ্যতে ॥৫-০২॥

["। শ্রী + ভগবান্ + উবাচ । সন্ন্যাসঃ । কর্ম + যোগঃ + চ । নিঃশ্রেয়স + করৌ + উভৌ ।
। তয়োঃ + তু । কর্ম + সন্ন্যাসাৎ । কর্ম + যোগো । বিশিষ্যতে ।"]

–: ॐ :–

श्रेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति ।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात् प्रमुच्यते ॥५-०३॥

["| ज्ञेयः | स | नित्य + संन्यासी | यो | न | द्वेष्टि | न | काङ्क्षति |
| निर्द्वन्द्वो | हि | महाबाहो | सुखं | बन्धात् | प्रमुच्यते |"]

सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः ।
एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम् ॥५-०४॥

["| सांख्य + योगौ | पृथक् + बालाः | प्रवदन्ति | न | पण्डिताः |
| एकम् + अपि + आस्थितः | सम्यक् + उभयोः + विन्दते | फलम् |"]

यत् सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ।
एकं सांख्यञ्च योगञ्च यः पश्यति स पश्यति ॥५-०५॥

["| यत् | सांख्यैः | प्राप्यते | स्थानं | तत् + योगैः + अपि | गम्यते |
| एकं | सांख्यं + च | योगं + च | यः | पश्यति | स | पश्यति |"]

संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥५-०६॥

["| संन्यासः + तु | महाबाहो | दुःखम् + आप्तुम् + अयोगतः |
| योग + युक्तो | मुनिः + ब्रह्म | नचिरेण + अधिगच्छति |"]

–: ॐ :–

জ্ঞেয়ঃ স নিত্যসন্ন্যাসী যো ন দ্বেষ্টি ন কাঙ্ক্ষতি ।

নির্দ্বন্দ্বো হি মহাবাহো সুখং বন্ধাৎ প্রমুচ্যতে ॥৫-০৩॥

["| জ্ঞেয়ঃ | স | নিত্য + সন্ন্যাসী | যো | ন | দ্বেষ্টি | ন | কাঙ্ক্ষতি |
| নির্দ্বন্দ্বো | হি | মহাবাহো | সুখং | বন্ধাৎ | প্রমুচ্যতে |"]

সাংখ্যযোগৌ পৃথগ্বালাঃ প্রবদন্তি ন পণ্ডিতাঃ ।

একমপ্যাস্থিতঃ সম্যগুভয়োর্বিন্দতে ফলম্ ॥৫-০৪॥

["| সাংখ্য + যোগৌ | পৃথক্ + বালাঃ | প্রবদন্তি | ন | পণ্ডিতাঃ |
| একম্ + অপি + আস্থিতঃ | সম্যক্ + উভয়োঃ + বিন্দতে | ফলম্ |"]

যৎ সাংখ্যৈঃ প্রাপ্যতে স্থানং তদ্‌যোগৈরপি গম্যতে ।

একং সাংখ্যঞ্চ যোগঞ্চ যঃ পশ্যতি স পশ্যতি ॥৫-০৫॥

["| যৎ | সাংখ্যৈঃ | প্রাপ্যতে | স্থানং | তৎ + যোগৈঃ + অপি | গম্যতে |
| একং | সাংখ্যং + চ | যোগং + চ | যঃ | পশ্যতি | স | পশ্যতি |"]

সন্ন্যাসস্তু মহাবাহো দুঃখমাপ্তুমযোগতঃ ।

যোগযুক্তো মুনির্ব্রহ্ম নচিরেণাধিগচ্ছতি ॥৫-০৬॥

["| সন্ন্যাসঃ + তু | মহাবাহো | দুঃখম্ + আপ্তুম্ + অযোগতঃ |
| যোগ + যুক্তো | মুনিঃ + ব্রহ্ম | নচিরেণ + অধিগচ্ছতি |"]

–: ॐ :–

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥५-०७॥

["| योग + युक्तो | विशुद्ध + आत्मा | विजित + आत्मा | जित + इन्द्रियः |
| सर्व + भूत + आत्म + भूत + आत्मा | कुर्वन् + अपि | न | लिप्यते |"]

नैव किञ्चित् करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ।
पश्यन् श्रृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन्नश्नन् गच्छन् स्वपन् श्वसन् ॥५-०८॥

["| न + एव | किञ्चित् | करोमि + इति | युक्तो | मन्येत | तत्त्ववित् |
| पश्यन् | श्रृण्वन् | स्पृशन् | जिघ्रन् + अश्नन् | गच्छन् | स्वपन् | श्वसन् |"]

प्रलपन् विसृजन् गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥५-०९॥

["| प्रलपन् | विसृजन् | गृह्णन् + उन्मिषन् + निमिषन् + अपि |
| इन्द्रियाणि + इन्द्रिय + अर्थेषु | वर्तन्त | इति | धारयन् |"]

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः ।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥५-१०॥

["| ब्रह्मणि + आधाय | कर्माणि | सङ्गं | त्यक्त्वा | करोति | यः |
| लिप्यते | न | स | पापेन | पद्म + पत्रम् + इव + अम्भसा |"]

–: ॐ :–

যোগযুক্তো বিশুদ্ধাত্মা বিজিতাত্মা জিতেন্দ্রিয়ঃ ।

সর্বভূতাত্মভূতাত্মা কুর্বন্নপি ন লিপ্যতে ॥৫-০৭॥

["| যোগ + যুক্তো | বিশুদ্ধ + আত্মা | বিজিত + আত্মা | জিত + ইন্দ্রিয়ঃ |
| সর্ব + ভূত + আত্ম + ভূত + আত্মা | কুর্বন্ + অপি | ন | লিপ্যতে |"]

নৈব কিঞ্চিৎ করোমীতি যুক্তো মন্যেত তত্ত্ববিৎ ।

পশ্যন্ শৃণ্বন্ স্পৃশন্ জিঘ্রন্নশ্নন্ গচ্ছন্ স্বপন্ শ্বসন্ ॥৫-০৮॥

["| ন + এব | কিঞ্চিৎ | করোমি + ইতি | যুক্তো | মন্যেত | তত্ত্ববিৎ |
| পশ্যন্ | শৃণ্বন্ | স্পৃশন্ | জিঘ্রন্ + অশ্নন্ | গচ্ছন্ | স্বপন্ | শ্বসন্ |"]

প্রলপন্ বিসৃজন্ গৃহ্ণন্নুন্মিষন্নিমিষন্নপি ।

ইন্দ্রিয়াণীন্দ্রিয়ার্থেষু বর্তন্ত ইতি ধারয়ন্ ॥৫-০৯॥

["| প্রলপন্ | বিসৃজন্ | গৃহ্ণন্ + উন্মিষন্ + নিমিষন্ + অপি |
| ইন্দ্রিয়াণি + ইন্দ্রিয় + অর্থেষু | বর্তন্ত | ইতি | ধারয়ন্ |"]

ব্রহ্মণ্যাধায় কর্মাণি সঙ্গং ত্যক্ত্বা করোতি যঃ ।

লিপ্যতে ন স পাপেন পদ্মপত্রমিবাম্ভসা ॥৫-১০॥

["| ব্রহ্মণি + আধায় | কর্মাণি | সঙ্গং | ত্যক্ত্বা | করোতি | যঃ |
| লিপ্যতে | ন | স | পাপেন | পদ্ম + পত্রম্ + ইব + অম্ভসা |"]

–: ॐ :–

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि ।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥५-११॥

["| कायेन | मनसा | बुद्ध्या | केवलैः + इन्द्रियैः + अपि |
| योगिनः | कर्म | कुर्वन्ति | सङ्गं | त्यक्त्वा + आत्म + शुद्धये |"]

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥५-१२॥

["| युक्तः | कर्म + फलं | त्यक्त्वा | शान्तिम् + आप्नोति | नैष्ठिकीम् |
| अयुक्तः | काम + कारेण | फले | सक्तो | निबध्यते |"]

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी ।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥५-१३॥

["| सर्व + कर्माणि | मनसा | संन्यस्य + आस्ते | सुखं | वशी |
| नव + द्वारे | पुरे | देही | नैव | कुर्वन् + न | कारयन् |"]

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः ।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥५-१४॥

["| न | कर्तृत्वं | न | कर्माणि | लोकस्य | सृजति | प्रभुः |
| न | कर्म + फल + संयोगं | स्वभावः + तु | प्रवर्तते |"]

–: ॐ :–

কায়েন মনসা বুদ্ধ্যা কেবলৈরিন্দ্রিয়ৈরপি ।
যোগিনঃ কর্ম কুর্বন্তি সঙ্গং ত্যক্ত্বাত্মশুদ্ধয়ে ॥৫-১১॥

["| কায়েন | মনসা | বুদ্ধ্যা | কেবলৈঃ + ইন্দ্রিয়ৈঃ + অপি |
| যোগিনঃ | কর্ম | কুর্বন্তি | সঙ্গং | ত্যক্ত্বা + আত্ম + শুদ্ধয়ে |"]

যুক্তঃ কর্মফলং ত্যক্ত্বা শান্তিমাপ্নোতি নৈষ্ঠিকীম্ ।
অযুক্তঃ কামকারেণ ফলে সক্তো নিবধ্যতে ॥৫-১২॥

["| যুক্তঃ | কর্ম + ফলং | ত্যক্ত্বা | শান্তিম্ + আপ্নোতি | নৈষ্ঠিকীম্ |
| অযুক্তঃ | কাম + কারেণ | ফলে | সক্তো | নিবধ্যতে |"]

সর্বকর্মাণি মনসা সংন্যস্যাস্তে সুখং বশী ।
নবদ্বারে পুরে দেহী নৈব কুর্বন্ন কারয়ন্ ॥৫-১৩॥

["| সর্ব + কর্মাণি | মনসা | সংন্যস্য + আস্তে | সুখং | বশী |
| নব + দ্বারে | পুরে | দেহী | নৈব | কুর্বন্ + ন | কারয়ন্ |"]

ন কর্তৃত্বং ন কর্মাণি লোকস্য সৃজতি প্রভুঃ ।
ন কর্মফলসংযোগং স্বভাবস্তু প্রবর্ততে ॥৫-১৪॥

["| ন | কর্তৃত্বং | ন | কর্মাণি | লোকস্য | সৃজতি | প্রভুঃ |
| ন | কর্ম + ফল + সংযোগং | স্বভাবঃ + তু | প্রবর্ততে |"]

–: ॐ :–

नादत्ते कस्यचित् पापं न चैव सुकृतं विभुः ।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥५-१५॥

["| न + आदत्ते | कस्यचित् | पापं | न | च + एव | सुकृतं | विभुः |
| अज्ञानेन + आवृतं | ज्ञानं | तेन | मुह्यन्ति | जन्तवः |"]

ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः ।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत् परम् ॥५-१६॥

["| ज्ञानेन | तु | तत् + अज्ञानं | येषां | नाशितम् + आत्मनः |
| तेषाम् + आदित्यवत् + ज्ञानं | प्रकाशयति | तत् | परम् |"]

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः ।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥५-१७॥

["| तत् + बुद्धयः + तत् + आत्मानः + तत् + निष्ठाः + तत् + परायणाः |
| गच्छन्ति + अपुनः + आवृत्तिं | ज्ञान + निर्धूत + कल्मषाः |"]

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥५-१८॥

["| विद्या + विनय + सम्पन्ने | ब्राह्मणे | गवि | हस्तिनि |
| शुनि | च + एव | श्व + पाके | च | पण्डिताः | सम + दर्शिनः |"]

–: ॐ :–

নাদত্তে কস্যচিৎ পাপং ন চৈব সুকৃতং বিভুঃ ।

অজ্ঞানেনাবৃতং জ্ঞানং তেন মুহ্যন্তি জন্তবঃ ॥৫-১৫॥

["| ন + আদত্তে | কস্যচিৎ | পাপং | ন | চ + এব | সুকৃতং | বিভুঃ |

| অজ্ঞানেন + আবৃতং | জ্ঞানং | তেন | মুহ্যন্তি | জন্তবঃ |"]

জ্ঞানেন তু তদজ্ঞানং যেষাং নাশিতমাত্মনঃ ।

তেষামাদিত্যবজ্জ্ঞানং প্রকাশয়তি তৎ পরম্ ॥৫-১৬॥

["| জ্ঞানেন | তু | তৎ + অজ্ঞানং | যেষাং | নাশিতম্ + আত্মনঃ |

| তেষাম্ + আদিত্যবৎ + জ্ঞানং | প্রকাশয়তি | তৎ | পরম্ |"]

তদ্বুদ্ধয়স্তদাত্মানস্তন্নিষ্ঠাস্তৎপরায়ণাঃ ।

গচ্ছন্ত্যপুনরাবৃত্তিং জ্ঞাননির্ধূতকল্মষাঃ ॥৫-১৭॥

["| তৎ + বুদ্ধয়ঃ + তৎ + আত্মানঃ + তৎ + নিষ্ঠাঃ + তৎ + পরায়ণাঃ |

| গচ্ছন্তি + অপুনঃ + আবৃত্তিং | জ্ঞান + নির্ধূত + কল্মষাঃ |"]

বিদ্যাবিনয়সম্পন্নে ব্রাহ্মণে গবি হস্তিনি ।

শুনি চৈব শ্বপাকে চ পণ্ডিতাঃ সমদর্শিনঃ ॥৫-১৮॥

["| বিদ্যা + বিনয় + সম্পন্নে | ব্রাহ্মণে | গবি | হস্তিনি |

| শুনি | চ + এব | শ্ব + পাকে | চ | পণ্ডিতাঃ | সম + দর্শিনঃ |"]

–: ॐ :–

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः ।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥५-१९॥

["| इह + एव | तैः + जितः | सर्गो | येषां | साम्ये | स्थितं | मनः |
| निर्दोषं | हि | समं | ब्रह्म | तस्मात् + ब्रह्मणि | ते | स्थिताः |"]

न प्रहृष्येत् प्रियं प्राप्य नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम् ।
स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः ॥५-२०॥

["| न | प्रहृष्येत् | प्रियं | प्राप्य | न + उद्विजेत् | प्राप्य | च + अप्रियम् |
| स्थिर + बुद्धिः + असंमूढो | ब्रह्मवित् + ब्रह्मणि | स्थितः |"]

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत् सुखम् ।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ॥५-२१॥

["| बाह्य + स्पर्शेषु + असक्त + आत्मा | विन्दति + आत्मनि | यत् | सुखम् |
| स | ब्रह्म + योग + युक्त + आत्मा | सुखम् + अक्षयम् + अश्नुते |"]

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते ।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥५-२२॥

["| ये | हि | संस्पर्शजा | भोगा | दुःख + योनय | एव | ते |
| आदि + अन्तवन्तः | कौन्तेय | न | तेषु | रमते | बुधः |"]

–: ॐ :–

ইহৈব তৈর্জিতঃ সর্গো যেষাং সাম্যে স্থিতং মনঃ ।

নির্দোষং হি সমং ব্রহ্ম তস্মাদ্ব্রহ্মণি তে স্থিতাঃ ॥৫-১৯॥

["| ইহ + এব | তৈঃ + জিতঃ | সর্গো | যেষাং | সাম্যে | স্থিতং | মনঃ |
| নির্দোষং | হি | সমং | ব্রহ্ম | তস্মাৎ + ব্রহ্মণি | তে | স্থিতাঃ |"]

ন প্রহৃষ্যেৎ প্রিয়ং প্রাপ্য নোদ্বিজেৎ প্রাপ্য চাপ্রিয়ম্ ।

স্থিরবুদ্ধিরসংমূঢ়ো ব্রহ্মবিদ্ব্রহ্মণি স্থিতঃ ॥৫-২০॥

["| ন | প্রহৃষ্যেৎ | প্রিয়ং | প্রাপ্য | ন + উদ্বিজেৎ | প্রাপ্য | চ + অপ্রিয়ম্ |
| স্থির + বুদ্ধিঃ + অসংমূঢ়ো | ব্রহ্মবিৎ + ব্রহ্মণি | স্থিতঃ |"]

বাহ্যস্পর্শেষ্বসক্তাত্মা বিন্দত্যাত্মনি যৎ সুখম্ ।

স ব্রহ্মযোগযুক্তাত্মা সুখমক্ষয়মশ্নুতে ॥৫-২১॥

["| বাহ্য + স্পর্শেষু + অসক্ত + আত্মা | বিন্দতি + আত্মনি | যৎ | সুখম্ |
| স | ব্রহ্ম + যোগ + যুক্ত + আত্মা | সুখম্ + অক্ষয়ম্ + অশ্নুতে |"]

যে হি সংস্পর্শজা ভোগা দুঃখযোনয় এব তে ।

আদ্যন্তবন্তঃ কৌন্তেয় ন তেষু রমতে বুধঃ ॥৫-২২॥

["| যে | হি | সংস্পর্শজা | ভোগা | দুঃখ + যোনয় | এব | তে |
| আদি + অন্তবন্তঃ | কৌন্তেয় | ন | তেষু | রমতে | বুধঃ |"]

–: ॐ :–

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक् शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥५-२३॥

["| शक्नोति + इह + एव | यः | सोढुं | प्राक् | शरीर + विमोक्षणात् |
| काम + क्रोध + उद्भवं | वेगं | स | युक्तः | स | सुखी | नरः |"]

योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः ।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥५-२४॥

["| यो + अन्तः + सुखो + अन्तः + आरामः + तथा + अन्तः + ज्योतिः + एव | यः |
| स | योगी | ब्रह्म + निर्वाणं | ब्रह्म + भूतो + अधिगच्छति |"]

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणम् ऋषयः क्षीणकल्मषाः ।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ॥५-२५॥

["| लभन्ते | ब्रह्म + निर्वाणम् | ऋषयः | क्षीण + कल्मषाः |
| छिन्न + द्वैधा | यत + आत्मानः | सर्व + भूत + हिते | रताः |"]

कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् ।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ॥५-२६॥

["| काम + क्रोध + वियुक्तानां | यतीनां | यत + चेतसाम् |
| अभितो | ब्रह्म + निर्वाणं | वर्तते | विदित + आत्मनाम् |"]

–: ॐ :–

শক্নোতীহৈব যঃ সোঢ়ুং প্রাক্ শরীরবিমোক্ষণাৎ ।
কামক্রোধোদ্ভবং বেগং স যুক্তঃ স সুখী নরঃ ॥৫-২৩॥

["| শক্নোতি + ইহ + এব | যঃ | সোঢ়ুং | প্রাক্ | শরীর + বিমোক্ষণাৎ |
| কাম + ক্রোধ + উদ্ভবং | বেগং | স | যুক্তঃ | স | সুখী | নরঃ |"]

যোঽন্তঃসুখোঽন্তরারামস্তথান্তর্জ্যোতিরেব যঃ ।
স যোগী ব্রহ্মনির্বাণং ব্রহ্মভূতোঽধিগচ্ছতি ॥৫-২৪॥

["| যো + অন্তঃ + সুখো + অন্তঃ + আরামঃ + তথা + অন্তঃ + জ্যোতিঃ + এব | যঃ |
| স | যোগী | ব্রহ্ম + নির্বাণং | ব্রহ্ম + ভূতো + অধিগচ্ছতি |"]

লভন্তে ব্রহ্মনির্বাণম্ ঋষয়ঃ ক্ষীণকল্মষাঃ ।
ছিন্নদ্বৈধা যতাত্মানঃ সর্বভূতহিতে রতাঃ ॥৫-২৫॥

["| লভন্তে | ব্রহ্ম + নির্বাণম্ | ঋষয়ঃ | ক্ষীণ + কল্মষাঃ |
| ছিন্ন + দ্বৈধা | যত + আত্মানঃ | সর্ব + ভূত + হিতে | রতাঃ |"]

কামক্রোধবিযুক্তানাং যতীনাং যতচেতসাম্ ।
অভিতো ব্রহ্মনির্বাণং বর্ততে বিদিতাত্মনাম্ ॥৫-২৬॥

["| কাম + ক্রোধ + বিযুক্তানাং | যতীনাং | যত + চেতসাম্ |
| অভিতো | ব্রহ্ম + নির্বাণং | বর্ততে | বিদিত + আত্মনাম্ |"]

–: ॐ :–

स्पर्शान् कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः ।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥५-२७॥

["| स्पर्शान् | कृत्वा | बहिः + बाह्यान् + चक्षुः + च + एव + अन्तरे | भ्रुवोः |
| प्राण + अपानौ | समौ | कृत्वा | नासा + अभ्यन्तर + चारिणौ |"]

यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ॥५-२८॥

["| यत + इन्द्रिय + मनो + बुद्धिः + मुनिः + मोक्ष + परायणः |
| विगत + इच्छा + भय + क्रोधो | यः | सदा | मुक्त | एव | सः |"]

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥५-२९॥

["| भोक्तारं | यज्ञ + तपसां | सर्व + लोक + महा + ईश्वरम् |
| सुहृदं | सर्व + भूतानां | ज्ञात्वा | मां | शान्तिम् + ऋच्छति |"]

–: ॐ :–

স্পর্শান্ কৃত্বা বহির্বাহ্যাংশ্চক্ষুশ্চৈবান্তরে ভ্রুবোঃ ।

প্রাণাপানৌ সমৌ কৃত্বা নাসাভ্যন্তরচারিণৌ ॥৫-২৭॥

["| স্পর্শান্ | কৃত্বা | বহিঃ + বাহ্যান্ + চক্ষুঃ + চ + এব + অন্তরে | ভ্রুবোঃ |
| প্রাণ + অপানৌ | সমৌ | কৃত্বা | নাসা + অভ্যন্তর + চারিণৌ |"]

যতেন্দ্রিয়মনোবুদ্ধির্মুনির্মোক্ষপরায়ণঃ ।

বিগতেচ্ছাভয়ক্রোধো যঃ সদা মুক্ত এব সঃ ॥৫-২৮॥

["| যত + ইন্দ্রিয় + মনো + বুদ্ধিঃ + মুনিঃ + মোক্ষ + পরায়ণঃ |
| বিগত + ইচ্ছা + ভয় + ক্রোধো | যঃ | সদা | মুক্ত | এব | সঃ |"]

ভোক্তারং যজ্ঞতপসাং সর্বলোকমহেশ্বরম্ ।

সুহৃদং সর্বভূতানাং জ্ঞাত্বা মাং শান্তিমৃচ্ছতি ॥৫-২৯॥

["| ভোক্তারং | যজ্ঞ + তপসাং | সর্ব + লোক + মহা + ঈশ্বরম্ |
| সুহৃদং | সর্ব + ভূতানাং | জ্ঞাত্বা | মাং | শান্তিম্ + ঋচ্ছতি |"]

–: ॐ :–

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे संन्यासयोगो नाम पञ्चमोऽध्यायः॥५॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | संन्यास + योगो | नाम | पञ्चमो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে সন্ন্যাসযোগো নাম পঞ্চমোঽধ্যায়ঃ ॥৫॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | সন্ন্যাস + যোগো | নাম | পঞ্চমো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

षष्ठोऽध्यायः
ध्यानयोग

श्रीभगवानुवाच :—
अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः ।
स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ॥६-०१॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | अनाश्रितः | कर्म + फलं | कार्यं | कर्म | करोति | यः |
| स | संन्यासी | च | योगी | च | न | निरग्निः + न | च + अक्रियः |"]

यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव ।
न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन ॥६-०२॥

["| यं | संन्यासम् + इति | प्राहुः + योगं | तं | विद्धि | पाण्डव |
| न | हि + असंन्यस्त + संकल्पो | योगी | भवति | कश्चन |"]

–: ॐ :–

ষষ্টোঽধ্যায়ঃ

ধ্যানযোগ

শ্রীভগবানুবাচ :—

অনাশ্রিতঃ কর্মফলং কার্যং কর্ম করোতি যঃ ।

স সন্ন্যাসী চ যোগী চ ন নিরগ্নির্ন চাক্রিয়ঃ ॥৬-০১॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | অনাশ্রিতঃ | কর্ম + ফলং | কার্যং | কর্ম | করোতি | যঃ |
| স | সন্ন্যাসী | চ | যোগী | চ | ন | নিরগ্নিঃ + ন | চ + অক্রিয়ঃ |"]

যং সন্ন্যাসমিতি প্রাহুর্যোগং তং বিদ্ধি পাণ্ডব ।

ন হ্যসংন্যস্তসংকল্পো যোগী ভবতি কশ্চন ॥৬-০২॥

["| যং | সন্ন্যাসম্ + ইতি | প্রাহুঃ + যোগং | তং | বিদ্ধি | পাণ্ডব |
| ন | হি + অসংন্যস্ত + সংকল্পো | যোগী | ভবতি | কশ্চন |"]

–: ॐ :–

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते ।
योगारूढ़स्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥६-०३॥

["| आरुरुक्षोः + मुनेः + योगं | कर्म | कारणम् + उच्यते |
| योग + आरूढ़स्य | तस्य + एव | शमः | कारणम् + उच्यते |"]

यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते ।
सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढ़स्तदोच्यते ॥६-०४॥

["| यदा | हि | न + इन्द्रिय + अर्थेषु | न | कर्मसु + अनुषज्जते |
| सर्व + संकल्प + संन्यासी | योग + आरूढ़ः + तदा + उच्यते |"]

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥६-०५॥

["| उद्धरेत् + आत्मना + आत्मानं | न + आत्मानम् + अवसादयेत् |
| आत्मा + एव | हि + आत्मनो | बन्धुः + आत्मा + एव | रिपुः + आत्मनः |"]

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥६-०६॥

["| बन्धुः + आत्मा + आत्मनः + तस्य | येन + आत्मा + एव + आत्मना | जितः |
| अनात्मनः + तु | शत्रुत्वे | वर्तेत + आत्मा + एव | शत्रुवत् |"]

–: ॐ :–

আরুরুক্ষোর্মুনের্যোগং কর্ম কারণমুচ্যতে ।

যোগারূঢ়স্য তস্যৈব শমঃ কারণমুচ্যতে ॥৬-০৩॥

["| আরুরুক্ষোঃ + মুনেঃ + যোগং | কর্ম | কারণম্ + উচ্যতে |
| যোগ + আরূঢ়স্য | তস্য + এব | শমঃ | কারণম্ + উচ্যতে |"]

যদা হি নেন্দ্রিয়ার্থেষু ন কর্মস্বনুষজ্জতে ।

সর্বসংকল্পসন্ন্যাসী যোগারূঢ়স্তদোচ্যতে ॥৬-০৪॥

["| যদা | হি | ন + ইন্দ্রিয় + অর্থেষু | ন | কর্মসু + অনুষজ্জতে |
| সর্ব + সংকল্প + সন্ন্যাসী | যোগ + আরূঢ়ঃ + তদা + উচ্যতে |"]

উদ্ধরেদাত্মনাত্মানং নাত্মানমবসাদয়েৎ ।

আত্মৈব হ্যাত্মনো বন্ধুরাত্মৈব রিপুরাত্মনঃ ॥৬-০৫॥

["| উদ্ধরেৎ + আত্মনা + আত্মানং | ন + আত্মানম্ + অবসাদয়েৎ |
| আত্মা + এব | হি + আত্মনো | বন্ধুঃ + আত্মা + এব | রিপুঃ + আত্মনঃ |"]

বন্ধুরাত্মাত্মনস্তস্য যেনাত্মৈবাত্মনা জিতঃ ।

অনাত্মনস্তু শত্রুত্বে বর্তেতাত্মৈব শত্রুবৎ ॥৬-০৬॥

["| বন্ধুঃ + আত্মা + আত্মনঃ + তস্য | যেন + আত্মা + এব + আত্মনা | জিতঃ |
| অনাত্মনঃ + তু | শত্রুত্বে | বর্তেত + আত্মা + এব | শত্রুবৎ |"]

–: ॐ :–

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः ॥६-०७॥

["| जित + आत्मनः | प्रशान्तस्य | परमात्मा | समाहितः |
| शीत + उष्ण + सुख + दुःखेषु | तथा | मान + अपमानयोः |"]

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः ।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्ट्राश्मकाञ्चनः ॥६-०८॥

["| ज्ञान + विज्ञान + तृप्त + आत्मा | कूट + स्थो | विजित + इन्द्रियः |
| युक्त | इति + उच्यते | योगी | सम + लोष्ट्र + अश्म + काञ्चनः |"]

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु ।
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ॥६-०९॥

["| सुहृत् + मित्र + अरि + उदासीन + मध्यस्थ + द्वेष्य + बन्धुषु |
| साधुषु + अपि | च | पापेषु | सम + बुद्धिः + विशिष्यते |"]

योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः ।
एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥६-१०॥

["| योगी | युञ्जीत | सततम् + आत्मानं | रहसि | स्थितः |
| एकाकी | यत + चित्त + आत्मा | निराशीः + अपरिग्रहः |"]

–: ૐ :–

জিতাত্মনঃ প্রশান্তস্য পরমাত্মা সমাহিতঃ ।

শীতোষ্ণসুখদুঃখেষু তথা মানাপমানয়োঃ ॥৬-০৭॥

["| জিত + আত্মনঃ | প্রশান্তস্য | পরমাত্মা | সমাহিতঃ |
| শীত + উষ্ণ + সুখ + দুঃখেষু | তথা | মান + অপমানয়োঃ |"]

জ্ঞানবিজ্ঞানতৃপ্তাত্মা কূটস্থো বিজিতেন্দ্রিয়ঃ ।

যুক্ত ইত্যুচ্যতে যোগী সমলোষ্ট্রাশ্মকাঞ্চনঃ ॥৬-০৮॥

["| জ্ঞান + বিজ্ঞান + তৃপ্ত + আত্মা | কূট + স্থো | বিজিত + ইন্দ্রিয়ঃ |
| যুক্ত | ইতি + উচ্যতে | যোগী | সম + লোষ্ট্র + অশ্ম + কাঞ্চনঃ |"]

সুহৃন্মিত্রার্য্যুদাসীনমধ্যস্থদ্বেষ্যবন্ধুষু ।

সাধুষ্বপি চ পাপেষু সমবুদ্ধির্বিশিষ্যতে ॥৬-০৯॥

["| সুহৃৎ + মিত্র + অরি + উদাসীন + মধ্যস্থ + দ্বেষ্য + বন্ধুষু |
| সাধুষু + অপি | চ | পাপেষু | সম + বুদ্ধিঃ + র্বিশিষ্যতে |"]

যোগী যুঞ্জীত সততমাত্মানং রহসি স্থিতঃ ।

একাকী যতচিত্তাত্মা নিরাশীরপরিগ্রহঃ ॥৬-১০॥

["| যোগী | যুঞ্জীত | সততম্ + আত্মানং | রহসি | স্থিতঃ |
| একাকী | যত + চিত্ত + আত্মা | নিরাশীঃ + অপরিগ্রহঃ |"]

–: ॐ :–

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः ।
नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम् ॥६-११॥

["| शुचौ | देशे | प्रतिष्ठाप्य | स्थिरम् + आसनम् + आत्मनः |
| न + अति + उच्छ्रितं | न + अति + नीचं | चैल + अजिन + कुशो + उत्तरम् |"]

तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः ।
उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये ॥६-१२॥

["| तत्र + एकाग्रं | मनः | कृत्वा | यत + चित्त + इन्द्रिय + क्रियः |
| उपविश्य + आसने | युञ्ज्यात् + योगम् + आत्म + विशुद्धये |"]

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः ।
सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् ॥६-१३॥

["| समं | काय + शिरो + ग्रीवं | धारयन् + अचलं | स्थिरः |
| सम्प्रेक्ष्य | नासिका + अग्रं | स्वं | दिशः + च + अनवलोकयन् |"]

प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ।
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः ॥६-१४॥

["| प्रशान्त + आत्मा | विगतभीः + ब्रह्मचारि + व्रते | स्थितः |
| मनः | संयम्य | मत् + चित्तो | युक्त | आसीत | मत् + परः |"]

–: ॐ :–

শুচৌ দেশে প্রতিষ্ঠাপ্য স্থিরমাসনমাত্মনঃ ।

নাত্যুচ্ছ্রিতং নাতিনীচং চৈলাজিনকুশোত্তরম্ ॥৬-১১॥

["। শুচৌ । দেশে । প্রতিষ্ঠাপ্য । স্থিরম্ + আসনম্ + আত্মনঃ ।
। ন + অতি + উচ্ছ্রিতং । ন + অতি + নীচং । চৈল + অজিন + কুশো + উত্তরম্ ।"]

তত্রৈকাগ্রং মনঃ কৃত্বা যতচিত্তেন্দ্রিয়ক্রিয়ঃ ।

উপবিশ্যাসনে যুঞ্জ্যাদ্‌যোগমাত্মবিশুদ্ধয়ে ॥৬-১২॥

["। তত্র + একাগ্রং । মনঃ । কৃত্বা । যত + চিত্ত + ইন্দ্রিয় + ক্রিয়ঃ ।
। উপবিশ্য + আসনে । যুঞ্জ্যাৎ + যোগম্ + আত্ম + বিশুদ্ধয়ে ।"]

সমং কায়শিরোগ্রীবং ধারয়ন্নচলং স্থিরঃ ।

সংপ্রেক্ষ্য নাসিকাগ্রং স্বং দিশশ্চানবলোকয়ন্ ॥৬-১৩॥

["। সমং । কায় + শিরো + গ্রীবং । ধারয়ন্ + অচলং । স্থিরঃ ।
। সংপ্রেক্ষ্য । নাসিকা + অগ্রং । স্বং । দিশঃ + চ + অনবলোকয়ন্ ।"]

প্রশান্তাত্মা বিগদভীর্ব্রহ্মচারিব্রতে স্থিতঃ ।

মনঃ সংযম্য মচ্চিত্তো যুক্ত আসীত মৎপরঃ ॥৬-১৪॥

["। প্রশান্ত + আত্মা । বিগদভীঃ + ব্রহ্মচারি + ব্রতে । স্থিতঃ ।
। মনঃ । সংযম্য । মৎ + চিত্তো । যুক্ত । আসীত । মৎ + পরঃ ।"]

–: ॐ :–

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः ।
शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति ॥६-१५॥

["| युञ्जन् + एवं | सदा + आत्मानं | योगी | नियत + मानसः |
| शान्तिं | निर्वाण + परमां | मत् + संस्थाम् + अधिगच्छति |"]

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः ।
न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥६-१६॥

["| न + अति + अश्नतः + तु | योगो + अस्ति | न | च + एकान्तम् + अनश्नतः |
| न | च + अति | स्वप्न + शीलस्य | जाग्रतो | न + एव | च + अर्जुन |"]

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥६-१७॥

["| युक्त + आहार + विहारस्य | युक्त + चेष्टस्य | कर्मसु |
| युक्त + स्वप्न + अवबोधस्य | योगो | भवति | दुःखहा |"]

यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते ।
निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥६-१८॥

["| यदा | विनियतं | चित्तम् + आत्मनि + एव + अवतिष्ठते |
| निःस्पृहः | सर्व + कामेभ्यो | युक्त | इति + उच्यते | तदा |"]

–: ॐ :–

যুঞ্জন্নেবং সদাত্মানং যোগী নিয়তমানসঃ ।

শান্তিং নির্বাণপরমাং মৎসংস্থামধিগচ্ছতি ॥৬-১৫॥

["| যুঞ্জন্ + এবং | সদা + আত্মানং | যোগী | নিয়ত + মানসঃ |
| শান্তিং | নির্বাণ + পরমাং | মৎ + সংস্থাম্ + অধিগচ্ছতি |"]

নাত্যশ্নতস্তু যোগোঽস্তি ন চৈকান্তমনশ্নতঃ ।

ন চাতি স্বপ্নশীলস্য জাগ্রতো নৈব চার্জুন ॥৬-১৬॥

["| ন + অতি + অশ্নতঃ + তু | যোগো + অস্তি | ন | চ + একান্তম্ + অনশ্নতঃ |
| ন | চ + অতি | স্বপ্ন + শীলস্য | জাগ্রতো | ন + এব | চ + অর্জুন |"]

যুক্তাহারবিহারস্য যুক্তচেষ্টস্য কর্মসু ।

যুক্তস্বপ্নাববোধস্য যোগো ভবতি দুঃখহা ॥৬-১৭॥

["| যুক্ত + আহার + বিহারস্য | যুক্ত + চেষ্টস্য | কর্মসু |
| যুক্ত + স্বপ্ন + অববোধস্য | যোগো | ভবতি | দুঃখহা |"]

যদা বিনিয়তং চিত্তমাত্মন্যেবাবতিষ্ঠতে ।

নিঃস্পৃহঃ সর্বকামেভ্যো যুক্ত ইত্যুচ্যতে তদা ॥৬-১৮॥

["| যদা | বিনিয়তং | চিত্তম্ + আত্মনি + এব + অবতিষ্ঠতে |
| নিঃস্পৃহঃ | সর্ব + কামেভ্যো | যুক্ত | ইতি + উচ্যতে | তদা |"]

–: ॐ :–

यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता ।
योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥६-१९॥

["| यथा | दीपो | निवात + स्थो | न + इङ्गते | सा + उपमा | स्मृता |
| योगिनो | यत + चित्तस्य | युञ्जतो | योगम् + आत्मनः |"]

यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया ।
यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति ॥६-२०॥

["| यत्र + उपरमते | चित्तं | निरुद्धं | योग + सेवया |
| यत्र | च + एव + आत्मना + आत्मानं | पश्यन् + आत्मनि | तुष्यति |"]

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम् ।
वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः ॥६-२१॥

["| सुखम् + आत्यन्तिकं | यत् + तत् + बुद्धि + ग्राह्यम् + अतीन्द्रियम् |
| वेत्ति | यत्र | न | च + एव + अयं | स्थितः + चलति | तत्त्वतः |"]

यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः ।
यस्मिन् स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते ॥६-२२॥

["| यं | लब्ध्वा | च + अपरं | लाभं | मन्यते | न + अधिकं | ततः |
| यस्मिन् | स्थितो | न | दुःखेन | गुरुणा + अपि | विचाल्यते |"]

–: ওঁ :–

যথা দীপো নিবাতস্থো নেঙ্গতে সোপমা স্মৃতা ।
যোগিনো যতচিত্তস্য যুঞ্জতো যোগমাত্মনঃ ॥৬-১৯॥

["| যথা | দীপো | নিবাত + স্থো | ন + ইঙ্গতে | সা + উপমা | স্মৃতা |
| যোগিনো | যত + চিত্তস্য | যুঞ্জতো | যোগম্ + আত্মনঃ |"]

যত্রোপরমতে চিত্তং নিরুদ্ধং যোগসেবয়া ।
যত্র চৈবাত্মনাত্মানং পশ্যন্নাত্মনি তুষ্যতি ॥৬-২০॥

["| যত্র + উপরমতে | চিত্তং | নিরুদ্ধং | যোগ + সেবয়া |
| যত্র | চ + এব + আত্মনা + আত্মানং | পশ্যন্ + আত্মনি | তুষ্যতি |"]

সুখমাত্যন্তিকং যত্তদ্‌বুদ্ধিগ্রাহ্যমতীন্দ্রিয়ম্ ।
বেত্তি যত্র ন চৈবায়ং স্থিতশ্চলতি তত্ত্বতঃ ॥৬-২১॥

["| সুখম্ + আত্যন্তিকং | যৎ + তৎ + বুদ্ধি + গ্রাহ্যম্ + অতীন্দ্রিয়ম্ |
| বেত্তি | যত্র | ন | চ + এব + অয়ং | স্থিতঃ + চলতি | তত্ত্বতঃ |"]

যং লব্ধ্বা চাপরং লাভং মন্যতে নাধিকং ততঃ ।
যস্মিন্ স্থিতো ন দুঃখেন গুরুণাপি বিচাল্যতে ॥৬-২২॥

["| যং | লব্ধ্বা | চ + অপরং | লাভং | মন্যতে | ন + অধিকং | ততঃ |
| যস্মিন্ | স্থিতো | ন | দুঃখেন | গুরুণা + অপি | বিচাল্যতে |"]

–: ॐ :–

तं विद्याद्दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम् ।
स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥६-२३॥

["| तं | विद्यात् + दुःख + संयोग + वियोगं | योग + संज्ञितम् |
| स | निश्चयेन | योक्तव्यो | योगो + अनिर्विण्ण + चेतसा |"]

संकल्पप्रभवान् कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः ।
मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः ॥६-२४॥

["| संकल्प + प्रभवान् | कामान् + त्यक्त्वा | सर्वान् + अशेषतः |
| मनसा + एव + इन्द्रिय + ग्रामं | विनियम्य | समन्ततः |"]

शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया ।
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत् ॥६-२५॥

["| शनैः | शनैः + उपरमेत् + बुद्ध्या | धृति + गृहीतया |
| आत्म + संस्थं | मनः | कृत्वा | न | किञ्चित् + अपि | चिन्तयेत् |"]

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम् ।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥६-२६॥

["| यतो | यतो | निश्चरति | मनः + चञ्चलम् + अस्थिरम् |
| ततः + ततो | नियम्य + एतत् + आत्मनि + एव | वशं | नयेत् |"]

–: ওঁ :–

তং বিদ্যাদ্দুঃখসংযোগবিয়োগং যোগসংজ্ঞিতম্ ।

স নিশ্চয়েন যোক্তব্যো যোগোঽনির্বিণ্নচেতসা ॥৬-২৩॥

["| তং | বিদ্যাৎ + দুঃখ + সংযোগ + বিয়োগং | যোগ + সংজ্ঞিতম্ |
| স | নিশ্চয়েন | যোক্তব্যো | যোগো + অনির্বিণ্ন + চেতসা |"]

সংকল্পপ্রভবান্ কামাংস্ত্যক্ত্বা সর্বানশেষতঃ ।

মনসৈবেন্দ্রিয়গ্রামং বিনিয়ম্য সমন্ততঃ ॥৬-২৪॥

["| সংকল্প + প্রভবান্ | কামান্ + ত্যক্ত্বা | সর্বান্ + অশেষতঃ |
| মনসা + এব + ইন্দ্রিয় + গ্রামং | বিনিয়ম্য | সমন্ততঃ |"]

শনৈঃ শনৈরুপরমেদ্বুদ্ধ্যা ধৃতিগৃহীতয়া ।

আত্মসংস্থং মনঃ কৃত্বা ন কিঞ্চিদপি চিন্তয়েৎ ॥৬-২৫॥

["| শনৈঃ | শনৈঃ + উপরমেৎ + বুদ্ধ্যা | ধৃতি + গৃহীতয়া |
| আত্ম + সংস্থং | মনঃ | কৃত্বা | ন | কিঞ্চিৎ + অপি | চিন্তয়েৎ |"]

যতো যতো নিশ্চরতি মনশ্চঞ্চলমস্থিরম্ ।

ততস্ততো নিয়ম্যৈতদাত্মন্যেব বশং নয়েৎ ॥৬-২৬॥

["| যতো | যতো | নিশ্চরতি | মনঃ + চঞ্চলম্ + অস্থিরম্ |
| ততঃ + ততো | নিয়ম্য + এতৎ + আত্মনি + এব | বশং | নয়েৎ |"]

–: ॐ :–

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् ।
उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥६-२७॥

["| प्रशान्त + मनसं | हि + एनं | योगिनं | सुखम् + उत्तमम् |
| उपैति | शान्त + रजसं | ब्रह्म + भूतम् + अकल्मषम् |"]

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः ।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ॥६-२८॥

["| युञ्जन् + एवं | सदा + आत्मानं | योगी | विगत + कल्मषः |
| सुखेन | ब्रह्म + संस्पर्शम् + अत्यन्तं | सुखम् + अश्नुते |"]

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥६-२९॥

["| सर्व + भूत + स्थम् + आत्मानं | सर्व + भूतानि | च + आत्मनि |
| ईक्षते | योग + युक्त + आत्मा | सर्वत्र | सम + दर्शनः |"]

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥६-३०॥

["| यो | मां | पश्यति | सर्वत्र | सर्वं | च | मयि | पश्यति |
| तस्य + अहं | न | प्रणश्यामि | स | च | मे | न | प्रणश्यति |"]

–: ॐ :–

প্রশান্তমনসং হ্যেনং যোগিনং সুখমুত্তমম্ ।

উপৈতি শান্তরজসং ব্রহ্মভূতমকল্মষম্ ॥৬-২৭॥

["| প্রশান্ত + মনসং | হি + এনং | যোগিনং | সুখম্ + উত্তমম্ |

| উপৈতি | শান্ত + রজসং | ব্রহ্ম + ভূতম্ + অকল্মষম্ |"]

যুঞ্জন্নেবং সদাত্মানং যোগী বিগতকল্মষঃ ।

সুখেন ব্রহ্মসংস্পর্শমত্যন্তং সুখমশ্নুতে ॥৬-২৮॥

["| যুঞ্জন্ + এবং | সদা + আত্মানং | যোগী | বিগত + কল্মষঃ |

| সুখেন | ব্রহ্ম + সংস্পর্শম্ + অত্যন্তং | সুখম্ + অশ্নুতে |"]

সর্বভূতস্থমাত্মানং সর্বভূতানি চাত্মনি ।

ঈক্ষতে যোগযুক্তাত্মা সর্বত্র সমদর্শনঃ ॥৬-২৯॥

["| সর্ব + ভূত + স্থম্ + আত্মনং | সর্ব + ভূতানি | চ + আত্মনি |

| ঈক্ষতে | যোগ + যুক্ত + আত্মা | সর্বত্র | সম + দর্শনঃ |"]

যো মাং পশ্যতি সর্বত্র সর্বং চ ময়ি পশ্যতি ।

তস্যাহং ন প্রণশ্যামি স চ মে ন প্রণশ্যতি ॥৬-৩০॥

["| যো | মাং | পশ্যতি | সর্বত্র | সর্বং | চ | ময়ি | পশ্যতি |

| তস্য + অহং | ন | প্রণশ্যামি | স | চ | মে | ন | প্রণশ্যতি |"]

–: ॐ :–

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥६-३१॥

["| सर्व + भूत + स्थितं | यो | मां | भजति + एकत्वम् + आस्थितः |
| सर्वथा | वर्तमानो + अपि | स | योगी | मयि | वर्तते |"]

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥६-३२॥

["| आत्म + उपम्येन | सर्वत्र | समं | पश्यति | यो + अर्जुन |
| सुखं | वा | यदि | वा | दुःखं | स | योगी | परमो | मतः |"]

अर्जुन उवाच :—
योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन ।
एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात् स्थितिं स्थिराम् ॥६-३३॥

["| अर्जुन | उवाच | यो + अयं | योगः + त्वया | प्रोक्तः | साम्येन | मधुसूदन |
| एतस्य + अहं | न | पश्यामि | चञ्चलत्वात् | स्थितिं | स्थिराम् |"]

–: ॐ :–

সর্বভূতস্থিতং যো মাং ভজত্যেকত্বমাস্থিতঃ ।

সর্বথা বর্তমানোঽপি স যোগী ময়ি বর্ততে ॥৬-৩১॥

["| সর্ব + ভূত + স্থিতং | যো | মাং | ভজতি + একত্বম্ + আস্থিতঃ |

| সর্বথা | বর্তমানো + অপি | স | যোগী | ময়ি | বর্ততে |"]

আত্মৌপম্যেন সর্বত্র সমং পশ্যতি যোঽর্জুন ।

সুখং বা যদি বা দুঃখং স যোগী পরমো মতঃ ॥৬-৩২॥

["| আত্ম + উপম্যেন | সর্বত্র | সমং | পশ্যতি | যো + অর্জুন |

| সুখং | বা | যদি | বা | দুঃখং | স | যোগী | পরমো | মতঃ |"]

অর্জুন উবাচ :—

যোঽয়ং যোগস্ত্বয়া প্রোক্তঃ সাম্যেন মধুসূদন ।

এতস্যাহং ন পশ্যামি চঞ্চলত্বাৎ স্থিতিং স্থিরাম্ ॥৬-৩৩॥

["| অর্জুন | উবাচ | যো + অয়ং | যোগঃ + ত্বয়া | প্রোক্তঃ | সাম্যেন | মধুসূদন |

| এতস্য + অহং | ন | পশ্যামি | চঞ্চলত্বাৎ | স্থিতিং | স্থিরাম্ |"]

–: ॐ :–

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥६-३४॥

["| चञ्चलं | हि | मनः | कृष्ण | प्रमाथि | बलवत् + दृढम् |
| तस्य + अहं | निग्रहं | मन्ये | वायोः + इव | सुदुष्करम् |"]

श्रीभगवानुवाच :—
असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥६-३५॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | असंशयं | महाबाहो | मनो | दुर्निग्रहं | चलम् |
| अभ्यासेन | तु | कौन्तेय | वैराग्येण | च | गृह्यते |"]

असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः ।
वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः ॥६-३६॥

["| असंयत + आत्मना | योगो | दुष्प्राप | इति | मे | मतिः |
| वश्य + आत्मना | तु | यतता | शक्यो + अवाप्तुम् + उपायतः |"]

–: ॐ :–

চঞ্চলং হি মনঃ কৃষ্ণ প্রমাথি বলবদ্দৃঢ়ম্ ।

তস্যাহং নিগ্রহং মন্যে বায়োরিব সুদুষ্করম্ ॥৬-৩৪॥

["| চঞ্চলং | হি | মনঃ | কৃষ্ণ | প্রমাথি | বলবৎ + দৃঢ়ম্ |
| তস্য + অহং | নিগ্রহং | মন্যে | বায়োঃ + ইব | সুদুষ্করম্ |"]

শ্রীভগবানুবাচ :—

অসংশয়ং মহাবাহো মনো দুর্নিগ্রহং চলম্ ।

অভ্যাসেন তু কৌন্তেয় বৈরাগ্যেণ চ গৃহ্যতে ॥৬-৩৫॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | অসংশয়ং | মহাবাহো | মনো | দুর্নিগ্রহং | চলম্ |
| অভ্যাসেন | তু | কৌন্তেয় | বৈরাগ্যেণ | চ | গৃহ্যতে |"]

অসংযতাত্মনা যোগো দুষ্প্রাপ ইতি মে মতিঃ ।

বশ্যাত্মনা তু যততা শক্যোঽবাপ্তুমুপায়তঃ ॥৬-৩৬॥

["| অসংযত + আত্মনা | যোগো | দুষ্প্রাপ | ইতি | মে | মতিঃ |
| বশ্য + আত্মনা | তু | যততা | শক্যো + অবাপ্তুম্ + উপায়তঃ |"]

–: ॐ :–

अर्जुन उवाच :—

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः ।

अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति ॥६-३७॥

["| अर्जुन | उवाच | अयतिः | श्रद्धया + उपेतो | योगात् + चलित + मानसः |

| अप्राप्य | योग + संसिद्धिं | कां | गतिं | कृष्ण | गच्छति |"]

कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति ।

अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढ़ो ब्रह्मणः पथि ॥६-३८॥

["| कच्चित् + न + उभय + विभ्रष्टः + छिन्न + अभ्रम् + इव | नश्यति |

| अप्रतिष्ठो | महाबाहो | विमूढ़ो | ब्रह्मणः | पथि |"]

एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः ।

त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥६-३९॥

["| एतत् + में | संशयं | कृष्ण | छेत्तुम् + अर्हसि + अशेषतः |

| त्वत् + अन्यः | संशयस्य + अस्य | छेत्ता | न | हि + उपपद्यते |"]

–: ॐ :–

অর্জুন উবাচ :—

অযতিঃ শ্রদ্ধয়োপেতো যোগাচ্চলিতমানসঃ ।

অপ্রাপ্য যোগসংসিদ্ধিং কাং গতিং কৃষ্ণ গচ্ছতি ॥৬-৩৭॥

["| অর্জুন | উবাচ | অযতিঃ | শ্রদ্ধয়া + উপেতো | যোগাৎ + চলিত + মানসঃ |
| অপ্রাপ্য | যোগ + সংসিদ্ধিং | কাং | গতিং | কৃষ্ণ | গচ্ছতি |"]

কচ্চিন্নোভয়বিভ্রষ্টশ্ছিন্নাভ্রমিব নশ্যতি ।

অপ্রতিষ্ঠো মহাবাহো বিমূঢ়ো ব্রহ্মণঃ পথি ॥৬-৩৮॥

["| কচ্চিৎ + ন + উভয় + বিভ্রষ্টঃ + ছিন্ন + অভ্রম্ + ইব | নশ্যতি |
| অপ্রতিষ্ঠো | মহাবাহো | বিমূঢ়ো | ব্রহ্মণঃ | পথি |"]

এতন্মে সংশয়ং কৃষ্ণ ছেত্তুমর্হস্যশেষতঃ ।

ত্বদন্যঃ সংশয়স্যাস্য ছেত্তা ন হ্যুপপদ্যতে ॥৬-৩৯॥

["| এতৎ + মে | সংশয়ং | কৃষ্ণ | ছেত্তুম্ + অর্হসি + অশেষতঃ |
| ত্বৎ + অন্যঃ | সংশয়স্য + অস্য | ছেত্তা | ন | হি + উপপদ্যতে |"]

–: ॐ :–

श्रीभगवानुवाच :—
पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते ।
न हि कल्याणकृत् कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति ॥६-४०॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | पार्थ | न + एव + इह | न + अमुत्र | विनाशः + तस्य | विद्यते |
| न | हि | कल्याण + कृत् | कश्चित् + दुर्गतिं | तात | गच्छति |"]

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः ।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ॥६-४१॥

["| प्राप्य | पुण्य + कृतां | लोकान् + उषित्वा | शाश्वतीः | समाः |
| शुचीनां | श्री + मतां | गेहे | योग + भ्रष्टो + अभिजायते |"]

अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम् ।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ॥६-४२॥

["| अथवा | योगिनाम् + एव | कुले | भवति | धी + मताम् |
| एतत् + हि | दुर्लभ + तरं | लोके | जन्म | यत् + ईदृशम् |"]

–: ॐ :–

শ্রীভগবানুবাচ :—

পার্থ নৈবেহ নামুত্র বিনাশস্তস্য বিদ্যতে ।

ন হি কল্যাণকৃৎ কশ্চিদ্দুর্গতিং তাত গচ্ছতি ॥৬-৪০॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | পার্থ | ন + এব + ইহ | ন + অমুত্র | বিনাশঃ + তস্য | বিদ্যতে |
| ন | হি | কল্যাণ + কৃৎ | কশ্চিৎ + দুর্গতিং | তাত | গচ্ছতি |"]

প্রাপ্য পুণ্যকৃতাং লোকানুষিত্বা শাশ্বতীঃ সমাঃ ।

শুচীনাং শ্রীমতাং গেহে যোগভ্রষ্টোঽভিজায়তে ॥৬-৪১॥

["| প্রাপ্য | পুণ্য + কৃতাং | লোকান্ + উষিত্বা | শাশ্বতীঃ | সমাঃ |
| শুচীনাং | শ্রী + মতাং | গেহে | যোগ + ভ্রষ্টো + অভিজায়তে |"]

অথবা যোগিনামেব কুলে ভবতি ধীমতাম্ ।

এতদ্ধি দুর্লভতরং লোকে জন্ম যদীদৃশম্ ॥৬-৪২॥

["| অথবা | যোগিনাম্ + এব | কুলে | ভবতি | ধী + মতাম্ |
| এতৎ + হি | দুর্লভ + তরং | লোকে | জন্ম | যৎ + ঈদৃশম্ |"]

–: ॐ :–

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम् ।
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥६-४३॥

["| तत्र | तं | बुद्धि + संयोगं | लभते | पौर्व + देहिकम् |
| यतते | च | ततो | भूयः | संसिद्धौ | कुरु + नन्दन |"]

पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः ।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते ॥६-४४॥

["| पूर्व + अभ्यासेन | तेन + एव | ह्रियते | हि + अवशो + अपि | सः |
| जिज्ञासुः + अपि | योगस्य | शब्द + ब्रह्म + अतिवर्तते |"]

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः ।
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ॥६-४५॥

["| प्रयत्नात् + यतमानः + तु | योगी | संशुद्ध + किल्बिषः |
| अनेक + जन्म + संसिद्धः + ततो | याति | परां | गतिम् |"]

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः ।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ॥६-४६॥

["| तपस्विभ्यो + अधिको | योगी | ज्ञानिभ्यो + अपि | मतो + अधिकः |
| कर्मिभ्यः + च + अधिको | योगी | तस्मात् + योगी | भव + अर्जुन |"]

–: ওঁ :–

তত্র তং বুদ্ধিসংযোগং লভতে পৌর্বদেহিকম্ ।

যততে চ ততো ভূয়ঃ সংসিদ্ধৌ কুরুনন্দন ॥৬-৪৩॥

["| তত্র | তং | বুদ্ধি + সংযোগং | লভতে | পৌর্ব + দেহিকম্ |
| যততে | চ | ততো | ভূয়ঃ | সংসিদ্ধৌ | কুরু + নন্দন |"]

পূর্বাভ্যাসেন তেনৈব হ্রিয়তে হ্যবশোঽপি সঃ ।

জিজ্ঞাসুরপি যোগস্য শব্দব্রহ্মাতিবর্ততে ॥৬-৪৪॥

["| পূর্ব + অভ্যাসেন | তেন + এব | হ্রিয়তে | হি + অবশো + অপি | সঃ |
| জিজ্ঞাসুঃ + অপি | যোগস্য | শব্দ + ব্রহ্ম + অতিবর্ততে |"]

প্রযত্নাদ্যতমানস্তু যোগী সংশুদ্ধকিল্বিষঃ ।

অনেকজন্মসংসিদ্ধস্ততো যাতি পরাং গতিম্ ॥৬-৪৫॥

["| প্রযত্নাৎ + যতমানঃ + তু | যোগী | সংশুদ্ধ + কিল্বিষঃ |
| অনেক + জন্ম + সংসিদ্ধঃ + ততো | যাতি | পরাং | গতিম্ |"]

তপস্বিভ্যোঽধিকো যোগী জ্ঞানিভ্যোঽপি মতোঽধিকঃ ।

কর্মিভ্যশ্চাধিকো যোগী তস্মাদ্যোগী ভবার্জুন ॥৬-৪৬॥

["| তপস্বিভ্যো + অধিকো | যোগী | জ্ঞানিভ্যো + অপি | মতো + অধিকঃ |
| কর্মিভ্যঃ + চ + অধিকো | যোগী | তস্মাৎ + যোগী | ভব + অর্জুন |"]

–: ॐ :–

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना ।
श्रद्धावान् भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः ॥६-४७॥

["| योगिनाम् + अपि | सर्वेषां | मत् + गतेन + अन्तः + आत्मना |
| श्रद्धावान् | भजते | यो | मां | स | मे | युक्त + तमो | मतः |"]

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि
श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे
ध्यानयोगो नाम षष्टोऽध्यायः॥६॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | ध्यान + योगो | नाम | षष्टो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

যোগিনামপি সর্বেষাং মদ্গতেনান্তরাত্মনা ।

শ্রদ্ধাবান্ ভজতে যো মাং স মে যুক্ততমো মতঃ ॥৬-৪৭॥

["| যোগিনাম্ + অপি | সর্বেষাং | মৎ + গতেন + অন্তঃ + আত্মনা |
| শ্রদ্ধাবান্ | ভজতে | যো | মাং | স | মে | যুক্ত + তমো | মতঃ |"]

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে
ধ্যানযোগো নাম ষষ্ঠোঽধ্যায়ঃ ॥৬॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | ধ্যান + যোগো | নাম | ষষ্ঠো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

सप्तमोऽध्यायः
ज्ञानविज्ञानयोग

श्रीभगवानुवाच :—
मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।
असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥७-०१॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | मयि + आसक्त + मनाः | पार्थ | योगं | युञ्जन् + मत् + आश्रयः |
| असंशयं | समग्रं | मां | यथा | ज्ञास्यसि | तत् + श्रृणु |"]

ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः ।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥७-०२॥

["| ज्ञानं | ते + अहं | स + विज्ञानम् + इदं | वक्ष्यामि + अशेषतः |
| यत् + ज्ञात्वा | न + इह | भूयो + अन्यत् + ज्ञातव्यम् + अवशिष्यते |"]

–: ॐ :–

সপ্তমোঽধ্যায়ঃ
জ্ঞানবিজ্ঞানযোগ

শ্রীভগবানুবাচ :—

ময্যাসক্তমনাঃ পার্থ যোগং যুঞ্জন্মদাশ্রয়ঃ ।

অসংশয়ং সমগ্রং মাং যথা জ্ঞাস্যসি তচ্ছৃণু ॥৭-০১॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | ময়ি + আসক্ত + মনাঃ | পার্থ | যোগং | যুঞ্জন্ + মৎ + আশ্রয়ঃ |
| অসংশয়ং | সমগ্রং | মাং | যথা | জ্ঞাস্যসি | তৎ + শৃণু |"]

জ্ঞানং তেঽহং সবিজ্ঞানমিদং বক্ষ্যাম্যশেষতঃ ।

যজ্জ্ঞাত্বা নেহ ভূয়োঽন্যজ্জ্ঞাতব্যমবশিষ্যতে ॥৭-০২॥

["| জ্ঞানং | তে + অহং | স + বিজ্ঞানম্ + ইদং | বক্ষ্যামি + অশেষতঃ |
| যৎ + জ্ঞাত্বা | ন + ইহ | ভূয়ো + অন্যৎ + জ্ঞাতব্যম্ + অবশিষ্যতে |"]

–: ॐ :–

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥७-०३॥

["| मनुष्याणां | सहस्रेषु | कश्चित् + यतति | सिद्धये |
| यतताम् + अपि | सिद्धानां | कश्चित् + मां | वेत्ति | तत्त्वतः |"]

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च ।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥७-०४॥

["| भूमिः + आपो + अनलो | वायुः | खं | मनो | बुद्धिः + एव | च |
| अहंकार | इति + इयं | मे | भिन्ना | प्रकृतिः + अष्टधा |"]

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् ।
जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥७-०५॥

["| अपरा + इयम् + इतः + तु + अन्यां | प्रकृतिं | विद्धि | मे | पराम् |
| जीव + भूतां | महाबाहो | यया + इदं | धार्यते | जगत् |"]

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय ।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥७-०६॥

["| एतत् + योनीनि | भूतानि | सर्वाणि + इति + उपधारय |
| अहं | कृत्स्नस्य | जगतः | प्रभवः | प्रलयः + तथा |"]

–: ॐ :–

মনুষ্যাণাং সহস্রেষু কশ্চিদ্‌যততি সিদ্ধয়ে ।
যততামপি সিদ্ধানাং কশ্চিন্মাং বেত্তি তত্ত্বতঃ ॥৭-০৩॥

["| মনুষ্যাণাং | সহস্রেষু | কশ্চিৎ + যততি | সিদ্ধয়ে |
| যততাম্ + অপি | সিদ্ধানাং | কশ্চিৎ + মাং | বেত্তি | তত্ত্বতঃ |"]

ভূমিরাপোঽনলো বায়ুঃ খং মনো বুদ্ধিরেব চ ।
অহঙ্কার ইতীয়ং মে ভিন্না প্রকৃতিরষ্টধা ॥৭-০৪॥

["| ভূমিঃ + আপো + অনলো | বায়ুঃ | খং | মনো | বুদ্ধিঃ + এব | চ |
| অহঙ্কার | ইতি + ইয়ং | মে | ভিন্না | প্রকৃতিঃ + অষ্টধা |"]

অপরেয়মিতস্ত্বন্যাং প্রকৃতিং বিদ্ধি মে পরাম্ ।
জীবভূতাং মহাবাহো যয়েদং ধার্যতে জগৎ ॥৭-০৫॥

["| অপরা + ইয়ম্ + ইতঃ + তু + অন্যাং | প্রকৃতিং | বিদ্ধি | মে | পরাম্ |
| জীব + ভূতাং | মহাবাহো | যয়া + ইদং | ধার্যতে | জগৎ |"]

এতদ্‌যোনীনি ভূতানি সর্বাণীত্যুপধারয় ।
অহং কৃৎস্নস্য জগতঃ প্রভবঃ প্রলয়স্তথা ॥৭-০৬॥

["| এতৎ + যোনীনি | ভূতানি | সর্বাণি + ইতি + উপধারয় |
| অহং | কৃৎস্নস্য | জগতঃ | প্রভবঃ | প্রলয়ঃ + তথা |"]

–: ॐ :–

मत्तः परतरं नान्यत् किञ्चिदस्ति धनंजय ।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥७-०७॥

["| मत्तः | पर + तरं | न + अन्यत् | किञ्चित् + अस्ति | धनंजय |
| मयि | सर्वम् + इदं | प्रोतं | सूत्रे | मणि + गणा | इव |"]

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः ।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥७-०८॥

["| रसो + अहम् + अप्सु | कौन्तेय | प्रभा + अस्मि | शशि + सूर्ययोः |
| प्रणवः | सर्व + वेदेषु | शब्दः | खे | पौरुषं | नृषु |"]

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ ।
जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥७-०९॥

["| पुण्यो | गन्धः | पृथिव्यां | च | तेजः + च + अस्मि | विभावसौ |
| जीवनं | सर्व + भूतेषु | तपः + च + अस्मि | तपस्विषु |"]

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥७-१०॥

["| बीजं | मां | सर्व + भूतानां | विद्धि | पार्थ | सनातनम् |
| बुद्धिः + बुद्धिमताम् + अस्मि | तेजः + तेजस्विनाम् + अहम् |"]

–: ॐ :–

মত্তঃ পরতরং নান্যৎ কিঞ্চিদস্তি ধনঞ্জয় ।

ময়ি সর্বমিদং প্রোতং সূত্রে মণিগণা ইব ॥৭-০৭॥

["| মত্তঃ | পর + তরং | ন + অন্যৎ | কিঞ্চিৎ + অস্তি | ধনঞ্জয় |
| ময়ি | সর্বম্ + ইদং | প্রোতং | সূত্রে | মণি + গণা | ইব |"]

রসোঽহমপ্সু কৌন্তেয় প্রভাস্মি শশিসূর্যয়োঃ ।

প্রণবঃ সর্ববেদেষু শব্দঃ খে পৌরুষং নৃষু ॥৭-০৮॥

["| রসো + অহম্ + অপ্সু | কৌন্তেয় | প্রভা + অস্মি | শশি + সূর্যয়োঃ |
| প্রণবঃ | সর্ব + বেদেষু | শব্দঃ | খে | পৌরুষং | নৃষু |"]

পুণ্যো গন্ধঃ পৃথিব্যাং চ তেজশ্চাস্মি বিভাবসৌ ।

জীবনং সর্বভূতেষু তপশ্চাস্মি তপস্বিষু ॥৭-০৯॥

["| পুণ্যো | গন্ধঃ | পৃথিব্যাং | চ | তেজঃ + চ + অস্মি | বিভাবসৌ |
| জীবনং | সর্ব + ভূতেষু | তপঃ + চ + অস্মি | তপস্বিষু |"]

বীজং মাং সর্বভূতানাং বিদ্ধি পার্থ সনাতনম্ ।

বুদ্ধির্বুদ্ধিমতামস্মি তেজস্তেজস্বিনামহম্ ॥৭-১০॥

["| বীজং | মাং | সর্ব + ভূতানাং | বিদ্ধি | পার্থ | সনাতনম্ |
| বুদ্ধিঃ + বুদ্ধিমতাম্ + অস্মি | তেজঃ + তেজস্বিনাম্ + অহম্ |"]

–: ॐ :–

बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम् ।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥७-११॥

["| बलं | बलवतां | च + अहं | काम + राग + विवर्जितम् |
| धर्म + अविरुद्धो | भूतेषु | कामो + अस्मि | भरत + ऋषभ |"]

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये ।
मत्त एवेति तान् विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥७-१२॥

["| ये | च + एव | सात्त्विका | भावा | राजसाः + तामसाः + च | ये |
| मत्त | एव + इति | तान् | विद्धि | न | तु + अहं | तेषु | ते | मयि |"]

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत् ।
मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम् ॥७-१३॥

["| त्रिभिः + गुणमयैः + भावैः + एभिः | सर्वम् + इदं | जगत् |
| मोहितं | न + अभिजानाति | माम् + एभ्यः | परम् + अव्ययम् |"]

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥७-१४॥

["| दैवी | हि + एषा | गुण + मयी | मम | माया | दुरत्यया |
| माम् + एव | ये | प्रपद्यन्ते | मायाम् + एतां | तरन्ति | ते |"]

–: ॐ :–

বলং বলবতাং চাহং কামরাগবিবর্জিতম্ ।

ধর্মাবিরুদ্ধো ভূতেষু কামোঽস্মি ভরতর্ষভ ॥৭-১১॥

["| বলং | বলবতাং | চ + অহং | কাম + রাগ + বিবর্জিতম্ |
| ধর্ম + অবিরুদ্ধো | ভূতেষু | কামো + অস্মি | ভরত + ঋষভ |"]

যে চৈব সাত্ত্বিকা ভাবা রাজসাস্তামসাশ্চ যে ।

মত্ত এবেতি তান্ বিদ্ধি ন ত্বহং তেষু তে ময়ি ॥৭-১২॥

["| যে | চ + এব | সাত্ত্বিকা | ভাবা | রাজসাঃ + তামসাঃ + চ | যে |
| মত্ত | এব + ইতি | তান্ | বিদ্ধি | ন | তু + অহং | তেষু | তে | ময়ি |"]

ত্রিভির্গুণময়ৈর্ভাবৈরেভিঃ সর্বমিদং জগৎ ।

মোহিতং নাভিজানাতি মামেভ্যঃ পরমব্যয়ম্ ॥৭-১৩॥

["| ত্রিভিঃ + গুণময়ৈঃ + ভাবৈঃ + এভিঃ | সর্বম্ + ইদং | জগৎ |
| মোহিতং | ন + অভিজানাতি | মাম্ + এভ্যঃ | পরম্ + অব্যয়ম্ |"]

দৈবী হ্যেষা গুণময়ী মম মায়া দুরত্যয়া ।

মামেব যে প্রপদ্যন্তে মায়ামেতাং তরন্তি তে ॥৭-১৪॥

["| দৈবী | হি + এষা | গুণ + ময়ী | মম | মায়া | দুরত্যয়া |
| মাম্ + এব | যে | প্রপদ্যন্তে | মায়াম্ + এতাং | তরন্তি | তে |"]

–: ॐ :–

न मां दुष्कृतिनो मूढ़ाः प्रपद्यन्ते नराधमाः ।
माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥७-१५॥

["| न | मां | दुष्कृतिनो | मूढ़ाः | प्रपद्यन्ते | नर + अधमाः |
| मायया + अपहृत + ज्ञाना | आसुरं | भावम् + आश्रिताः |"]

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥७-१६॥

["| चतुः + विधा | भजन्ते | मां | जनाः | सुकृतिनो + अर्जुन |
| आर्तो | जिज्ञासुः + अर्थार्थी | ज्ञानी | च | भरत + ऋषभ |"]

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥७-१७॥

["| तेषां | ज्ञानी | नित्य + युक्त | एक + भक्तिः + विशिष्यते |
| प्रियो | हि | ज्ञानिनो + अत्यर्थम् + अहं | स | च | मम | प्रियः |"]

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् ॥७-१८॥

["| उदाराः | सर्व | एव + एते | ज्ञानी | तु + आत्मा + एव | मे | मतम् |
| आस्थितः | स | हि | युक्त + आत्मा | माम् + एव + अनुत्तमां | गतिम् |"]

–: ॐ :–

ন মাং দুষ্কৃতিনো মূঢ়াঃ প্রপদ্যন্তে নরাধমাঃ ।

মায়য়াপহৃতজ্ঞানা আসুরং ভাবমাশ্রিতাঃ ॥৭-১৫॥

["| ন | মাং | দুষ্কৃতিনো | মূঢ়াঃ | প্রপদ্যন্তে | নর + অধমাঃ |
| মায়য়া + অপহৃত + জ্ঞানা | আসুরং | ভাবম্ + আশ্রিতাঃ |"]

চতুর্বিধা ভজন্তে মাং জনাঃ সুকৃতিনোঽর্জুন ।

আর্তো জিজ্ঞাসুরর্থার্থী জ্ঞানী চ ভরতর্ষভ ॥৭-১৬॥

["| চতুঃ + বিধা | ভজন্তে | মাং | জনাঃ | সুকৃতিনো + অর্জুন |
| আর্তো | জিজ্ঞাসুঃ + অর্থার্থী | জ্ঞানী | চ | ভরত + ঋষভ |"]

তেষাং জ্ঞানী নিত্যযুক্ত একভক্তির্বিশিষ্যতে ।

প্রিয়ো হি জ্ঞানিনোঽত্যর্থমহং স চ মম প্রিয়ঃ ॥৭-১৭॥

["| তেষাং | জ্ঞানী | নিত্য + যুক্ত | এক + ভক্তিঃ + বিশিষ্যতে |
| প্রিয়ো | হি | জ্ঞানিনো + অত্যর্থম্ + অহং | স | চ | মম | প্রিয়ঃ |"]

উদারাঃ সর্ব এবৈতে জ্ঞানী ত্বাত্মৈব মে মতম্ ।

অস্থিতঃ স হি যুক্তাত্মা মামেবানুত্তমাং গতিম্ ॥৭-১৮॥

["| উদারাঃ | সর্ব | এব + এতে | জ্ঞানী | তু + আত্মা + এব | মে | মতম্ |
| অস্থিতঃ | স | হি | যুক্ত + আত্মা | মাম্ + এব + অনুত্তমাং | গতিম্ |"]

–: ॐ :–

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान् मां प्रपद्यते ।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥७-१९॥

["| बहूनां | जन्मनाम् + अन्ते | ज्ञानवान् | मां | प्रपद्यते |
| वासुदेवः | सर्वम् + इति | स | महा + आत्मा | सु + दुर्लभः |"]

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥७-२०॥

["| कामैः + तैः + तैः + हृत + ज्ञानाः | प्रपद्यन्ते + अन्य + देवताः |
| तं | तं | नियमम् + आस्थाय | प्रकृत्या | नियताः | स्वया |"]

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥७-२१॥

["| यो | यो | यां | यां | तनुं | भक्तः | श्रद्धया + अर्चितुम् + इच्छति |
| तस्य | तस्य + अचलां | श्रद्धां | ताम् + एव | विदधामि + अहम् |"]

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान् हि तान् ॥७-२२॥

["| स | तया | श्रद्धया | युक्तः + तस्य + आराधनम् + ईहते |
| लभते | च | ततः | कामान् + मया + एव | विहितान् | हि | तान् |"]

–: ॐ :–

বহূনাং জন্মনামন্তে জ্ঞানবান্ মাং প্রপদ্যতে ।

বাসুদেবঃ সর্বমিতি স মহাত্মা সুদুর্লভঃ ॥৭-১৯॥

["| বহূনাং | জন্মনাম্ + অন্তে | জ্ঞানবান্ | মাং | প্রপদ্যতে |
| বাসুদেবঃ | সর্বম্ + ইতি | স | মহা + আত্মা | সু + দুর্লভঃ |"]

কামৈস্তৈস্তৈর্হৃতজ্ঞানাঃ প্রপদ্যন্তেঽন্যদেবতাঃ ।

তং তং নিয়মমাস্থায় প্রকৃত্যা নিয়তাঃ স্বয়া ॥৭-২০॥

["| কামৈঃ + তৈঃ + তৈঃ + হৃত + জ্ঞানাঃ | প্রপদ্যন্তে + অন্য + দেবতাঃ |
| তং | তং | নিয়মম্ + আস্থায় | প্রকৃত্যা | নিয়তাঃ | স্বয়া |"]

যো যো যাং যাং তনুং ভক্তঃ শ্রদ্ধয়ার্চিতুমিচ্ছতি ।

তস্য তস্যাচলাং শ্রদ্ধাং তামেব বিদধাম্যহম্ ॥৭-২১॥

["| যো | যো | যাং | যাং | তনুং | ভক্তঃ | শ্রদ্ধয়া + অর্চিতুম্ + ইচ্ছতি |
| তস্য | তস্য + অচলাং | শ্রদ্ধাং | তাম্ + এব | বিদধামি + অহম্ |"]

স তয়া শ্রদ্ধয়া যুক্তস্তস্যারাধনমীহতে ।

লভতে চ ততঃ কামান্ময়ৈব বিহিতান্ হি তান্ ॥৭-২২॥

["| স | তয়া | শ্রদ্ধয়া | যুক্তঃ + তস্য + আরাধনম্ + ঈহতে |
| লভতে | চ | ততঃ | কামান্ + ময়া + এব | বিহিতান্ | হি | তান্ |"]

–: ॐ :–

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।
देवान् देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥७-२३॥

["| अन्तवत् + तु | फलं | तेषां | तत् + भवति + अल्प + मेधसाम् |
| देवान् | देव + यजो | यान्ति | मत् + भक्ता | यान्ति | माम् + अपि |"]

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥७-२४॥

["| अव्यक्तं | व्यक्तिम् + आपन्नं | मन्यन्ते | माम् + अबुद्धयः |
| परं | भावम् + अजानन्तो | मम + अव्ययम् + अनुत्तमम् |"]

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।
मूढ़ोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ॥७-२५॥

["| न + अहं | प्रकाशः | सर्वस्य | योगमाया + समावृतः |
| मूढ़ो + अयं | न + अभिजानाति | लोको | माम् + अजम् + अव्ययम् |"]

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन ।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ॥७-२६॥

["| वेद + अहं | समतीतानि | वर्तमानानि | च + अर्जुन |
| भविष्याणि | च | भूतानि | मां | तु | वेद | न | कश्चन |"]

–: ॐ :–

অন্তবত্তু ফলং তেষাং তদ্ভবত্যল্পমেধসাম্ ।

দেবান্ দেবযজো যান্তি মদ্ভক্তা যান্তি মামপি ॥৭-২৩॥

["| অন্তবৎ + তু | ফলং | তেষাং | তৎ + ভবতি + অল্প + মেধসাম্ |
| দেবান্ | দেব + যজো | যান্তি | মৎ + ভক্তা | যান্তি | মাম্ + অপি |"]

অব্যক্তং ব্যক্তিমাপন্নং মন্যন্তে মামবুদ্ধয়ঃ ।

পরং ভাবমজানন্তো মমাব্যয়মনুত্তমম্ ॥৭-২৪॥

["| অব্যক্তং | ব্যক্তিম্ + আপন্নং | মন্যন্তে | মাম্ + অবুদ্ধয়ঃ |
| পরং | ভাবম্ + অজানন্তো | মম + অব্যয়ম্ + অনুত্তমম্ |"]

নাহং প্রকাশঃ সর্বস্য যোগমায়াসমাবৃতঃ ।

মূঢ়োঽয়ং নাভিজানাতি লোকো মামজমব্যয়ম্ ॥৭-২৫॥

["| ন + অহং | প্রকাশঃ | সর্বস্য | যোগমায়া + সমাবৃতঃ |
| মূঢ়ো + অয়ং | ন + অভিজানাতি | লোকো | মাম্ + অজম্ + অব্যয়ম্ |"]

বেদাহং সমতীতানি বর্তমানানি চার্জুন ।

ভবিষ্যাণি চ ভূতানি মাং তু বেদ ন কশ্চন ॥৭-২৬॥

["| বেদ + অহং | সমতীতানি | বর্তমানানি | চ + অর্জুন |
| ভবিষ্যাণি | চ | ভূতানি | মাং | তু | বেদ | ন | কশ্চন |"]

–: ॐ :–

इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत ।
सर्वभूतानि सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप ॥७-२७॥

["| इच्छा + द्वेष + समुत्थेन | द्वन्द्व + मोहेन | भारत |
| सर्व + भूतानि | सम्मोहं | सर्गे | यान्ति | परन्तप |"]

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥७-२८॥

["| येषां | तु + अन्त + गतं | पापं | जनानां | पुण्य + कर्मणाम् |
| ते | द्वन्द्व + मोह + निर्मुक्ता | भजन्ते | मां | दृढ + व्रताः |"]

जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥७-२९॥

["| जरा + मरण + मोक्षाय | माम् + आश्रित्य | यतन्ति | ये |
| ते | ब्रह्म | तत् + विदुः | कृत्स्नम् + अध्यात्मं | कर्म | च + अखिलम् |"]

साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः ।
प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ॥७-३०॥

["| स + अधिभूत + अधिदैवं | मां | स + अधियज्ञं | च | ये | विदुः |
| प्रयाण + काले + अपि | च | मां | ते | विदुः + युक्त + चेतसः |"]

–: ॐ :–

ইচ্ছাদ্বেষসমুত্থেন দ্বন্দ্বমোহেন ভারত ।

সর্বভূতানি সম্মোহং সর্গে যান্তি পরন্তপ ॥৭-২৭॥

["| ইচ্ছা + দ্বেষ + সমুত্থেন | দ্বন্দ্ব + মোহেন | ভারত |
| সর্ব + ভূতানি | সম্মোহং | সর্গে | যান্তি | পরন্তপ |"]

যেষাং ত্বন্তগতং পাপং জনানাং পুণ্যকর্মণাম্ ।

তে দ্বন্দ্বমোহনির্মুক্তা ভজন্তে মাং দৃঢ়ব্রতাঃ ॥৭-২৮॥

["| যেষাং | তু + অন্ত + গতং | পাপং | জনানাং | পুণ্য + কর্মণাম্ |
| তে | দ্বন্দ্ব + মোহ + নির্মুক্তা | ভজন্তে | মাং | দৃঢ় + ব্রতাঃ |"]

জরামরণমোক্ষায় মামাশ্রিত্য যতন্তি যে ।

তে ব্রহ্ম তদ্বিদুঃ কৃৎস্নমধ্যাত্মং কর্ম চাখিলম্ ॥৭-২৯॥

["| জরা + মরণ + মোক্ষায় | মাম্ + আশ্রিত্য | যতন্তি | যে |
| তে | ব্রহ্ম | তৎ + বিদুঃ | কৃৎস্নম্ + অধ্যাত্মং | কর্ম | চ + অখিলম্ |"]

সাধিভূতাধিদৈবং মাং সাধিযজ্ঞং চ যে বিদুঃ ।

প্রয়াণকালেঽপি চ মাং তে বিদুর্যুক্তচেতসঃ ॥৭-৩০॥

["| স + অধিভূত + অধিদৈবং | মাং | স + অধিযজ্ঞং | চ | যে | বিদুঃ |
| প্রয়াণ + কালে + অপি | চ | মাং | তে | বিদুঃ + যুক্ত + চেতসঃ |"]

–: ॐ :–

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः॥७॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | ज्ञान + विज्ञान + योगो | नाम | सप्तमो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে জ্ঞানবিজ্ঞানযোগো নাম সপ্তমোঽধ্যায়ঃ ॥৭॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | জ্ঞান + বিজ্ঞান + যোগো | নাম | সপ্তমো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

अष्टमोऽध्यायः
अक्षरब्रह्मयोग

अर्जुन उवाच :—
किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम ।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते ॥८-०१॥

["| अर्जुन | उवाच | किं | तत् + ब्रह्म | किम् + अध्यात्मं | किं | कर्म | पुरुष + उत्तम |
| अधिभूतं | च | किं | प्रोक्तम् + अधिदैवं | किम् + उच्यते |"]

अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन ।
प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः ॥८-०२॥

["| अधियज्ञः | कथं | को + अत्र | देहे + अस्मिन् + मधुसूदन |
| प्रयाण + काले | च | कथं | ज्ञेयो + असि | नियत + आत्मभिः |"]

–: ॐ :–

অষ্টমোঽধ্যায়ঃ
অক্ষরব্রহ্মযোগ

অর্জুন উবাচ :—

কিং তদ্ব্রহ্ম কিমধ্যাত্মং কিং কর্ম পুরুষোত্তম ।

অধিভূতং চ কিং প্রোক্তমধিদৈবং কিমুচ্যতে ॥৮-০১॥

["| অর্জুন | উবাচ | কিং | তৎ + ব্রহ্ম | কিম্ + অধ্যাত্মং | কিং | কর্ম | পুরুষ + উত্তম |
| অধিভূতং | চ | কিং | প্রোক্তম্ + অধিদৈবং | কিম্ + উচ্যতে |"]

অধিযজ্ঞঃ কথং কোঽত্র দেহেঽস্মিন্মধুসূদন ।

প্রয়াণকালে চ কথং জ্ঞেয়োঽসি নিয়তাত্মভিঃ ॥৮-০২॥

["| অধিযজ্ঞঃ | কথং | কো + অত্র | দেহে + অস্মিন্ + মধুসূদন |
| প্রয়াণ + কালে | চ | কথং | জ্ঞেয়ো + অসি | নিয়ত + আত্মভিঃ |"]

–: ॐ :–

श्रीभगवानुवाच :—
अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते ।
भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥८-०३॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | अक्षरं | ब्रह्म | परमं | स्वभावो + अध्यात्मम् + उच्यते |
| भूत + भाव + उद्भव + करो | विसर्गः | कर्म + संज्ञितः |"]

अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम् ।
अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर ॥८-०४॥

["| अधिभूतं | क्षरो | भावः | पुरुषः + च + अधिदैवतम् |
| अधियज्ञो + अहम् + एव + अत्र | देहे | देहभृतां | वर |"]

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् ।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ॥८-०५॥

["| अन्त + काले | च | माम् + एव | स्मरन् + मुक्त्वा | कलेवरम् |
| यः | प्रयाति | स | मत् + भावं | याति | न + अस्ति + अत्र | संशयः |"]

–: ॐ :–

শ্রীভগবানুবাচ :—

অক্ষরং ব্রহ্ম পরমং স্বভাবোঽধ্যাত্মমুচ্যতে ।

ভূতভাবোদ্ভবকরো বিসর্গঃ কর্মসংজ্ঞিতঃ ॥৮-০৩॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | অক্ষরং | ব্রহ্ম | পরমং | স্বভাবো + অধ্যাত্মম্ + উচ্যতে |
| ভূত + ভাব + উদ্ভব + করো | বিসর্গঃ | কর্ম + সংজ্ঞিতঃ |"]

অধিভূতং ক্ষরো ভাবঃ পুরুষশ্চাধিদৈবতম্ ।

অধিযজ্ঞোঽহমেবাত্র দেহে দেহভৃতাং বর ॥৮-০৪॥

["| অধিভূতং | ক্ষরো | ভাবঃ | পুরুষঃ + চ + অধিদৈবতম্ |
| অধিযজ্ঞো + অহম্ + এব + অত্র | দেহে | দেহভৃতাং | বর |"]

অন্তকালে চ মামেব স্মরন্মুক্ত্বা কলেবরম্ ।

যঃ প্রয়াতি স মদ্ভাবং যাতি নাস্ত্যত্র সংশয়ঃ ॥৮-০৫॥

["| অন্ত + কালে | চ | মাম্ + এব | স্মরন্ + মুক্ত্বা | কলেবরম্ |
| যঃ | প্রয়াতি | স | মৎ + ভাবং | যাতি | ন + অস্তি + অত্র | সংশয়ঃ |"]

–: ॐ :–

यं यं वापि स्मरन् भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥८-०६॥

["| यं | यं | वा + अपि | स्मरन् | भावं | त्यजति + अन्ते | कलेवरम् |
| तं | तम् + एव + एति | कौन्तेय | सदा | तत् + भाव + भावितः |"]

तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥८-०७॥

["| तस्मात् | सर्वेषु | कालेषु | माम् + अनुस्मर | युध्य | च |
| मयि + अर्पित + मनो + बुद्धिः + माम् + एव + एष्यसि + असंशयम् |"]

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना ।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् ॥८-०८॥

["| अभ्यास + योग + युक्तेन | चेतसा | न + अन्य + गामिना |
| परमं | पुरुषं | दिव्यं | याति | पार्थ + अनुचिन्तयन् |"]

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥८-०९॥

["| कविं | पुराणम् + अनुशासितारम् + अणोः + अणीयांसम् + अनुस्मरेत् + यः |
| सर्वस्य | धातारम् + अचिन्त्य + रूपम् + आदित्य + वर्णं | तमसः | परस्तात् |"]

–: ॐ :–

যং যং বাপি স্মরন্ ভাবং ত্যজত্যন্তে কলেবরম্ ।

তং তমেবৈতি কৌন্তেয় সদা তদ্ভাবভাবিতঃ ॥৮-০৬॥

["| যং | যং | বা + অপি | স্মরন্ | ভাবং | ত্যজতি + অন্তে | কলেবরম্ |
| তং | তম্ + এব + এতি | কৌন্তেয় | সদা | তৎ + ভাব + ভাবিতঃ |"]

তস্মাৎ সর্বেষু কালেষু মামনুস্মর যুধ্য চ ।

ময্যর্পিতমনোবুদ্ধির্মামেবৈষ্যস্যসংশয়ম্ ॥৮-০৭॥

["| তস্মাৎ | সর্বেষু | কালেষু | মাম্ + অনুস্মর | যুধ্য | চ |
| ময়ি + অর্পিত + মনো + বুদ্ধিঃ + মাম্ + এব + এষ্যসি + অসংশয়ম্ |"]

অভ্যাসযোগযুক্তেন চেতসা নান্যগামিনা ।

পরমং পুরুষং দিব্যং যাতি পার্থানুচিন্তয়ন্ ॥৮-০৮॥

["| অভ্যাস + যোগ + যুক্তেন | চেতসা | ন + অন্য + গামিনা |
| পরমং | পুরুষং | দিব্যং | যাতি | পার্থ + অনুচিন্তয়ন্ |"]

কবিং পুরাণমনুশাসিতারমণোরণীয়াংসমনুস্মরেদ্যঃ ।

সর্বস্য ধাতারমচিন্ত্যরূপমাদিত্যবর্ণং তমসঃ পরস্তাৎ ॥৮-০৯॥

["| কবিং | পুরাণম্ + অনুশাসিতারম্ + অণোঃ + অনীয়াংসম্ + অনুস্মরেৎ + যঃ |
| সর্বস্য | ধাতারম্ + অচিন্ত্য + রূপম্ + আদিত্য + বর্ণং | তমসঃ | পরস্তাৎ |"]

–: ॐ :–

प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव ।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥८-१०॥

["| प्रयाण + काले | मनसा + अचलेन | भक्त्या | युक्तो | योग + बलेन | च + एव |
| भ्रुवोः + मध्ये | प्राणम् + आवेश्य | सम्यक् | स | तं | परं | पुरुषम् + उपैति | दिव्यम् |"]

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः ।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥८-११॥

["| यत् + अक्षरं | वेद + विदो | वदन्ति | विशन्ति | यत् + यतयो | वीत + रागाः |
| यत् + इच्छन्तो | ब्रह्मचर्यं | चरन्ति | तत् + ते | पदं | संग्रहेण | प्रवक्ष्ये |"]

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च ।
मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम् ॥८-१२॥

["| सर्व + द्वाराणि | संयम्य | मनो | हृदि | निरुध्य | च |
| मूर्ध्नि + आधाय + आत्मनः | प्राणम् + आस्थितो | योग + धारणाम् |"]

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥८-१३॥

["| ओम् + इति + एक + अक्षरं | ब्रह्म | व्याहरन् + माम् + अनुस्मरन् |
| यः | प्रयाति | त्यजन् + देहं | स | याति | परमां | गतिम् |"]

–: ॐ :–

প্রয়াণকালে মনসাচলেন ভক্ত্যা যুক্তো যোগবলেন চৈব ।

ভ্রুবোর্মধ্যে প্রাণমাবেশ্য সম্যক্ স তং পরং পুরুষমুপৈতি দিব্যম্ ॥৮-১০॥

["| প্রয়াণ + কালে | মনসা + অচলেন | ভক্ত্যা | যুক্তো | যোগ + বলেন | চ + এব |
| ভ্রুবোঃ + মধ্যে | প্রাণম্ + আবেশ্য | সম্যক্ | স | তং | পরং | পুরুষম্ + উপৈতি | দিব্যম্ |"]

যদক্ষরং বেদবিদো বদন্তি বিশন্তি যদ্যতয়ো বীতরাগাঃ ।

যদিচ্ছন্তো ব্রহ্মচর্যং চরন্তি তত্তে পদং সংগ্রহেণ প্রবক্ষ্যে ॥৮-১১॥

["| যৎ + অক্ষরং | বেদ + বিদো | বদন্তি | বিশন্তি | যৎ + যতয়ো | বীত + রাগাঃ |
| যৎ + ইচ্ছন্তো | ব্রহ্মচর্যং | চরন্তি | তৎ + তে | পদং | সংগ্রহেণ | প্রবক্ষ্যে |"]

সর্বদ্বারাণি সংযম্য মনো হৃদি নিরুধ্য চ ।

মূর্ধ্ন্যাধায়াত্মনঃ প্রাণমাস্থিতো যোগধারণাম্ ॥৮-১২॥

["| সর্ব + দ্বারাণি | সংযম্য | মনো | হৃদি | নিরুধ্য | চ |
| মূর্ধ্নি + আধায় + আত্মনঃ | প্রাণম্ + আস্থিতো | যোগ + ধারণাম্ |"]

ওমিত্যেকাক্ষরং ব্রহ্ম ব্যাহরন্মামনুস্মরন্ ।

যঃ প্রয়াতি ত্যজন্দেহং স যাতি পরমাং গতিম্ ॥৮-১৩॥

["| ওম্ + ইতি + এক + অক্ষরং | ব্রহ্ম | ব্যাহরন্ + মাম্ + অনুস্মরন্ |
| যঃ | প্রয়াতি | ত্যজন্ + দেহং | স | যাতি | পরমাং | গতিম্ |"]

–: ॐ :–

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ॥८-१४॥

["| अनन्य + चेताः | सततं | यो | मां | स्मरति | नित्यशः |
| तस्य + अहं | सु + लभः | पार्थ | नित्य + युक्तस्य | योगिनः |"]

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् ।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः ॥८-१५॥

["| माम् + उपेत्य | पुनः + जन्म | दुःख + आलयम् + अशाश्वतम् |
| न + आप्नुवन्ति | महा + आत्मानः | संसिद्धिं | परमां | गताः |"]

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥८-१६॥

["| आ + ब्रह्म + भुवनात् + लोकाः | पुनः + आवर्तिनो + अर्जुन |
| माम् + उपेत्य | तु | कौन्तेय | पुनः + जन्म | न | विद्यते |"]

सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः ।
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ॥८-१७॥

["| सहस्र + युग + पर्यन्तम् + अहः + यत् + ब्रह्मणो | विदुः |
| रात्रिं | युग + सहस्र + अन्तां | ते + अहो + रात्र + विदो | जनाः |"]

–: ॐ :–

অনন্যচেতাঃ সততং যো মাং স্মরতি নিত্যশঃ ।
তস্যাহং সুলভঃ পার্থ নিত্যযুক্তস্য যোগিনঃ ॥৮-১৪॥

["| অনন্য + চেতাঃ | সততং | যো | মাং | স্মরতি | নিত্যশঃ |
| তস্য + অহং | সু + লভঃ | পার্থ | নিত্য + যুক্তস্য | যোগিনঃ |"]

মামুপেত্য পুনর্জন্ম দুঃখালয়মশাশ্বতম্ ।
নাপ্নুবন্তি মহাত্মানঃ সংসিদ্ধিং পরমাং গতাঃ ॥৮-১৫॥

["| মাম্ + উপেত্য | পুনঃ + জন্ম | দুঃখ + আলয়ম্ + অশাশ্বতম্ |
| ন + আপ্নুবন্তি | মহা + আত্মানঃ | সংসিদ্ধিং | পরমাং | গতাঃ |"]

আব্রহ্মভুবনাল্লোকাঃ পুনরাবর্তিনোঽর্জুন ।
মামুপেত্য তু কৌন্তেয় পুনর্জন্ম ন বিদ্যতে ॥৮-১৬॥

["| আ + ব্রহ্ম + ভুবনাৎ + লোকাঃ | পুনঃ + আবর্তিনো + অর্জুন |
| মাম্ + উপেত্য | তু | কৌন্তেয় | পুনঃ + জন্ম | ন | বিদ্যতে |"]

সহস্রযুগপর্যন্তমহর্যদ্ব্রহ্মণো বিদুঃ ।
রাত্রিং যুগসহস্রান্তাং তেঽহোরাত্রবিদো জনাঃ ॥৮-১৭॥

["| সহস্র + যুগ + পর্যন্তম্ + অহঃ + যৎ + ব্রহ্মণো | বিদুঃ |
| রাত্রিং | যুগ + সহস্র + অন্তাং | তে + অহো + রাত্র + বিদো | জনাঃ |"]

–: ॐ :–

अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे ।
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥८-१८॥

["| अव्यक्तात् + व्यक्तयः | सर्वाः | प्रभवन्ति + अहः + आगमे |
| रात्रि + आगमे | प्रलीयन्ते | तत्र + एव + अव्यक्त + संज्ञके |"]

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते ।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥८-१९॥

["| भूत + ग्रामः | स | एव + अयं | भूत्वा | भूत्वा | प्रलीयते |
| रात्रि + आगमे + अवशः | पार्थ | प्रभवति + अहः + आगमे |"]

परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात् सनातनः ।
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥८-२०॥

["| परः + तस्मात् + तु | भावो + अन्यो + अव्यक्तो + अव्यक्तात् | सनातनः |
| यः | स | सर्वेषु | भूतेषु | नश्यत्सु | न | विनश्यति |"]

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम् ।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥८-२१॥

["| अव्यक्तो + अक्षर | इति + उक्तः + तम् + आहुः | परमां | गतिम् |
| यं | प्राप्य | न | निवर्तन्ते | तत् + धाम | परमं | मम |"]

–: ॐ :–

অব্যক্তাদ্ব্যক্তয়ঃ সর্বাঃ প্রভবন্ত্যহরাগমে ।
রাত্র্যাগমে প্রলীয়ন্তে তত্রৈবাব্যক্তসংজ্ঞকে ॥৮-১৮॥

["| অব্যক্তাৎ + ব্যক্তয়ঃ | সর্বাঃ | প্রভবন্তি + অহঃ + আগমে |
| রাত্রি + আগমে | প্রলীয়ন্তে | তত্র + এব + অব্যক্ত + সংজ্ঞকে |"]

ভূতগ্রামঃ স এবায়ং ভূত্বা ভূত্বা প্রলীয়তে ।
রাত্র্যাগমেঽবশঃ পার্থ প্রভবত্যহরাগমে ॥৮-১৯॥

["| ভূত + গ্রামঃ | স | এব + অয়ং | ভূত্বা | ভূত্বা | প্রলীয়তে |
| রাত্রি + আগমে + অবশঃ | পার্থ | প্রভবতি + অহঃ + আগমে |"]

পরস্তস্মাত্তু ভাবোঽন্যোঽব্যক্তোঽব্যক্তাৎ সনাতনঃ ।
যঃ স সর্বেষু ভূতেষু নশ্যৎসু ন বিনশ্যতি ॥৮-২০॥

["| পরঃ + তস্মাৎ + তু | ভাবো + অন্যো + অব্যক্তো + অব্যক্তাৎ | সনাতনঃ |
| যঃ | স | সর্বেষু | ভূতেষু | নশ্যৎসু | ন | বিনশ্যতি |"]

অব্যক্তোঽক্ষর ইত্যুক্তস্তমাহুঃ পরমাং গতিম্ ।
যং প্রাপ্য ন নিবর্তন্তে তদ্ধাম পরমং মম ॥৮-২১॥

["| অব্যক্তো + অক্ষর | ইতি + উক্তঃ + তম্ + আহুঃ | পরমাং | গতিম্ |
| যং | প্রাপ্য | ন | নিবর্তন্তে | তৎ + ধাম | পরমং | মম |"]

–: ॐ :–

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया ।
यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ॥८-२२॥

["| पुरुषः | स | परः | पार्थ | भक्त्या | लभ्यः + तु + अनन्यया |
| यस्य + अन्तः + स्थानि | भूतानि | येन | सर्वम् + इदं | ततम् |"]

यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः ।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ ॥८-२३॥

["| यत्र | काले | तु + अनावृत्तिम् + आवृत्तिं | च + एव | योगिनः |
| प्रयाता | यान्ति | तं | कालं | वक्ष्यामि | भरत + ऋषभ |"]

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् ।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥८-२४॥

["| अग्निः + ज्योतिः + अहः | शुक्लः | षट् + मासा | उत्तर + अयणम् |
| तत्र | प्रयाता | गच्छन्ति | ब्रह्म | ब्रह्म + विदो | जनाः |"]

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् ।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते ॥८-२५॥

["| धूमो | रात्रिः + तथा | कृष्णः | षट् + मासा | दक्षिण + अयनम् |
| तत्र | चान्द्र + मसं | ज्योतिः + योगी | प्राप्य | निवर्तते |"]

–: ॐ :–

পুরুষঃ স পরঃ পার্থ ভক্ত্যা লভ্যস্ত্বনন্যয়া ।

যস্যান্তঃস্থানি ভূতানি যেন সর্বমিদং ততম্ ॥৮-২২॥

["| পুরুষঃ | স | পরঃ | পার্থ | ভক্ত্যা | লভ্যঃ + তু + অনন্যয়া |
| যস্য + অন্তঃ + স্থানি | ভূতানি | যেন | সর্বম্ + ইদং | ততম্ |"]

যত্র কালে ত্বনাবৃত্তিমাবৃত্তিং চৈব যোগিনঃ ।

প্রয়াতা যান্তি তং কালং বক্ষ্যামি ভরতর্ষভ ॥৮-২৩॥

["| যত্র | কালে | তু + অনাবৃত্তিম্ + আবৃত্তিং | চ + এব | যোগিনঃ |
| প্রয়াতা | যান্তি | তং | কালং | বক্ষ্যামি | ভরত + ঋষভ |"]

অগ্নির্জ্যোতিরহঃ শুক্লঃ ষন্মাসা উত্তরায়ণম্ ।

তত্র প্রয়াতা গচ্ছন্তি ব্রহ্ম ব্রহ্মবিদো জনাঃ ॥৮-২৪॥

["| অগ্নিঃ + জ্যোতিঃ + অহঃ | শুক্লঃ | ষট্ + মাসা | উত্তর + অয়ণম্ |
| তত্র | প্রয়াতা | গচ্ছন্তি | ব্রহ্ম | ব্রহ্ম + বিদো | জনাঃ |"]

ধূমো রাত্রিস্তথা কৃষ্ণঃ ষণ্মাসা দক্ষিণায়নম্ ।

তত্র চান্দ্রমসং জ্যোতির্যোগী প্রাপ্য নিবর্ততে ॥৮-২৫॥

["| ধূমো | রাত্রিঃ + তথা | কৃষ্ণঃ | ষট্ + মাসা | দক্ষিণ + অয়নম্ |
| তত্র | চান্দ্র + মসং | জ্যোতিঃ + যোগী | প্রাপ্য | নিবর্ততে |"]

–: ॐ :–

शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते ।
एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः ॥८-२६॥

["| शुक्ल + कृष्णे | गती | हि + एते | जगतः | शाश्वते | मते |
| एकया | याति + अनावृत्तिम् + अन्यया + आवर्तते | पुनः |"]

नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन ।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन ॥८-२७॥

["| न + एते | सृती | पार्थ | जानन् + योगी | मुह्यति | कश्चन |
| तस्मात् + सर्वेषु | कालेषु | योग + युक्तो | भव + अर्जुन |"]

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत् पुण्यफलं प्रदिष्टम् ।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् ॥८-२८॥

["| वेदेषु | यज्ञेषु | तपःसु | च + एव | दानेषु | यत् | पुण्य + फलं | प्रदिष्टम् |
| अत्येति | तत् + सर्वम् + इदं | विदित्वा | योगी | परं | स्थानम् + उपैति | च + आद्यम् |"]

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि
श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे
अक्षरब्रह्मयोगो नाम अष्टमोऽध्यायः॥८॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | अक्षर + ब्रह्म + योगो | नाम | अष्टमो + अध्यायः |"]

–: ওঁ :–

শুক্লকৃষ্ণে গতী হ্যেতে জগতঃ শাশ্বতে মতে ।
একয়া যাত্যনাবৃত্তিমন্যয়াবর্ততে পুনঃ ॥৮-২৬॥

["| শুক্ল + কৃষ্ণে | গতী | হি + এতে | জগতঃ | শাশ্বতে | মতে |
| একয়া | যাতি + অনাবৃত্তিম্ + অন্যয়া + আবর্ততে | পুনঃ |"]

নৈতে সৃতী পার্থ জানন্যোগী মুহ্যতি কশ্চন ।
তস্মাৎসর্বেষু কালেষু যোগযুক্তো ভবার্জুন ॥৮-২৭॥

["| ন + এতে | সৃতী | পার্থ | জানন্ + যোগী | মুহ্যতি | কশ্চন |
| তস্মাৎ + সর্বেষু | কালেষু | যোগ + যুক্তো | ভব + অর্জুন |"]

বেদুষু যজ্ঞেষু তপঃসু চৈব দানেষু যৎ পুণ্যফলং প্রদিষ্টম্ ।
অত্যেতি তৎসর্বমিদং বিদিত্বা যোগী পরং স্থানমুপৈতি চাদ্যম্ ॥৮-২৮॥

["| বেদুষু | যজ্ঞেষু | তপঃসু | চ + এব | দানেষু | যৎ | পুণ্য + ফলং | প্রদিষ্টম্ |
| অত্যেতি | তৎ + সর্বম্ + ইদং | বিদিত্বা | যোগী | পরং | স্থানম্ + উপৈতি | চ + আদ্যম্ |"]

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে
অক্ষরব্রহ্মযোগো নাম অষ্টমোঽধ্যায়ঃ ॥৮॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | অক্ষর + ব্রহ্ম + যোগো | নাম | অষ্টমো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

नवमोऽध्यायः
राजविद्याराजगुह्ययोग

श्रीभगवानुवाच :—
इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे ।
ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥९-०१॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | इदं | तु | ते | गुह्य + तमं | प्रवक्ष्यामि + अनसूयवे |
| ज्ञानं | विज्ञान + सहितं | यत् + ज्ञात्वा | मोक्ष्यसे + अशुभात् |"]

राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् ।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ॥९-०२॥

["| राज + विद्या | राज + गुह्यं | पवित्रम् + इदम् + उत्तमम् |
| प्रत्यक्ष + अवगमं | धर्म्यं | सु + सुखं | कर्तुम् + अव्ययम् |"]

–: ॐ :–

নবমোঽধ্যায়ঃ
রাজবিদ্যারাজগুহ্যযোগ

শ্রীভগবানুবাচ :—

ইদং তু তে গুহ্যতমং প্রবক্ষ্যাম্যনসূয়বে ।

জ্ঞানং বিজ্ঞানসহিতং যজ্জ্ঞাত্বা মোক্ষ্যসেঽশুভাৎ ॥৯-০১॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | ইদং | তু | তে | গুহ্য + তমং | প্রবক্ষ্যামি + অনসূয়বে |

| জ্ঞানং | বিজ্ঞান + সহিতং | যৎ + জ্ঞাত্বা | মোক্ষ্যসে + অশুভাৎ |"]

রাজবিদ্যা রাজগুহ্যং পবিত্রমিদমুত্তমম্ ।

প্রত্যক্ষাবগমং ধর্ম্যং সুসুখং কর্তুমব্যয়ম্ ॥৯-০২॥

["| রাজ + বিদ্যা | রাজ + গুহ্যং | পবিত্রম্ + ইদম্ + উত্তমম্ |

| প্রত্যক্ষ + অবগমং | ধর্ম্যং | সু + সুখং | কর্তুম্ + অব্যয়ম্ |"]

–: ॐ :–

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परन्तप ।
अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥९-०३॥

["| अश्रद्दधानाः | पुरुषा | धर्मस्य + अस्य | परन्तप |
| अप्राप्य | मां | निवर्तन्ते | मृत्यु + संसार + वर्त्मनि |"]

मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना ।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः ॥९-०४॥

["| मया | ततम् + इदं | सर्वं | जगत् + अव्यक्त + मूर्तिना |
| मत् + स्थानि | सर्व + भूतानि | न | च + अहं | तेषु + अवस्थितः |"]

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् ।
भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ॥९-०५॥

["| न | च | मत् + स्थानि | भूतानि | पश्य | मे | योगम् + ऐश्वरम् |
| भूत + भृत् + न | च | भूत + स्थो | मम + आत्मा | भूत + भावनः |"]

यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान् ।
तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ॥९-०६॥

["| यथा + आकाश + स्थितो | नित्यं | वायुः | सर्वत्र + गो | महान् |
| तथा | सर्वाणि | भूतानि | मत् + स्थानि + इति + उपधारय |"]

–: ॐ :–

অশ্রদ্দধানাঃ পুরুষা ধর্মস্যাস্য পরন্তপ ।

অপ্রাপ্য মাং নিবর্তন্তে মৃত্যুসংসারবর্ত্মনি ॥৯-০৩॥

["| অশ্রদ্দধানাঃ | পুরুষা | ধর্মস্য + অস্য | পরন্তপ |
| অপ্রাপ্য | মাং | নিবর্তন্তে | মৃত্যু + সংসার + বর্ত্মনি |"]

ময়া ততমিদং সর্বং জগদব্যক্তমূর্তিনা ।

মৎস্থানি সর্বভূতানি ন চাহং তেষ্ববস্থিতঃ ॥৯-০৪॥

["| ময়া | ততম্ + ইদং | সর্বং | জগৎ + অব্যক্ত + মূর্তিনা |
| মৎ + স্থানি | সর্ব + ভূতানি | ন | চ + অহং | তেষু + অবস্থিতঃ |"]

ন চ মৎস্থানি ভূতানি পশ্য মে যোগমৈশ্বরম্ ।

ভূতভৃন্ন চ ভূতস্থো মমাত্মা ভূতভাবনঃ ॥৯-০৫॥

["| ন | চ | মৎ + স্থানি | ভূতানি | পশ্য | মে | যোগম্ + ঐশ্বরম্ |
| ভূত + ভৃৎ + ন | চ | ভূত + স্থো | মম + আত্মা | ভূত + ভাবনঃ |"]

যথাকাশস্থিতো নিত্যং বায়ুঃ সর্বত্রগো মহান্ ।

তথা সর্বাণি ভূতানি মৎস্থানীত্যুপধারয় ॥৯-০৬॥

["| যথা + আকাশ + স্থিতো | নিত্যং | বায়ুঃ | সর্বত্র + গো | মহান্ |
| তথা | সর্বাণি | ভূতানি | মৎ + স্থানি + ইতি + উপধারয় |"]

–: ॐ :–

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् ।
कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ॥९-०७॥

["| सर्व + भूतानि | कौन्तेय | प्रकृतिं | यान्ति | मामिकाम् |
| कल्प + क्षये | पुनः + तानि | कल्प + आदौ | विसृजामि + अहम् |"]

प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः ।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ॥९-०८॥

["| प्रकृतिं | स्वाम् + अवष्टभ्य | विसृजामि | पुनः | पुनः |
| भूत + ग्रामम् + इमं | कृत्स्नम् + अवशं | प्रकृतेः + वशात् |"]

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय ।
उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु ॥९-०९॥

["| न | च | मां | तानि | कर्माणि | निबध्नन्ति | धनञ्जय |
| उदासीन + वत् + आसीनम् + असक्तं | तेषु | कर्मसु |"]

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् ।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते ॥९-१०॥

["| मया + अध्यक्षेण | प्रकृतिः | सूयते | स + चर + अचरम् |
| हेतुना + अनेन | कौन्तेय | जगत् + विपरिवर्तते |"]

–: ॐ :–

সর্বভূতানি কৌন্তেয় প্রকৃতিং যান্তি মামিকাম্ ।
কল্পক্ষয়ে পুনস্তানি কল্পাদৌ বিসৃজাম্যহম্ ॥৯-০৭॥

["| সর্ব + ভূতানি | কৌন্তেয় | প্রকৃতিং | যান্তি | মামিকাম্ |
| কল্প + ক্ষয়ে | পুনঃ + তানি | কল্প + আদৌ | বিসৃজামি + অহম্ |"]

প্রকৃতিং স্বামবষ্টভ্য বিসৃজামি পুনঃ পুনঃ ।
ভূতগ্রামমিমং কৃৎস্নমবশং প্রকৃতের্বশাৎ ॥৯-০৮॥

["| প্রকৃতিং | স্বাম্ + অবষ্টভ্য | বিসৃজামি | পুনঃ | পুনঃ |
| ভূত + গ্রামম্ + ইমং | কৃৎস্নম্ + অবশং | প্রকৃতেঃ + বশাৎ |"]

ন চ মাং তানি কর্মাণি নিবধ্নন্তি ধনঞ্জয় ।
উদাসীনবদাসীনমসক্তং তেষু কর্মসু ॥৯-০৯॥

["| ন | চ | মাং | তানি | কর্মাণি | নিবধ্নন্তি | ধনঞ্জয় |
| উদাসীন + বৎ + আসীনম্ + অসক্তং | তেষু | কর্মসু |"]

ময়াধ্যক্ষেণ প্রকৃতিঃ সূয়তে সচরাচরম্ ।
হেতুনানেন কৌন্তেয় জগদ্বিপরিবর্ততে ॥৯-১০॥

["| ময়া + অধ্যক্ষেণ | প্রকৃতিঃ | সূয়তে | স + চর + অচরম্ |
| হেতুনা + অনেন | কৌন্তেয় | জগৎ + বিপরিবর্ততে |"]

–: ॐ :–

अवजानन्ति मां मूढ़ा मानुषीं तनुमाश्रितम् ।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥९-११॥

["| अवजानन्ति | मां | मूढ़ा | मानुषीं | तनुम् + आश्रितम् |
| परं | भावम् + अजानन्तो | मम | भूत + महेश्वरम् |"]

मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः ।
राक्षसीमासुरीञ्चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः ॥९-१२॥

["| मोघ + आशा | मोघ + कर्माणो | मोघ + ज्ञाना | विचेतसः |
| राक्षसीम् + आसुरीं + च + एव | प्रकृतिं | मोहिनीं | श्रिताः |"]

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः ।
भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् ॥९-१३॥

["| महा + आत्मानः + तु | मां | पार्थ | दैवीं | प्रकृतिम् + आश्रिताः |
| भजन्ति + अनन्य + मनसो | ज्ञात्वा | भूत + आदिम् + अव्ययम् |"]

सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढ़व्रताः ।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते ॥९-१४॥

["| सततं | कीर्तयन्तो | मां | यतन्तः + च | दृढ़ + व्रताः |
| नमस्यन्तः + च | मां | भक्त्या | नित्य + युक्ता | उपासते |"]

–: ॐ :–

অবজানন্তি মাং মূঢ়া মানুষীং তনুমাশ্রিতম্ ।

পরং ভাবমজানন্তো মম ভূতমহেশ্বরম্ ॥৯-১১॥

["| অবজানন্তি | মাং | মূঢ়া | মানুষীং | তনুম + আশ্রিতম্ |
| পরং | ভাবম্ + অজানন্তো | মম | ভূত + মহেশ্বরম্ |"]

মোঘাশা মোঘকর্ম্মাণো মোঘজ্ঞানা বিচেতসঃ ।

রাক্ষসীমাসুরীঞ্চৈব প্রকৃতিং মোহিনীং শ্রিতাঃ ॥৯-১২॥

["| মোঘ + আশা | মোঘ + কর্ম্মাণো | মোঘ + জ্ঞানা | বিচেতসঃ |
| রাক্ষসীম্ + আসুরীং + চ + এব | প্রকৃতিং | মোহিনীং | শ্রিতাঃ |"]

মহাত্মানস্তু মাং পার্থ দৈবীং প্রকৃতিমাশ্রিতাঃ ।

ভজন্ত্যনন্যমনসো জ্ঞাত্বা ভূতাদিমব্যয়ম্ ॥৯-১৩॥

["| মহা + আত্মানঃ + তু | মাং | পার্থ | দৈবীং | প্রকৃতিম্ + আশ্রিতাঃ |
| ভজন্তি + অনন্য + মনসো | জ্ঞাত্বা | ভূত + আদিম্ + অব্যয়ম্ |"]

সততং কীর্তয়ন্তো মাং যতন্তশ্চ দৃঢ়ব্রতাঃ ।

নমস্যন্তশ্চ মাং ভক্ত্যা নিত্যযুক্তা উপাসতে ॥৯-১৪॥

["| সততং | কীর্তয়ন্তো | মাং | যতন্তঃ + চ | দৃঢ় + ব্রতাঃ |
| নমস্যন্তঃ + চ | মাং | ভক্ত্যা | নিত্য + যুক্তা | উপাসতে |"]

–: ॐ :–

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते ।
एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् ॥९-१५॥

["| ज्ञान + यज्ञेन | च + अपि + अन्ये | यजन्तो | माम् + उपासते |
| एकत्वेन | पृथक्त्वेन | बहुधा | विश्वतो + मुखम् |"]

अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम् ।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम् ॥९-१६॥

["| अहं | क्रतुः + अहं | यज्ञः | स्वधा + अहम् + अहम् + ओषधम् |
| मन्त्रो + अहम् + अहम् + एव + आज्यम् + अहम् + अग्निः + अहं | हुतम् |"]

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः ।
वेद्यं पवित्रमोङ्कार ऋक्साम यजुरेव च ॥९-१७॥

["| पिता + अहम् + अस्य | जगतो | माता | धाता | पितामहः |
| वेद्यं | पवित्रम् + ओङ्कार | ऋक् + साम | यजुः + एव | च |"]

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत् ।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम् ॥९-१८॥

["| गतिः + भर्ता | प्रभुः | साक्षी | निवासः | शरणं | सु + हृत् |
| प्रभवः | प्रलयः | स्थानं | निधानं | बीजम् + अव्ययम् |"]

–: ॐ :–

জ্ঞানযজ্ঞেন চাপ্যন্যে যজন্তো মামুপাসতে ।
একত্বেন পৃথক্ত্বেন বহুধা বিশ্বতোমুখম্ ॥৯-১৫॥

["| জ্ঞান + যজ্ঞেন | চ + অপি + অন্যে | যজন্তো | মাম্ + উপাসতে |
| একত্বেন | পৃথক্ত্বেন | বহুধা | বিশ্বতো + মুখম্ |"]

অহং ক্রতুরহং যজ্ঞঃ স্বধাহমহমৌষধম্ ।
মন্ত্রোঽহমহমেবাজ্যমহমগ্নিরহং হুতম্ ॥৯-১৬॥

["| অহং | ক্রতুঃ + অহং | যজ্ঞঃ | স্বধা + অহম্ + অহম্ + ঔষধম্ |
| মন্ত্রো + অহম্ + অহম্ + এব + আজ্যম্ + অহম্ + অগ্নিঃ + অহং | হুতম্ |"]

পিতাহমস্য জগতো মাতা ধাতা পিতামহঃ ।
বেদ্যং পবিত্রমোঙ্কার ঋক্সাম যজুরেব চ ॥৯-১৭॥

["| পিতা + অহম্ + অস্য | জগতো | মাতা | ধাতা | পিতামহঃ |
| বেদ্যং | পবিত্রম্ + ওঙ্কার | ঋক্ + সাম | যজুঃ + এব | চ |"]

গতির্ভর্তা প্রভুঃ সাক্ষী নিবাসঃ শরণং সুহৃৎ ।
প্রভবঃ প্রলয়ঃ স্থানং নিধানং বীজমব্যয়ম্ ॥৯-১৮॥

["| গতিঃ + ভর্তা | প্রভুঃ | সাক্ষী | নিবাসঃ | শরণং | সু + হৃৎ |
| প্রভবঃ | প্রলয়ঃ | স্থানং | নিধানং | বীজম্ + অব্যয়ম্ |"]

–: ॐ :–

तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च ।
अमृतञ्चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन ॥९-१९॥

["| तपामि + अहम् + अहं | वर्षं | निगृह्णामि + उत्सृजामि | च |
| अमृतं + च + एव | मृत्युः + च | सत् + असत् + च + अहम् + अर्जुन |"]

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते ।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान् ॥९-२०॥

["| त्रै + विद्या | मां | सोम + पाः | पूत + पापा | यज्ञैः + इष्ट्वा | स्वः + गतिं | प्रार्थयन्ते |
| ते | पुण्यम् + आसाद्य | सुर + इन्द्र + लोकम् + अश्नन्ति | दिव्यान् + दिवि | देव + भोगान् |"]

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते ॥९-२१॥

["| ते | तं | भुक्त्वा | स्वर्ग + लोकं | विशालं | क्षीणे | पुण्ये | मर्त्य + लोकं | विशन्ति |
| एवं | त्रयी + धर्मम् + अनुप्रपन्ना | गत + आगतं | काम + कामा | लभन्ते |"]

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥९-२२॥

["| अनन्याः + चिन्तयन्तो | मां | ये | जनाः | पर्युपासते |
| तेषां | नित्य + अभियुक्तानां | योग + क्षेमं | वहामि + अहम् |"]

–: ॐ :–

তপাম্যহমহং বর্ষং নিগৃহ্নাম্যুৎসৃজামি চ ।

অমৃতঞ্চৈব মৃত্যুশ্চ সদসচ্চাহমর্জুন ॥৯-১৯॥

["| তপামি + অহম্ + অহং | বর্ষং | নিগৃহ্নামি + উৎসৃজামি | চ |
| অমৃতং + চ + এব | মৃত্যুঃ + চ | সৎ + অসৎ + চ + অহম্ + অর্জুন |"]

ত্রৈবিদ্যা মাং সোমপাঃ পূতপাপা যজ্ঞৈরিষ্ট্বা স্বর্গতিং প্রার্থয়ন্তে ।

তে পুণ্যমাসাদ্য সুরেন্দ্রলোকমশ্নন্তি দিব্যান্দিবি দেবভোগান্ ॥৯-২০॥

["| ত্রৈ + বিদ্যা | মাং | সোম + পাঃ | পূত + পাপা | যজ্ঞৈঃ + ইষ্ট্বা | স্বঃ + গতিং | প্রার্থয়ন্তে |
| তে | পুণ্যম্ + আসাদ্য | সুর + ইন্দ্র + লোকম্ + অশ্নন্তি | দিব্যান্ + দিবি | দেব + ভোগান্ |"]

তে তং ভুক্ত্বা স্বর্গলোকং বিশালং ক্ষীণে পুণ্যে মর্ত্যলোকং বিশন্তি ।

এবং ত্রয়ীধর্ম্মমনুপ্রপন্না গতাগতং কামকামা লভন্তে ॥৯-২১॥

["| তে | তং | ভুক্ত্বা | স্বর্গ + লোকং | বিশালং | ক্ষীণে | পুণ্যে | মর্ত্য + লোকং | বিশন্তি |
| এবং | ত্রয়ী + ধর্ম্ম্ + অনুপ্রপন্না | গত + আগতং | কাম + কামা | লভন্তে |"]

অনন্যাশ্চিন্তয়ন্তো মাং যে জনাঃ পর্য্যুপাসতে ।

তেষাং নিত্যাভিযুক্তানাং যোগক্ষেমং বহাম্যহম্ ॥৯-২২॥

["| অনন্যাঃ + চিন্তয়ন্তো | মাং | যে | জনাঃ | পর্য্যুপাসতে |
| তেষাং | নিত্য + অভিযুক্তানাং | যোগ + ক্ষেমং | বহামি + অহম্ |"]

–: ॐ :–

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः ।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम् ॥९-२३॥

["| ये + अपि + अन्य + देवता | भक्ता | यजन्ते | श्रद्धया + अन्विताः |
| ते + अपि | माम् + एव | कौन्तेय | यजन्ति + अविधि + पूर्वकम् |"]

अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च ।
न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते ॥९-२४॥

["| अहं | हि | सर्व + यज्ञानां | भोक्ता | च | प्रभुः + एव | च |
| न | तु | माम् + अभिजानन्ति | तत्त्वेन + अतः + च्यवन्ति | ते |"]

यान्ति देवव्रता देवान् पितृन् यान्ति पितृव्रताः ।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् ॥९-२५॥

["| यान्ति | देव + व्रता | देवान् | पितृन् | यान्ति | पितृ + व्रताः |
| भूतानि | यान्ति | भूत + इज्या | यान्ति | मत् + याजिनो + अपि | माम् |"]

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥९-२६॥

["| पत्रं | पुष्पं | फलं | तोयं | यो | मे | भक्त्या | प्रयच्छति |
| तत् + अहं | भक्ति + उपहृतम् + अश्नामि | प्रयत + आत्मनः |"]

–: ওঁ :–

যেঽপ্যন্যদেবতা ভক্তা যজন্তে শ্রদ্ধয়ান্বিতাঃ ।

তেঽপি মামেব কৌন্তেয় যজন্ত্যবিধিপূর্বকম্ ॥৯-২৩॥

["| যে + অপি + অন্য + দেবতা | ভক্তা | যজন্তে | শ্রদ্ধয়া + অন্বিতাঃ |
| তে + অপি | মাম্ + এব | কৌন্তেয় | যজন্তি + অবিধি + পূর্বকম্ |"]

অহং হি সর্বযজ্ঞানাং ভোক্তা চ প্রভুরেব চ ।

ন তু মামভিজানন্তি তত্ত্বেনাতশ্চ্যবন্তি তে ॥৯-২৪॥

["| অহং | হি | সর্ব + যজ্ঞানাং | ভোক্তা | চ | প্রভুঃ + এব | চ |
| ন | তু | মাম্ + অভিজানন্তি | তত্ত্বেন + অতঃ + চ্যবন্তি | তে |"]

যান্তি দেবব্রতা দেবান্ পিতৃন্ যান্তি পিতৃব্রতাঃ ।

ভূতানি যান্তি ভূতেজ্যা যান্তি মদ্যাজিনোঽপি মাম্ ॥৯-২৫॥

["| যান্তি | দেব + ব্রতা | দেবান্ | পিতৃন্ | যান্তি | পিতৃ + ব্রতাঃ |
| ভূতানি | যান্তি | ভূত + ইজ্যা | যান্তি | মৎ + যাজিনো + অপি | মাম্ |"]

পত্রং পুষ্পং ফলং তোয়ং যো মে ভক্ত্যা প্রযচ্ছতি ।

তদহং ভক্ত্যুপহৃতমশ্নামি প্রযতাত্মনঃ ॥৯-২৬॥

["| পত্রং | পুষ্পং | ফলং | তোয়ং | যো | মে | ভক্ত্যা | প্রযচ্ছতি |
| তৎ + অহং | ভক্তি + উপহৃতম্ + অশ্নামি | প্রযত + আত্মনঃ |"]

–: ॐ :–

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥९-२७॥

["| यत् + करोषि | यत् + अश्नासि | यत् + जुहोषि | ददासि | यत् |
| यत् + तपस्यसि | कौन्तेय | तत् + कुरुष्व | मत् + अर्पणम् |"]

शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः ।
संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि ॥९-२८॥

["| शुभ + अशुभ + फलैः + एवं | मोक्ष्यसे | कर्म + बन्धनैः |
| संन्यास + योग + युक्त + आत्मा | विमुक्तो | माम् + उपैष्यसि |"]

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः ।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम् ॥९-२९॥

["| समो + अहं | सर्व + भूतेषु | न | मे | द्वेष्यो + अस्ति | न | प्रियः |
| ये | भजन्ति | तु | मां | भक्त्या | मयि | ते | तेषु | च + अपि + अहम् |"]

अपि चेत् सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥९-३०॥

["| अपि | चेत् | सु + दुराचारो | भजते | माम् + अनन्य + भाक् |
| साधुः + एव | स | मन्तव्यः | सम्यक् + व्यवसितो | हि | सः |"]

–: ॐ :–

যৎকরোষি যদশ্নাসি যজ্জুহোষি দদাসি যৎ ।

যত্তপস্যসি কৌন্তেয় তৎকুরুষ্ব মদর্পণম্ ॥৯-২৭॥

["| যৎ + করোষি | যৎ + অশ্নাসি | যৎ + জুহোষি | দদাসি | যৎ |
| যৎ + তপস্যসি | কৌন্তেয় | তৎ + কুরুষ্ব | মৎ + অর্পণম্ |"]

শুভাশুভফলৈরেবং মোক্ষ্যসে কর্মবন্ধনৈঃ ।

সন্ন্যাসযোগযুক্তাত্মা বিমুক্তো মামুপৈষ্যসি ॥৯-২৮॥

["| শুভ + অশুভ + ফলৈঃ + এবং | মোক্ষ্যসে | কর্ম + বন্ধনৈঃ |
| সন্ন্যাস + যোগ + যুক্ত + আত্মা | বিমুক্তো | মাম্ + উপৈষ্যসি |"]

সমোঽহং সর্বভূতেষু ন মে দ্বেষ্যোঽস্তি ন প্রিয়ঃ ।

যে ভজন্তি তু মাং ভক্ত্যা ময়ি তে তেষু চাপ্যহম্ ॥৯-২৯॥

["| সমো + অহং | সর্ব + ভূতেষু | ন | মে | দ্বেষ্যো + অস্তি | ন | প্রিয়ঃ |
| যে | ভজন্তি | তু | মাং | ভক্ত্যা | ময়ি | তে | তেষু | চ + অপি + অহম্ |"]

অপি চেৎ সুদুরাচারো ভজতে মামনন্যভাক্ ।

সাধুরেব স মন্তব্যঃ সম্যগ্ব্যবসিতো হি সঃ ॥৯-৩০॥

["| অপি | চেৎ | সু + দুরাচারো | ভজতে | মাম্ + অনন্য + ভাক্ |
| সাধুঃ + এব | স | মন্তব্যঃ | সম্যক্ + ব্যবসিতো | হি | সঃ |"]

–: ॐ :–

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति ।
कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥९-३१॥

["| क्षिप्रं | भवति | धर्म + आत्मा | शश्वत् + शान्तिं | निगच्छति |
| कौन्तेय | प्रतिजानीहि | न | मे | भक्तः | प्रणश्यति |"]

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥९-३२॥

["| मां | हि | पार्थ | व्यपाश्रित्य | ये + अपि | स्युः | पाप + योनयः |
| स्त्रियो | वैश्याः + तथा | शूद्राः + ते + अपि | यान्ति | परां | गतिम् |"]

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा ।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् ॥९-३३॥

["| किं | पुनः + ब्राह्मणाः | पुण्या | भक्ता | राज + ऋषयः + तथा |
| अनित्यम् + असुखं | लोकम् + इमं | प्राप्य | भजस्व | माम् |"]

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥९-३४॥

["| मत् + मना | भव | मत् + भक्तो | मत् + याजी | मां | नमः + कुरु |
| माम् + एव + एष्यसि | युक्त्वा + एवम् + आत्मानं | मत् + परायणः |"]

–: ওঁ :–

ক্ষিপ্রং ভবতি ধর্মাত্মা শশ্বচ্ছান্তিং নিগচ্ছতি ।

কৌন্তেয় প্রতিজানীহি ন মে ভক্তঃ প্রণশ্যতি ॥৯-৩১॥

["| ক্ষিপ্রং | ভবতি | ধর্ম + আত্মা | শশ্বৎ + শান্তিং | নিগচ্ছতি |
| কৌন্তেয় | প্রতিজানীহি | ন | মে | ভক্তঃ | প্রণশ্যতি |"]

মাং হি পার্থ ব্যপাশ্রিত্য যেঽপি স্যুঃ পাপযোনয়ঃ ।

স্ত্রিয়ো বৈশ্যাস্তথা শূদ্রাস্তেঽপি যান্তি পরাং গতিম্ ॥৯-৩২॥

["| মাং | হি | পার্থ | ব্যপাশ্রিত্য | যে + অপি | স্যুঃ | পাপ + যোনয়ঃ |
| স্ত্রিয়ো | বৈশ্যাঃ + তথা | শূদ্রাঃ + তে + অপি | যান্তি | পরাং | গতিম্ |"]

কিং পুনর্ব্রাহ্মণাঃ পুণ্যা ভক্তা রাজর্ষয়স্তথা ।

অনিত্যমসুখং লোকমিমং প্রাপ্য ভজস্ব মাম্ ॥৯-৩৩॥

["| কিং | পুনঃ + ব্রাহ্মণাঃ | পুণ্যা | ভক্তা | রাজ + ঋষয়ঃ + তথা |
| অনিত্যম্ + অসুখং | লোকম + ইমং | প্রাপ্য | ভজস্ব | মাম্ |"]

মন্মনা ভব মদ্ভক্তো মদ্যাজী মাং নমস্কুরু ।

মামেবৈষ্যসি যুক্ত্বৈবমাত্মানং মৎপরায়ণঃ ॥৯-৩৪॥

["| মৎ + মনা | ভব | মৎ + ভক্তো | মৎ + যাজী | মাং | নমঃ + কুরু |
| মাম্ + এব + এষ্যসি | যুক্ত্বা + এবম্ + আত্মানং | মৎ + পরায়ণঃ |"]

–: ॐ :–

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे राजविद्याराजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः॥९॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | राज + विद्या + राज + गुह्य + योगो | नाम | नवमो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি শ্রীমদ্ভগবদ্‌গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে রাজবিদ্যারাজগুহ্যযোগো নাম নবমোঽধ্যায়ঃ ॥৯॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | রাজ + বিদ্যা + রাজ + গুহ্য + যোগো | নাম | নবমো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

दशमोऽध्यायः
विभूतियोग

श्रीभगवानुवाच :—
भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥१०-०१॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | भूय | एव | महा + बाहो | शृणु | मे | परमं | वचः |
| यत् + ते + अहं | प्रीयमाणाय | वक्ष्यामि | हित + काम्यया |"]

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः ।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥१०-०२॥

["| न | मे | विदुः | सुर + गणाः | प्रभवं | न | महा + ऋषयः |
| अहम् + आदिः + हि | देवानां | महा + ऋषीणां | च | सर्वशः |"]

–: ॐ :–

দশমোঽধ্যায়ঃ
বিভূতিযোগ

শ্রীভগবানুবাচ :—

ভূয় এব মহাবাহো শৃণু মে পরমং বচঃ ।

যত্তেঽহং প্রীয়মাণায় বক্ষ্যামি হিতকাম্যয়া ॥১০-০১॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | ভূয় | এব | মহা + বাহো | শৃণু | মে | পরমং | বচঃ |
| যৎ + তে + অহং | প্রীয়মাণায় | বক্ষ্যামি | হিত + কাম্যয়া |"]

ন মে বিদুঃ সুরগণাঃ প্রভবং ন মহর্ষয়ঃ ।

অহমাদির্হি দেবানাং মহর্ষীণাং চ সর্বশঃ ॥১০-০২॥

["| ন | মে | বিদুঃ | সুর + গণাঃ | প্রভবং | ন | মহা + ঋষয়ঃ |
| অহম্ + আদিঃ + হি | দেবানাং | মহা + ঋষীণাং | চ | সর্বশঃ |"]

–: ॐ :–

योे मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१०-०३॥

["| यो | माम् + अजम् + अनादिं | च | वेत्ति | लोक + महा + ईश्वरम् |
| असंमूढः | स | मर्त्येषु | सर्व + पापैः | प्रमुच्यते |"]

बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥१०-०४॥

["| बुद्धिः + ज्ञानम् + असंमोहः | क्षमा | सत्यं | दमः | शमः |
| सुखं | दुःखं | भवो + अभावो | भयं | च + अभयम् + एव | च |"]

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः ।
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥१०-०५॥

["| अहिंसा | समता | तुष्टिः + तपो | दानं | यशो + अयशः |
| भवन्ति | भावा | भूतानां | मत्त | एव | पृथक् + विधाः |"]

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा ।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥१०-०६॥

["| महा + ऋषयः | सप्त | पूर्वे | चत्वारो | मनवः + तथा |
| मत् + भावा | मानसा | जाता | येषां | लोक | इमाः | प्रजाः |"]

–: ॐ :–

যো মামজমনাদিং চ বেত্তি লোকমহেশ্বরম্ ।

অসংমূঢ়ঃ স মর্ত্যেষু সর্বপাপৈঃ প্রমুচ্যতে ॥১০-০৩॥

["| যো | মাম্ + অজম্ + অনাদিং | চ | বেত্তি | লোক + মহা + ঈশ্বরম্ |
| অসংমূঢ়ঃ | স | মর্ত্যেষু | সর্ব + পাপৈঃ | প্রমুচ্যতে |"]

বুদ্ধির্জ্ঞানমসংমোহঃ ক্ষমা সত্যং দমঃ শমঃ ।

সুখং দুঃখং ভবোঽভাবো ভয়ং চাভয়মেব চ ॥১০-০৪॥

["| বুদ্ধিঃ + জ্ঞানম্ + অসংমোহঃ | ক্ষমা | সত্যং | দমঃ | শমঃ |
| সুখং | দুঃখং | ভবো + অভাবো | ভয়ং | চ + অভয়ম্ + এব | চ |"]

অহিংসা সমতা তুষ্টিস্তপো দানং যশোঽযশঃ ।

ভবন্তি ভাবা ভূতানাং মত্ত এব পৃথগ্বিধাঃ ॥১০-০৫॥

["| অহিংসা | সমতা | তুষ্টিঃ + তপো | দানং | যশো + অযশঃ |
| ভবন্তি | ভাবা | ভূতানাং | মত্ত | এব | পৃথক্ + বিধাঃ |"]

মহর্ষয়ঃ সপ্ত পূর্বে চত্বারো মনবস্তথা ।

মদ্ভাবা মানসা জাতা যেষাং লোক ইমাঃ প্রজাঃ ॥১০-০৬॥

["| মহা + ঋষয়ঃ | সপ্ত | পূর্বে | চত্বারো | মনবঃ + তথা |
| মৎ + ভাবা | মানসা | জাতা | যেষাং | লোক | ইমাঃ | প্রজাঃ |"]

–: ॐ :–

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः ।
सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥१०-०७॥

["| एतां | विभूतिं | योगं | च | मम | यो | वेत्ति | तत्त्वतः |
| सो + अविकम्पेन | योगेन | युज्यते | न + अत्र | संशयः |"]

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥१०-०८॥

["| अहं | सर्वस्य | प्रभवो | मत्तः | सर्वं | प्रवर्तते |
| इति | मत्वा | भजन्ते | मां | बुधा | भाव + समन्विताः |"]

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥१०-०९॥

["| मत् + चित्ता | मत् + गत + प्राणा | बोधयन्तः | परस्परम् |
| कथयन्तः + च | मां | नित्यं | तुष्यन्ति | च | रमन्ति | च |"]

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥१०-१०॥

["| तेषां | सतत + युक्तानां | भजतां | प्रीति + पूर्वकम् |
| ददामि | बुद्धि + योगं | तं | येन | माम् + उपयान्ति | ते |"]

–: ॐ :–

এতাং বিভূতিং যোগং চ মম যো বেত্তি তত্ত্বতঃ ।

সোঽবিকম্পেন যোগেন যুজ্যতে নাত্র সংশয়ঃ ॥১০-০৭॥

["| এতাং | বিভূতিং | যোগং | চ | মম | যো | বেত্তি | তত্ত্বতঃ |
| সো + অবিকম্পেন | যোগেন | যুজ্যতে | ন + অত্র | সংশয়ঃ |"]

অহং সর্বস্য প্রভবো মত্তঃ সর্বং প্রবর্ততে ।

ইতি মত্বা ভজন্তে মাং বুধা ভাবসমন্বিতাঃ ॥১০-০৮॥

["| অহং | সর্বস্য | প্রভবো | মত্তঃ | সর্বং | প্রবর্ততে |
| ইতি | মত্বা | ভজন্তে | মাং | বুধা | ভাব + সমন্বিতাঃ |"]

মচ্চিত্তা মদ্গতপ্রাণা বোধয়ন্তঃ পরস্পরম্ ।

কথয়ন্তশ্চ মাং নিত্যং তুষ্যন্তি চ রমন্তি চ ॥১০-০৯॥

["| মৎ + চিত্তা | মৎ + গত + প্রাণা | বোধয়ন্তঃ | পরস্পরম্ |
| কথয়ন্তঃ + চ | মাং | নিত্যং | তুষ্যন্তি | চ | রমন্তি | চ |"]

তেষাং সততযুক্তানাং ভজতাং প্রীতিপূর্বকম্ ।

দদামি বুদ্ধিযোগং তং যেন মামুপযান্তি তে ॥১০-১০॥

["| তেষাং | সতত + যুক্তানাং | ভজতাং | প্রীতি + পূর্বকম্ |
| দদামি | বুদ্ধি + যোগং | তং | যেন | মাম্ + উপযান্তি | তে |"]

–: ॐ :–

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥१०-११॥

["| तेषाम् + एव + अनुकम्पा + अर्थम् + अहम् + अज्ञान + जं | तमः |
| नाशयामि + आत्म + भाव + स्थो | ज्ञान + दीपेन | भास्वता |"]

अर्जुन उवाच :—
परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् ।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् ॥१०-१२॥

["| अर्जुन | उवाच | परं | ब्रह्म | परं | धाम | पवित्रं | परमं | भवान् |
| पुरुषं | शाश्वतं | दिव्यम् + आदि + देवम् + अजं | विभुम् |"]

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा ।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१०-१३॥

["| आहुः + त्वाम् + ऋषयः | सर्वे | देव + ऋषिः + नारदः + तथा |
| असितो | देवलो | व्यासः | स्वयं | च + एव | ब्रवीषि | मे |"]

–: ॐ :–

তেষামেবানুকম্পার্থমহমজ্ঞানজং তমঃ ।

নাশয়াম্যাত্মভাবস্থো জ্ঞানদীপেন ভাস্বতা ॥১০-১১॥

["| তেষাম্ + এব + অনুকম্পা + অর্থম্ + অহম্ + অজ্ঞান + জং | তমঃ |

| নাশয়ামি + আত্ম + ভাব + স্থো | জ্ঞান + দীপেন | ভাস্বতা |"]

অর্জুন উবাচ :—

পরং ব্রহ্ম পরং ধাম পবিত্রং পরমং ভবান্ ।

পুরুষং শাশ্বতং দিব্যমাদিদেবমজং বিভুম্ ॥১০-১২॥

["| অর্জুন | উবাচ | পরং | ব্রহ্ম | পরং | ধাম | পবিত্রং | পরমং | ভবান্ |

| পুরুষং | শাশ্বতং | দিব্যম্ + আদি + দেবম্ + অজং | বিভুম্ |"]

আহুস্ত্বামৃষয়ঃ সর্বে দেবর্ষির্নারদস্তথা ।

অসিতো দেবলো ব্যাসঃ স্বয়ং চৈব ব্রবীষি মে ॥১০-১৩॥

["| আহুঃ + ত্বাম্ + ঋষয়ঃ | সর্বে | দেব + ঋষিঃ + নারদঃ + তথা |

| অসিতো | দেবলো | ব্যাসঃ | স্বয়ং | চ + এব | ব্রবীষি | মে |"]

–: ॐ :–

सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव ।
न हि ते भगवन् व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ॥१०-१४॥

["| सर्वम् + एतत् + ऋतं | मन्ये | यत् + मां | वदसि | केशव |
| न | हि | ते | भगवन् | व्यक्तिं | विदुः + देवा | न | दानवाः |"]

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥१०-१५॥

["| स्वयम् + एव + आत्मना + आत्मानं | वेत्थ | त्वं | पुरुष + उत्तम |
| भूत + भावन | भूत + ईश | देव + देव | जगत् + पते |"]

वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि ॥१०-१६॥

["| वक्तुम् + अर्हसि + अशेषेण | दिव्या |हि + आत्म + विभूतयः |
| याभिः + विभूतिभिः + लोकान् + इमान् + त्वं | व्याप्य | तिष्ठसि |"]

कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन् ।
केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया ॥१०-१७॥

["| कथं | विद्याम् + अहं | योगिन् + त्वां | सदा | परिचिन्तयन् |
| केषु | केषु | च | भावेषु | चिन्त्यो + असि | भगवन् + मया |"]

–: ওঁ :–

সর্বমেতদৃতং মন্যে যন্মাং বদসি কেশব ।

ন হি তে ভগবন্ ব্যক্তিং বিদুর্দেবা ন দানবাঃ ॥১০-১৪॥

["| সর্বম্ + এতৎ + ঋতং | মন্যে | যৎ + মাং | বদসি | কেশব |
| ন | হি | তে | ভগবন্ | ব্যক্তিং | বিদুঃ + দেবা | ন | দানবাঃ |"]

স্বয়মেবাত্মনাত্মানং বেত্থ ত্বং পুরুষোত্তম ।

ভূতভাবন ভূতেশ দেবদেব জগৎপতে ॥১০-১৫॥

["| স্বয়ম্ + এব + আত্মনা + আত্মানং | বেত্থ | ত্বং | পুরুষ + উত্তম |
| ভূত + ভাবন | ভূত + ঈশ | দেব + দেব | জগৎ + পতে |"]

বক্তুমর্হস্যশেষেণ দিব্যা হ্যাত্মবিভূতয়ঃ ।

যাভির্বিভূতিভির্লোকানিমাংস্ত্বং ব্যাপ্য তিষ্ঠসি ॥১০-১৬॥

["| বক্তুম্ + অর্হসি + অশেষেণ | দিব্যা | হি + আত্ম + বিভূতয়ঃ |
| যাভিঃ + বিভূতিভিঃ + লোকান্ + ইমান্ + ত্বং | ব্যাপ্য | তিষ্ঠসি |"]

কথং বিদ্যামহং যোগিংস্ত্বাং সদা পরিচিন্তয়ন্ ।

কেষু কেষু চ ভাবেষু চিন্ত্যোঽসি ভগবন্ময়া ॥১০-১৭॥

["| কথং | বিদ্যাম্ + অহং | যোগিন্ + ত্বাং | সদা | পরিচিন্তয়ন্ |
| কেষু | কেষু | চ | ভাবেষু | চিন্ত্যো + অসি | ভগবন্ + ময়া |"]

–: ॐ :–

विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन ।
भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् ॥१०-१८॥

["| विस्तरेण + आत्मनो | योगं | विभूतिं | च | जनार्दन |
| भूयः | कथय | तृप्तिः + हि | शृण्वतो | न + अस्ति | मे + अमृतम् |"]

श्रीभगवानुवाच :—
हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥१०-१९॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | हन्त | ते | कथयिष्यामि | दिव्या | हि + आत्म + विभूतयः |
| प्राधान्यतः | कुरु + श्रेष्ठ | न + अस्ति + अन्तो | विस्तरस्य | मे |"]

अहमात्मा गुड़ाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥१०-२०॥

["| अहम् + आत्मा | गुड़ाकेश | सर्व + भूत + आशय + स्थितः |
| अहम् + आदिः + च | मध्यं | च | भूतानाम् + अन्त | एव | च |"]

–: ॐ :–

বিস্তরেণাত্মনো যোগং বিভূতিং চ জনার্দন ।

ভূয়ঃ কথয় তৃপ্তির্হি শৃণ্বতো নাস্তি মেঽমৃতম্ ॥১০-১৮॥

["| বিস্তরেণ + আত্মনো | যোগং | বিভূতিং | চ | জনার্দন |

| ভূয়ঃ | কথয় | তৃপ্তিঃ + হি | শৃণ্বতো | ন + অস্তি | মে + অমৃতম্ |"]

শ্রীভগবানুবাচ :—

হন্ত তে কথয়িষ্যামি দিব্যা হ্যাত্মবিভূতয়ঃ ।

প্রাধান্যতঃ কুরুশ্রেষ্ঠ নাস্ত্যন্তো বিস্তরস্য মে ॥১০-১৯॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | হন্ত | তে | কথয়িষ্যামি | দিব্যা | হি + আত্ম + বিভূতয়ঃ |

| প্রাধান্যতঃ | কুরু + শ্রেষ্ঠ | ন + অস্তি + অন্তো | বিস্তরস্য | মে |"]

অহমাত্মা গুড়াকেশ সর্বভূতাশয়স্থিতঃ ।

অহমাদিশ্চ মধ্যং চ ভূতানামন্ত এব চ ॥১০-২০॥

["| অহম্ + আত্মা | গুড়াকেশ | সর্ব + ভূত + আশয় + স্থিতঃ |

| অহম্ + আদিঃ + চ | মধ্যং | চ | ভূতানাম্ + অন্ত | এব | চ |"]

–: ॐ :–

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥१०-२१॥

["| आदित्यानाम् + अहं | विष्णुः + ज्योतिषां | रविः + अंशुमान् |
| मरीचिः + मरुताम् + अस्मि | नक्षत्राणाम् + अहं | शशी |"]

वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः ।
इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना ॥१०-२२॥

["| वेदानां | साम + वेदो + अस्मि | देवानाम् + अस्मि | वासवः |
| इन्द्रियाणां | मनः + च + अस्मि | भूतानाम् + अस्मि | चेतना |"]

रुद्राणां शङ्करश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् ।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥१०-२३॥

["| रुद्राणां | शङ्करः + च + अस्मि | वित्त + ईशो | यक्ष + रक्षसाम् |
| वसूनां | पावकः + च + अस्मि | मेरुः | शिखरिणाम् + अहम् |"]

पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् ।
सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः ॥१०-२४॥

["| पुरोधसां | च | मुख्यं | मां | विद्धि | पार्थ | बृहस्पतिम् |
| सेनानीनाम् + अहं | स्कन्दः | सरसाम् + अस्मि | सागरः |"]

–: ॐ :–

আদিত্যানামহং বিষ্ণুর্জ্যোতিষাং রবিরংশুমান্ ।

মরীচির্মরুতামস্মি নক্ষত্রাণামহং শশী ॥১০-২১॥

["| আদিত্যানাম্ + অহং | বিষ্ণুঃ + জ্যোতিষাং | রবিঃ + অংশুমান্ |

| মরীচিঃ + মরুতাম্ + অস্মি | নক্ষত্রাণাম্ + অহং | শশী |"]

বেদানাং সামবেদোঽস্মি দেবনামস্মি বাসবঃ ।

ইন্দ্রিয়াণাং মনশ্চাস্মি ভূতানামস্মি চেতনা ॥১০-২২॥

["| বেদানাং | সাম + বেদো + অস্মি | দেবনাম্ + অস্মি | বাসবঃ |

| ইন্দ্রিয়াণাং | মনঃ + চ + অস্মি | ভূতানাম্ + অস্মি | চেতনা |"]

রুদ্রাণাং শঙ্করশ্চাস্মি বিত্তেশো যক্ষরক্ষসাম্ ।

বসূনাং পাবকশ্চাস্মি মেরুঃ শিখরিণামহম্ ॥১০-২৩॥

["| রুদ্রাণাং | শঙ্করঃ + চ + অস্মি | বিত্ত + ঈশো | যক্ষ + রক্ষসাম্ |

| বসূনাং | পাবকঃ + চ + অস্মি | মেরুঃ | শিখরিণাম্ + অহম্ |"]

পুরোধসাং চ মুখ্যং মাং বিদ্ধি পার্থ বৃহস্পতিম্ ।

সেনানীনামহং স্কন্দঃ সরসামস্মি সাগরঃ ॥১০-২৪॥

["| পুরোধসাং | চ | মুখ্যং | মাং | বিদ্ধি | পার্থ | বৃহস্পতিম্ |

| সেনানীনাম্ + অহং | স্কন্দঃ | সরসাম্ + অস্মি | সাগরঃ |"]

–: ॐ :–

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥१०-२५॥

["| महा + ऋषीणां | भृगुः + अहं | गिराम् + अस्मि + एकम् + अक्षरम् |
| यज्ञानां | जप + यज्ञो + अस्मि | स्थावराणां | हिमालयः |"]

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।
गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ॥१०-२६॥

["| अश्वत्थः | सर्व + वृक्षाणां | देव + ऋषीणां | च | नारदः |
| गन्धर्वाणां | चित्ररथः | सिद्धानां | कपिलो | मुनिः |"]

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् ।
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥१०-२७॥

["| उच्चैः + श्रवसम् + अश्वानां | विद्धि | माम् + अमृत + उद्भवम् |
| ऐरावतं | गज + इन्द्राणां | नराणां | च | नर + अधिपम् |"]

आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक् ।
प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः ॥१०-२८॥

["| आयुधानाम् + अहं | वज्रं | धेनूनाम् + अस्मि | काम + धुक् |
| प्रजनः + च + अस्मि | कन्दर्पः | सर्पाणाम् + अस्मि | वासुकिः |"]

–: ॐ :–

মহর্ষীণাং ভৃগুরহং গিরামস্ম্যেকমক্ষরম্ ।
যজ্ঞানাং জপযজ্ঞোঽস্মি স্থাবরাণাং হিমালয়ঃ ॥১০-২৫॥

["| মহা + ঋষীণাং | ভৃগুঃ + অহং | গিরাম্ + অস্মি + একম্ + অক্ষরম্ |
| যজ্ঞানাং | জপ + যজ্ঞো + অস্মি | স্থাবরাণাং | হিমালয়ঃ |"]

অশ্বত্থঃ সর্ববৃক্ষাণাং দেবর্ষীণাং চ নারদঃ ।
গন্ধর্বাণাং চিত্ররথঃ সিদ্ধানাং কপিলো মুনিঃ ॥১০-২৬॥

["| অশ্বত্থঃ | সর্ব + বৃক্ষাণাং | দেব + ঋষীণাং | চ | নারদঃ |
| গন্ধর্বাণাং | চিত্ররথঃ | সিদ্ধানাং | কপিলো | মুনিঃ |"]

উচ্চৈঃশ্রবসমশ্বানাং বিদ্ধি মামমৃতোদ্ভবম্ ।
ঐরাবতং গজেন্দ্রাণাং নরাণাং চ নরাধিপম্ ॥১০-২৭॥

["| উচ্চৈঃ + শ্রবসম্ + অশ্বানাং | বিদ্ধি | মাম্ + অমৃত + উদ্ভবম্ |
| ঐরাবতং | গজ + ইন্দ্রাণাং | নরাণাং | চ | নর + অধিপম্ |"]

আয়ুধানামহং বজ্রং ধেনূনামস্মি কামধুক্ ।
প্রজনশ্চাস্মি কন্দর্পঃ সর্পাণামস্মি বাসুকিঃ ॥১০-২৮॥

["| আয়ুধানাম্ + অহং | বজ্রং | ধেনূনাম্ + অস্মি | কাম + ধুক্ |
| প্রজনঃ + চ + অস্মি | কন্দর্পঃ | সর্পাণাম্ + অস্মি | বাসুকিঃ |"]

–: ॐ :–

अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम् ।
पितॄणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम् ॥१०-२९॥

["| अनन्तः + च + अस्मि | नागानां | वरुणो | यादसाम् + अहम् |
| पितॄणाम् + अर्यमा | च + अस्मि | यमः | संयमताम् + अहम् |"]

प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम् ।
मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ॥१०-३०॥

["| प्रह्लादः + च + अस्मि | दैत्यानां | कालः | कलयताम + अहम् |
| मृगाणां | च | मृग + इन्द्रो + अहं | वैनतेयः + च | पक्षिणाम् |"]

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् ।
झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी ॥१०-३१॥

["| पवनः | पवताम् + अस्मि | रामः | शस्त्र + भृताम् + अहम् |
| झषाणां | मकरः + च + अस्मि | स्रोतसाम् + अस्मि | जाह्नवी |"]

सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन ।
अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ॥१०-३२॥

["| सर्गाणाम् + आदिः + अन्तः + च | मध्यं | च + एव + अहम् + अर्जुन |
| अध्यात्म + विद्या | विद्यानां | वादः | प्रवदताम् + अहम् |"]

–: ॐ :–

অনন্তশ্চাস্মি নাগানাং বরুণো যাদসামহম্ ।

পিতৄণামর্যমা চাস্মি যমঃ সংযমতামহম্ ॥১০-২৯॥

["| অনন্তঃ + চ + অস্মি | নাগানাং | বরুণো | যাদসাম্ + অহম্ |
| পিতৄণাম্ + অর্যমা | চ + অস্মি | যমঃ | সংযমতাম্ + অহম্ |"]

প্রহ্লাদশ্চাস্মি দৈত্যানাং কালঃ কলয়তামহম্ ।

মৃগাণাং চ মৃগেন্দ্রোঽহং বৈনতেয়শ্চ পক্ষিণাম্ ॥১০-৩০॥

["| প্রহ্লাদঃ + চ + অস্মি | দৈত্যানাং | কালঃ | কলয়তাম্ + অহম্ |
| মৃগাণাং | চ | মৃগ + ইন্দ্রো + অহং | বৈনতেয়ঃ + চ | পক্ষিণাম্ |"]

পবনঃ পবতামস্মি রামঃ শস্ত্রভৃতামহম্ ।

ঝষাণাং মকরশ্চাস্মি স্রোতসামস্মি জাহ্নবী ॥১০-৩১॥

["| পবনঃ | পবতাম্ + অস্মি | রামঃ | শস্ত্র + ভৃতাম্ + অহম্ |
| ঝষাণাং | মকরঃ + চ + অস্মি | স্রোতসাম্ + অস্মি | জাহ্নবী |"]

সর্গাণামাদিরন্তশ্চ মধ্যং চৈবাহমর্জুন ।

অধ্যাত্মবিদ্যা বিদ্যানাং বাদঃ প্রবদতামহম্ ॥১০-৩২॥

["| সর্গাণাম্ + আদিঃ + অন্তঃ + চ | মধ্যং | চ + এব + অহম্ + অর্জুন |
| অধ্যাত্ম + বিদ্যা | বিদ্যানাং | বাদঃ | প্রবদতাম্ + অহম্ |"]

–: ॐ :–

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च ।
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः ॥१०-३३॥

["| अक्षराणाम् + अ + कारो + अस्मि | द्वन्द्वः | सामासिकस्य | च |
| अहम् + एव + अक्षयः | कालो | धाता + अहं | विश्वतो + मुखः |"]

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् ।
कीर्तिः श्रीर्वाक् च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा ॥१०-३४॥

["| मृत्युः | सर्व + हरः + च + अहम् + उद्भवः + च | भविष्यताम् |
| कीर्तिः | श्रीः + वाक् | च | नारीणां | स्मृतिः + मेधा | धृतिः | क्षमा |"]

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ॥१०-३५॥

["| बृहत् + साम | तथा | साम्नां | गायत्री | छन्दसाम् + अहम् |
| मासानां | मार्गशीर्षो + अहम् + ऋतूनां | कुसुम + आकरः |"]

द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् ॥१०-३६॥

["| द्यूतं | छलयताम् + अस्मि | तेजः + तेजस्विनाम् + अहम् |
| जयो + अस्मि | व्यवसायो + अस्मि | सत्त्वं | सत्त्व + वताम् + अहम् |"]

–: ॐ :–

অক্ষরাণামকারোঽস্মি দ্বন্দ্বঃ সামাসিকস্য চ ।

অহমেবাক্ষয়ঃ কালো ধাতাহং বিশ্বতোমুখঃ ॥১০-৩৩॥

["| অক্ষরাণাম্ + অ + কারো + অস্মি | দ্বন্দ্বঃ | সামাসিকস্য | চ |
| অহম্ + এব + অক্ষয়ঃ | কালো | ধাতা + অহং | বিশ্বতো + মুখঃ |"]

মৃত্যুঃ সর্বহরশ্চাহমুদ্ভবশ্চ ভবিষ্যতাম্ ।

কীর্তিঃ শ্রীর্বাক্ চ নারীণাং স্মৃতির্মেধা ধৃতিঃ ক্ষমা ॥১০-৩৪॥

["| মৃত্যুঃ | সর্ব + হরঃ + চ + অহম্ + উদ্ভবঃ + চ | ভবিষ্যতাম্ |
| কীর্তিঃ | শ্রীঃ + বাক্ | চ | নারীণাং | স্মৃতিঃ + মেধা | ধৃতিঃ | ক্ষমা |"]

বৃহৎসাম তথা সাম্নাং গায়ত্রী ছন্দসামহম্ ।

মাসানাং মার্গশীর্ষোঽহমৃতূনাং কুসুমাকরঃ ॥১০-৩৫॥

["| বৃহৎ + সাম | তথা | সাম্নাং | গায়ত্রী | ছন্দসাম্ + অহম্ |
| মাসানাং | মার্গশীর্ষো + অহম্ + ঋতূনাং | কুসুম + আকরঃ |"]

দ্যূতং ছলয়তামস্মি তেজস্তেজস্বিনামহম্ ।

জয়োঽস্মি ব্যবসায়োঽস্মি সত্ত্বং সত্ত্ববতামহম্ ॥১০-৩৬॥

["| দ্যূতং | ছলয়তাম্ + অস্মি | তেজঃ + তেজস্বিনাম্ + অহম্ |
| জয়ো + অস্মি | ব্যবসায়ো + অস্মি | সত্ত্বং | সত্ত্ব + বতাম্ + অহম্ |"]

–: ॐ :–

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः ।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशनाः कविः ॥१०-३७॥

["| वृष्णीनां | वासुदेवो + अस्मि | पाण्डवानां | धनञ्जयः |
| मुनीनाम् + अपि + अहं | व्यासः | कवीनाम् + उशनाः | कविः |"]

दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम् ।
मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥१०-३८॥

["| दण्डो | दमयताम् + अस्मि | नीतिः + अस्मि | जिगीषताम् |
| मौनं | च + एव + अस्मि | गुह्यानां | ज्ञानं | ज्ञान + वताम् + अहम् |"]

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन ।
न तदस्ति विना यत् स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥१०-३९॥

["| यत् + च + अपि | सर्व + भूतानां | बीजं | तत् + अहम् + अर्जुन |
| न | तत् + अस्ति | विना | यत् | स्यात् + मया | भूतं | चर + अचरम् |"]

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परन्तप ।
एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥१०-४०॥

["| न + अन्तो + अस्ति | मम | दिव्यानां | विभूतीनां | परन्तप |
| एष | तु + उद्देशतः | प्रोक्तो | विभूतेः + विस्तरो | मया |"]

–: ॐ :–

বৃষ্ণীনাং বাসুদেবোঽস্মি পাণ্ডবানাং ধনঞ্জয়ঃ ।

মুনীনামপ্যহং ব্যাসঃ কবীনামুশনাঃ কবিঃ ॥১০-৩৭॥

["| বৃষ্ণীনাং | বাসুদেবো + অস্মি | পাণ্ডবানাং | ধনঞ্জয়ঃ |
| মুনীনাম্ + অপি + অহং | ব্যাসঃ | কবীনাম্ + উশনাঃ | কবিঃ |"]

দণ্ডো দময়তামস্মি নীতিরস্মি জিগীষতাম্ ।

মৌনং চৈবাস্মি গুহ্যানাং জ্ঞানং জ্ঞানবতামহম্ ॥১০-৩৮॥

["| দণ্ডো | দময়তাম্ + অস্মি | নীতিঃ + অস্মি | জিগীষতাম্ |
| মৌনং | চ + এব + অস্মি | গুহ্যানাং | জ্ঞানং | জ্ঞান + বতাম্ + অহম্ |"]

যচ্চাপি সর্বভূতানাং বীজং তদহমর্জুন ।

ন তদস্তি বিনা যৎ স্যান্ময়া ভূতং চরাচরম্ ॥১০-৩৯॥

["| যৎ + চ + অপি | সর্ব + ভূতানাং | বীজং | তৎ + অহম্ + অর্জুন |
| ন | তৎ + অস্তি | বিনা | যৎ | স্যাৎ + ময়া | ভূতং | চর + অচরম্ |"]

নান্তোঽস্তি মম দিব্যানাং বিভূতীনাং পরন্তপ ।

এষ তূদ্দেশতঃ প্রোক্তো বিভুতের্বিস্তরো ময়া ॥১০-৪০॥

["| ন + অন্তো + অস্তি | মম | দিব্যানাং | বিভূতীনাং | পরন্তপ |
| এষ | তু + উদ্দেশতঃ | প্রোক্তো | বিভুতেঃ + বিস্তরো | ময়া |"]

–: ॐ :–

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंशसंभवम् ॥१०-४१॥

["| यत् + यत् + विभूतिमत् + सत्त्वं | श्री + मत् + ऊर्जितम् + एव | वा |
| तत् + तत् + एव + अवगच्छ | त्वं | मम | तेजो + अंश + संभवम् |"]

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन ।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥१०-४२॥

["| अथवा | बहुना + एतेन | किं | ज्ञातेन | तव + अर्जुन |
| विष्टभ्य + अहम् + इदं | कृत्स्नम् + एक + अंशेन | स्थितो | जगत् |"]

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि
श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे
विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः॥१०॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | विभूति + योगो | नाम | दशमो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

যদ্যদ্বিভূতিমৎসত্ত্বং শ্রীমদূর্জিতমেব বা ।

তত্তদেবাবগচ্ছ ত্বং মম তেজোংশসম্ভবম্ ॥১০-৪১॥

["| যৎ + যৎ + বিভূতিমৎ + সত্ত্বং | শ্রী + মৎ + ঊর্জিতম্ + এব | বা |
| তৎ + তৎ + এব + অবগচ্ছ | ত্বং | মম | তেজো + অংশ + সম্ভবম্ |"]

অথবা বহুনৈতেন কিং জ্ঞাতেন তবার্জুন ।

বিষ্টভ্যাহমিদং কৃৎস্নমেকাংশেন স্থিতো জগৎ ॥১০-৪২॥

["| অথবা | বহুনা + এতেন | কিং | জ্ঞাতেন | তব + অর্জুন |
| বিষ্টভ্য + অহম্ + ইদং | কৃৎস্নম্ + এক + অংশেন | স্থিতো | জগৎ |"]

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে
বিভূতিযোগো নাম দশমোঽধ্যায়ঃ ॥১০॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | বিভূতি + যোগো | নাম | দশমো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

एकादशोऽध्यायः
विश्वरूपदर्शनयोग

अर्जुन उवाच :—
मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् ।
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥११-०१॥

["| अर्जुन | उवाच | मत् + अनुग्रहाय | परमं | गुह्यम् + अध्यात्म + संज्ञितम् |
| यत् + त्वया + उक्तं | वचः + तेन | मोहो + अयं | विगतो | मम |"]

भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया ।
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम् ॥११-०२॥

["| भव + अप्ययौ | हि | भूतानां | श्रुतौ | विस्तरशो | मया |
| त्वत्तः | कमल + पत्र + अक्ष | माहात्म्यम् + अपि | च + अव्ययम् |"]

–: ॐ :–

একাদশোঽধ্যায়ঃ
বিশ্বরূপদর্শনযোগ

অর্জুন উবাচ :—

মদনুগ্রহায় পরমং গুহ্যমধ্যাত্মসংজ্ঞিতম্ ।

যত্ত্বয়োক্তং বচস্তেন মোহোঽয়ং বিগতো মম ॥১১-০১॥

["| অর্জুন | উবাচ | মৎ + অনুগ্রহায় | পরমং | গুহ্যম্ + অধ্যাত্ম + সংজ্ঞিতম্ |
| যৎ + ত্বয়া + উক্তং | বচঃ + তেন | মোহো + অয়ং | বিগতো | মম |"]

ভবাপ্যয়ৌ হি ভূতানাং শ্রুতৌ বিস্তরশো ময়া ।

ত্বত্তঃ কমলপত্রাক্ষ মহাত্ম্যমপি চাব্যয়ম্ ॥১১-০২॥

["| ভব + অপ্যয়ৌ | হি | ভূতানাং | শ্রুতৌ | বিস্তরশো | ময়া |
| ত্বত্তঃ | কমল + পত্র + অক্ষ | মহাত্ম্যম্ + অপি | চ + অব্যয়ম্ |"]

–: ॐ :–

एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर ।
द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥११-०३॥

["| एवम् + एतत् + यथा + आत्थ | त्वम् + आत्मानं | परम + ईश्वर |
| द्रष्टुम् + इच्छामि | ते | रूपम् + ऐश्वरं | पुरुष + उत्तम |"]

मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो ।
योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् ॥११-०४॥

["| मन्यसे | यदि | तत् + शक्यं | मया | द्रष्टुम् + इति | प्रभो |
| योग + ईश्वर | ततो | मे | त्वं | दर्शय + आत्मानम् + अव्ययम् |"]

श्रीभगवानुवाच :—
पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः ।
नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ॥११-०५॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | पश्य | मे | पार्थ | रूपाणि | शतशो + अथ | सहस्रशः |
| नाना + विधानि | दिव्यानि | नाना + वर्ण + आकृतीनि | च |"]

–: ॐ :–

এবমেতদ্যথাত্থ ত্বমাত্মানং পরমেশ্বর ।

দ্রষ্টুমিচ্ছামি তে রূপমৈশ্বরং পুরুষোত্তম ॥১১-০৩॥

["| এবম্ + এতৎ + যথা + আত্থ | ত্বম্ + আত্মানং | পরম + ঈশ্বর |
| দ্রষ্টুম্ + ইচ্ছামি | তে | রূপম্ + ঐশ্বরং | পুরুষ + উত্তম |"]

মন্যসে যদি তচ্ছক্যং ময়া দ্রষ্টুমিতি প্রভো ।

যোগেশ্বর ততো মে ত্বং দর্শয়াত্মানমব্যয়ম্ ॥১১-০৪॥

["| মন্যসে | যদি | তৎ + শক্যং | ময়া | দ্রষ্টুম্ + ইতি | প্রভো |
| যোগ + ঈশ্বর | ততো | মে | ত্বং | দর্শয় + আত্মানম্ + অব্যয়ম্ |"]

শ্রীভগবানুবাচ :—

পশ্য মে পার্থ রূপাণি শতশোঽথ সহস্রশঃ ।

নানাবিধানি দিব্যানি নানাবর্ণাকৃতীনি চ ॥১১-০৫॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | পশ্য | মে | পার্থ | রূপাণি | শতশো + অথ | সহস্রশঃ |
| নানা + বিধানি | দিব্যানি | নানা + বর্ণ + আকৃতীনি | চ |"]

–: ॐ :–

पश्यादित्यान् वसून् रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा ।
बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत ॥११-०६॥

["| पश्य + आदित्यान् | वसून् | रुद्रान् + अश्विनौ | मरुतः + तथा |
| बहूनि + अदृष्ट + पूर्वाणि | पश्य + आश्चर्याणि | भारत |"]

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम् ।
मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ॥११-०७॥

["| इह + एक + स्थं | जगत् + कृत्स्नं | पश्य + अद्य | स + चर + अचरम् |
| मम | देहे | गुडाकेश | यत् + च + अन्यत् + द्रष्टुम् + इच्छसि |"]

न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा ।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ॥११-०८॥

["| न | तु | मां | शक्यसे | द्रष्टुम् + अनेन + एव | स्व + चक्षुषा |
| दिव्यं | ददामि | ते | चक्षुः | पश्य | मे | योगम् + ऐश्वरम् |"]

–: ॐ :–

পশ্যাদিত্যান্ বসূন্ রুদ্রানশ্বিনৌ মরুতস্তথা ।

বহূন্যদৃষ্টপূর্বাণি পশ্যাশ্চর্যাণি ভারত ॥১১-০৬॥

["| পশ্য + আদিত্যান্ | বসূন্ | রুদ্রান্ + অশ্বিনৌ | মরুতঃ + তথা |

| বহূনি + অদৃষ্ট + পূর্বাণি | পশ্য + আশ্চর্যাণি | ভারত |"]

ইহৈকস্থং জগৎকৃৎস্নং পশ্যাদ্য সচরাচরম্ ।

মম দেহে গুড়াকেশ যচ্চান্যদ্দ্রষ্টুমিচ্ছসি ॥১১-০৭॥

["| ইহ + এক + স্থং | জগৎ + কৃৎস্নং | পশ্য + অদ্য | স + চর + অচরম্ |

| মম | দেহে | গুড়াকেশ | যৎ + চ + অন্যৎ + দ্রষ্টুম্ + ইচ্ছসি |"]

ন তু মাং শক্যসে দ্রষ্টুমনেনৈব স্বচক্ষুষা ।

দিব্যং দদামি তে চক্ষুঃ পশ্য মে যোগমৈশ্বরম্ ॥১১-০৮॥

["| ন | তু | মাং | শক্যসে | দ্রষ্টুম্ + অনেন + এব | স্ব + চক্ষুষা |

| দিব্যং | দদামি | তে | চক্ষুঃ | পশ্য | মে | যোগম্ + ঐশ্বরম্ |"]

–: ॐ :–

सञ्जय उवाच :—

एवमुक्त्वा ततो राजन् महायोगेश्वरो हरिः ।
दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् ॥११-०९॥

["| सञ्जय | उवाच | एवम् + उक्त्वा | ततो | राजन् | महा + योग + ईश्वरो | हरिः |
| दर्शयाम् + आस | पार्थाय | परमं | रूपम् + ऐश्वरम् |"]

अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥११-१०॥

["| अनेक + वक्त्र + नयनम् + अनेक + अद्भुत + दर्शनम् |
| अनेक + दिव्य + आभरणं | दिव्य + अनेक + उद्यत + आयुधम् |"]

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ।
सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् ॥११-११॥

["| दिव्य + माल्य + अम्बर + धरं | दिव्य + गन्ध + अनुलेपनम् |
| सर्व + आश्चर्य + मयं | देवम् + अनन्तं | विश्वतो + मुखम् |"]

–: ॐ :–

সঞ্জয় উবাচ :—

এবমুক্ত্বা ততো রাজন্ মহাযোগেশ্বরো হরিঃ ।

দর্শয়ামাস পার্থায় পরমং রূপমৈশ্বরম্ ॥১১-০৯॥

["| সঞ্জয় | উবাচ | এবম্ + উক্ত্বা | ততো | রাজন্ | মহা + যোগ + ঈশ্বরো | হরিঃ |
| দর্শয়াম্ + আস | পার্থায় | পরমং | রূপম্ + ঐশ্বরম্ |"]

অনেকবক্ত্রনয়নমনেকাদ্ভুতদর্শনম্ ।

অনেকদিব্যাভরণং দিব্যানেকোদ্যতায়ুধম্ ॥১১-১০॥

["| অনেক + বক্ত্র + নয়নম্ + অনেক + অদ্ভুত + দর্শনম্ |
| অনেক + দিব্য + আভরণং | দিব্য + অনেক + উদ্যত + আয়ুধম্ |"]

দিব্যমাল্যাম্বরধরং দিব্যগন্ধানুলেপনম্ ।

সর্বাশ্চর্যময়ং দেবমনন্তং বিশ্বতোমুখম্ ॥১১-১১॥

["| দিব্য + মাল্য + অম্বর + ধরং | দিব্য + গন্ধ + অনুলেপনম্ |
| সর্ব + আশ্চর্য + ময়ং | দেবম্ + অনন্তং | বিশ্বতো + মুখম্ |"]

–: ॐ :–

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता ।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः ॥११-१२॥

["| दिवि | सूर्य + सहस्रस्य | भवेत् + युगपत् + उत्थिता |
| यदि | भाः | सदृशी | सा | स्यात् + भासः + तस्य | महा + आत्मनः |"]

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा ।
अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा ॥११-१३॥

["| तत्र + एक + स्थं | जगत् + कृत्स्नं | प्रविभक्तम् + अनेकधा |
| अपश्यत् + देव + देवस्य | शरीरे | पाण्डवः + तदा |"]

ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनञ्जयः ।
प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत ॥११-१४॥

["| ततः | स | विस्मय + आविष्टो | हृष्ट + रोमा | धनञ्जयः |
| प्रणम्य | शिरसा | देवं | कृत + अञ्जलिः + अभाषत |"]

–: ॐ :–

দিবি সূর্যসহস্রস্য ভবেদ্যুগপদুত্থিতা ।

যদি ভাঃ সদৃশী সা স্যাদ্ভাসস্তস্য মহাত্মনঃ ॥১১-১২॥

["| দিবি | সূর্য + সহস্রস্য | ভবেৎ + যুগপৎ + উত্থিতা |
| যদি | ভাঃ | সদৃশী | সা | স্যাৎ + ভাসঃ + তস্য | মহা + আত্মনঃ |"]

তত্রৈকস্থং জগৎকৃৎস্নং প্রবিভক্তমনেকধা ।

অপশ্যদ্দেবদেবস্য শরীরে পাণ্ডবস্তদা ॥১১-১৩॥

["| তত্র + এক + স্থং | জগৎ + কৃৎস্নং | প্রবিভক্তম্ + অনেকধা |
| অপশ্যৎ + দেব + দেবস্য | শরীরে | পাণ্ডবঃ + তদা |"]

ততঃ স বিস্ময়াবিষ্টো হৃষ্টরোমা ধনঞ্জয়ঃ ।

প্রণম্য শিরসা দেবং কৃতাঞ্জলিরভাষত ॥১১-১৪॥

["| ততঃ | স | বিস্ময় + আবিষ্টো | হৃষ্ট + রোমা | ধনঞ্জয়ঃ |
| প্রণম্য | শিরসা | দেবং | কৃত + অঞ্জলিঃ + অভাষত |"]

–: ॐ :–

अर्जुन उवाच :—
पश्यामि देवांस्तव देव देहे ; सर्वांस्तथा भूतविशेषसंघान् ।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थम् ; ऋषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥११-१५॥

["| अर्जुन | उवाच | पश्यामि | देवान् + तव | देव | देहे | सर्वान् + तथा | भूत + विशेष + संघान् |
| ब्रह्माणम् + ईशं | कमल + आसन + स्थम् | ऋषीन् + च | सर्वान् + उरगान् + च | दिव्यान् |"]

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं ; पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम् ।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं ; पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप ॥११-१६॥

["| अनेक + बाहु + उदर + वक्त्र + नेत्रं | पश्यामि | त्वां | सर्वतो + अनन्त + रूपम् |
| न + अन्तं | न | मध्यं | न | पुनः + तव + आदिं | पश्यामि | विश्व + ईश्वर | विश्व + रूप |"]

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च ; तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम् ।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद्- दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥११-१७॥

["| किरीटिनं | गदिनं | चक्रिणं | च | तेजो + राशिं | सर्वतो | दीप्ति + मन्तम् |
| पश्यामि | त्वां | दुर्निरीक्ष्यं | समन्तात् + दीप्त + अनल + अर्क + द्युतिम् + अप्रमेयम् |"]

–: ওঁ :–

অর্জুন উবাচ :—

পশ্যামি দেবাংস্তব দেব দেহে ; সর্বাংস্তথা ভূতবিশেষসঙ্ঘান্ ।
ব্রহ্মাণমীশং কমলাসনস্থম্ ; ঋষীংশ্চ সর্বানুরগাংশ্চ দিব্যান্ ॥১১-১৫॥

["| অর্জুন | উবাচ | পশ্যামি | দেবান্ + তব | দেব | দেহে | সর্বান্ + তথা | ভূত + বিশেষ + সঙ্ঘান্ |
| ব্রহ্মাণম্ + ঈশং | কমল + আসন + স্থম্ | ঋষীন্ + চ | সর্বান্ + উরগান্ + চ | দিব্যান্ |"]

অনেকবাহূদরবক্ত্রনেত্রং ; পশ্যামি ত্বাং সর্বতোঽনন্তরূপম্ ।
নান্তং ন মধ্যং ন পুনস্তবাদিং ; পশ্যামি বিশ্বেশ্বর বিশ্বরূপ ॥১১-১৬॥

["| অনেক + বাহু + উদর + বক্ত্র + নেত্রং | পশ্যামি | ত্বাং | সর্বতো + অনন্ত + রূপম্ |
| ন + অন্তং | ন | মধ্যং | ন | পুনঃ + তব + আদিং | পশ্যামি | বিশ্ব + ঈশ্বর | বিশ্ব + রূপ |"]

কিরীটিনং গদিনং চক্রিণং চ ; তেজোরাশিং সর্বতো দীপ্তিমন্তম্ ।
পশ্যামি ত্বাং দুর্নিরীক্ষ্যং সমন্তাদ্- ; দীপ্তানলার্কদ্যুতিমপ্রমেয়ম্ ॥১১-১৭॥

["| কিরীটিনং | গদিনং | চক্রিণং | চ | তেজো + রাশিং | সর্বতো | দীপ্তি + মন্তম্ |
| পশ্যামি | ত্বাং | দুর্নিরীক্ষ্যং | সমন্তাৎ + দীপ্ত + অনল + অর্ক + দ্যুতিম্ + অপ্রমেয়ম্ |"]

–: ॐ :–

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं ; त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता ; सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ॥११-१८॥

["| त्वम् + अक्षरं | परमं | वेदितव्यं | त्वम् + अस्य | विश्वस्य | परं | निधानम् |
| त्वम् + अव्ययः | शाश्वत + धर्म + गोप्ता | सनातनः + त्वं | पुरुषो | मतो | मे |"]

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यम् ; अनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम् ।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं ; स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम् ॥११-१९॥

["| अनादि + मध्य + अन्तम् + अनन्त + वीर्यम् | अनन्त + बाहुं | शशि + सूर्य + नेत्रम् |
| पश्यामि | त्वां | दीप्त + हुताश + वक्त्रं | स्व + तेजसा | विश्वम् + इदं | तपन्तम् |"]

द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि ; व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः ।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं ; लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् ॥११-२०॥

["| द्यावा + पृथिव्योः + इदम् + अन्तरं | हि | व्याप्तं | त्वया + एकेन | दिशः + च | सर्वाः |
| दृष्ट्वा + अद्भुतं | रूपम् + उग्रं | तव + इदं | लोक + त्रयं | प्रव्यथितं | महा + आत्मन् |"]

अमी हि त्वां सुरसङ्घा विशन्ति ; केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति ।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः ; स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥११-२१॥

["| अमी | हि | त्वां | सुर + सङ्घा | विशन्ति | केचित् + भीताः | प्राञ्जलयो | गृणन्ति |
| स्वस्ति + इति + उक्त्वा | महा + ऋषि + सिद्ध + सङ्घाः | स्तुवन्ति | त्वां | स्तुतिभिः | पुष्कलाभिः |"]

–: ॐ :–

ত্বমক্ষরং পরমং বেদিতব্যং ; ত্বমস্য বিশ্বস্য পরং নিধানম্ ।

ত্বমব্যয়ঃ শাশ্বতধর্মগোপ্তা ; সনাতনস্ত্বং পুরুষো মতো মে ॥১১-১৮॥

["| ত্বম্ + অক্ষরং | পরমং | বেদিতব্যং | ত্বম্ + অস্য | বিশ্বস্য | পরং | নিধানম্ |
| ত্বম্ + অব্যয়ঃ | শাশ্বত + ধর্ম + গোপ্তা | সনাতনঃ + ত্বং | পুরুষো | মতো | মে |"]

অনাদিমধ্যান্তমনন্তবীর্যম্ ; অনন্তবাহুং শশিসূর্যনেত্রম্ ।

পশ্যামি ত্বাং দীপ্তহুতাশবক্ত্রং ; স্বতেজসা বিশ্বমিদং তপন্তম্ ॥১১-১৯॥

["| অনাদি + মধ্য + অন্তম্ + অনন্ত + বীর্যম্ | অনন্ত + বাহুং | শশি + সূর্য + নেত্রম্ |
| পশ্যামি | ত্বাং | দীপ্ত + হুতাশ + বক্ত্রং | স্ব + তেজসা | বিশ্বম্ + ইদং | তপন্তম্ |"]

দ্যাবাপৃথিব্যোরিদমন্তরং হি ; ব্যাপ্তং ত্বয়ৈকেন দিশশ্চ সর্বাঃ ।

দৃষ্ট্বাদ্ভুতং রূপমুগ্রং তবেদং ; লোকত্রয়ং প্রব্যথিতং মহাত্মন্ ॥১১-২০॥

["| দ্যাবা + পৃথিব্যোঃ + ইদম্ + অন্তরং | হি | ব্যাপ্তং | ত্বয়া + একেন | দিশঃ + চ | সর্বাঃ |
| দৃষ্ট্বা + অদ্ভুতং | রূপম্ + উগ্রং | তব + ইদং | লোক + ত্রয়ং | প্রব্যথিতং | মহা + আত্মন্ |"]

অমী হি ত্বাং সুরসঙ্ঘা বিশন্তি ; কেচিদ্ভীতাঃ প্রাঞ্জলয়ো গৃণন্তি ।

স্বস্তীত্যুক্ত্বা মহর্ষিসিদ্ধসঙ্ঘাঃ ; স্তুবন্তি ত্বাং স্তুতিভিঃ পুষ্কলাভিঃ ॥১১-২১॥

["| অমী | হি | ত্বাং | সুর + সঙ্ঘা | বিশন্তি | কেচিৎ + ভীতাঃ | প্রাঞ্জলয়ো | গৃণন্তি |
| স্বস্তি + ইতি + উক্ত্বা | মহা + ঋষি + সিদ্ধ + সঙ্ঘাঃ | স্তুবন্তি | ত্বাং | স্তুতিভিঃ | পুষ্কলাভিঃ |"]

–: ॐ :–

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या ; विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च ।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घा ; वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे ॥११-२२॥

["| रुद्र + आदित्या | वसवो | ये | च | साध्या | विश्वे + अश्विनौ | मरुतः + च + उष्म + पाः + च |
| गन्धर्व + यक्ष + असुर + सिद्ध + सङ्घा | वीक्षन्ते | त्वां | विस्मिताः + च + एव | सर्वे |"]

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं ; महाबाहो बहुबाहूरुपादम् ।
बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं ; दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम् ॥११-२३॥

["| रूपं | महत् + ते | बहु + वक्त्र + नेत्रं | महा + बाहो | बहु + बाहु + उरु + पादम् |
| बहु + उदरं | बहु + दंष्ट्रा + करालं | दृष्ट्वा | लोकाः | प्रव्यथिताः + तथा + अहम् |"]

नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं ; व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम् ।
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा ; धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो ॥११-२४॥

["| नभः + स्पृशं | दीप्तम् + अनेक + वर्णं | व्यात्त + आननं | दीप्त + विशाल + नेत्रम् |
| दृष्ट्वा | हि | त्वां | प्रव्यथित + अन्तः + आत्मा | धृतिं | न | विन्दामि | शमं | च | विष्णो |"]

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि ; दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि ।
दिशो न जाने न लभे च शर्म ; प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥११-२५॥

["| दंष्ट्रा + करालानि | च | ते | मुखानि | दृष्ट्वा + एव | काल + अनल + सन्निभानि |
| दिशो | न | जाने | न | लभे | च | शर्म | प्रसीद | देव + ईश | जगत् + निवास |"]

–: ॐ :–

রুদ্রাদিত্যা বসবো যে চ সাধ্যা ; বিশ্বেঽশ্বিনৌ মরুতশ্চোষ্মপাশ্চ ।
গন্ধর্বযক্ষাসুরসিদ্ধসঙ্ঘা ; বীক্ষন্তে ত্বাং বিস্মিতাশ্চৈব সর্বে ॥১১-২২॥

["| রুদ্র + আদিত্যা | বসবো | যে | চ | সাধ্যা | বিশ্বে + অশ্বিনৌ | মরুতঃ + চ + উষ্ম + পাঃ + চ |
| গন্ধর্ব + যক্ষ + অসুর + সিদ্ধ + সঙ্ঘা | বীক্ষন্তে | ত্বাং | বিস্মিতাঃ + চ + এব | সর্বে |"]

রূপং মহত্তে বহুবক্ত্রনেত্রং ; মহাবাহো বহুবাহূরুপাদম্ ।
বহূদরং বহুদংষ্ট্রাকরালং ; দৃষ্ট্বা লোকাঃ প্রব্যথিতাস্তথাহম্ ॥১১-২৩॥

["| রূপং | মহৎ + তে | বহু + বক্ত্র + নেত্রং | মহা + বাহো | বহু + বাহু + উরু + পাদম্ |
| বহু + উদরং | বহু + দংষ্ট্রা + করালং | দৃষ্ট্বা | লোকাঃ | প্রব্যথিতাঃ + তথা + অহম্ |"]

নভঃস্পৃশং দীপ্তমনেকবর্ণং ; ব্যাত্তাননং দীপ্তবিশালনেত্রম্ ।
দৃষ্ট্বা হি ত্বাং প্রব্যথিতান্তরাত্মা ; ধৃতিং ন বিন্দামি শমং চ বিষ্ণো ॥১১-২৪॥

["| নভঃ + স্পৃশং | দীপ্তম্ + অনেক + বর্ণং | ব্যাত্ত + আননং | দীপ্ত + বিশাল + নেত্রম্ |
| দৃষ্ট্বা | হি | ত্বাং | প্রব্যথিত + অন্তঃ + আত্মা | ধৃতিং | ন | বিন্দামি | শমং | চ | বিষ্ণো |"]

দংষ্ট্রাকরালানি চ তে মুখানি ; দৃষ্ট্বৈব কালানলসন্নিভানি ।
দিশো ন জানে ন লভে চ শর্ম ; প্রসীদ দেবেশ জগন্নিবাস ॥১১-২৫॥

["| দংষ্ট্রা + করালানি | চ | তে | মুখানি | দৃষ্ট্বা + এব | কাল + অনল + সন্নিভানি |
| দিশো | ন | জানে | ন | লভে | চ | শর্ম | প্রসীদ | দেব + ঈশ | জগৎ + নিবাস |"]

–: ॐ :–

अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः ; सर्वे सहैवावनिपालसंघैः ।
भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ ; सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः ॥११-२६॥

["| अमी | च | त्वां | धृतराष्ट्रस्य | पुत्राः | सर्वे | सह + एव + अवनि + पाल + संघैः |
| भीष्मो | द्रोणः | सूत + पुत्रः + तथा + असौ | सह + अस्मदीयैः + अपि | योध + मुख्यैः |"]

वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति ; दंष्ट्राकरालानि भयानकानि ।
केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु ; संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥११-२७॥

["| वक्त्राणि | ते | त्वरमाणा | विशन्ति | दंष्ट्रा + करालानि | भयानकानि |
| केचित् + विलग्ना | दशन + अन्तरेषु | संदृश्यन्ते | चूर्णितैः + उत्तम + अङ्गैः |"]

यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः ; समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति ।
तथा तवामी नरलोकवीरा ; विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति ॥११-२८॥

["| यथा | नदीनां | बहवो + अम्बु + वेगाः | समुद्रम् + एव + अभिमुखा | द्रवन्ति |
| तथा | तव + अमी | नर + लोक + वीरा | विशन्ति | वक्त्राणि + अभिविज्वलन्ति |"]

यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा ; विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः ।
तथैव नाशाय विशन्ति लोकाः ; तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः ॥११-२९॥

["| यथा | प्रदीप्तं | ज्वलनं | पतङ्गा | विशन्ति | नाशाय | समृद्ध + वेगाः |
| तथा + एव | नाशाय | विशन्ति | लोकाः | तव + अपि | वक्त्राणि | समृद्ध + वेगाः |"]

–: ॐ :–

অমী চ ত্বাং ধৃতরাষ্ট্রস্য পুত্রাঃ ; সর্বে সহৈবাবনিপালসঙ্ঘৈঃ ।
ভীষ্মো দ্রোণঃ সূতপুত্রস্তথাসৌ ; সহাস্মদীয়ৈরপি যোধমুখ্যৈঃ ॥১১-২৬॥

["| অমী | চ | ত্বাং | ধৃতরাষ্ট্রস্য | পুত্রাঃ | সর্বে | সহ + এব + অবনি + পাল + সঙ্ঘৈঃ |
| ভীষ্মো | দ্রোণঃ | সূত + পুত্রঃ + তথা + অসৌ | সহ + অস্মদীয়ৈঃ + অপি | যোধ + মুখ্যৈঃ |"]

বক্ত্রাণি তে ত্বরমাণা বিশন্তি ; দংষ্ট্রাকরালানি ভয়ানকানি ।
কেচিদ্বিলগ্না দশনান্তরেষু ; সংদৃশ্যন্তে চূর্ণিতৈরুত্তমাঙ্গৈঃ ॥১১-২৭॥

["| বক্ত্রাণি | তে | ত্বরমাণা | বিশন্তি | দংষ্ট্রা + করালানি | ভয়ানকানি |
| কেচিৎ + বিলগ্না | দশন + অন্তরেষু | সংদৃশ্যন্তে | চূর্ণিতৈঃ + উত্তম + অঙ্গৈঃ |"]

যথা নদীনাং বহবোঽম্বুবেগাঃ ; সমুদ্রমেবাভিমুখা দ্রবন্তি ।
তথা তবামী নরলোকবীরা ; বিশন্তি বক্ত্রাণ্যভিবিজ্বলন্তি ॥১১-২৮॥

["| যথা | নদীনাং | বহবো + অম্বু + বেগাঃ | সমুদ্রম্ + এব + অভিমুখা | দ্রবন্তি |
| তথা | তব + অমী | নর + লোক + বীরা | বিশন্তি | বক্ত্রাণি + অভিবিজ্বলন্তি |"]

যথা প্রদীপ্তং জ্বলনং পতঙ্গা ; বিশন্তি নাশায় সমৃদ্ধবেগাঃ ।
তথৈব নাশায় বিশন্তি লোকাঃ ; তবাপি বক্ত্রাণি সমৃদ্ধবেগাঃ ॥১১-২৯॥

["| যথা | প্রদীপ্তং | জ্বলনং | পতঙ্গা | বিশন্তি | নাশায় | সমৃদ্ধ + বেগাঃ |
| তথা + এব | নাশায় | বিশন্তি | লোকাঃ | তব + অপি | বক্ত্রাণি | সমৃদ্ধ + বেগাঃ |"]

–: ॐ :–

लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्तात् ; लोकान् समग्रान् वदनैर्ज्वलद्भिः ।
तेजोभिरापूर्य जगत् समग्रं ; भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो ॥११-३०॥

["| लेलिह्यसे | ग्रसमानः | समन्तात् | लोकान् | समग्रान् | वदनैः + ज्वलद्भिः |
| तेजोभिः + आपूर्य | जगत् | समग्रं | भासः + तव + उग्राः | प्रतपन्ति | विष्णो |"]

आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो ; नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद ।
विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं ; न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् ॥११-३१॥

["| आख्याहि | मे | को | भवान् + उग्र + रूपो | नमो + अस्तु | ते | देव + वर | प्रसीद |
| विज्ञातुम् + इच्छामि | भवन्तम् + आद्यं | न | हि | प्रजानामि | तव | प्रवृत्तिम् |"]

श्रीभगवानुवाच :—
कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो ; लोकान् समाहर्तुमिह प्रवृत्तः ।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे ; येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥११-३२॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | कालो + अस्मि | लोक + क्षय + कृत् + प्रवृद्धो | लोकान् | समाहर्तुम् + इह |
| प्रवृत्तः | ऋते + अपि | त्वां | न | भविष्यन्ति | सर्वे | ये + अवस्थिताः | प्रति + अनीकेषु | योधाः |"]

–: ॐ :–

লেলিহ্যসে গ্রসমানঃ সমন্তাৎ ; লোকান্ সমগ্রান্ বদনৈর্জ্বলদ্ভিঃ ।

তেজোভিরাপূর্য জগৎ সমগ্রং ; ভাসস্তবোগ্রাঃ প্রতপন্তি বিষ্ণো ॥১১-৩০॥

["| লেলিহ্যসে | গ্রসমানঃ | সমন্তাৎ | লোকান্ | সমগ্রান্ | বদনৈঃ + জ্বলদ্ভিঃ |
| তেজোভিঃ + আপূর্য | জগৎ | সমগ্রং | ভাসঃ + তব + উগ্রাঃ | প্রতপন্তি | বিষ্ণো |"]

আখ্যাহি মে কো ভবানুগ্ররূপো ; নমোঽস্তু তে দেববর প্রসীদ ।

বিজ্ঞাতুমিচ্ছামি ভবন্তমাদ্যং ; ন হি প্রজানামি তব প্রবৃত্তিম্ ॥১১-৩১॥

["| আখ্যাহি | মে | কো | ভবান্ + উগ্র + রূপো | নমো + অস্তু | তে | দেব + বর | প্রসীদ |
| বিজ্ঞাতুম্ + ইচ্ছামি | ভবন্তম্ + আদ্যং | ন | হি | প্রজানামি | তব | প্রবৃত্তিম্ |"]

শ্রীভগবানুবাচ :—

কালোঽস্মি লোকক্ষয়কৃৎপ্রবৃদ্ধো ; লোকান্ সমাহর্তুমিহ প্রবৃত্তঃ ।

ঋতেঽপি ত্বাং ন ভবিষ্যন্তি সর্বে ; যেঽবস্থিতাঃ প্রত্যনীকেষু যোধাঃ ॥১১-৩২॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | কালো + অস্মি | লোক + ক্ষয় + কৃৎ + প্রবৃদ্ধো | লোকান্ | সমাহর্তুম্ + ইহ |
| প্রবৃত্তঃ | ঋতে + অপি | ত্বাং | ন | ভবিষ্যন্তি | সর্বে | যে + অবস্থিতাঃ | প্রতি + অনীকেষু | যোধাঃ |"]

–: ॐ :–

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व ; जित्वा शत्रून् भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम् ।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव ; निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् ॥११-३३॥

["| तस्मात् + त्वम् + उत्तिष्ठ | यशो | लभस्व | जित्वा | शत्रून् | भुङ्क्ष्व | राज्यं | समृद्धम् |
| मया + एव + एते | निहताः | पूर्वम् + एव | निमित्त + मात्रं | भव | सव्य + साचिन् |"]

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च ; कर्णं तथान्यानपि योधवीरान् ।
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा ; युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान् ॥११-३४॥

["| द्रोणं | च | भीष्मं | च | जयद्रथं | च | कर्णं | तथा + अन्यान् + अपि | योध + वीरान् |
| मया | हतान् + त्वं | जहि | मा | व्यथिष्ठा | युध्यस्व | जेता + असि | रणे | सपत्नान् |"]

सञ्जय उवाच :—
एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य ; कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी ।
नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं ; सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य ॥११-३५॥

["| सञ्जय | उवाच | एतत् + श्रुत्वा | वचनं | केशवस्य | कृत + अञ्जलिः + वेपमानः | किरीटी |
| नमः + कृत्वा | भूय | एव + आह | कृष्णं | स + गद्गदं | भीत + भीतः | प्रणम्य |"]

–: ॐ :–

তস্মাত্ত্বমুত্তিষ্ঠ যশো লভস্ব ; জিত্বা শত্রূন্ ভুঙ্ক্ষ্ব রাজ্যং সমৃদ্ধম্ ।
ময়ৈবৈতে নিহতাঃ পূর্বমেব ; নিমিত্তমাত্রং ভব সব্যসাচিন্ ॥১১-৩৩॥

["| তস্মাৎ + ত্বম্ + উত্তিষ্ঠ | যশো | লভস্ব | জিত্বা | শত্রূন্ | ভুঙ্ক্ষ্ব | রাজ্যং | সমৃদ্ধম্ |
| ময়া + এব + এতে | নিহতাঃ | পূর্বম্ + এব | নিমিত্ত + মাত্রং | ভব | সব্য + সাচিন্ |"]

দ্রোণং চ ভীষ্মং চ জয়দ্রথং চ ; কর্ণং তথান্যানপি যোধবীরান্ ।
ময়া হতাংস্ত্বং জহি মা ব্যথিষ্ঠা ; যুধ্যস্ব জেতাসি রণে সপত্নান্ ॥১১-৩৪॥

["| দ্রোণং | চ | ভীষ্মং | চ | জয়দ্রথং | চ | কর্ণং | তথা + অন্যান্ + অপি | যোধ + বীরান্ |
| ময়া | হতান্ + ত্বং | জহি | মা | ব্যথিষ্ঠা | যুধ্যস্ব | জেতা + অসি | রণে | সপত্নান্ |"]

সঞ্জয় উবাচ :—
এতচ্ছ্রুত্বা বচনং কেশবস্য ; কৃতাঞ্জলির্বেপমানঃ কিরীটী ।
নমস্কৃত্বা ভূয় এবাহ কৃষ্ণং ; সগদ্গদং ভীতভীতঃ প্রণম্য ॥১১-৩৫॥

["| সঞ্জয় | উবাচ | এতৎ + শ্রুত্বা | বচনং | কেশবস্য | কৃত + অঞ্জলিঃ + বেপমানঃ | কিরীটী |
| নমঃ + কৃত্বা | ভূয় | এব + আহ | কৃষ্ণং | স + গদ্গদং | ভীত + ভীতঃ | প্রণম্য |"]

–: ॐ :–

अर्जुन उवाच :—

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या ; जगत् प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति ; सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः ॥११-३६॥

["| अर्जुन | उवाच | स्थाने | हृषीक + ईश | तव | प्रकीर्त्या | जगत् | प्रहृष्यति + अनुरज्यते | च |
| रक्षांसि | भीतानि | दिशो | द्रवन्ति | सर्वे | नमस्यन्ति | च | सिद्ध + सङ्घाः |"]

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् ; गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे ।
अनन्त देवेश जगन्निवास ; त्वमक्षरं सदसत् तत्परं यत् ॥११-३७॥

["| कस्मात् + च | ते | न | नमेरन् + महा + आत्मन् | गरीयसे | ब्रह्मणो + अपि + आदि + कर्त्रे |
| अनन्त | देव + ईश | जगत् + निवास | त्वम् + अक्षरं | सत् + असत् | तत् + परं | यत् |"]

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः ; त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम ; त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥११-३८॥

["| त्वम् + आदि + देवः | पुरुषः | पुराणः | त्वम् + अस्य | विश्वस्य | परं | निधानम् |
| वेत्ता + असि | वेद्यं | च | परं | च | धाम | त्वया | ततं | विश्वम् + अनन्त + रूप |"]

–: ॐ :–

অর্জুন উবাচ :—

স্থানে হৃষীকেশ তব প্রকীর্ত্যা ; জগৎ প্রহৃষ্যত্যনুরজ্যতে চ ।

রক্ষাংসি ভীতানি দিশো দ্রবন্তি ; সর্বে নমস্যন্তি চ সিদ্ধসঙ্ঘাঃ ॥১১-৩৬॥

["| অর্জুন | উবাচ | স্থানে | হৃষীক + ঈশ | তব | প্রকীর্ত্যা | জগৎ | প্রহৃষ্যতি + অনুরজ্যতে | চ |
| রক্ষাংসি | ভীতানি | দিশো | দ্রবন্তি | সর্বে | নমস্যন্তি | চ | সিদ্ধ + সঙ্ঘাঃ |"]

কস্মাচ্চ তে ন নমেরন্মহাত্মন্ ; গরীয়সে ব্রহ্মণোঽপ্যাদিকর্ত্রে ।

অনন্ত দেবেশ জগন্নিবাস ; ত্বমক্ষরং সদসৎ তৎপরং যৎ ॥১১-৩৭॥

["| কস্মাৎ + চ | তে | ন | নমেরন্ + মহা + আত্মন্ | গরীয়সে | ব্রহ্মণো + অপি + আদি + কর্ত্রে |
| অনন্ত | দেব + ঈশ | জগৎ + নিবাস | ত্বম্ + অক্ষরং | সৎ + অসৎ | তৎ + পরং | যৎ |"]

ত্বমাদিদেবঃ পুরুষঃ পুরাণঃ ; ত্বমস্য বিশ্বস্য পরং নিধানম্ ।

বেত্তাসি বেদ্যং চ পরং চ ধাম ; ত্বয়া ততং বিশ্বমনন্তরূপ ॥১১-৩৮॥

["| ত্বম্ + আদি + দেবঃ | পুরুষঃ | পুরাণঃ ; ত্বম্ + অস্য | বিশ্বস্য | পরং | নিধানম্ |
| বেত্তা + অসি | বেদ্যং | চ | পরং | চ | ধাম | ত্বয়া | ততং | বিশ্বম্ + অনন্ত + রূপ |"]

–: ॐ :–

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः ; प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः ; पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥११-३९॥

["| वायुः + यमो + अग्निः + वरुणः | शश + अङ्कः | प्रजापतिः + त्वं | प्रपितामहः + च |
| नमो | नमस्ते + अस्तु | सहस्र + कृत्वः | पुनः + च | भूयो + अपि | नमो | नमः + ते |"]

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते ; नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं ; सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ॥११-४०॥

["| नमः | पुरस्तात् + अथ | पृष्ठतः + ते | नमो + अस्तु | ते | सर्वत | एव | सर्व |
| अनन्त + वीर्य + अमित + विक्रमः + त्वं | सर्वं | समाप्नोषि | ततो + असि | सर्वः |"]

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं ; हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।
अजानता महिमानं तवेदं ; मया प्रमादात् प्रणयेन वापि ॥११-४१॥

["| सखा + इति | मत्वा | प्रसभं | यत् + उक्तं | हे | कृष्ण | हे | यादव | हे | सखे + इति |
| अजानता | महिमानं | तव + इदं | मया | प्रमादात् | प्रणयेन | वा + अपि |"]

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि ; विहारशय्यासनभोजनेषु ।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं ; तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥११-४२॥

["| यत् + च + अवहास + अर्थम् + असत् + कृतो + असि | विहार + शय्या + आसन + भोजनेषु |
| एको + अथवा + अपि + अच्युत | तत् + समक्षं | तत् + क्षामये | त्वाम् + अहम् + अप्रमेयम् |"]

–: ॐ :–

বায়ুর্যমোঽগ্নির্বরুণঃ শশাঙ্কঃ ; প্রজাপতিস্ত্বং প্রপিতামহশ্চ ।

নমো নমস্তেঽস্তু সহস্রকৃত্বঃ ; পুনশ্চ ভূয়োঽপি নমো নমস্তে ॥১১-৩৯॥

["| বায়ুঃ + যমো + অগ্নিঃ + বরুণঃ | শশ + অঙ্কঃ | প্রজাপতিঃ + ত্বং | প্রপিতামহঃ + চ |
| নমো | নমস্তে + অস্তু | সহস্র + কৃত্বঃ | পুনঃ + চ | ভূয়ো + অপি | নমো | নমঃ + তে |"]

নমঃ পুরস্তাদথ পৃষ্ঠতস্তে ; নমোঽস্তু তে সর্বত এব সর্ব ।

অনন্তবীর্যামিতবিক্রমস্ত্বং ; সর্বং সমাপ্নোষি ততোঽসি সর্বঃ ॥১১-৪০॥

["| নমঃ | পুরস্তাৎ + অথ | পৃষ্ঠতঃ + তে | নমো + অস্তু | তে | সর্বত | এব | সর্ব |
| অনন্ত + বীর্য + অমিত + বিক্রমঃ + ত্বং | সর্বং | সমাপ্নোষি | ততো + অসি | সর্বঃ |"]

সখেতি মত্বা প্রসভং যদুক্তং ; হে কৃষ্ণ হে যাদব হে সখেতি ।

অজানতা মাহিমানং তবেদং ; ময়া প্রমাদাৎ প্রণয়েন বাপি ॥১১-৪১॥

["| সখা + ইতি | মত্বা | প্রসভং | যৎ + উক্তং | হে | কৃষ্ণ | হে | যাদব | হে | সখে + ইতি |
| অজানতা | মাহিমানং | তব + ইদং | ময়া | প্রমাদাৎ | প্রণয়েন | বা + অপি |"]

যচ্চাবহাসার্থমসৎকৃতোঽসি ; বিহারশয্যাসনভোজনেষু ।

একোঽথবাপ্যচ্যুত তৎসমক্ষং ; তৎক্ষাময়ে ত্বামহমপ্রমেয়ম্ ॥১১-৪২॥

["| যৎ + চ + অবহাস + অর্থম্ + অসৎ + কৃতো + অসি | বিহার + শয্যা + আসন + ভোজনেষু |
| একো + অথবা + অপি + অচ্যুত | তৎ + সমক্ষং | তৎ + ক্ষাময়ে | ত্বাম্ + অহম্ + অপ্রমেয়ম্ |"]

–: ॐ :–

पितासि लोकस्य चराचरस्य ; त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो ; लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥११-४३॥

["| पिता + असि | लोकस्य | चर + अचरस्य | त्वम् + अस्य | पूज्यः + च | गुरुः + गरीयान् |
| न | त्वत् + समो + अस्ति + अभ्यधिकः | कुतो + अन्यो | लोक + त्रये + अपि + अप्रतिम + प्रभाव |"]

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं ; प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् ।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः ; प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् ॥११-४४॥

["| तस्मात् + प्रणम्य | प्रणिधाय | कायं | प्रसादये | त्वाम् + अहम् + ईशम् + ईड्यम् |
| पिता + इव | पुत्रस्य | सखा + इव | सख्युः | प्रियः | प्रियाया + अर्हसि | देव | सोढुम् |"]

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा ; भयेन च प्रव्यथितं मनो मे ।
तदेव मे दर्शय देव रूपं ; प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥११-४५॥

["| अदृष्ट + पूर्वं | हृषितो + अस्मि | दृष्ट्वा | भयेन | च | प्रव्यथितं | मनो | मे |
| तत् + एव | मे | दर्शय | देव | रूपं | प्रसीद | देव + ईश | जगत् + निवास |"]

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तम् ; इच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव ।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन ; सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ॥११-४६॥

["| किरीटिनं | गदिनं | चक्र + हस्तम् | इच्छामि | त्वां | द्रष्टुम् + अहं | तथा + एव |
| तेन + एव | रूपेण | चतुः + भुजेन | सहस्र + बाहो | भव | विश्व + मूर्ते |"]

–: ওঁ :–

পিতাসি লোকস্য চরাচরস্য ; ত্বমস্য পূজ্যশ্চ গুরুর্গরীয়ান্ ।

ন ত্বৎসমোঽস্ত্যভ্যধিকঃ কুতোঽন্যো ; লোকত্রয়েঽপ্যপ্রতিমপ্রভাব ॥১১-৪৩॥

["| পিতা + অসি | লোকস্য | চর + অচরস্য | ত্বম্ + অস্য | পূজ্যঃ + চ | গুরুঃ + গরীয়ান্ |
| ন | ত্বৎ + সমো + অস্তি + অভ্যধিকঃ | কুতো + অন্যো | লোক + ত্রয়ে + অপি + অপ্রতিম + প্রভাব |"]

তস্মাৎপ্রণম্য প্রণিধায় কায়ং ; প্রসাদয়ে ত্বামহমীশমীড্যম্ ।

পিতেব পুত্রস্য সখেব সখ্যুঃ ; প্রিয়ঃ প্রিয়ায়ার্হসি দেব সোঢুম্ ॥১১-৪৪॥

["| তস্মাৎ + প্রণম্য | প্রণিধায় | কায়ং | প্রসাদয়ে | ত্বাম্ + অহম্ + ঈশম্ + ঈড্যম্ |
| পিতা + ইব | পুত্রস্য | সখা + ইব | সখ্যুঃ | প্রিয়ঃ | প্রিয়ায়া + অর্হসি | দেব | সোঢুম্ |"]

অদৃষ্টপূর্বং হৃষিতোঽস্মি দৃষ্ট্বা ; ভয়েন চ প্রব্যথিতং মনো মে ।

তদেব মে দর্শয় দেব রূপং ; প্রসীদ দেবেশ জগন্নিবাস ॥১১-৪৫॥

["| অদৃষ্ট + পূর্বং | হৃষিতো + অস্মি | দৃষ্ট্বা | ভয়েন | চ | প্রব্যথিতং | মনো | মে |
| তৎ + এব | মে | দর্শয় | দেব | রূপং | প্রসীদ | দেব + ঈশ | জগৎ + নিবাস |"]

কিরীটিনং গদিনং চক্রহস্তম্ ; ইচ্ছামি ত্বাং দ্রষ্টুমহং তথৈব ।

তেনৈব রূপেণ চতুর্ভুজেন ; সহস্রবাহো ভব বিশ্বমূর্তে ॥১১-৪৬॥

["| কিরীটিনং | গদিনং | চক্র + হস্তম্ | ইচ্ছামি | ত্বাং | দ্রষ্টুম্ + অহং | তথা + এব |
| তেন + এব | রূপেণ | চতুঃ + ভূজেন | সহস্র + বাহো | ভব | বিশ্ব + মূর্তে |"]

–: ॐ :–

श्रीभगवानुवाच :—

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं ; रूपं परं दर्शितमात्मयोगात् ।
तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं ; यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥११-४७॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | मया | प्रसन्नेन | तव + अर्जुन + इदं | रूपं | परं | दर्शितम् + आत्म + योगात् |
| तेजो + मयं | विश्वम् + अनन्तम् + आद्यं | यत् + में | त्वत् + अन्येन | न | दृष्ट + पूर्वम् |"]

न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैः ; न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः ।
एवंरूपः शक्य अहं नृलोके ; द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥११-४८॥

["| वेद + यज्ञ + अध्ययनैः + न | दानैः | न | च | क्रियाभिः + न | तपोभिः + उग्रैः |
| एवं + रूपः | शक्य | अहं | नृ + लोके | द्रष्टुं | त्वत् + अन्येन | कुरु + प्रवीर |"]

मा ते व्यथा मा च विमूढभावो ; दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्मेदम् ।
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं ; तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ॥११-४९॥

["| मा | ते | व्यथा | मा | च | विमूढ + भावो | दृष्ट्वा | रूपं | घोरम् + ईदृक् + मम + इदम् |
| व्यपेत + भीः | प्रीत + मनाः | पुनः + त्वं | तत् + एव | मे | रूपम् + इदं | प्रपश्य |"]

–: ॐ :–

শ্রীভগবানুবাচ :—

ময়া প্রসন্নেন তবার্জুনেদং ; রূপং পরং দর্শিতমাত্মযোগাৎ ।

তেজোময়ং বিশ্বমনন্তমাদ্যং ; যন্মে ত্বদন্যেন ন দৃষ্টপূর্বম্ ॥১১-৪৭॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | ময়া | প্রসন্নেন | তব + অর্জুন + ইদং | রূপং | পরং | দর্শিতম্ + আত্ম + যোগাৎ |
| তেজো + ময়ং | বিশ্বম্ + অনন্তম্ + আদ্যং | যৎ + মে | ত্বৎ + অন্যেন | ন | দৃষ্ট + পূর্বম্ |"]

ন বেদযজ্ঞাধ্যয়নৈর্ন দানৈঃ ; ন চ ক্রিয়াভির্ন তপোভিরুগ্রৈঃ ।

এবংরূপঃ শক্য অহং নৃলোকে ; দ্রষ্টুং ত্বদন্যেন কুরুপ্রবীর ॥১১-৪৮॥

["| বেদ + যজ্ঞ + অধ্যয়নৈঃ + ন | দানৈঃ | ন | চ | ক্রিয়াভিঃ + ন | তপোভিঃ + উগ্রৈঃ |
| এবং + রূপঃ | শক্য | অহং | নৃ + লোকে | দ্রষ্টুং | ত্বৎ + অন্যেন | কুরু + প্রবীর |"]

মা তে ব্যথা মা চ বিমূঢ়ভাবো ; দৃষ্ট্বা রূপং ঘোরমীদৃঙ্মমেদম্ ।

ব্যপেতভীঃ প্রীতমনাঃ পুনস্ত্বং ; তদেব মে রূপমিদং প্রপশ্য ॥১১-৪৯॥

["| মা | তে | ব্যথা | মা | চ | বিমূঢ় + ভাবো | দৃষ্ট্বা | রূপং | ঘোরম্ + ঈদৃক্ + মম + ইদম্ |
| ব্যপেত + ভীঃ | প্রীত + মনাঃ | পুনঃ + ত্বং | তৎ + এব | মে | রূপম্ + ইদং | প্রপশ্য |"]

–: ॐ :–

सञ्जय उवाच :—

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा ; स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः ।
आश्वासयामास च भीतमेनं ; भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥११-५०॥

["| सञ्जय | उवाच | इति + अर्जुनं | वासुदेवः + तथा + उक्त्वा | स्वकं | रूपं | दर्शयाम् + आस | भूयः |
| आश्वासयाम् + आस | च | भीतम् + एनं | भूत्वा | पुनः | सौम्य + वपुः + महा + आत्मा |"]

अर्जुन उवाच :—

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन ।
इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः ॥११-५१॥

["| अर्जुन | उवाच | दृष्ट्वा + इदं | मानुषं | रूपं | तव | सौम्यं | जनार्दन |
| इदानीम् + अस्मि | संवृत्तः | स + चेताः | प्रकृतिं | गतः |"]

श्रीभगवानुवाच :—

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम ।
देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः ॥११-५२॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | सु + दुर्दर्शम् + इदं | रूपं | दृष्टवान् + असि | यत् + मम |
| देवा | अपि + अस्य | रूपस्य | नित्यं | दर्शन + काङ्क्षिणः |"]

–: ওঁ :–

সঞ্জয় উবাচ :—

ইত্যর্জুনং বাসুদেবস্তথোক্ত্বা ; স্বকং রূপং দর্শয়ামাস ভূয়ঃ ।

আশ্বাসয়ামাস চ ভীতমেনং ; ভূত্বা পুনঃ সৌম্যবপুর্মহাত্মা ॥১১-৫০॥

["| সঞ্জয় | উবাচ | ইতি + অর্জুনং | বাসুদেবঃ + তথা + উক্ত্বা | স্বকং | রূপং | দর্শয়াম্ + আস | ভূয়ঃ |
| আশ্বাসয়াম্ + আস | চ | ভীতম্ + এনং | ভূত্বা | পুনঃ | সৌম্য + বপুঃ + মহা + আত্মা |"]

অর্জুন উবাচ :—

দৃষ্ট্বেদং মানুষং রূপং তব সৌম্যং জনার্দন ।

ইদানীমস্মি সংবৃত্তঃ সচেতাঃ প্রকৃতিং গতঃ ॥১১-৫১॥

["| অর্জুন | উবাচ | দৃষ্ট্বা + ইদং | মানুষং | রূপং | তব | সৌম্যং | জনার্দন |
| ইদানীম্ + অস্মি | সংবৃত্তঃ | স + চেতাঃ | প্রকৃতিং | গতঃ |"]

শ্রীভগবানুবাচ :—

সুদুর্দর্শমিদং রূপং দৃষ্টবানসি যন্মম ।

দেবা অপ্যস্য রূপস্য নিত্যং দর্শনকাঙ্ক্ষিণঃ ॥১১-৫২॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | সু + দুর্দর্শম্ + ইদং | রূপং | দৃষ্টবান্ + অসি | যৎ + মম |
| দেবা | অপি + অস্য | রূপস্য | নিত্যং | দর্শন + কাঙ্ক্ষিণঃ |"]

–: ॐ :–

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया ।
शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥११-५३॥

["| न + अहं | वेदैः + न | तपसा | न | दानेन | न | च + इज्यया |
| शक्य | एवं + विधो | द्रष्टुं | दृष्टवान् + असि | मां | यथा |"]

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन ।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप ॥११-५४॥

["| भक्त्या | तु + अनन्यया | शक्य | अहम् + एवं + विधो + अर्जुन |
| ज्ञातुं | द्रष्टुं | च | तत्त्वेन | प्रवेष्टुं | च | परन्तप |"]

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥११-५५॥

["| मत् + कर्म + कृत् + मत् + परमो | मत् + भक्तः | सङ्ग + वर्जितः |
| निर्वैरः | सर्व + भूतेषु | यः | स | माम् + एति | पाण्डव |"]

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि
श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे
विश्वरूपदर्शनयोगो नाम एकादशोऽध्यायः॥११॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | विश्व + रूप + दर्शन + योगो | नाम | एकादशो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

নাহং বেদৈর্ন তপসা ন দানেন ন চেজ্যয়া ।

শক্য এবংবিধো দ্রষ্টুং দৃষ্টবানসি মাং যথা ॥১১-৫৩॥

["| ন + অহং | বেদৈঃ + ন | তপসা | ন | দানেন | ন | চ + ইজ্যয়া |

| শক্য | এবং + বিধো | দ্রষ্টুং | দৃষ্টবান্ + অসি | মাং | যথা |"]

ভক্ত্যা ত্বনন্যয়া শক্য অহমেবংবিধোঽর্জুন ।

জ্ঞাতুং দ্রষ্টুং চ তত্ত্বেন প্রবেষ্টুং চ পরন্তপ ॥১১-৫৪॥

["| ভক্ত্যা | তু + অনন্যয়া | শক্য | অহম্ + এবং + বিধো + অর্জুন |

| জ্ঞাতুং | দ্রষ্টুং | চ | তত্ত্বেন | প্রবেষ্টুং | চ | পরন্তপ |"]

মৎকর্মকৃন্মৎপরমো মদ্ভক্তঃ সঙ্গবর্জিতঃ ।

নির্বৈরঃ সর্বভূতেষু যঃ স মামেতি পাণ্ডব ॥১১-৫৫॥

["| মৎ + কর্ম + কৃৎ + মৎ + পরমো | মৎ + ভক্তঃ | সঙ্গ + বর্জিতঃ |

| নির্বৈরঃ | সর্ব + ভূতেষু | যঃ | স | মাম্ + এতি | পাণ্ডব |"]

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে বিশ্বরূপদর্শনযোগো নাম একাদশোঽধ্যায়ঃ ॥১১॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |

| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |

| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | বিশ্ব + রূপ + দর্শন + যোগো | নাম | একাদশো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

द्वादशोऽध्यायः
भक्तियोग

अर्जुन उवाच :—

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते ।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥१२-०१॥

["| अर्जुन | उवाच | एवं | सतत + युक्ता | ये | भक्ताः + त्वां | पर्युपासते |
| ये | च + अपि + अक्षरम् + अव्यक्तं | तेषां | के | योग + वित् + तमाः |"]

श्रीभगवानुवाच :—

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते ।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥१२-०२॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | मयि + आवेश्य | मनो | ये | मां | नित्य + युक्ता | उपासते |
| श्रद्धया | परया + उपेताः + ते | मे | युक्त + तमा | मताः |"]

–: ॐ :–

দ্বাদশোঽধ্যায়ঃ
ভক্তিযোগ

অর্জুন উবাচ :—

এবং সততযুক্তা যে ভক্তাস্ত্বাং পর্য্যুপাসতে ।

যে চাপ্যক্ষরমব্যক্তং তেষাং কে যোগবিত্তমাঃ ॥১২-০১॥

["| অর্জুন | উবাচ | এবং | সতত + যুক্তা | যে | ভক্তাঃ + ত্বাং | পর্য্যুপাসতে |
| যে | চ + অপি + অক্ষরম্ + অব্যক্তং | তেষাং | কে | যোগ + বিৎ + তমাঃ |"]

শ্রীভগবানুবাচ :—

ময্যাবেশ্য মনো যে মাং নিত্যযুক্তা উপাসতে ।

শ্রদ্ধয়া পরয়োপেতাস্তে মে যুক্ততমা মতাঃ ॥১২-০২॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | ময়ি + আবেশ্য | মনো | যে | মাং | নিত্য + যুক্তা | উপাসতে |
| শ্রদ্ধয়া | পরয়া + উপেতাঃ + তে | মে | যুক্ত + তমা | মতাঃ |"]

–: ॐ :–

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते ।
सर्वत्रगमचिन्त्यञ्च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥१२-०३॥

["| ये | तु + अक्षरम् + अनिर्देश्यम् + अव्यक्तं | पर्युपासते |
| सर्वत्र + गम् + अचिन्त्यं + च | कूट + स्थम् + अचलं | ध्रुवम् |"]

संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥१२-०४॥

["| संनियम्य + इन्द्रिय + ग्रामं | सर्वत्र | सम + बुद्धयः |
| ते | प्राप्नुवन्ति | माम् + एव | सर्व + भूत + हिते | रताः |"]

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥१२-०५॥

["| क्लेशो + अधिक + तरः + तेषाम् + अव्यक्त + आसक्त + चेतसाम् |
| अव्यक्ता | हि | गतिः + दुःखं | देह + वद्भिः + अवाप्यते |"]

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः ।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥१२-०६॥

["| ये | तु | सर्वाणि | कर्माणि | मयि | संन्यस्य | मत् + पराः |
| अनन्येन + एव | योगेन | मां | ध्यायन्त | उपासते |"]

–: ॐ :–

যে ত্বক্ষরমনির্দেশ্যমব্যক্তং পর্য্যুপাসতে ।
সর্বত্রগমচিন্ত্যঞ্চ কূটস্থমচলং ধ্রুবম্ ॥১২-০৩॥

["| যে | তু + অক্ষরম্ + অনির্দেশ্যম্ + অব্যক্তং | পর্য্যুপাসতে |
| সর্বত্র + গম্ + অচিন্ত্যং + চ | কূট + স্থম্ + অচলং | ধ্রুবম্ |"]

সংনিয়ম্যেন্দ্রিয়গ্রামং সর্বত্র সমবুদ্ধয়ঃ ।
তে প্রাপ্নুবন্তি মামেব সর্বভূতহিতে রতাঃ ॥১২-০৪॥

["| সংনিয়ম্য + ইন্দ্রিয় + গ্রামং | সর্বত্র | সম + বুদ্ধয়ঃ |
| তে | প্রাপ্নুবন্তি | মাম্ + এব | সর্ব + ভূত + হিতে | রতাঃ |"]

ক্লেশোঽধিকতরস্তেষামব্যক্তাসক্তচেতসাম্ ।
অব্যক্তা হি গতির্দুঃখং দেহবদ্ভিরবাপ্যতে ॥১২-০৫॥

["| ক্লেশো + অধিক + তরঃ + তেষাম্ + অব্যক্ত + আসক্ত + চেতসাম্ |
| অব্যক্তা | হি | গতিঃ + দুঃখং | দেহ + বদ্ভিঃ + অবাপ্যতে |"]

যে তু সর্বাণি কর্মাণি ময়ি সংন্যস্য মৎপরাঃ ।
অনন্যেনৈব যোগেন মাং ধ্যায়ন্ত উপাসতে ॥১২-০৬॥

["| যে | তু | সর্বাণি | কর্মাণি | ময়ি | সংন্যস্য | মৎ + পরাঃ |
| অনন্যেন + এব | যোগেন | মাং | ধ্যায়ন্ত | উপাসতে |"]

–: ॐ :–

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ।
भवामि नचिरात् पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ॥१२-०७॥

["| तेषाम् + अहं | समुद्धर्ता | मृत्यु + संसार + सागरात् |
| भवामि | न + चिरात् | पार्थ | मयि + आवेशित + चेतसाम् |"]

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय ।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥१२-०८॥

["| मयि + एव | मन | आधत्स्व | मयि | बुद्धिं | निवेशय |
| निवसिष्यसि | मयि + एव | अत | ऊर्ध्वं | न | संशयः |"]

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम् ।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय ॥१२-०९॥

["| अथ | चित्तं | समाधातुं | न | शक्नोषि | मयि | स्थिरम् |
| अभ्यास + योगेन | ततो | माम् + इच्छा + आप्तुं | धनंजय |"]

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव ।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन् सिद्धिमवाप्स्यसि ॥१२-१०॥

["| अभ्यासे + अपि + असमर्थो + असि | मत् + कर्म + परमो | भव |
| मत् + अर्थम् + अपि | कर्माणि | कुर्वन् | सिद्धिम् + अवाप्स्यसि |"]

–: ॐ :–

তেষামহং সমুদ্ধর্তা মৃত্যুসংসারসাগরাৎ ।
ভবামি নচিরাৎ পার্থ ময্যাবেশিতচেতসাম্ ॥১২-০৭॥

["| তেষাম্ + অহং | সমুদ্ধর্তা | মৃত্যু + সংসার + সাগরাৎ |
| ভবামি | ন + চিরাৎ | পার্থ | ময়ি + আবেশিত + চেতসাম্ |"]

ময্যেব মন আধৎস্ব ময়ি বুদ্ধিং নিবেশয় ।
নিবসিষ্যসি ময্যেব অত ঊর্ধ্বং ন সংশয়ঃ ॥১২-০৮॥

["| ময়ি + এব | মন | আধৎস্ব | ময়ি | বুদ্ধিং | নিবেশয় |
| নিবসিষ্যসি | ময়ি + এব | অত | ঊর্ধ্বং | ন | সংশয়ঃ |"]

অথ চিত্তং সমাধাতুং ন শক্নোষি ময়ি স্থিরম্ ।
অভ্যাসযোগেন ততো মামিচ্ছাপ্তুং ধনঞ্জয় ॥১২-০৯॥

["| অথ | চিত্তং | সমাধাতুং | ন | শক্নোষি | ময়ি | স্থিরম্ |
| অভ্যাস + যোগেন | ততো | মাম্ + ইচ্ছা + আপ্তুং | ধনঞ্জয় |"]

অভ্যাসেঽপ্যসমর্থোঽসি মৎকর্মপরমো ভব ।
মদর্থমপি কর্মাণি কুর্বন্ সিদ্ধিমবাপ্স্যসি ॥১২-১০॥

["| অভ্যাসে + অপি + অসমর্থো + অসি | মৎ + কর্ম + পরমো | ভব |
| মৎ + অর্থম্ + অপি | কর্মাণি | কুর্বন্ | সিদ্ধিম্ + অবাপ্স্যসি |"]

–: ॐ :–

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः ।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ॥१२-११॥

["| अथ + एतत् + अपि + अशक्तो + असि | कर्तुं | मत् + योगम् + आश्रितः |
| सर्व + कर्म + फल + त्यागं | ततः | कुरु | यत + आत्म + वान् |"]

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते ।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ॥१२-१२॥

["| श्रेयो | हि | ज्ञानम् + अभ्यासात् + ज्ञानात् + ध्यानं | विशिष्यते |
| ध्यानात् + कर्म + फल + त्यागः + त्यागात् + शान्तिः + अनन्तरम् |"]

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी ॥१२-१३॥

["| अद्वेष्टा | सर्व + भूतानां | मैत्रः | करुण | एव | च |
| निर्ममो | निः + अहङ्कारः | सम + दुःख + सुखः | क्षमी |"]

संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥१२-१४॥

["| संतुष्टः | सततं | योगी | यत + आत्मा | दृढ + निश्चयः |
| मयि + अर्पित + मनो + बुद्धिः + यो | मत् + भक्तः | स | मे | प्रियः |"]

–: ॐ :–

অথৈতদপ্যশক্তোঽসি কর্তুং মদ্যোগমাশ্রিতঃ ।

সর্বকর্মফলত্যাগং ততঃ কুরু যতাত্মবান্ ॥১২-১১॥

["| অথ + এতৎ + অপি + অশক্তো + অসি | কর্তুং | মৎ + যোগম্ + আশ্রিতঃ |
| সর্ব + কর্ম + ফল + ত্যাগং | ততঃ | কুরু | যত + আত্ম + বান্ |"]

শ্রেয়ো হি জ্ঞানমভ্যাসাজ্জ্ঞানাদ্ধ্যানং বিশিষ্যতে ।

ধ্যানাৎকর্মফলত্যাগস্ত্যাগাচ্ছান্তিরনন্তরম্ ॥১২-১২॥

["| শ্রেয়ো | হি | জ্ঞানম্ + অভ্যাসাৎ + জ্ঞানাৎ + ধ্যানং | বিশিষ্যতে |
| ধ্যানাৎ + কর্ম + ফল + ত্যাগঃ + ত্যাগাৎ + শান্তিঃ + অনন্তরম্ |"]

অদ্বেষ্টা সর্বভূতানাং মৈত্রঃ করুণ এব চ ।

নির্মমো নিরহঙ্কারঃ সমদুঃখসুখঃ ক্ষমী ॥১২-১৩॥

["| অদ্বেষ্টা | সর্ব + ভূতানাং | মৈত্রঃ | করুণ | এব | চ |
| নির্মমো | নিঃ + অহঙ্কারঃ | সম + দুঃখ + সুখঃ | ক্ষমী |"]

সন্তুষ্টঃ সততং যোগী যতাত্মা দৃঢ়নিশ্চয়ঃ ।

ময্যর্পিতমনোবুদ্ধির্যো মদ্ভক্তঃ স মে প্রিয়ঃ ॥১২-১৪॥

["| সন্তুষ্টঃ | সততং | যোগী | যত + আত্মা | দৃঢ় + নিশ্চয়ঃ |
| ময়ি + অর্পিত + মনো + বুদ্ধিঃ + যো | মৎ + ভক্তঃ | স | মে | প্রিয়ঃ |"]

–: ॐ :–

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥१२-१५॥

["| यस्मात् + न + उद्विजते | लोको | लोकात् + न + उद्विजते | च | यः |
| हर्ष + अमर्ष + भय + उद्वेगैः + मुक्तो | यः | स | च | मे | प्रियः |"]

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥१२-१६॥

["| अनपेक्षः | शुचिः + दक्ष | उदासीनो | गत + व्यथः |
| सर्व + आरम्भ + परित्यागी | यो | मत् + भक्तः | स | मे | प्रियः |"]

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः ॥१२-१७॥

["| यो | न | हृष्यति | न | द्वेष्टि | न | शोचति | न | काङ्क्षति |
| शुभ + अशुभ + परित्यागी | भक्ति + मान् + यः | स | मे | प्रियः |"]

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥१२-१८॥

["| समः | शत्रौ | च | मित्रे | च | तथा | मान + अपमानयोः |
| शीत + उष्ण + सुख + दुःखेषु | समः | सङ्ग + विवर्जितः |"]

–: ॐ :–

যস্মান্নোদ্বিজতে লোকো লোকান্নোদ্বিজতে চ যঃ ।

হর্ষামর্ষভয়োদ্বেগৈর্মুক্তো যঃ স চ মে প্রিয়ঃ ॥১২-১৫॥

["| যস্মাৎ + ন + উদ্বিজতে | লোকো | লোকাৎ + ন + উদ্বিজতে | চ | যঃ |
| হর্ষ + অমর্ষ + ভয় + উদ্বেগৈঃ + মুক্তো | যঃ | স | চ | মে | প্রিয়ঃ |"]

অনপেক্ষঃ শুচির্দক্ষ উদাসীনো গতব্যথঃ ।

সর্বারম্ভপরিত্যাগী যো মদ্ভক্তঃ স মে প্রিয়ঃ ॥১২-১৬॥

["| অনপেক্ষঃ | শুচিঃ + দক্ষ | উদাসীনো | গত + ব্যথঃ |
| সর্ব + আরম্ভ + পরিত্যাগী | যো | মৎ + ভক্তঃ | স | মে | প্রিয়ঃ |"]

যো ন হৃষ্যতি ন দ্বেষ্টি ন শোচতি ন কাঙ্ক্ষতি ।

শুভাশুভপরিত্যাগী ভক্তিমান্যঃ স মে প্রিয়ঃ ॥১২-১৭॥

["| যো | ন | হৃষ্যতি | ন | দ্বেষ্টি | ন | শোচতি | ন | কাঙ্ক্ষতি |
| শুভ + অশুভ + পরিত্যাগী | ভক্তি + মান্ + যঃ | স | মে | প্রিয়ঃ |"]

সমঃ শত্রৌ চ মিত্রে চ তথা মানাপমানয়োঃ ।

শীতোষ্ণসুখদুঃখেষু সমঃ সঙ্গবিবর্জিতঃ ॥১২-১৮॥

["| সমঃ | শত্রৌ | চ | মিত্রে | চ | তথা | মান + অপমানয়োঃ |
| শীত + উষ্ণ + সুখ + দুঃখেষু | সমঃ | সঙ্গ + বিবর্জিতঃ |"]

–: ॐ :–

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित् ।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ॥१२-१९॥

["| तुल्य + निन्दा + स्तुतिः + मौनी | सन्तुष्टो | येन | केनचित् |
| अनिकेतः | स्थिर + मतिः + भक्ति + मान् + मे | प्रियो | नरः |"]

ये तु धर्मामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते ।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ॥१२-२०॥

["| ये | तु | धर्म + अमृतम् + इदं | यथा + उक्तं | पर्युपासते |
| श्रद्दधाना | मत् + परमा | भक्ताः + ते + अतीव | मे | प्रियाः |"]

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि
श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे
भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः॥१२॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | भक्ति + योगो | नाम | द्वादशो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

তুল্যনিন্দাস্তুতির্মৌনী সন্তুষ্টো যেন কেনচিৎ ।
অনিকেতঃ স্থিরমতির্ভক্তিমান্মে প্রিয়ো নরঃ ॥১২-১৯॥

["| তুল্য + নিন্দা + স্তুতিঃ + মৌনী | সন্তুষ্টো | যেন | কেনচিৎ |
| অনিকেতঃ | স্থির + মতিঃ + ভক্তি + মান্ + মে | প্রিয়ো | নরঃ |"]

যে তু ধর্মামৃতমিদং যথোক্তং পর্য্যুপাসতে ।
শ্রদ্দধানা মৎপরমা ভক্তাস্তেঽতীব মে প্রিয়াঃ ॥১২-২০॥

["| যে | তু | ধর্ম + অমৃতম্ + ইদং | যথা + উক্তং | পর্য্যুপাসতে |
| শ্রদ্দধানা | মৎ + পরমা | ভক্তাঃ + তে + অতীব | মে | প্রিয়াঃ |"]

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে
ভক্তিযোগো নাম দ্বাদশোঽধ্যায়ঃ ॥১২॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | ভক্তি + যোগো | নাম | দ্বাদশো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

त्रयोदशोऽध्यायः
क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग

अर्जुन उवाच :—

प्रकृतिं पुरुषं चैव क्षेत्रं क्षेत्रज्ञमेव च ।
एतद्वेदितुमिच्छामि ज्ञानं ज्ञेयं च केशव ॥१३-०१॥

["| अर्जुन | उवाच | प्रकृतिं | पुरुषं | च + एव | क्षेत्रं | क्षेत्र + ज्ञम् + एव | च |
| एतत् + वेदितुम् + इच्छामि | ज्ञानं | ज्ञेयं | च | केशव |"]

श्रीभगवानुवाच :—

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ॥१३-०२॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | इदं | शरीरं | कौन्तेय | क्षेत्रम् + इति + अभिधीयते |
| एतत् + यो | वेत्ति | तं | प्राहुः | क्षेत्र + ज्ञ | इति | तत् + विदः |"]

–: ॐ :–

ত্রয়োদশোঽধ্যায়ঃ
ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞবিভাগযোগ

অর্জুন উবাচ :—

প্রকৃতিং পুরুষং চৈব ক্ষেত্রং ক্ষেত্রজ্ঞমেব চ ।

এতদ্বেদিতুমিচ্ছামি জ্ঞানং জ্ঞেয়ং চ কেশব ॥১৩-০১॥

["। অর্জুন । উবাচ । প্রকৃতিং । পুরুষং । চ + এব । ক্ষেত্রং । ক্ষেত্র + জ্ঞম্ + এব । চ ।
। এতৎ + বেদিতুম্ + ইচ্ছামি । জ্ঞানং । জ্ঞেয়ং । চ । কেশব ।"]

শ্রীভগবানুবাচ :—

ইদং শরীরং কৌন্তেয় ক্ষেত্রমিত্যভিধীয়তে ।

এতদ্যো বেত্তি তং প্রাহুঃ ক্ষেত্রজ্ঞ ইতি তদ্বিদঃ ॥১৩-০২॥

["। শ্রী + ভগবান্ + উবাচ । ইদং । শরীরং । কৌন্তেয় । ক্ষেত্রম্ + ইতি + অভিধীয়তে ।
। এতৎ + যো । বেত্তি । তং । প্রাহুঃ । ক্ষেত্র + জ্ঞ । ইতি । তৎ + বিদঃ ।"]

–: ॐ :–

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत ।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ॥१३-०३॥

["| क्षेत्र + ज्ञं | च + अपि | मां | विद्धि | सर्व + क्षेत्रेषु | भारत |
| क्षेत्र + क्षेत्र + ज्ञयोः + ज्ञानं | यत् + तत् + ज्ञानं | मतं | मम |"]

तत् क्षेत्रं यच्च यादृक् च यद्विकारि यतश्च यत् ।
स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु ॥१३-०४॥

["| तत् | क्षेत्रं | यत् + च | यादृक् | च | यत् + विकारि | यतः + च | यत् |
| स | च | यो | यत् + प्रभावः + च | तत् + समासेन | मे | शृणु |"]

ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक् ।
ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥१३-०५॥

["| ऋषिभिः + बहुधा | गीतं | छन्दोभिः + विविधैः | पृथक् |
| ब्रह्म + सूत्र + पदैः + च + एव | हेतु + मद्भिः + विनिश्चितैः |"]

महाभूतान्यहङ्कारो बुद्धिरव्यक्तमेव च ।
इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः ॥१३-०६॥

["| महा + भूतानि + अहङ्कारो | बुद्धिः + अव्यक्तम् + एव | च |
| इन्द्रियाणि | दश + एकं | च | पञ्च | च + इन्द्रिय + गो + चराः |"]

–: ॐ :–

ক্ষেত্রজ্ঞং চাপি মাং বিদ্ধি সর্বক্ষেত্রেষু ভারত ।

ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞয়োর্জ্ঞানং যত্তজ্জ্ঞানং মতং মম ॥১৩-০৩॥

["| ক্ষেত্র + জ্ঞং | চ + অপি | মাং | বিদ্ধি | সর্ব + ক্ষেত্রেষু | ভারত |
| ক্ষেত্র + ক্ষেত্র + জ্ঞয়োঃ + জ্ঞানং | যৎ + তৎ + জ্ঞানং | মতং | মম |"]

তৎ ক্ষেত্রং যচ্চ যাদৃক্ চ যদ্বিকারি যতশ্চ যৎ ।

স চ যো যৎপ্রভাবশ্চ তৎসমাসেন মে শৃণু ॥১৩-০৪॥

["| তৎ | ক্ষেত্রং | যৎ + চ | যাদৃক্ | চ | যৎ + বিকারি | যতঃ + চ | যৎ |
| স | চ | যো | যৎ + প্রভাবঃ + চ | তৎ + সমাসেন | মে | শৃণু |"]

ঋষিভির্বহুধা গীতং ছন্দোভির্বিবিধৈঃ পৃথক্ ।

ব্রহ্মসূত্রপদৈশ্চৈব হেতুমদ্ভির্বিনিশ্চিতৈঃ ॥১৩-০৫॥

["| ঋষিভিঃ + বহুধা | গীতং | ছন্দোভিঃ + বিবিধৈঃ | পৃথক্ |
| ব্রহ্ম + সূত্র + পদৈঃ + চ + এব | হেতু + মদ্ভিঃ + বিনিশ্চিতৈঃ |"]

মহাভূতান্যহঙ্কারো বুদ্ধিরব্যক্তমেব চ ।

ইন্দ্রিয়াণি দশৈকং চ পঞ্চ চেন্দ্রিয়গোচরাঃ ॥১৩-০৬॥

["| মহা + ভূতানি + অহঙ্কারো | বুদ্ধিঃ + অব্যক্তম্ + এব | চ |
| ইন্দ্রিয়াণি | দশ + একং | চ | পঞ্চ | চ + ইন্দ্রিয় + গো + চরাঃ |"]

–: ॐ :–

इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः ।
एतत् क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम् ॥१३-०७॥

["| इच्छा | द्वेषः | सुखं | दुःखं | संघातः + चेतना | धृतिः |
| एतत् | क्षेत्रं | समासेन | स + विकारम् + उदाहृतम् |"]

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम् ।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥१३-०८॥

["| अमानित्वम् + अदम्भित्वम् + अहिंसा | क्षान्तिः + आर्जवम् |
| आचार्य + उपासनं | शौचं | स्थैर्यम् + आत्म + विनिग्रहः |"]

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहङ्कार एव च ।
जन्ममृत्युजराव्याधि दुःखदोषानुदर्शनम् ॥१३-०९॥

["| इन्द्रिय + अर्थेषु | वैराग्यम् + अनहङ्कार | एव | च |
| जन्म + मृत्यु + जरा + व्याधि | दुःख + दोष + अनुदर्शनम् |"]

असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु ।
नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥१३-१०॥

["| असक्तिः + अनभिष्वङ्गः | पुत्र + दार + गृह + आदिषु |
| नित्यं | च | सम + चित्तत्वम् + इष्ट + अनिष्ट + उपपत्तिषु |"]

–: ॐ :–

ইচ্ছা দ্বেষঃ সুখং দুঃখং সংঘাতশ্চেতনা ধৃতিঃ।
এতৎ ক্ষেত্রং সমাসেন সবিকারমুদাহৃতম্ ॥১৩-০৭॥

["| ইচ্ছা | দ্বেষঃ | সুখং | দুঃখং | সংঘাতঃ + চেতনা | ধৃতিঃ |
| এতৎ | ক্ষেত্রং | সমাসেন | স + বিকারম্ + উদাহৃতম্ |"]

অমানিত্বমদম্ভিত্বমহিংসা ক্ষান্তিরার্জবম্।
আচার্যোপাসনং শৌচং স্থৈর্যমাত্মবিনিগ্রহঃ ॥১৩-০৮॥

["| অমানিত্বম্ + অদম্ভিত্বম্ + অহিংসা | ক্ষান্তিঃ + আর্জবম্ |
| আচার্য + উপাসনং | শৌচং | স্থৈর্যম্ + আত্ম + বিনিগ্রহঃ |"]

ইন্দ্রিয়ার্থেষু বৈরাগ্যমনহঙ্কার এব চ।
জন্মমৃত্যুজরাব্যাধি দুঃখদোষানুদর্শনম্ ॥১৩-০৯॥

["| ইন্দ্রিয় + অর্থেষু | বৈরাগ্যম্ + অনহঙ্কার | এব | চ |
| জন্ম + মৃত্যু + জরা + ব্যাধি | দুঃখ + দোষ + অনুদর্শনম্ |"]

অসক্তিরনভিষ্বঙ্গঃ পুত্রদারগৃহাদিষু।
নিত্যং চ সমচিত্তত্বমিষ্টানিষ্টোপপত্তিষু ॥১৩-১০॥

["| অসক্তিঃ + অনভিষ্বঙ্গঃ | পুত্র + দার + গৃহ + আদিষু |
| নিত্যং | চ | সম + চিত্তত্বম্ + ইষ্ট + অনিষ্ট + উপপত্তিষু |"]

–: ॐ :–

मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी ।
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥१३-११॥

["| मयि | च + अनन्य + योगेन | भक्तिः + अव्यभिचारिणी |
| विविक्त + देश + सेवित्वम् + अरतिः + जन + संसदि |"]

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा ॥१३-१२॥

["| अध्यात्म + ज्ञान + नित्यत्वं | तत्त्व + ज्ञान + अर्थ + दर्शनम् |
| एतत् + ज्ञानम् + इति | प्रोक्तम् + अज्ञानं | यत् + अतो + अन्यथा |"]

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते ।
अनादि मत्परं ब्रह्म न सत् तन्नासदुच्यते ॥१३-१३॥

["| ज्ञेयं | यत् + तत् + प्रवक्ष्यामि | यत् + ज्ञात्वा + अमृतम् + अश्नुते |
| अनादि | मत् + परं | ब्रह्म | न | सत् | तत् + न + असत् + उच्यते |"]

सर्वतः पाणिपादं तत् सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥१३-१४॥

["| सर्वतः | पाणि + पादं | तत् | सर्वतो + अक्षि + शिरो + मुखम् |
| सर्वतः | श्रुति + मत् + लोके | सर्वम् + आवृत्य | तिष्ठति |"]

–: ওঁ :–

মযি চানন্যযোগেন ভক্তিরব্যভিচারিণী ।
বিবিক্তদেশসেবিত্বমরতির্জনসংসদি ॥১৩-১১॥

["| মযি | চ + অনন্য + যোগেন | ভক্তিঃ + অব্যভিচারিণী |
| বিবিক্ত + দেশ + সেবিত্বম্ + অরতিঃ + জন + সংসদি |"]

অধ্যাত্মজ্ঞাননিত্যত্বং তত্ত্বজ্ঞানার্থদর্শনম্ ।
এতজ্জ্ঞানমিতি প্রোক্তমজ্ঞানং যদতোঽন্যথা ॥১৩-১২॥

["| অধ্যাত্ম + জ্ঞান + নিত্যত্বং | তত্ত্ব + জ্ঞান + অর্থ + দর্শনম্ |
| এতৎ + জ্ঞানম্ + ইতি | প্রোক্তম্ + অজ্ঞানং | যৎ + অতো + অন্যথা |"]

জ্ঞেযং যত্তৎপ্রবক্ষ্যামি যজ্জ্ঞাত্বামৃতমশ্নুতে ।
অনাদি মৎপরং ব্রহ্ম ন সৎ তন্নাসদুচ্যতে ॥১৩-১৩॥

["| জ্ঞেযং | যৎ + তৎ + প্রবক্ষ্যামি | যৎ + জ্ঞাত্বা + অমৃতম্ + অশ্নুতে |
| অনাদি | মৎ + পরং | ব্রহ্ম | ন | সৎ | তৎ + ন + অসৎ + উচ্যতে |"]

সর্বতঃ পাণিপাদং তৎ সর্বতোঽক্ষিশিরোমুখম্ ।
সর্বতঃ শ্রুতিমল্লোকে সর্বমাবৃত্য তিষ্ঠতি ॥১৩-১৪॥

["| সর্বতঃ | পাণি + পাদং | তৎ | সর্বতো + অক্ষি + শিরো + মুখম্ |
| সর্বতঃ | শ্রুতি + মৎ + লোকে | সর্বম্ + আবৃত্য | তিষ্ঠতি |"]

–: ॐ :–

सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् ।
असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च ॥१३-१५॥

["| सर्व + इन्द्रिय + गुण + आभासं | सर्व + इन्द्रिय + विवर्जितम् |
| असक्तं | सर्व + भृत् + च + एव | निः + गुणं | गुण + भोक्तृ | च |"]

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च ।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत् ॥१३-१६॥

["| बहिः + अन्तः + च | भूतानाम् + अचरं | चरम् + एव | च |
| सूक्ष्मत्वात + तत् + अविज्ञेयं | दूर + स्थं | च + अन्तिके | च | तत् |"]

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम् ।
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च ॥१३-१७॥

["| अविभक्तं | च | भूतेषु | विभक्तम् + इव | च | स्थितम् |
| भूत + भर्तृ | च | तत् + ज्ञेयं | ग्रसिष्णु | प्रभविष्णु | च |"]

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते ।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम् ॥१३-१८॥

["| ज्योतिषाम् + अपि | तत् + ज्योतिः + तमसः | परम् + उच्यते |
| ज्ञानं | ज्ञेयं | ज्ञान + गम्यं | हृदि | सर्वस्य | विष्ठितम् |"]

–: ॐ :–

সর্বেন্দ্রিয়গুণাভাসং সর্বেন্দ্রিয়বিবর্জিতম্ ।

অসক্তং সর্বভৃচ্চৈব নির্গুণং গুণভোক্তৃ চ ॥১৩-১৫॥

["| সর্ব + ইন্দ্রিয় + গুণ + আভাসং | সর্ব + ইন্দ্রিয় + বিবর্জিতম্ |

| অসক্তং | সর্ব + ভৃৎ + চ + এব | নিঃ + গুণং | গুণ + ভোক্তৃ | চ |"]

বহিরন্তশ্চ ভূতানামচরং চরমেব চ ।

সূক্ষ্মত্বাত্তদবিজ্ঞেয়ং দূরস্থং চান্তিকে চ তৎ ॥১৩-১৬॥

["| বহিঃ + অন্তঃ + চ | ভূতানাম্ + অচরং | চরম্ + এব | চ |

| সূক্ষ্মত্বাৎ + তৎ + অবিজ্ঞেয়ং | দূর + স্থং | চ + অন্তিকে | চ | তৎ |"]

অবিভক্তং চ ভূতেষু বিভক্তমিব চ স্থিতম্ ।

ভূতভর্তৃ চ তজ্জ্ঞেয়ং গ্রসিষ্ণু প্রভবিষ্ণু চ ॥১৩-১৭॥

["| অবিভক্তং | চ | ভূতেষু | বিভক্তম্ + ইব | চ | স্থিতম্ |

| ভূত + ভর্তৃ | চ | তৎ + জ্ঞেয়ং | গ্রসিষ্ণু | প্রভবিষ্ণু | চ |"]

জ্যোতিষামপি তজ্জ্যোতিস্তমসঃ পরমুচ্যতে ।

জ্ঞানং জ্ঞেয়ং জ্ঞানগম্যং হৃদি সর্বস্য বিষ্ঠিতম্ ॥১৩-১৮॥

["| জ্যোতিষাম্ + অপি | তৎ + জ্যোতিঃ + তমসঃ | পরম্ + উচ্যতে |

| জ্ঞানং | জ্ঞেয়ং | জ্ঞান + গম্যং | হৃদি | সর্বস্য | বিষ্ঠিতম্ |"]

–: ॐ :–

इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः ।
मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते ॥१३-१९॥

["| इति | क्षेत्रं | तथा | ज्ञानं | ज्ञेयं | च + उक्तं | समासतः |
| मत् + भक्त | एतत् + विज्ञाय | मत् + भावाय + उपपद्यते |"]

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि ।
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसम्भवान् ॥१३-२०॥

["| प्रकृतिं | पुरुषं | च + एव | विद्धि + अनादी | उभौ + अपि |
| विकारान् + च | गुणान् + च + एव | विद्धि | प्रकृति + सम्भवान् |"]

कार्यकारणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते ।
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते ॥१३-२१॥

["| कार्य + कारण + कर्तृत्वे | हेतुः | प्रकृतिः + उच्यते |
| पुरुषः | सुख + दुःखानां | भोक्तृत्वे | हेतुः + उच्यते |"]

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान् गुणान् ।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥१३-२२॥

["| पुरुषः | प्रकृति + स्थो | हि | भुङ्क्ते | प्रकृति + जान् | गुणान् |
| कारणं | गुण + सङ्गो + अस्य | सत् + असत् + योनि + जन्मसु |"]

–: ॐ :–

ইতি ক্ষেত্রং তথা জ্ঞানং জ্ঞেয়ং চোক্তং সমাসতঃ ।

মদ্ভক্ত এতদ্বিজ্ঞায় মদ্ভাবায়োপপদ্যতে ॥১৩-১৯॥

["| ইতি | ক্ষেত্রং | তথা | জ্ঞানং | জ্ঞেয়ং | চ + উক্তং | সমাসতঃ |
| মৎ + ভক্ত | এতৎ + বিজ্ঞায় | মৎ + ভাবায় + উপপদ্যতে |"]

প্রকৃতিং পুরুষং চৈব বিদ্ধ্যনাদী উভাবপি ।

বিকারাংশ্চ গুণাংশ্চৈব বিদ্ধি প্রকৃতিসম্ভবান্ ॥১৩-২০॥

["| প্রকৃতিং | পুরুষং | চ + এব | বিদ্ধি + অনাদী | উভৌ + অপি |
| বিকারান্ + চ | গুণান্ + চ + এব | বিদ্ধি | প্রকৃতি + সম্ভবান্ |"]

কার্যকারণকর্তৃত্বে হেতুঃ প্রকৃতিরুচ্যতে ।

পুরুষঃ সুখদুঃখনাং ভোক্তৃত্বে হেতুরুচ্যতে ॥১৩-২১॥

["| কার্য + কারণ + কর্তৃত্বে | হেতুঃ | প্রকৃতিঃ + উচ্যতে |
| পুরুষঃ | সুখ + দুঃখনাং | ভোক্তৃত্বে | হেতুঃ + উচ্যতে |"]

পুরুষঃ প্রকৃতিস্থো হি ভুঙ্‌ক্তে প্রকৃতিজান্ গুণান্ ।

কারণং গুণসঙ্গোঽস্য সদসদ্যোনিজন্মসু ॥১৩-২২॥

["| পুরুষঃ | প্রকৃতি + স্থো | হি | ভুঙ্‌ক্তে | প্রকৃতি + জান্ | গুণান্ |
| কারণং | গুণ + সঙ্গো + অস্য | সৎ + অসৎ + যোনি + জন্মসু |"]

–: ॐ :–

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः ।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन् पुरुषः परः ॥१३-२३॥

["| उपद्रष्टा + अनुमन्ता | च | भर्ता | भोक्ता | महा + ईश्वरः |
| परम + आत्मा + इति | च + अपि + उक्तो | देह + अस्मिन् | पुरुषः | परः |"]

य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते ॥१३-२४॥

["| य | एवं | वेत्ति | पुरुषं | प्रकृतिं | च | गुणैः | सह |
| सर्वथा | वर्तमानो + अपि | न | स | भूयो + अभिजायते |"]

ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना ।
अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥१३-२५॥

["| ध्यानेन + आत्मनि | पश्यन्ति | केचित् + आत्मानम् + आत्मना |
| अन्ये | सांख्येन | योगेन | कर्म + योगेन | च + अपरे |"]

अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते ।
तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः ॥१३-२६॥

["| अन्ये | तु + एवम् + अजानन्तः | श्रुत्वा + अन्येभ्य | उपासते |
| ते + अपि | च + अतितरन्ति + एव | मृत्युं | श्रुति + परायणाः |"]

–: ॐ :–

উপদ্রষ্টানুমন্তা চ ভর্তা ভোক্তা মহেশ্বরঃ ।

পরমাত্মেতি চাপ্যুক্তো দেহঽস্মিন্ পুরুষঃ পরঃ ॥১৩-২৩॥

["| উপদ্রষ্টা + অনুমন্তা | চ | ভর্তা | ভোক্তা | মহা + ঈশ্বরঃ |
| পরম + আত্মা + ইতি | চ + অপি + উক্তো | দেহ + অস্মিন্ | পুরুষঃ | পরঃ |"]

য এবং বেত্তি পুরুষং প্রকৃতিং চ গুণৈঃ সহ ।

সর্বথা বর্তমানোঽপি ন স ভূয়োঽভিজায়তে ॥১৩-২৪॥

["| য | এবং | বেত্তি | পুরুষং | প্রকৃতিং | চ | গুণৈঃ | সহ |
| সর্বথা | বর্তমানো + অপি | ন | স | ভূয়ো + অভিজায়তে |"]

ধ্যানেনাত্মনি পশ্যন্তি কেচিদাত্মানমাত্মনা ।

অন্যে সাংখ্যেন যোগেন কর্মযোগেন চাপরে ॥১৩-২৫॥

["| ধ্যানেন + আত্মনি | পশ্যন্তি | কেচিৎ + আত্মানম্ + আত্মনা |
| অন্যে | সাংখ্যেন | যোগেন | কর্ম + যোগেন | চ + অপরে |"]

অন্যে ত্বেবমজানন্তঃ শ্রুত্বান্যেভ্য উপাসতে ।

তেঽপি চাতিতরন্ত্যেব মৃত্যুং শ্রুতিপরায়ণাঃ ॥১৩-২৬॥

["| অন্যে | তু + এবম্ + অজানন্তঃ | শ্রুত্বা + অন্যেভ্য | উপাসতে |
| তে + অপি | চ + অতিতরন্তি + এব | মৃত্যুং | শ্রুতি + পরায়ণাঃ |"]

–: ॐ :–

यावत् सञ्जायते किञ्चित् सत्त्वं स्थावरजङ्गमम् ।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात् तद्विद्धि भरतर्षभ ॥१३-२७॥

["| यावत् | सञ्जायते | किञ्चित् | सत्त्वं | स्थावर + जङ्गमम् |
| क्षेत्र + क्षेत्र + ज्ञ + संयोगात् | तत् + विद्धि | भरत + ऋषभ |"]

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम् ।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति ॥१३-२८॥

["| समं | सर्वेषु | भूतेषु | तिष्ठन् + तं | परम + ईश्वरम् |
| विनश्यत्सु + अविनश्यन्तं | यः | पश्यति | स | पश्यति |"]

समं पश्यन् हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम् ।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम् ॥१३-२९॥

["| समं | पश्यन् | हि | सर्वत्र | समवस्थितम् + ईश्वरम् |
| न | हिनस्ति + आत्मना + आत्मानं | ततो | याति | परां | गतिम् |"]

प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः ।
यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति ॥१३-३०॥

["| प्रकृत्य + एव | च | कर्माणि | क्रियमाणानि | सर्वशः |
| यः | पश्यति | तथा + आत्मानम् + अकर्तारं | स | पश्यति |"]

–: ॐ :–

যাবৎ সঞ্জায়তে কিঞ্চিৎ সত্ত্বং স্থাবরজঙ্গমম্ ।

ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞসংযোগাৎ তদ্বিদ্ধি ভরতর্ষভ ॥১৩-২৭॥

["| যাবৎ | সঞ্জায়তে | কিঞ্চিৎ | সত্ত্বং | স্থাবর + জঙ্গমম্ |
| ক্ষেত্র + ক্ষেত্র + জ্ঞ + সংযোগাৎ | তৎ + বিদ্ধি | ভরত + ঋষভ |"]

সমং সর্বেষু ভূতেষু তিষ্ঠন্তং পরমেশ্বরম্ ।

বিনশ্যৎস্ববিনশ্যন্তং যঃ পশ্যতি স পশ্যতি ॥১৩-২৮॥

["| সমং | সর্বেষু | ভূতেষু | তিষ্ঠন্ + তং | পরম + ঈশ্বরম্ |
| বিনশ্যৎসু + অবিনশ্যন্তং | যঃ | পশ্যতি | স | পশ্যতি |"]

সমং পশ্যন্ হি সর্বত্র সমবস্থিতমীশ্বরম্ ।

ন হিনস্ত্যাত্মনাত্মানং ততো যাতি পরাং গতিম্ ॥১৩-২৯॥

["| সমং | পশ্যন্ | হি | সর্বত্র | সমবস্থিতম্ + ঈশ্বরম্ |
| ন | হিনস্তি + আত্মনা + আত্মানং | ততো | যাতি | পরাং | গতিম্ |"]

প্রকৃত্যৈব চ কর্মাণি ক্রিয়মাণানি সর্বশঃ ।

যঃ পশ্যতি তথাত্মানমকর্তারং স পশ্যতি ॥১৩-৩০॥

["| প্রকৃত্য + এব | চ | কর্মাণি | ক্রিয়মাণানি | সর্বশঃ |
| যঃ | পশ্যতি | তথা + আত্মানম্ + অকর্তারং | স | পশ্যতি |"]

–: ॐ :–

यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति ।
तत एव च विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा ॥१३-३१॥

["| यदा | भूत + पृथक् + भावम् + एक + स्थम् + अनुपश्यति |
| तत | एव | च | विस्तारं | ब्रह्म | सम्पद्यते | तदा |"]

अनादित्वान्निर्गुणत्वात् परमात्मायमव्ययः ।
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥१३-३२॥

["| अनादित्वात् + निः + गुणत्वात् | परम + आत्मा + अयम् + अव्ययः |
| शरीर + स्थो + अपि | कौन्तेय | न | करोति | न | लिप्यते |"]

यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते ।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥१३-३३॥

["| यथा | सर्व + गतं | सौक्ष्म्यात् + आकाशं | न + उपलिप्यते |
| सर्वत्र + अवस्थितो | देहे | तथा + आत्मा | न + उपलिप्यते |"]

यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः ।
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ॥१३-३४॥

["| यथा | प्रकाशयति + एकः | कृत्स्नं | लोकम् + इमं | रविः |
| क्षेत्रं | क्षेत्री | तथा | कृत्स्नं | प्रकाशयति | भारत |"]

–: ওঁ :–

যদা ভূতপৃথগ্ভাবমেকস্থমনুপশ্যতি ।
তত এব চ বিস্তারং ব্রহ্ম সম্পদ্যতে তদা ॥১৩-৩১॥

["| যদা | ভূত + পৃথক্ + ভাবম্ + এক + স্থম্ + অনুপশ্যতি |
| তত | এব | চ | বিস্তারং | ব্রহ্ম | সম্পদ্যতে | তদা |"]

অনাদিত্বান্নির্গুণত্বাৎ পরমাত্মায়মব্যয়ঃ ।
শরীরস্থোঽপি কৌন্তেয় ন করোতি ন লিপ্যতে ॥১৩-৩২॥

["| অনাদিত্বাৎ + নিঃ + গুণত্বাৎ | পরম + আত্মা + অয়ম্ + অব্যয়ঃ |
| শরীর + স্থো + অপি | কৌন্তেয় | ন | করোতি | ন | লিপ্যতে |"]

যথা সর্বগতং সৌক্ষ্ম্যাদাকাশং নোপলিপ্যতে ।
সর্বত্রাবস্থিতো দেহে তথাত্মা নোপলিপ্যতে ॥১৩-৩৩॥

["| যথা | সর্ব + গতং | সৌক্ষ্ম্যাৎ + আকাশং | ন + উপলিপ্যতে |
| সর্বত্র + অবস্থিতো | দেহে | তথা + আত্মা | ন + উপলিপ্যতে |"]

যথা প্রকাশয়ত্যেকঃ কৃৎস্নং লোকমিমং রবিঃ ।
ক্ষেত্রং ক্ষেত্রী তথা কৃৎস্নং প্রকাশয়তি ভারত ॥১৩-৩৪॥

["| যথা | প্রকাশয়তি + একঃ | কৃৎস্নং | লোকম্ + ইমং | রবিঃ |
| ক্ষেত্রং | ক্ষেত্রী | তথা | কৃৎস্নং | প্রকাশয়তি | ভারত |"]

–: ॐ :–

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा ।
भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम् ॥१३-३५॥

["| क्षेत्र + क्षेत्र + ज्ञयोः + एवम् + अन्तरं | ज्ञान + चक्षुषा |
| भूत + प्रकृति + मोक्षं | च | ये | विदुः + यान्ति | ते | परम् |"]

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि
श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे
क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥१३॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | क्षेत्र + क्षेत्रज्ञ + विभाग + योगो | नाम | त्रयोदशो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞয়োরেবমন্তরং জ্ঞানচক্ষুষা ।
ভূতপ্রকৃতিমোক্ষং চ যে বিদুর্যান্তি তে পরম্ ॥১৩-৩৫॥

["| ক্ষেত্র + ক্ষেত্র + জ্ঞয়োঃ + এবম্ + অন্তরং | জ্ঞান + চক্ষুষা |
| ভূত + প্রকৃতি + মোক্ষং | চ | যে | বিদুঃ + যান্তি | তে | পরম্ |"]

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে
ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞবিভাগযোগো নাম ত্রয়োদশোঽধ্যায়ঃ ॥১৩॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | ক্ষেত্র + ক্ষেত্রজ্ঞ + বিভাগ + যোগো | নাম | ত্রয়োদশো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

चतुर्दशोऽध्यायः
गुणत्रयविभागयोग

श्रीभगवानुवाच :—
परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् ।
यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः ॥१४-०१॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | परं | भूयः | प्रवक्ष्यामि | ज्ञानानां | ज्ञानम् + उत्तमम् |
| यत् + ज्ञात्वा | मुनयः | सर्वे | परां | सिद्धिम् + इतो | गताः |"]

इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः ।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥१४-०२॥

["| इदं | ज्ञानम् + उपाश्रित्य | मम | साधर्म्यम् + आगताः |
| सर्गे + अपि | न + उपजायन्ते | प्रलये | न | व्यथन्ति | च |"]

–: ॐ :–

চতুর্দশোঽধ্যায়ঃ
গুণত্রয়বিভাগযোগ

শ্রীভগবানুবাচ :—

পরং ভূয়ঃ প্রবক্ষ্যামি জ্ঞানানাং জ্ঞানমুত্তমম্ ।

যজজ্ঞাত্বা মুনয়ঃ সর্বে পরাং সিদ্ধিমিতো গতাঃ ॥১৪-০১॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | পরং | ভূয়ঃ | প্রবক্ষ্যামি | জ্ঞানানাং | জ্ঞানম্ + উত্তমম্ |
| যৎ + জ্ঞাত্বা | মুনয়ঃ | সর্বে | পরাং | সিদ্ধিম্ + ইতো | গতাঃ |"]

ইদং জ্ঞানমুপাশ্রিত্য মম সাধর্ম্যমাগতাঃ ।

সর্গেঽপি নোপজায়ন্তে প্রলয়ে ন ব্যথন্তি চ ॥১৪-০২॥

["| ইদং | জ্ঞানম্ + উপাশ্রিত্য | মম | সাধর্ম্যম্ + আগতাঃ |
| সর্গে + অপি | ন + উপজায়ন্তে | প্রলয়ে | ন | ব্যথন্তি | চ |"]

–: ॐ :–

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन् गर्भं दधाम्यहम् ।
सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥१४-०३॥

["| मम | योनिः + महत् + ब्रह्म | तस्मिन् | गर्भं | दधामि + अहम् |
| सम्भवः | सर्व + भूतानां | ततो | भवति | भारत |"]

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः ।
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ॥१४-०४॥

["| सर्व + योनिषु | कौन्तेय | मूर्तयः | सम्भवन्ति | याः |
| तासां | ब्रह्म | महत् + योनिः + अहं | बीज + प्रदः | पिता |"]

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः ।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥१४-०५॥

["| सत्त्वं | रजः + तम | इति | गुणाः | प्रकृति + सम्भवाः |
| निबध्नन्ति | महा + बाहो | देहे | देहिनम् + अव्ययम् |"]

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात् प्रकाशकमनामयम् ।
सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ॥१४-०६॥

["| तत्र | सत्त्वं | निर्मलत्वात् | प्रकाशकम् + अनामयम् |
| सुख + सङ्गेन | बध्नाति | ज्ञान + सङ्गेन | च + अनघ |"]

–: ॐ :–

মম যোনির্মহদ্ব্রহ্ম তস্মিন্ গর্ভং দধাম্যহম্ ।

সম্ভবঃ সর্বভূতানাং ততো ভবতি ভারত ॥১৪-০৩॥

["| মম | যোনিঃ + মহৎ + ব্রহ্ম | তস্মিন্ | গর্ভং | দধামি + অহম্ |
| সম্ভবঃ | সর্ব + ভূতানাং | ততো | ভবতি | ভারত |"]

সর্বযোনিষু কৌন্তেয় মূর্তয়ঃ সম্ভবন্তি যাঃ ।

তাসাং ব্রহ্ম মহদ্যোনিরহং বীজপ্রদঃ পিতা ॥১৪-০৪॥

["| সর্ব + যোনিষু | কৌন্তেয় | মূর্তয়ঃ | সম্ভবন্তি | যাঃ |
| তাসাং | ব্রহ্ম | মহৎ + যোনিঃ + অহং | বীজ + প্রদঃ | পিতা |"]

সত্ত্বং রজস্তম ইতি গুণাঃ প্রকৃতিসম্ভবাঃ ।

নিবধ্নন্তি মহাবাহো দেহে দেহিনমব্যয়ম্ ॥১৪-০৫॥

["| সত্ত্বং | রজঃ + তম | ইতি | গুণাঃ | প্রকৃতি + সম্ভবাঃ |
| নিবধ্নন্তি | মহা + বাহো | দেহে | দেহিনম্ + অব্যয়ম্ |"]

তত্র সত্ত্বং নির্মলত্বাৎ প্রকাশকমনাময়ম্ ।

সুখসঙ্গেন বধ্নাতি জ্ঞানসঙ্গেন চানঘ ॥১৪-০৬॥

["| তত্র | সত্ত্বং | নির্মলত্বাৎ | প্রকাশকম্ + অনাময়ম্ |
| সুখ + সঙ্গেন | বধ্নাতি | জ্ঞান + সঙ্গেন | চ + অনঘ |"]

–: ॐ :–

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् ।
तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ॥१४-०७॥

["| रजो | राग + आत्मकं | विद्धि | तृष्णा + सङ्ग + समुद्भवम् |
| तत् + निबध्नाति | कौन्तेय | कर्म + सङ्गेन | देहिनम् |"]

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् ।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥१४-०८॥

["| तमः + तु + अज्ञान + जं | विद्धि | मोहनं | सर्व + देहिनाम् |
| प्रमाद + आलस्य + निद्राभिः + तत् + निबध्नाति | भारत |"]

सत्त्वं सुखे सञ्जयति रजः कर्मणि भारत ।
ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे सञ्जयत्युत ॥१४-०९॥

["| सत्त्वं | सुखे | सञ्जयति | रजः | कर्मणि | भारत |
| ज्ञानम् + आवृत्य | तु | तमः | प्रमादे | सञ्जयति + उत |"]

रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत ।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥१४-१०॥

["| रजः + तमः + च + अभिभूय | सत्त्वं | भवति | भारत |
| रजः | सत्त्वं | तमः + च + एव | तमः | सत्त्वं | रजः + तथा |"]

–: ॐ :–

রজো রাগাত্মকং বিদ্ধি তৃষ্ণাসঙ্গসমুদ্ভবম্ ।

তন্নিবধ্নাতি কৌন্তেয় কর্মসঙ্গেন দেহিনম্ ॥১৪-০৭॥

["| রজো | রাগ + আত্মকং | বিদ্ধি | তৃষ্ণা + সঙ্গ + সমুদ্ভবম্ |
| তৎ + নিবধ্নাতি | কৌন্তেয় | কর্ম + সঙ্গেন | দেহিনম্ |"]

তমস্ত্বজ্ঞানজং বিদ্ধি মোহনং সর্বদেহিনাম্ ।

প্রমাদালস্যনিদ্রাভিস্তন্নিবধ্নাতি ভারত ॥১৪-০৮॥

["| তমঃ + তু + অজ্ঞান + জং | বিদ্ধি | মোহনং | সর্ব + দেহিনাম্ |
| প্রমাদ + আলস্য + নিদ্রাভিঃ + তৎ + নিবধ্নাতি | ভারত |"]

সত্ত্বং সুখে সঞ্জয়তি রজঃ কর্মণি ভারত ।

জ্ঞানমাবৃত্য তু তমঃ প্রমাদে সঞ্জয়ত্যুত ॥১৪-০৯॥

["| সত্ত্বং | সুখে | সঞ্জয়তি | রজঃ | কর্মণি | ভারত |
| জ্ঞানম্ + আবৃত্য | তু | তমঃ | প্রমাদে | সঞ্জয়তি + উত |"]

রজস্তমশ্চাভিভূয় সত্ত্বং ভবতি ভারত ।

রজঃ সত্ত্বং তমশ্চৈব তমঃ সত্ত্বং রজস্তথা ॥১৪-১০॥

["| রজঃ + তমঃ + চ + অভিভূয় | সত্ত্বং | ভবতি | ভারত |
| রজঃ | সত্ত্বং | তমঃ + চ + এব | তমঃ | সত্ত্বং | রজঃ + তথা |"]

–: ॐ :–

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन् प्रकाश उपजायते ।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥१४-११॥

["| सर्व + द्वारेषु | देहे + अस्मिन् | प्रकाश | उपजायते |
| ज्ञानं | यदा | तदा | विद्यात्त + विवृद्धं | सत्त्वम् + इति + उत |"]

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा ।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ ॥१४-१२॥

["| लोभः | प्रवृत्तिः + आरम्भः | कर्मणाम् + अशमः | स्पृहा |
| रजसि + एतानि | जायन्ते | विवृद्धे | भरत + ऋषभ |"]

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च ।
तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥१४-१३॥

["| अप्रकाशो + अप्रवृत्तिः + च | प्रमादो | मोह | एव | च |
| तमसि + एतानि | जायन्ते | विवृद्धे | कुरु + नन्दन |"]

यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत् ।
तदोत्तमविदां लोकानमलान् प्रतिपद्यते ॥१४-१४॥

["| यदा | सत्त्वे | प्रवृद्धे | तु | प्रलयं | याति | देह + भृत् |
| तदा + उत्तम + विदां | लोकान् + अमलान् | प्रतिपद्यते |"]

–: ॐ :–

সর্বদ্বারেষু দেহেঽস্মিন্ প্রকাশ উপজায়তে ।

জ্ঞানং যদা তদা বিদ্যাদ্বিবৃদ্ধং সত্ত্বমিত্যুত ॥১৪-১১॥

["| সর্ব + দ্বারেষু | দেহে + অস্মিন্ | প্রকাশ | উপজায়তে |
| জ্ঞানং | যদা | তদা | বিদ্যাৎ + বিবৃদ্ধং | সত্ত্বম্ + ইতি + উত |"]

লোভঃ প্রবৃত্তিরারম্ভঃ কর্মণামশমঃ স্পৃহা ।

রজস্যেতানি জায়ন্তে বিবৃদ্ধে ভরতর্ষভ ॥১৪-১২॥

["| লোভঃ | প্রবৃত্তিঃ + আরম্ভঃ | কর্মণাম্ + অশমঃ | স্পৃহা |
| রজসি + এতানি | জায়ন্তে | বিবৃদ্ধে | ভরত + ঋষভ |"]

অপ্রকাশোঽপ্রবৃত্তিশ্চ প্রমাদো মোহ এব চ ।

তমস্যেতানি জায়ন্তে বিবৃদ্ধে কুরুনন্দন ॥১৪-১৩॥

["| অপ্রকাশো + অপ্রবৃত্তিঃ + চ | প্রমাদো | মোহ | এব | চ |
| তমসি + এতানি | জায়ন্তে | বিবৃদ্ধে | কুরু + নন্দন |"]

যদা সত্ত্বে প্রবৃদ্ধে তু প্রলয়ং যাতি দেহভৃৎ ।

তদোত্তমবিদাং লোকানমলান্ প্রতিপদ্যতে ॥১৪-১৪॥

["| যদা | সত্ত্বে | প্রবৃদ্ধে | তু | প্রলয়ং | যাতি | দেহ + ভৃৎ |
| তদা + উত্তম + বিদাং | লোকান্ + অমলান্ | প্রতিপদ্যতে |"]

–: ॐ :–

रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते ।
तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते ॥१४-१५॥

["| रजसि | प्रलयं | गत्वा | कर्म + सङ्गिषु | जायते |
| तथा | प्रलीनः + तमसि | मूढ + योनिषु | जायते |"]

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम् ।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥१४-१६॥

["| कर्मणः | सु + कृतस्य + आहुः | सात्त्विकं | निर्मलं | फलम् |
| रजसः + तु | फलं | दुःखम् + अज्ञानं | तमसः | फलम् |"]

सत्त्वात् सञ्जायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च ।
प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च ॥१४-१७॥

["| सत्त्वात् | सञ्जायते | ज्ञानं | रजसो | लोभ | एव | च |
| प्रमाद + मोहौ | तमसो | भवतो + अज्ञानम् + एव | च |"]

ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः ।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः ॥१४-१८॥

["| ऊर्ध्वं | गच्छन्ति | सत्त्व + स्था | मध्ये | तिष्ठन्ति | राजसाः |
| जघन्य + गुण + वृत्ति + स्था | अधो | गच्छन्ति | तामसाः |"]

–: ॐ :–

রজসি প্রলয়ং গত্বা কর্মসঙ্গিষু জায়তে ।

তথা প্রলীনস্তমসি মূঢ়যোনিষু জায়তে ॥১৪-১৫॥

["| রজসি | প্রলয়ং | গত্বা | কর্ম + সঙ্গিষু | জায়তে |
| তথা | প্রলীনঃ + তমসি | মূঢ় + যোনিষু | জায়তে |"]

কর্মণঃ সুকৃতস্যাহুঃ সাত্ত্বিকং নির্মলং ফলম্ ।

রজসস্তু ফলং দুঃখমজ্ঞানং তমসঃ ফলম্ ॥১৪-১৬॥

["| কর্মণঃ | সু + কৃতস্য + আহুঃ | সাত্ত্বিকং | নির্মলং | ফলম্ |
| রজসঃ + তু | ফলং | দুঃখম্ + অজ্ঞানং | তমসঃ | ফলম্ |"]

সত্ত্বাৎ সঞ্জায়তে জ্ঞানং রজসো লোভ এব চ ।

প্রমাদমোহৌ তমসো ভবতোঽজ্ঞানমেব চ ॥১৪-১৭॥

["| সত্ত্বাৎ | সঞ্জায়তে | জ্ঞানং | রজসো | লোভ | এব | চ |
| প্রমাদ + মোহৌ | তমসো | ভবতো + অজ্ঞানম্ + এব | চ |"]

ঊর্ধ্বং গচ্ছন্তি সত্ত্বস্থা মধ্যে তিষ্ঠন্তি রাজসাঃ ।

জঘন্যগুণবৃত্তিস্থা অধো গচ্ছন্তি তামসাঃ ॥১৪-১৮॥

["| ঊর্ধ্বং | গচ্ছন্তি | সত্ত্ব + স্থা | মধ্যে | তিষ্ঠন্তি | রাজসাঃ |
| জঘন্য + গুণ + বৃত্তি + স্থা | অধো | গচ্ছন্তি | তামসাঃ |"]

–: ॐ :–

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति ।
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ॥१४-१९॥

["| न + अन्यं | गुणेभ्यः | कर्तारं | यदा | द्रष्टा + अनुपश्यति |
| गुणेभ्यः + च | परं | वेत्ति | मत् + भावं | सो + अधिगच्छति |"]

गुणानेतानतीत्य त्रीन् देही देहसमुद्भवान् ।
जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥१४-२०॥

["| गुणान् + एतान् + अतीत्य | त्रीन् | देही | देह + समुद्भवान् |
| जन्म + मृत्यु + जरा + दुःखैः + विमुक्तो + अमृतम् + अश्नुते |"]

अर्जुन उवाच :—
कैर्लिङ्गैस्त्रीन् गुणानेतानतीतो भवति प्रभो ।
किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन् गुणानतिवर्तते ॥१४-२१॥

["| अर्जुन | उवाच | कैः + लिङ्गैः + त्रीन् | गुणान् + एतान् + अतीतो | भवति | प्रभो |
| किम + आचारः | कथं | च + एतान् + त्रीन् | गुणान् + अतिवर्तते |"]

–: ॐ :–

নান্যং গুণেভ্যঃ কর্তারং যদা দ্রষ্টানুপশ্যতি ।

গুণেভ্যশ্চ পরং বেত্তি মদ্ভাবং সোঽধিগচ্ছতি ॥১৪-১৯॥

["| ন + অন্যং | গুণেভ্যঃ | কর্তারং | যদা | দ্রষ্টা + অনুপশ্যতি |
| গুণেভ্যঃ + চ | পরং | বেত্তি | মৎ + ভাবং | সো + অধিগচ্ছতি |"]

গুণানেতানতীত্য ত্রীন্ দেহী দেহসমুদ্ভবান্ ।

জন্মমৃত্যুজরাদুঃখৈর্বিমুক্তোঽমৃতমশ্নুতে ॥১৪-২০॥

["| গুণান্ + এতান্ + অতীত্য | ত্রীন্ | দেহী | দেহ + সমুদ্ভবান্ |
| জন্ম + মৃত্যু + জরা + দুঃখৈঃ + বিমুক্তো + অমৃতম্ + অশ্নুতে |"]

অর্জুন উবাচ :—

কৈর্লিঙ্গৈস্ত্রীন্ গুণানেতানতীতো ভবতি প্রভো ।

কিমাচারঃ কথং চৈতাংস্ত্রীন্ গুণানতিবর্ততে ॥১৪-২১॥

["| অর্জুন | উবাচ | কৈঃ + লিঙ্গৈঃ + ত্রীন্ | গুণান্ + এতান্ + অতীতো | ভবতি | প্রভো |
| কিম + আচারঃ | কথং | চ + এতান্ + ত্রীন্ | গুণান্ + অতিবর্ততে |"]

–: ॐ :–

श्रीभगवानुवाच :—
प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव ।
न द्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति ॥१४-२२॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | प्रकाशं | च | प्रवृत्तिं | च | मोहम् + एव | च | पाण्डव |
| न | द्वेष्टि | सम्प्रवृत्तानि | न | निवृत्तानि | काङ्क्षति |"]

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते ।
गुणा वर्तन्त इत्येवं योऽवतिष्ठति नेङ्गते ॥१४-२३॥

["| उदासीन + वत् + आसीनो | गुणैः + यो | न | विचाल्यते |
| गुणा | वर्तन्त | इति + एवं | यो + अवतिष्ठति | न + इङ्गते |"]

समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः ।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः ॥१४-२४॥

["| सम + दुःख + सुखः | स्व + स्थः | सम + लोष्ट्र + अश्म + काञ्चनः |
| तुल्य + प्रिय + अप्रियो | धीरः + तुल्य + निन्दा + आत्म + संस्तुतिः |"]

–: ॐ :–

শ্রীভগবানুবাচ :—

প্রকাশং চ প্রবৃত্তিং চ মোহমেব চ পাণ্ডব ।

ন দ্বেষ্টি সম্প্রবৃত্তানি ন নিবৃত্তানি কাঙ্ক্ষতি ॥১৪-২২॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | প্রকাশং | চ | প্রবৃত্তিং | চ | মোহম্ + এব | চ | পাণ্ডব |
| ন | দ্বেষ্টি | সম্প্রবৃত্তানি | ন | নিবৃত্তানি | কাঙ্ক্ষতি |"]

উদাসীনবদাসীনো গুণৈর্যো ন বিচাল্যতে ।

গুণা বর্তন্ত ইত্যেবং যোঽবতিষ্ঠতি নেঙ্গতে ॥১৪-২৩॥

["| উদাসীন + বৎ + আসীনো | গুণৈঃ + যো | ন | বিচাল্যতে |
| গুণা | বর্তন্ত | ইতি + এবং | যো + অবতিষ্ঠতি | ন + ইঙ্গতে |"]

সমদুঃখসুখঃ স্বস্থঃ সমলোষ্ট্রাশ্মকাঞ্চনঃ ।

তুল্যপ্রিয়াপ্রিয়ো ধীরস্তুল্যনিন্দাত্মসংস্তুতিঃ ॥১৪-২৪॥

["| সম + দুঃখ + সুখঃ | স্ব + স্থঃ | সম + লোষ্ট্র + অশ্ম + কাঞ্চনঃ |
| তুল্য + প্রিয় + অপ্রিয়ো | ধীরঃ + তুল্য + নিন্দা + আত্ম + সংস্তুতিঃ |"]

–: ॐ :–

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः ।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ॥१४-२५॥

["| मान + अपमानयोः + तुल्यः + तुल्यो | मित्र + अरि + पक्षयोः |
| सर्व + आरम्भ + परित्यागी | गुण + अतीतः | स | उच्यते |"]

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते ।
स गुणान् समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥१४-२६॥

["| मां | च | यो + अव्यभिचारेण | भक्ति + योगेन | सेवते |
| स | गुणान् | समतीत्य + एतान् | ब्रह्म + भूयाय | कल्पते |"]

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च ।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च ॥१४-२७॥

["| ब्रह्मणो | हि | प्रतिष्ठा + अहम् + अमृतस्य + अव्ययस्य | च |
| शाश्वतस्य | च | धर्मस्य | सुखस्य + ऐकान्तिकस्य | च |"]

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि
श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे
गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | गुण + त्रय + विभाग + योगो | नाम | चतुर्दशो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

মানাপমানয়োস্তুল্যস্তুল্যো মিত্রারিপক্ষয়োঃ ।
সর্বারম্ভপরিত্যাগী গুণাতীতঃ স উচ্যতে ॥১৪-২৫॥

["| মান + অপমানয়োঃ + তুল্যঃ + তুল্যো | মিত্র + অরি + পক্ষয়োঃ |
| সর্ব + আরম্ভ + পরিত্যাগী | গুণ + অতীতঃ | স | উচ্যতে |"]

মাং চ যোঽব্যভিচারেণ ভক্তিযোগেন সেবতে ।
স গুণান্ সমতীত্যৈতান্ ব্রহ্মভূয়ায় কল্পতে ॥১৪-২৬॥

["| মাং | চ | যো + অব্যভিচারেণ | ভক্তি + যোগেন | সেবতে |
| স | গুণান্ | সমতীত্য + এতান্ | ব্রহ্ম + ভূয়ায় | কল্পতে |"]

ব্রহ্মণো হি প্রতিষ্ঠাহমমৃতস্যাব্যয়স্য চ ।
শাশ্বতস্য চ ধর্মস্য সুখস্যৈকান্তিকস্য চ ॥১৪-২৭॥

["| ব্রহ্মণো | হি | প্রতিষ্ঠা + অহম্ + অমৃতস্য + অব্যয়স্য | চ |
| শাশ্বতস্য | চ | ধর্মস্য | সুখস্য + ঐকান্তিকস্য | চ |"]

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে গুণত্রয়বিভাগযোগো নাম চতুর্দশোঽধ্যায়ঃ ॥১৪॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | গুণ + ত্রয় + বিভাগ + যোগো | নাম | চতুর্দশো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

पञ्चदशोऽध्यायः
पुरुषोत्तमयोग

श्रीभगवानुवाच :—
ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥१५-०१॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | ऊर्ध्व + मूलम् + अधः + शाखम् + अश्वत्थं | प्राहुः + अव्ययम् |
| छन्दांसि | यस्य | पर्णानि | यः + तं | वेद | स | वेद + वित् |"]

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा ; गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः ।
अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि ; कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके ॥१५-०२॥

["| अधः + च + ऊर्ध्वं | प्रसृताः + तस्य | शाखा | गुण + प्रवृद्धा | विषय + प्रवालाः |
| अधः + च | मूलानि + अनुसन्ततानि | कर्म + अनुबन्धीनि | मनुष्य + लोके |"]

–: ওঁ :–

পঞ্চদশোঽধ্যায়ঃ

পুরুষোত্তমযোগ

শ্রীভগবানুবাচ :—

ঊর্দ্ধ্বমূলমধঃশাখমশ্বত্থং প্রাহুরব্যয়ম্ ।

ছন্দাংসি যস্য পর্ণানি যস্তং বেদ স বেদবিৎ ॥১৫-০১॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | ঊর্দ্ধ্ব + মূলম্ + অধঃ + শাখম্ + অশ্বত্থং | প্রাহুঃ + অব্যয়ম্ |
| ছন্দাংসি | যস্য | পর্ণানি | যঃ + তং | বেদ | স | বেদ + বিৎ |"]

অধশ্চোর্দ্ধ্বং প্রসৃতাস্তস্য শাখা ; গুণপ্রবৃদ্ধা বিষয়প্রবালাঃ ।

অধশ্চ মূলান্যনুসন্ততানি ; কর্মানুবন্ধীনি মনুষ্যলোকে ॥১৫-০২॥

["| অধঃ + চ + ঊর্দ্ধ্বং | প্রসৃতাঃ + তস্য | শাখা | গুণ + প্রবৃদ্ধা | বিষয় + প্রবালাঃ |
| অধঃ + চ | মূলানি + অনুসন্ততানি | কর্ম + অনুবন্ধীনি | মনুষ্য + লোকে |"]

–: ॐ :–

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते ; नान्तो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा ।
अश्वत्थमेनं सुविरूढ़मूलम् ; असङ्गशस्त्रेण दृढ़ेन छित्त्वा ॥१५-०३॥

["| न | रूपम् + अस्य + इह | तथा + उपलभ्यते | न + अन्तो | न | च + आदिः + न | च | संप्रतिष्ठा |
| अश्वत्थम् + एनं | सु + विरूढ़ + मूलम् | असङ्ग + शस्त्रेण | दृढ़ेन | छित्त्वा |"]

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं ; यस्मिन् गता न निवर्तन्ति भूयः ।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये ; यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥१५-०४॥

["| ततः | पदं | तत् + परिमार्गितव्यं | यस्मिन् | गता | न | निवर्तन्ति | भूयः |
| तम् + एव | च + आद्यं | पुरुषं | प्रपद्ये | यतः | प्रवृत्तिः | प्रसृता | पुराणी |"]

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा ; अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः ।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैः ; गच्छन्त्यमूढ़ाः पदमव्ययं तत् ॥१५-०५॥

["| निः + मान + मोहा | जित + सङ्ग + दोषा | अध्यात्म + नित्या | विनिवृत्त + कामाः |
| द्वन्द्वैः + विमुक्ताः | सुख + दुःख + संज्ञैः | गच्छन्ति + अमूढ़ाः | पदम् + अव्ययं | तत् |"]

न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥१५-०६॥

["| न | तत् + भासयते | सूर्यो | न | शशाङ्को | न | पावकः |
| यत् + गत्वा | न | निवर्तन्ते | तत् + धाम | परमं | मम |"]

–: ॐ :–

ন রূপমস্যেহ তথোপলভ্যতে ; নান্তো ন চাদির্ন চ সংপ্রতিষ্ঠা ।

অশ্বত্থমেনং সুবিরূঢ়মূলম্ ; অসঙ্গশস্ত্রেণ দৃঢ়েন ছিত্ত্বা ॥১৫-০৩॥

["| ন | রূপম্ + অস্য + ইহ | তথা + উপলভ্যতে | ন + অন্তো | ন | চ + আদিঃ + ন | চ | সংপ্রতিষ্ঠা |
| অশ্বত্থম্ + এনং | সু + বিরূঢ় + মূলম্ | অসঙ্গ + শস্ত্রেণ | দৃঢ়েন | ছিত্ত্বা |"]

ততঃ পদং তৎপরিমার্গিতব্যং ; যস্মিন্ গতা ন নিবর্তন্তি ভূয়ঃ ।

তমেব চাদ্যং পুরুষং প্রপদ্যে ; যতঃ প্রবৃত্তিঃ প্রসৃতা পুরাণী ॥১৫-০৪॥

["| ততঃ | পদং | তৎ + পরিমার্গিতব্যং | যস্মিন্ | গতা | ন | নিবর্তন্তি | ভূয়ঃ |
| তম্ + এব | চ + আদ্যং | পুরুষং | প্রপদ্যে | যতঃ | প্রবৃত্তিঃ | প্রসৃতা | পুরাণী |"]

নির্মানমোহা জিতসঙ্গদোষা ; অধ্যাত্মনিত্যা বিনিবৃত্তকামাঃ ।

দ্বন্দ্বৈর্বিমুক্তাঃ সুখদুঃখসংজ্ঞৈঃ ; গচ্ছন্ত্যমূঢ়াঃ পদমব্যয়ং তৎ ॥১৫-০৫॥

["| নিঃ + মান + মোহা | জিত + সঙ্গ + দোষা | অধ্যাত্ম + নিত্যা | বিনিবৃত্ত + কামাঃ |
| দ্বন্দ্বৈঃ + বিমুক্তাঃ | সুখ + দুঃখ + সংজ্ঞৈঃ | গচ্ছন্তি + অমূঢ়াঃ | পদম্ + অব্যয়ং | তৎ |"]

ন তদ্ভাসয়তে সূর্যো ন শশাঙ্কো ন পাবকঃ ।

যদ্গত্বা ন নিবর্তন্তে তদ্ধাম পরমং মম ॥১৫-০৬॥

["| ন | তৎ + ভাসয়তে | সূর্যো | ন | শশাঙ্কো | ন | পাবকঃ |
| যৎ + গত্বা | ন | নিবর্তন্তে | তৎ + ধাম | পরমং | মম |"]

–: ॐ :–

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥१५-०७॥

["| मम + एव + अंशो | जीव + लोके | जीव + भूतः | सनातनः |
| मनः + षष्ठानि + इन्द्रियाणि | प्रकृति + स्थानि | कर्षति |"]

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ।
गृहित्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥१५-०८॥

["| शरीरं | यत् + अवाप्नोति | यत् + च + अपि + उत्क्रामति + ईश्वरः |
| गृहित्वा + एतानि | संयाति | वायुः + गन्धान् + इव + आशयात् |"]

श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च ।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥१५-०९॥

["| श्रोत्रं | चक्षुः | स्पर्शनं | च | रसनं | घ्राणम् + एव | च |
| अधिष्ठाय | मनः + च + अयं | विषयान् + उपसेवते |"]

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम् ।
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥१५-१०॥

["| उत्क्रामन्तं | स्थितं | वा + अपि | भुञ्जानं | वा | गुण + अन्वितम् |
| विमूढा | न + अनुपश्यन्ति | पश्यन्ति | ज्ञान + चक्षुषः |"]

–: ॐ :–

মমৈবাংশো জীবলোকে জীবভূতঃ সনাতনঃ ।
মনঃষষ্ঠানীন্দ্রিয়াণি প্রকৃতিস্থানি কর্ষতি ॥১৫-০৭॥

["| মম + এব + অংশো | জীব + লোকে | জীব + ভূতঃ | সনাতনঃ |
| মনঃ + ষষ্ঠানি + ইন্দ্রিয়াণি | প্রকৃতি + স্থানি | কর্ষতি |"]

শরীরং যদবাপ্নোতি যচ্চাপ্যুৎক্রামতীশ্বরঃ ।
গৃহীত্বৈতানি সংযাতি বায়ুর্গন্ধানিবাশয়াৎ ॥১৫-০৮॥

["| শরীরং | যৎ + অবাপ্নোতি | যৎ + চ + অপি + উৎক্রামতি + ঈশ্বরঃ |
| গৃহীত্বা + এতানি | সংযাতি | বায়ুঃ + গন্ধান্ + ইব + আশয়াৎ |"]

শ্রোত্রং চক্ষুঃ স্পর্শনং চ রসনং ঘ্রাণমেব চ ।
অধিষ্ঠায় মনশ্চায়ং বিষয়ানুপসেবতে ॥১৫-০৯॥

["| শ্রোত্রং | চক্ষুঃ | স্পর্শনং | চ | রসনং | ঘ্রাণম্ + এব | চ |
| অধিষ্ঠায় | মনঃ + চ + অয়ং | বিষয়ান্ + উপসেবতে |"]

উৎক্রামন্তং স্থিতং বাপি ভুঞ্জানং বা গুণান্বিতম্ ।
বিমূঢ়া নানুপশ্যন্তি পশ্যন্তি জ্ঞানচক্ষুষঃ ॥১৫-১০॥

["| উৎক্রামন্তং | স্থিতং | বা + অপি | ভুঞ্জানং | বা | গুণ + অন্বিতম্ |
| বিমূঢ়া | ন + অনুপশ্যন্তি | পশ্যন্তি | জ্ঞান + চক্ষুষঃ |"]

–: ॐ :–

यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् ।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः ॥१५-११॥

["| यतन्तो | योगिनः + च + एनं | पश्यन्ति + आत्मनि + अवस्थितम् |
| यतन्तो + अपि + अकृत + आत्मानो | न + एनं | पश्यन्ति + अचेतसः |"]

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥१५-१२॥

["| यत् + आदित्य + गतं | तेजो | जगत् + भासयते + अखिलम् |
| यत् + चन्द्रमसि | यत् + च + अग्नौ | तत् + तेजो | विद्धि | मामकम् |"]

गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा ।
पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः ॥१५-१३॥

["| गाम् + आविश्य | च | भूतानि | धारयामि + अहम् + ओजसा |
| पुष्णामि | च + ऑषधीः | सर्वाः | सोमो | भूत्वा | रस + आत्मकः |"]

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः ।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥१५-१४॥

["| अहं | वैश्वानरो | भूत्वा | प्राणिनां | देहम् + आश्रितः |
| प्राण + अपान + समायुक्तः | पचामि + अन्नं | चतुः + विधम् |"]

–: ॐ :–

যতন্তো যোগিনশ্চৈনং পশ্যন্ত্যাত্মন্যবস্থিতম্ ।

যতন্তোঽপ্যকৃতাত্মানো নৈনং পশ্যন্ত্যচেতসঃ ॥১৫-১১॥

["| যতন্তো | যোগিনঃ + চ + এনং | পশ্যন্তি + আত্মনি + অবস্থিতম্ |
| যতন্তো + অপি + অকৃত + আত্মানো | ন + এনং | পশ্যন্তি + অচেতসঃ |"]

যদাদিত্যগতং তেজো জগদ্ভাসয়তেঽখিলম্ ।

যচ্চন্দ্রমসি যচ্চাগ্নৌ তত্তেজো বিদ্ধি মামকম্ ॥১৫-১২॥

["| যৎ + আদিত্য + গতং | তেজো | জগৎ + ভাসয়তে + অখিলম্ |
| যৎ + চন্দ্রমসি | যৎ + চ + অগ্নৌ | তৎ + তেজো | বিদ্ধি | মামকম্ |"]

গামাবিশ্য চ ভূতানি ধারয়াম্যহমোজসা ।

পুষ্ণামি চৌষধীঃ সর্বাঃ সোমো ভূত্বা রসাত্মকঃ ॥১৫-১৩॥

["| গাম্ + আবিশ্য | চ | ভূতানি | ধারয়ামি + অহম্ + ওজসা |
| পুষ্ণামি | চ + ঔষধীঃ | সর্বাঃ | সোমো | ভূত্বা | রস + আত্মকঃ |"]

অহং বৈশ্বানরো ভূত্বা প্রাণিনাং দেহমাশ্রিতঃ ।

প্রাণাপানসমাযুক্তঃ পচাম্যন্নং চতুর্বিধম্ ॥১৫-১৪॥

["| অহং | বৈশ্বানরো | ভূত্বা | প্রাণিনাং | দেহম্ + আশ্রিতঃ |
| প্রাণ + অপান + সমাযুক্তঃ | পচামি + অন্নং | চতুঃ + বিধম্ |"]

–: ॐ :–

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो ; मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो ; वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥१५-१५॥

["| सर्वस्य | च + अहं | हृदि | सन्निविष्टो | मत्तः | स्मृतिः + ज्ञानम् + अपोहनं | च |
| वेदैः + च | सर्वैः + अहम् + एव | वेद्यो | वेदान्त + कृत् + वेद + वित् + एव | च + अहम् |"]

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च ।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥१५-१६॥

["| द्वौ + इमौ | पुरुषौ | लोके | क्षरः + च + अक्षर | एव | च |
| क्षरः | सर्वाणि | भूतानि | कूट + स्थो + अक्षर | उच्यते |"]

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥१५-१७॥

["| उत्तमः | पुरुषः + तु + अन्यः | परम + आत्मा + इति + उदाहृतः |
| यो | लोक + त्रयम् + आविश्य | बिभर्ति + अव्यय | ईश्वरः |"]

यस्मात् क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः ।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ॥१५-१८॥

["| यस्मात् | क्षरम् + अतीतो + अहम् + अक्षरात् + अपि | च + उत्तमः |
| अतो + अस्मि | लोके | वेदे | च | प्रथितः | पुरुष + उत्तमः |"]

–: ॐ :–

সর্বস্য চাহং হৃদি সন্নিবিষ্টো ; মত্তঃ স্মৃতির্জ্ঞানমপোহনং চ ।

বেদৈশ্চ সর্বৈরহমেব বেদ্যো ; বেদান্তকৃদ্বেদবিদেব চাহম্ ॥১৫-১৫॥

["| সর্বস্য | চ + অহং | হৃদি | সন্নিবিষ্টো | মত্তঃ | স্মৃতিঃ + জ্ঞানম্ + অপোহনং | চ |
| বেদৈঃ + চ | সর্বৈঃ + অহম্ + এব | বেদ্যো | বেদান্ত + কৃৎ + বেদ + বিৎ + এব | চ + অহম্ |"]

দ্বাবিমৌ পুরুষৌ লোকে ক্ষরশ্চাক্ষর এব চ ।

ক্ষরঃ সর্বাণি ভূতানি কূটস্থোঽক্ষর উচ্যতে ॥১৫-১৬॥

["| দ্বৌ + ইমৌ | পুরুষৌ | লোকে | ক্ষরঃ + চ + অক্ষর | এব | চ |
| ক্ষরঃ | সর্বাণি | ভূতানি | কূট + স্থো + অক্ষর | উচ্যতে |"]

উত্তমঃ পুরুষস্ত্বন্যঃ পরমাত্মেত্যুদাহৃতঃ ।

যো লোকত্রয়মাবিশ্য বিভর্ত্যব্যয় ঈশ্বরঃ ॥১৫-১৭॥

["| উত্তমঃ | পুরুষঃ + তু + অন্যঃ | পরম + আত্মা + ইতি + উদাহৃতঃ |
| যো | লোক + ত্রয়ম্ + আবিশ্য | বিভর্তি + অব্যয় | ঈশ্বরঃ |"]

যস্মাৎ ক্ষরমতীতোঽহমক্ষরাদপি চোত্তমঃ ।

অতোঽস্মি লোকে বেদে চ প্রথিতঃ পুরুষোত্তমঃ ॥১৫-১৮॥

["| যস্মাৎ | ক্ষরম্ + অতীতো + অহম্ + অক্ষরাৎ + অপি | চ + উত্তমঃ |
| অতো + অস্মি | লোকে | বেদে | চ | প্রথিতঃ | পুরুষ + উত্তমঃ |"]

–: ॐ :–

योमामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम् ।
स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत ॥१५-१९॥

["| यो | माम् + एवम् + असंमूढो | जानाति | पुरुष + उत्तमम् |
| स | सर्व + वित् + भजति | मां | सर्व + भावेन | भारत |"]

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान् स्यात् कृतकृत्यश्च भारत ॥१५-२०॥

["| इति | गुह्य + तमं | शास्त्रम् + इदम् + उक्तं | मया + अनघ |
| एतत् + बुद्ध्वा | बुद्धि + मान् | स्यात् | कृत + कृत्यः + च | भारत |"]

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि
श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः॥१५॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | पुरुष + उत्तम + योगो | नाम | पञ्चदशो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

যো মামেবমসংমূঢ়ো জানাতি পুরুষোত্তমম্ ।
স সর্ববিদ্ভজতি মাং সর্বভাবেন ভারত ॥১৫-১৯॥

["| যো | মাম + এবম + অসংমূঢ়ো | জানাতি | পুরুষ + উত্তমম্ |
| স | সর্ব + বিৎ + ভজতি | মাং | সর্ব + ভাবেন | ভারত |"]

ইতি গুহ্যতমং শাস্ত্রমিদমুক্তং ময়ানঘ ।
এতদ্‌বুদ্ধা বুদ্ধিমান্ স্যাৎ কৃতকৃত্যশ্চ ভারত ॥১৫-২০॥

["| ইতি | গুহ্য + তমং | শাস্ত্রম্ + ইদম্ + উক্তং | ময়া + অনঘ |
| এতৎ + বুদ্ধা | বুদ্ধি + মান্ | স্যাৎ | কৃত + কৃত্যঃ + চ | ভারত |"]

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি
শ্রীমদ্ভগবদ্‌গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে
পুরুষোত্তমযোগো নাম পঞ্চদশোঽধ্যায়ঃ ॥১৫॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | পুরুষ + উত্তম + যোগো | নাম | পঞ্চদশো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

षोड़शोऽध्यायः
दैवासुरसम्पद्विभागयोग

श्रीभगवानुवाच :—
अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥१६-०१॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | अभयं | सत्त्व + संशुद्धिः + ज्ञान + योग + व्यवस्थितिः |
| दानं | दमः + च | यज्ञः + च | स्वाध्यायः + तप | आर्जवम् |"]

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥१६-०२॥

["| अहिंसा | सत्यम् + अक्रोधः + त्यागः | शान्तिः + अपैशुनम् |
| दया | भूतेषु + अलोलुप्त्वं | मार्दवं | ह्रीः + अचापलम् |"]

–: ॐ :–

ষোড়শোঽধ্যায়ঃ
দৈবাসুরসম্পদ্বিভাগযোগ

শ্রীভগবানুবাচ :—

অভয়ং সত্ত্বসংশুদ্ধির্জ্ঞানযোগব্যবস্থিতিঃ ।

দানং দমশ্চ যজ্ঞশ্চ স্বাধ্যায়স্তপ আর্জবম্ ॥১৬-০১॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | অভয়ং | সত্ত্ব + সংশুদ্ধিঃ + জ্ঞান + যোগ + ব্যবস্থিতিঃ |
| দানং | দমঃ + চ | যজ্ঞঃ + চ | স্বাধ্যায়ঃ + তপ | আর্জবম্ |"]

অহিংসা সত্যমক্রোধস্ত্যাগঃ শান্তিরপৈশুনম্ ।

দয়া ভূতেষ্বলোলুপ্ত্বং মার্দবং হ্রীরচাপলম্ ॥১৬-০২॥

["| অহিংসা | সত্যম্ + অক্রোধঃ + ত্যাগঃ | শান্তিঃ + অপৈশুনম্ |
| দয়া | ভূতেষু + অলোলুপ্ত্বং | মার্দবং | হ্রীঃ + অচাপলম্ |"]

–: ॐ :–

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता ।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥१६-०३॥

["| तेजः | क्षमा | धृतिः | शौचम् + अद्रोहो | न + अति + मानिता |
| भवन्ति | सम्पदं | दैवीम् + अभिजातस्य | भारत |"]

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च ।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम् ॥१६-०४॥

["| दम्भो | दर्पो + अभिमानः + च | क्रोधः | पारुष्यम् + एव | च |
| अज्ञानं | च + अभिजातस्य | पार्थ | सम्पदम् + आसुरीम् |"]

दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।
मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥१६-०५॥

["| दैवी | सम्पत् + विमोक्षाय | निबन्धाय + आसुरी | मता |
| मा | शुचः | सम्पदं | दैवीम + अभिजातो + असि | पाण्डव |"]

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन् दैव आसुर एव च ।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥१६-०६॥

["| द्वौ | भूत + सर्गौ | लोके + अस्मिन् | दैव | आसुर | एव | च |
| दैवो | विस्तरशः | प्रोक्त | आसुरं | पार्थ | मे | शृणु |"]

–: ॐ :–

তেজঃ ক্ষমা ধৃতিঃ শৌচমদ্রোহো নাতিমানিতা ।

ভবন্তি সম্পদং দৈবীমভিজাতস্য ভারত ॥১৬-০৩॥

["| তেজঃ | ক্ষমা | ধৃতিঃ | শৌচম্ + অদ্রোহো | ন + অতি + মানিতা |
| ভবন্তি | সম্পদং | দৈবীম্ + অভিজাতস্য | ভারত |"]

দম্ভো দর্পোঽভিমানশ্চ ক্রোধঃ পারুষ্যমেব চ ।

অজ্ঞানং চাভিজাতস্য পার্থ সম্পদমাসুরীম্ ॥১৬-০৪॥

["| দম্ভো | দর্পো + অভিমানঃ + চ | ক্রোধঃ | পারুষ্যম্ + এব | চ |
| অজ্ঞানং | চ + অভিজাতস্য | পার্থ | সম্পদম্ + আসুরীম্ |"]

দৈবী সম্পদ্বিমোক্ষায় নিবন্ধায়াসুরী মতা ।

মা শুচঃ সম্পদং দৈবীমভিজাতোঽসি পাণ্ডব ॥১৬-০৫॥

["| দৈবী | সম্পৎ + বিমোক্ষায় | নিবন্ধায় + আসুরী | মতা |
| মা | শুচঃ | সম্পদং | দৈবীম্ + অভিজাতো + অসি | পাণ্ডব |"]

দ্বৌ ভূতসর্গৌ লোকেঽস্মিন্ দৈব আসুর এব চ ।

দৈবো বিস্তরশঃ প্রোক্ত আসুরং পার্থ মে শৃণু ॥১৬-০৬॥

["| দ্বৌ | ভূত + সর্গৌ | লোকে + অস্মিন্ | দৈব | আসুর | এব | চ |
| দৈবো | বিস্তরশঃ | প্রোক্ত | আসুরং | পার্থ | মে | শৃণু |"]

–: ॐ :–

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः ।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते ॥१६-०७॥

["| प्रवृत्तिं | च | निवृत्तिं | च | जना | न | विदुः + आसुराः |
| न | शौचं | न + अपि | च + आचारो | न | सत्यं | तेषु | विद्यते |"]

असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ।
अपरस्परसम्भूतं किमन्यत् कामहैतुकम् ॥१६-०८॥

["| असत्यम् + अप्रतिष्ठं | ते | जगत् + आहुः + अनीश्वरम् |
| अपरस्पर + सम्भूतं | किम् + अन्यत् | काम + हैतुकम् |"]

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ।
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ॥१६-०९॥

["| एतां | दृष्टिम् + अवष्टभ्य | नष्ट + आत्मानो + अल्प + बुद्धयः |
| प्रभवन्ति + उग्र + कर्माणः | क्षयाय | जगतो + अहिताः |"]

काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः ।
मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान् प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः ॥१६-१०॥

["| कामम् + आश्रित्य | दुष्पूरं | दम्भ + मान + मद + अन्विताः |
| मोहात् + गृहीत्वा + सत् + ग्राहान् | प्रवर्तन्ते + अशुचि + व्रताः |"]

–: ॐ :–

প্রবৃত্তিং চ নিবৃত্তিং চ জনা ন বিদুরাসুরাঃ ।

ন শৌচং নাপি চাচারো ন সত্যং তেষু বিদ্যতে ॥১৬-০৭॥

["| প্রবৃত্তিং | চ | নিবৃত্তিং | চ | জনা | ন | বিদুঃ + আসুরাঃ |
| ন | শৌচং | ন + অপি | চ + আচারো | ন | সত্যং | তেষু | বিদ্যতে |"]

অসত্যমপ্রতিষ্ঠং তে জগদাহুরনীশ্বরম্ ।

অপরস্পরসম্ভূতং কিমন্যৎ কামহৈতুকম্ ॥১৬-০৮॥

["| অসত্যম্ + অপ্রতিষ্ঠং | তে | জগৎ + আহুঃ + অনীশ্বরম্ |
| অপরস্পর + সম্ভূতং | কিম্ + অন্যৎ | কাম + হৈতুকম্ |"]

এতাং দৃষ্টিমবষ্টভ্য নষ্টাত্মানোঽল্পবুদ্ধয়ঃ ।

প্রভবন্ত্যুগ্রকর্মাণঃ ক্ষয়ায় জগতোঽহিতাঃ ॥১৬-০৯॥

["| এতাং | দৃষ্টিম্ + অবষ্টভ্য | নষ্ট + আত্মানো + অল্প + বুদ্ধয়ঃ |
| প্রভবন্তি + উগ্র + কর্মাণঃ | ক্ষয়ায় | জগতো + অহিতাঃ |"]

কামমাশ্রিত্য দুষ্পূরং দম্ভমানমদান্বিতাঃ ।

মোহাদ্গৃহীত্বাসদ্গ্রাহান্ প্রবর্তন্তেঽশুচিব্রতাঃ ॥১৬-১০॥

["| কামম্ + আশ্রিত্য | দুষ্পূরং | দম্ভ + মান + মদ + অন্বিতাঃ |
| মোহাৎ + গৃহীত্বা + অসৎ + গ্রাহান্ | প্রবর্তন্তে + অশুচি + ব্রতাঃ |"]

–: ॐ :–

चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः ।
कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥१६-११॥

["| चिन्ताम् + अपरिमेयां | च | प्रलय + अन्ताम् + उपाश्रिताः |
| काम + उपभोग + परमा | एतावत् + इति | निश्चिताः |"]

आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः ।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान् ॥१६-१२॥

["| आशा + पाश + शतैः + बद्धाः | काम + क्रोध + परायणाः |
| ईहन्ते | काम + भोग + अर्थम् + अन्यायेन + अर्थ + सञ्चयान् |"]

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् ।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ॥१६-१३॥

["| इदम् + अद्य | मया | लब्धम् + इमं | प्राप्स्ये | मनो + रथम् |
| इदम् + अस्ति + इदम् + अपि | मे | भविष्यति | पुनः + धनम् |"]

असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि ।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी ॥१६-१४॥

["| असौ | मया | हतः | शत्रुः + हनिष्ये | च + अपरान् + अपि |
| ईश्वरो + अहम् + अहं | भोगी | सिद्धो + अहं | बल + वान् | सुखी |"]

–: ॐ :–

চিন্তামপরিমেয়াং চ প্রলয়ান্তামুপাশ্রিতাঃ ।

কামোপভোগপরমা এতাবদিতি নিশ্চিতাঃ ॥১৬-১১॥

["| চিন্তাম্ + অপরিমেয়াং | চ | প্রলয় + অন্তাম্ + উপাশ্রিতাঃ |
| কাম + উপভোগ + পরমা | এতাবৎ + ইতি | নিশ্চিতাঃ |"]

আশাপাশশতৈর্বদ্ধাঃ কামক্রোধপরায়ণাঃ ।

ঈহন্তে কামভোগার্থমন্যায়েনার্থসঞ্চয়ান্ ॥১৬-১২॥

["| আশা + পাশ + শতৈঃ + বদ্ধাঃ | কাম + ক্রোধ + পরায়ণাঃ |
| ঈহন্তে | কাম + ভোগ + অর্থম্ + অন্যায়েন + অর্থ + সঞ্চয়ান্ |"]

ইদমদ্য ময়া লব্ধমিমং প্রাপ্স্যে মনোরথম্ ।

ইদমস্তীদমপি মে ভবিষ্যতি পুনর্ধনম্ ॥১৬-১৩॥

["| ইদম্ + অদ্য | ময়া | লব্ধম্ + ইমং | প্রাপ্স্যে | মনো + রথম্ |
| ইদম্ + অস্তি + ইদম্ + অপি | মে | ভবিষ্যতি | পুনঃ + ধনম্ |"]

অসৌ ময়া হতঃ শত্রুর্হনিষ্যে চাপরানপি ।

ঈশ্বরোঽহমহং ভোগী সিদ্ধোঽহং বলবান্ সুখী ॥১৬-১৪॥

["| অসৌ | ময়া | হতঃ | শত্রুঃ + হনিষ্যে | চ + অপরান্ + অপি |
| ঈশ্বরো + অহম্ + অহং | ভোগী | সিদ্ধো + অহং | বল + বান্ | সুখী |"]

–: ॐ :–

आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया ।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः ॥१६-१५॥

["| आढ्यो + अभिजन + वान् + अस्मि | को + अन्यो + अस्ति | सदृशो | मया |
| यक्ष्ये | दास्यामि | मोदिष्य | इति + अज्ञान + विमोहिताः |"]

अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः ।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥१६-१६॥

["| अनेक + चित्त + विभ्रान्ता | मोह + जाल + समावृताः |
| प्रसक्ताः | काम + भोगेषु | पतन्ति | नरके + अशुचौ |"]

आत्मसम्भाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः ।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम् ॥१६-१७॥

["| आत्म + सम्भाविताः | स्तब्धा | धन + मान + मद + अन्विताः |
| यजन्ते | नाम + यज्ञैः + ते | दम्भेन + अविधि + पूर्वकम् |"]

अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः ।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः ॥१६-१८॥

["| अहङ्कारं | बलं | दर्पं | कामं | क्रोधं | च | संश्रिताः |
| माम् + आत्म + पर + देहेषु | प्रद्विषन्तो + अभ्यसूयकाः |"]

–: ॐ :–

অঢ্যোঽভিজনবানস্মি কোঽন্যোঽস্তি সদৃশো ময়া ।

যক্ষ্যে দাস্যামি মোদিষ্য ইত্যজ্ঞানবিমোহিতাঃ ॥১৬-১৫॥

["| অঢ্যো + অভিজন + বান্ + অস্মি | কো + অন্যো + অস্তি | সদৃশো | ময়া |
| যক্ষ্যে | দাস্যামি | মোদিষ্য | ইতি + অজ্ঞান + বিমোহিতাঃ |"]

অনেকচিত্তবিভ্রান্তা মোহজালসমাবৃতাঃ ।

প্রসক্তাঃ কামভোগেষু পতন্তি নরকেঽশুচৌ ॥১৬-১৬॥

["| অনেক + চিত্ত + বিভ্রান্তা | মোহ + জাল + সমাবৃতাঃ |
| প্রসক্তাঃ | কাম + ভোগেষু | পতন্তি | নরকে + অশুচৌ |"]

আত্মসম্ভাবিতাঃ স্তব্ধা ধনমানমদান্বিতাঃ ।

যজন্তে নামযজ্ঞৈস্তে দম্ভেনাবিধিপূর্বকম্ ॥১৬-১৭॥

["| আত্ম + সম্ভাবিতাঃ | স্তব্ধা | ধন + মান + মদ + অন্বিতাঃ |
| যজন্তে | নাম + যজ্ঞৈঃ + তে | দম্ভেন + অবিধি + পূর্বকম্ |"]

অহঙ্কারং বলং দর্পং কামং ক্রোধং চ সংশ্রিতাঃ ।

মামাত্মপরদেহেষু প্রদ্বিষন্তোঽভ্যসূয়কাঃ ॥১৬-১৮॥

["| অহঙ্কারং | বলং | দর্পং | কামং | ক্রোধং | চ | সংশ্রিতাঃ |
| মাম্ + আত্ম + পর + দেহেষু | প্রদ্বিষন্তো + অভ্যসূয়কাঃ |"]

–: ॐ :–

तानहं द्विषतः क्रुरान् संसारेषु नराधमान् ।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥१६-१९॥

["| तान् + अहं | द्विषतः | क्रुरान् | संसारेषु | नर + अधमान् |
| क्षिपामि + अजस्रम् + अशुभान् + आसुरीषु + एव | योनिषु |"]

आसुरीं योनिमापन्ना मूढ़ा जन्मनि जन्मनि ।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् ॥१६-२०॥

["| आसुरीं | योनिम् + आपन्ना | मूढ़ा | जन्मनि | जन्मनि |
| माम् + अप्राप्य + एव | कौन्तेय | ततो | यान्ति + अधमां | गतिम् |"]

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥१६-२१॥

["| त्रि + विधं | नरकस्य + इदं | द्वारं | नाशनम् + आत्मनः |
| कामः | क्रोधः + तथा | लोभः + तस्मात् + एतत् + त्रयं | त्यजेत् |"]

एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः ।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम् ॥१६-२२॥

["| एतैः + विमुक्तः | कौन्तेय | तमो + द्वारैः + त्रिभिः + नरः |
| आचरति + आत्मनः | श्रेयः + ततो | याति | परां | गतिम् |"]

–: ॐ :–

তানহং দ্বিষতঃ ক্রুরান্ সংসারেষু নরাধমান্ ।

ক্ষিপাম্যজস্রমশুভানাসুরীষ্বেব যোনিষু ॥১৬-১৯॥

["| তান্ + অহং | দ্বিষতঃ | ক্রুরান্ | সংসারেষু | নর + অধমান্ |
| ক্ষিপামি + অজস্রম্ + অশুভান্ + আসুরীষু + এব | যোনিষু |"]

আসুরীং যোনিমাপন্না মূঢ়া জন্মনি জন্মনি ।

মামপ্রাপ্যৈব কৌন্তেয় ততো যান্ত্যধমাং গতিম্ ॥১৬-২০॥

["| আসুরীং | যোনিম্ + আপন্না | মূঢ়া | জন্মনি | জন্মনি |
| মাম্ + অপ্রাপ্য + এব | কৌন্তেয় | ততো | যান্তি + অধমাং | গতিম্ |"]

ত্রিবিধং নরকস্যেদং দ্বারং নাশনমাত্মনঃ ।

কামঃ ক্রোধস্তথা লোভস্তস্মাদেতত্রয়ং ত্যজেৎ ॥১৬-২১॥

["| ত্রি + বিধং | নরকস্য + ইদং | দ্বারং | নাশনম্ + আত্মনঃ |
| কামঃ | ক্রোধঃ + তথা | লোভঃ + তস্মাৎ + এতৎ + ত্রয়ং | ত্যজেৎ |"]

এতৈর্বিমুক্তঃ কৌন্তেয় তমোদ্বারৈস্ত্রিভির্নরঃ ।

আচরত্যাত্মনঃ শ্রেয়স্ততো যাতি পরাং গতিম্ ॥১৬-২২॥

["| এতৈঃ + বিমুক্তঃ | কৌন্তেয় | তমো + দ্বারৈঃ + ত্রিভিঃ + নরঃ |
| আচরতি + আত্মনঃ | শ্রেয়ঃ + ততো | যাতি | পরাং | গতিম্ |"]

–: ॐ :–

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥१६-२३॥

["| यः | शास्त्र + विधिम् + उत्सृज्य | वर्तते | काम + कारतः |
| न | स | सिद्धिम् + अवाप्नोति | न | सुखं | न | परां | गतिम् |"]

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥१६-२४॥

["| तस्मात् + शास्त्रं | प्रमाणं | ते | कार्य + अकार्य + व्यवस्थितौ |
| ज्ञात्वा | शास्त्र + विधान + उक्तं | कर्म | कर्तुम् + इह + अर्हसि |"]

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि
श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे
दैवासुरसम्पद्विभागयोगो नाम षोड़शोऽध्यायः॥१६॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | दैव + असुर + सम्पद् + विभाग + योगो | नाम | षोड़शो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

যঃ শাস্ত্রবিধিমুৎসৃজ্য বর্ততে কামকারতঃ ।
ন স সিদ্ধিমবাপ্নোতি ন সুখং ন পরাং গতিম্ ॥১৬-২৩॥

["| যঃ | শাস্ত্র + বিধিম্ + উৎসৃজ্য | বর্ততে | কাম + কারতঃ |
| ন | স | সিদ্ধিম্ + অবাপ্নোতি | ন | সুখং | ন | পরাং | গতিম্ |"]

তস্মাচ্ছাস্ত্রং প্রমাণং তে কার্যাকার্যব্যবস্থিতৌ ।
জ্ঞাত্বা শাস্ত্রবিধানোক্তং কর্ম কর্তুমিহার্হসি ॥১৬-২৪॥

["| তস্মাৎ + শাস্ত্রং | প্রমাণং | তে | কার্য + অকার্য + ব্যবস্থিতৌ |
| জ্ঞাত্বা | শাস্ত্র + বিধান + উক্তং | কর্ম | কর্তুম্ + ইহ + অর্হসি |"]

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে
দৈবাসুরসম্পদ্বিভাগযোগো নাম ষোড়শোঽধ্যায়ঃ ॥১৬॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | দৈব + অসুর + সম্পদ্ + বিভাগ + যোগো | নাম | ষোড়শো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

सप्तदशोऽध्यायः
श्रद्धात्रयविभागयोग

अर्जुन उवाच :—

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः ।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः ॥१७-०१॥

["| अर्जुन | उवाच | ये | शास्त्र + विधिम् + उत्सृज्य | यजन्ते | श्रद्धया + अन्विताः |
| तेषां | निष्ठा | तु | का | कृष्ण | सत्त्वम् + आहो | रजः + तमः |"]

श्रीभगवानुवाच :—

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा ।
सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु ॥१७-०२॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | त्रि + विधा | भवति | श्रद्धा | देहिनां | सा | स्व + भाव + जा |
| सात्त्विकी | राजसी | च + एव | तामसी | च + इति | तां | शृणु |"]

–: ॐ :–

সপ্তদশোঽধ্যায়ঃ
শ্রদ্ধাত্রয়বিভাগযোগ

অর্জুন উবাচ :—

যে শাস্ত্রবিধিমুৎসৃজ্য যজন্তে শ্রদ্ধয়ান্বিতাঃ ।

তেষাং নিষ্ঠা তু কা কৃষ্ণ সত্ত্বমাহো রজস্তমঃ ॥১৭-০১॥

["| অর্জুন | উবাচ | যে | শাস্ত্র + বিধিম্ + উৎসৃজ্য | যজন্তে | শ্রদ্ধয়া + অন্বিতাঃ |
| তেষাং | নিষ্ঠা | তু | কা | কৃষ্ণ | সত্ত্বম্ + আহো | রজঃ + তমঃ |"]

শ্রীভগবানুবাচ :—

ত্রিবিধা ভবতি শ্রদ্ধা দেহিনাং সা স্বভাবজা ।

সাত্ত্বিকী রাজসী চৈব তামসী চেতি তাং শৃণু ॥১৭-০২॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | ত্রি + বিধা | ভবতি | শ্রদ্ধা | দেহিনাং | সা | স্ব + ভাব + জা |
| সাত্ত্বিকী | রাজসী | চ + এব | তামসী | চ + ইতি | তাং | শৃণু |"]

–: ॐ :–

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत ।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः ॥१७-०३॥

["| सत्त्व + अनुरूपा | सर्वस्य | श्रद्धा | भवति | भारत |
| श्रद्धामयो + अयं | पुरुषो | यो | यत् + श्रद्धः | स | एव | सः |"]

यजन्ते सात्त्विका देवान् यक्षरक्षांसि राजसाः ।
प्रेतान् भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः ॥१७-०४॥

["| यजन्ते | सात्त्विका | देवान् | यक्ष + रक्षांसि | राजसाः |
| प्रेतान् | भूत + गणान् + च + अन्ये | यजन्ते | तामसा | जनाः |"]

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः ।
दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः ॥१७-०५॥

["| अशास्त्र + विहितं | घोरं | तप्यन्ते | ये | तपो | जनाः |
| दम्भ + अहङ्कार + संयुक्ताः | काम + राग + बल + अन्विताः |"]

कर्षयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः ।
मां चैवान्तःशरीरस्थं तान् विद्ध्यासुरनिश्चयान् ॥१७-०६॥

["| कर्षयन्तः | शरीर + स्थं | भूत + ग्रामम् + अचेतसः |
| मां | च + एव + अन्तः + शरीर + स्थं | तान् | विद्धि + आसुर + निश्चयान् |"]

–: ॐ :–

সত্ত্বানুরূপা সর্বস্য শ্রদ্ধা ভবতি ভারত ।

শ্রদ্ধাময়োঽয়ং পুরুষো যো যচ্ছ্রদ্ধঃ স এব সঃ ॥১৭-০৩॥

["| সত্ত্ব + অনুরূপা | সর্বস্য | শ্রদ্ধা | ভবতি | ভারত |
| শ্রদ্ধাময়ো + অয়ং | পুরুষো | যো | যৎ + শ্রদ্ধঃ | স | এব | সঃ |"]

যজন্তে সাত্ত্বিকা দেবান্ যক্ষরক্ষাংসি রাজসাঃ ।

প্রেতান্ ভূতগণাংশ্চান্যে যজন্তে তামসা জনাঃ ॥১৭-০৪॥

["| যজন্তে | সাত্ত্বিকা | দেবান্ | যক্ষ + রক্ষাংসি | রাজসাঃ |
| প্রেতান্ | ভূত + গণান্ + চ + অন্যে | যজন্তে | তামসা | জনাঃ |"]

অশাস্ত্রবিহিতং ঘোরং তপ্যন্তে যে তপো জনাঃ ।

দম্ভাহঙ্কারসংযুক্তাঃ কামরাগবলান্বিতাঃ ॥১৭-০৫॥

["| অশাস্ত্র + বিহিতং | ঘোরং | তপ্যন্তে | যে | তপো | জনাঃ |
| দম্ভ + অহঙ্কার + সংযুক্তাঃ | কাম + রাগ + বল + অন্বিতাঃ |"]

কর্ষয়ন্তঃ শরীরস্থং ভূতগ্রামমচেতসঃ ।

মাং চৈবান্তঃশরীরস্থং তান্ বিদ্ধ্যাসুরনিশ্চয়ান্ ॥১৭-০৬॥

["| কর্ষয়ন্তঃ | শরীর + স্থং | ভূত + গ্রামম্ + অচেতসঃ |
| মাং | চ + এব + অন্তঃ + শরীর + স্থং | তান্ | বিদ্ধি + আসুর + নিশ্চয়ান্ |"]

–: ॐ :–

आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः ।
यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु ॥१७-०७॥

["| आहारः + तु + अपि | सर्वस्य | त्रि + विधो | भवति | प्रियः |
| यज्ञः + तपः + तथा | दानं | तेषां | भेदम् + इमं | शृणु |"]

आयुःसत्त्वबलारोग्य सुखप्रीतिविवर्धनाः ।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः ॥१७-०८॥

["| आयुः + सत्त्व + बल + आरोग्य | सुख + प्रीति + विवर्धनाः |
| रस्याः | स्निग्धाः | स्थिरा | हृद्या | आहाराः | सात्त्विक + प्रियाः |"]

कट्वम्ललवणात्युष्ण तीक्ष्णरूक्षविदाहिनः ।
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥१७-०९॥

["| कटु + अम्ल + लवण + अति + उष्ण | तीक्ष्ण + रूक्ष + विदाहिनः |
| आहारा | राजसस्य + इष्टा | दुःख + शोक + आमय + प्रदाः |"]

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् ।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥१७-१०॥

["| यात + यामं | गत + रसं | पूति | पर्युषितं | च | यत् |
| उच्छिष्टम् + अपि | च + अमेध्यं | भोजनं | तामस + प्रियम् |"]

–: ওঁ :–

আহারস্ত্বপি সর্বস্য ত্রিবিধো ভবতি প্রিয়ঃ ।

যজ্ঞস্তপস্তথা দানং তেষাং ভেদমিমং শৃণু ॥১৭-০৭॥

["| আহারঃ + তু + অপি | সর্বস্য | ত্রি + বিধো | ভবতি | প্রিয়ঃ |
| যজ্ঞঃ + তপঃ + তথা | দানং | তেষাং | ভেদম্ + ইমং | শৃণু |"]

আয়ুঃসত্ত্ববলারোগ্য সুখপ্রীতিবিবর্ধনাঃ ।

রস্যাঃ স্নিগ্ধাঃ স্থিরা হৃদ্যা আহারাঃ সাত্ত্বিকপ্রিয়াঃ ॥১৭-০৮॥

["| আয়ুঃ + সত্ত্ব + বল + আরোগ্য | সুখ + প্রীতি + বিবর্ধনাঃ |
| রস্যাঃ | স্নিগ্ধাঃ | স্থিরা | হৃদ্যা | আহারাঃ | সাত্ত্বিক + প্রিয়াঃ |"]

কট্বম্ললবণাত্যুষ্ণ তীক্ষ্ণরূক্ষবিদাহিনঃ ।

আহারা রাজসস্যেষ্টা দুঃখশোকাময়প্রদাঃ ॥১৭-০৯॥

["| কটু + অম্ল + লবণ + অতি + উষ্ণ | তীক্ষ্ণ + রূক্ষ + বিদাহিনঃ |
| আহারা | রাজসস্য + ইষ্টা | দুঃখ + শোক + আময় + প্রদাঃ |"]

যাতযামং গতরসং পূতি পর্যুষিতং চ যৎ ।

উচ্ছিষ্টমপি চামেধ্যং ভোজনং তামসপ্রিয়ম্ ॥১৭-১০॥

["| যাত + যামং | গত + রসং | পূতি | পর্যুষিতং | চ | যৎ |
| উচ্ছিষ্টম্ + অপি | চ + অমেধ্যং | ভোজনং | তামস + প্রিয়ম্ |"]

–: ॐ :–

अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते ।
यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥१७-११॥

["| अफल + आकाङ्क्षिभिः + यज्ञो | विधि + दृष्टो | य | इज्यते |
| यष्टव्यम् + एव + इति | मनः | समाधाय | स | सात्त्विकः |"]

अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् ।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् ॥१७-१२॥

["| अभिसन्धाय | तु | फलं | दम्भ + अर्थम् + अपि | च + एव | यत् |
| इज्यते | भरत + श्रेष्ठ | तं | यज्ञं | विद्धि | राजसम् |"]

विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् ।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ॥१७-१३॥

["| विधि + हीनम् + असृष्ट + अन्नं | मन्त्र + हीनम् + अदक्षिणम् |
| श्रद्धा + विरहितं | यज्ञं | तामसं | परिचक्षते |"]

देवद्विजगुरुप्राज्ञ पूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥१७-१४॥

["| देव + द्विज + गुरु + प्राज्ञ | पूजनं | शौचम् + आर्जवम् |
| ब्रह्मचर्यम् + अहिंसा | च | शारीरं | तप | उच्यते |"]

–: ॐ :–

অফলাকাঙ্ক্ষিভির্যজ্ঞো বিধিদৃষ্টো য ইজ্যতে ।

যষ্টব্যমেবেতি মনঃ সমাধায় স সাত্ত্বিকঃ ॥১৭-১১॥

["| অফল + আকাঙ্ক্ষিভিঃ + যজ্ঞো | বিধি + দৃষ্টো | য | ইজ্যতে |

| যষ্টব্যম্ + এব + ইতি | মনঃ | সমাধায় | স | সাত্ত্বিকঃ |"]

অভিসন্ধায় তু ফলং দম্ভার্থমপি চৈব যৎ ।

ইজ্যতে ভরতশ্রেষ্ঠ তং যজ্ঞং বিদ্ধি রাজসম্ ॥১৭-১২॥

["| অভিসন্ধায় | তু | ফলং | দম্ভ + অর্থম্ + অপি | চ + এব | যৎ |

| ইজ্যতে | ভরত + শ্রেষ্ঠ | তং | যজ্ঞং | বিদ্ধি | রাজসম্ |"]

বিধিহীনমসৃষ্টান্নং মন্ত্রহীনমদক্ষিণম্ ।

শ্রদ্ধাবিরহিতং যজ্ঞং তামসং পরিচক্ষতে ॥১৭-১৩॥

["| বিধি + হীনম্ + অসৃষ্ট + অন্নং | মন্ত্র + হীনম্ + অদক্ষিণম্ |

| শ্রদ্ধা + বিরহিতং | যজ্ঞং | তামসং | পরিচক্ষতে |"]

দেবদ্বিজগুরুপ্রাজ্ঞ পূজনং শৌচমার্জবম্ ।

ব্রহ্মচর্যমহিংসা চ শারীরং তপ উচ্যতে ॥১৭-১৪॥

["| দেব + দ্বিজ + গুরু + প্রাজ্ঞ | পূজনং | শৌচম্ + আর্জবম্ |

| ব্রহ্মচর্যম্ + অহিংসা | চ | শারীরং | তপ | উচ্যতে |"]

–: ॐ :–

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥१७-१५॥

["| अनुद्वेग + करं | वाक्यं | सत्यं | प्रिय + हितं | च | यत् |
| स्वाध्याय + अभ्यसनं | च + एव | वाङ्मयं | तप | उच्यते |"]

मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।
भावसंशुद्धिरित्येतत् तपो मानसमुच्यते ॥१७-१६॥

["| मनः + प्रसादः | सौम्यत्वं | मौनम् + आत्म + विनिग्रहः |
| भाव + संशुद्धिः + इति + एतत् | तपो | मानसम् + उच्यते |"]

श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत् त्रिविधं नरैः ।
अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते ॥१७-१७॥

["| श्रद्धया | परया | तप्तं | तपः + तत् | त्रि + विधं | नरैः |
| अफल + आकाङ्क्षिभिः + युक्तैः | सात्त्विकं | परिचक्षते |"]

सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत् ।
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम् ॥१७-१८॥

["| सत् + कार + मान + पूजा + अर्थं | तपो | दम्भेन | च + एव | यत् |
| क्रियते | तत् + इह | प्रोक्तं | राजसं | चलम् + अध्रुवम् |"]

–: ॐ :–

অনুদ্বেগকরং বাক্যং সত্যং প্রিয়হিতং চ যৎ ।

স্বাধ্যায়াভ্যসনং চৈব বাঙ্ময়ং তপ উচ্যতে ॥১৭-১৫॥

["| অনুদ্বেগ + করং | বাক্যং | সত্যং | প্রিয় + হিতং | চ | যৎ |
| স্বাধ্যায় + অভ্যসনং | চ + এব | বাঙ্ময়ং | তপ | উচ্যতে |"]

মনঃপ্রসাদঃ সৌম্যত্বং মৌনমাত্মবিনিগ্রহঃ ।

ভাবসংশুদ্ধিরিত্যেতৎ তপো মানসমুচ্যতে ॥১৭-১৬॥

["| মনঃ + প্রসাদঃ | সৌম্যত্বং | মৌনম্ + আত্ম + বিনিগ্রহঃ |
| ভাব + সংশুদ্ধিঃ + ইতি + এতৎ | তপো | মানসম্ + উচ্যতে |"]

শ্রদ্ধয়া পরয়া তপ্তং তপস্তৎ ত্রিবিধং নরৈঃ ।

অফলাকাঙ্ক্ষিভির্যুক্তৈঃ সাত্ত্বিকং পরিচক্ষতে ॥১৭-১৭॥

["| শ্রদ্ধয়া | পরয়া | তপ্তং | তপঃ + তৎ | ত্রি + বিধং | নরৈঃ |
| অফল + আকাঙ্ক্ষিভিঃ + যুক্তৈঃ | সাত্ত্বিকং | পরিচক্ষতে |"]

সৎকারমানপূজার্থং তপো দম্ভেন চৈব যৎ ।

ক্রিয়তে তদিহ প্রোক্তং রাজসং চলমধ্রুবম্ ॥১৭-১৮॥

["| সৎ + কার + মান + পূজা + অর্থং | তপো | দম্ভেন | চ + এব | যৎ |
| ক্রিয়তে | তৎ + ইহ | প্রোক্তং | রাজসং | চলম্ + অধ্রুবম্ |"]

–: ॐ :–

मूढग्राहेणात्मनो यत् पीड़या क्रियते तपः ।
परस्योत्सादनार्थं वा तत् तामसमुदाहृतम् ॥१७-१९॥

["| मूढ + ग्राहेण + आत्मनो | यत् | पीड़या | क्रियते | तपः |
| परस्य + उत्सादन + अर्थं | वा | तत् | तामसम् + उदाहृतम् |"]

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ॥१७-२०॥

["| दातव्यम् + इति | यत् + दानं | दीयते + अनुपकारिणे |
| देशे | काले | च | पात्रे | च | तत् + दानं | सात्त्विकं | स्मृतम् |"]

यत् तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः ।
दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम् ॥१७-२१॥

["| यत् | तु | प्रति + उपकार + अर्थं | फलम् + उद्दिश्य | वा | पुनः |
| दीयते | च | परिक्लिष्टं | तत् + दानं | राजसं | स्मृतम् |"]

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।
असत्कृतमवज्ञातं तत् तामसमुदाहृतम् ॥१७-२२॥

["| अदेश + काले | यत् + दानम् + अपात्रेभ्यः + च | दीयते |
| असत् + कृतम् + अवज्ञातं | तत् | तामसम् + उदाहृतम् |"]

–: ॐ :–

মূঢ়গ্রাহেণাত্মনো যৎ পীড়য়া ক্রিয়তে তপঃ ।

পরস্যোৎসাদনার্থং বা তৎ তামসমুদাহৃতম্ ‖১৭-১৯‖

["| মূঢ় + গ্রাহেণ + আত্মনো | যৎ | পীড়য়া | ক্রিয়তে | তপঃ |
| পরস্য + উৎসাদন + অর্থং | বা | তৎ | তামসম্ + উদাহৃতম্ |"]

দাতব্যমিতি যদ্দানং দীয়তেঽনুপকারিণে ।

দেশে কালে চ পাত্রে চ তদ্দানং সাত্ত্বিকং স্মৃতম্ ‖১৭-২০‖

["| দাতব্যম্ + ইতি | যৎ + দানং | দীয়তে + অনুপকারিণে |
| দেশে | কালে | চ | পাত্রে | চ | তৎ + দানং | সাত্ত্বিকং | স্মৃতম্ |"]

যৎ তু প্রত্যুপকারার্থং ফলমুদ্দিশ্য বা পুনঃ ।

দীয়তে চ পরিক্লিষ্টং তদ্দানং রাজসং স্মৃতম্ ‖১৭-২১‖

["| যৎ | তু | প্রতি + উপকার + অর্থং | ফলম্ + উদ্দিশ্য | বা | পুনঃ |
| দীয়তে | চ | পরিক্লিষ্টং | তৎ + দানং | রাজসং | স্মৃতম্ |"]

অদেশকালে যদ্দানমপাত্রেভ্যশ্চ দীয়তে ।

অসৎকৃতমবজ্ঞাতং তৎ তামসমুদাহৃতম্ ‖১৭-২২‖

["| অদেশ + কালে | যৎ + দানম্ + অপাত্রেভ্যঃ + চ | দীয়তে |
| অসৎ + কৃতম্ + অবজ্ঞাতং | তৎ | তামসম্ + উদাহৃতম্ |"]

–: ॐ :–

ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः ।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा ॥१७-२३॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | निर्देशो | ब्रह्मणः + त्रि + विधः | स्मृतः |
| ब्राह्मणाः + तेन | वेदाः + च | यज्ञाः + च | विहिताः | पुरा |"]

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः ।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥१७-२४॥

["| तस्मात् + ॐ + इति + उदाहृत्य | यज्ञ + दान + तपः + क्रियाः |
| प्रवर्तन्ते | विधान + उक्ताः | सततं | ब्रह्म + वादिनाम् |"]

तदित्यनभिसन्धाय फलं यज्ञतपःक्रियाः ।
दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः ॥१७-२५॥

["| तत् + इति + अनभिसन्धाय | फलं | यज्ञ + तपः + क्रियाः |
| दान + क्रियाः + च | विविधाः | क्रियन्ते | मोक्ष + काङ्क्षिभिः |"]

सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते ।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते ॥१७-२६॥

["| सत् + भावे | साधु + भावे | च | सत् + इति + एतत् + प्रयुज्यते |
| प्रशस्ते | कर्मणि | तथा | सत् + शब्दः | पार्थ | युज्यते |"]

–: ॐ :–

ওঁ তৎসদিতি নির্দেশো ব্রহ্মণস্ত্রিবিধঃ স্মৃতঃ ।

ব্রাহ্মণাস্তেন বেদাশ্চ যজ্ঞাশ্চ বিহিতাঃ পুরা ॥১৭-২৩॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | নির্দেশো | ব্রহ্মণঃ + ত্রি + বিধঃ | স্মৃতঃ |

| ব্রাহ্মণাঃ + তেন | বেদাঃ + চ | যজ্ঞাঃ + চ | বিহিতাঃ | পুরা |"]

তস্মাদোমিত্যুদাহৃত্য যজ্ঞদানতপঃক্রিয়াঃ ।

প্রবর্তন্তে বিধানোক্তাঃ সততং ব্রহ্মবাদিনাম্ ॥১৭-২৪॥

["| তস্মাৎ + ওঁ + ইতি + উদাহৃত্য | যজ্ঞ + দান + তপঃ + ক্রিয়াঃ |

| প্রবর্তন্তে | বিধান + উক্তাঃ | সততং | ব্রহ্ম + বাদিনাম্ |"]

তদিত্যনভিসন্ধায় ফলং যজ্ঞতপঃক্রিয়াঃ ।

দানক্রিয়াশ্চ বিবিধাঃ ক্রিয়ন্তে মোক্ষকাঙ্ক্ষিভিঃ ॥১৭-২৫॥

["| তৎ + ইতি + অনভিসন্ধায় | ফলং | যজ্ঞ + তপঃ + ক্রিয়াঃ |

| দান + ক্রিয়াঃ + চ | বিবিধাঃ | ক্রিয়ন্তে | মোক্ষ + কাঙ্ক্ষিভিঃ |"]

সদ্ভাবে সাধুভাবে চ সদিত্যেতৎপ্রযুজ্যতে ।

প্রশস্তে কর্মণি তথা সচ্ছব্দঃ পার্থ যুজ্যতে ॥১৭-২৬॥

["| সৎ + ভাবে | সাধু + ভাবে | চ | সৎ + ইতি + এতৎ + প্রযুজ্যতে |

| প্রশস্তে | কর্মণি | তথা | সৎ + শব্দঃ | পার্থ | যুজ্যতে |"]

–: ॐ :–

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते ।
कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते ॥१७-२७॥

["| यज्ञे | तपसि | दाने | च | स्थितिः | सत् + इति | च + उच्यते |
| कर्म | च + एव | तत् + अर्थीयं | सत् + इति + एव + अभिधीयते |"]

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत् ।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत् प्रेत्य नो इह ॥१७-२८॥

["| अश्रद्धया | हुतं | दत्तं | तपः + तप्तं | कृतं | च | यत् |
| असत् + इति + उच्यते | पार्थ | न | च | तत् | प्रेत्य | नो | इह |"]

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि
श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे
श्रद्धात्रयविभागयोगो नाम सप्तदशोऽध्यायः॥१७॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | श्रद्धा + त्रय + विभाग + योगो | नाम | सप्तदशो + अध्यायः |"]

–: ॐ :–

যজ্ঞে তপসি দানে চ স্থিতিঃ সদিতি চোচ্যতে ।
কর্ম চৈব তদর্থীয়ং সদিত্যেবাভিধীয়তে ॥১৭-২৭॥

["| যজ্ঞে | তপসি | দানে | চ | স্থিতিঃ | সৎ + ইতি | চ + উচ্যতে |
| কর্ম | চ + এব | তৎ + অর্থীয়ং | সৎ + ইতি + এব + অভিধীয়তে |"]

অশ্রদ্ধয়া হুতং দত্তং তপস্তপ্তং কৃতং চ যৎ ।
অসদিত্যুচ্যতে পার্থ ন চ তৎ প্রেত্য নো ইহ ॥১৭-২৮॥

["| অশ্রদ্ধয়া | হুতং | দত্তং | তপঃ + তপ্তং | কৃতং | চ | যৎ |
| অসৎ + ইতি + উচ্যতে | পার্থ | ন | চ | তৎ | প্রেত্য | নো | ইহ |"]

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে
শ্রদ্ধাত্রয়বিভাগযোগো নাম সপ্তদশোঽধ্যায়ঃ ॥১৭॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | শ্রদ্ধা + ত্রয় + বিভাগ + যোগো | নাম | সপ্তদশো + অধ্যায়ঃ |"]

–: ॐ :–

अष्टादशोऽध्यायः
मोक्षयोग

अर्जुन उवाच :—
सन्न्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम् ।
त्यागस्य च हृषीकेश पृथक्केशिनिषूदन ॥१८-०१॥

["| अर्जुन | उवाच | सन्न्यासस्य | महा + बाहो | तत्त्वम् + इच्छामि | वेदितुम् |
| त्यागस्य | च | हृषीकेश | पृथक् + केशि + निषूदन |"]

श्रीभगवानुवाच :—
काम्यानां कर्मणां न्यासं सन्न्यासं कवयो विदुः ।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥१८-०२॥

["| श्री + भगवान् + उवाच | काम्यानां | कर्मणां | न्यासं | सन्न्यासं | कवयो | विदुः |
| सर्व + कर्म + फल + त्यागं | प्राहुः + त्यागं | विचक्षणाः |"]

–: ॐ :–

অষ্টাদশোঽধ্যায়ঃ
মোক্ষযোগ

অর্জুন উবাচ :—

সন্ন্যাসস্য মহাবাহো তত্ত্বমিচ্ছামি বেদিতুম্ ।

ত্যাগস্য চ হৃষীকেশ পৃথক্কেশিনিষূদন ॥১৮-০১॥

["| অর্জুন | উবাচ | সন্ন্যাসস্য | মহা + বাহো | তত্ত্বম্ + ইচ্ছামি | বেদিতুম্ |
| ত্যাগস্য | চ | হৃষীকেশ | পৃথক্ + কেশি + নিষূদন |"]

শ্রীভগবানুবাচ :—

কাম্যানাং কর্মণাং ন্যাসং সন্ন্যাসং কবয়ো বিদুঃ ।

সর্বকর্মফলত্যাগং প্রাহুস্ত্যাগং বিচক্ষণাঃ ॥১৮-০২॥

["| শ্রী + ভগবান্ + উবাচ | কাম্যানাং | কর্মণাং | ন্যাসং | সন্ন্যাসং | কবয়ো | বিদুঃ |
| সর্ব + কর্ম + ফল + ত্যাগং | প্রাহুঃ + ত্যাগং | বিচক্ষণাঃ |"]

–: ॐ :–

त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राहुर्मनीषिणः ।
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यमिति चापरे ॥१८-०३॥

["| त्याज्यं | दोष + वत् + इति + एके | कर्म | प्राहुः + मनीषिणः |
| यज्ञ + दान + तपः + कर्म | न | त्याज्यम् + इति | च + अपरे |"]

निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम ।
त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः सम्प्रकीर्तितः ॥१८-०४॥

["| निश्चयं | शृणु | मे | तत्र | त्यागे | भरत + सत् + तम |
| त्यागो | हि | पुरुष + व्याघ्र | त्रि + विधः | सम्प्रकीर्तितः |"]

यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥१८-०५॥

["| यज्ञ + दान + तपः + कर्म | न | त्याज्यं | कार्यम् + एव | तत् |
| यज्ञो | दानं | तपः + च + एव | पावनानि | मनीषिणाम् |"]

एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च ।
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् ॥१८-०६॥

["| एतानि + अपि | तु | कर्माणि | सङ्गं | त्यक्त्वा | फलानि | च |
| कर्तव्यानि + इति | मे | पार्थ | निश्चितं | मतम् + उत्तमम् |"]

–: ॐ :–

ত্যাজ্যং দোষবদিত্যেকে কর্ম প্রাহুর্মনীষিণঃ ।

যজ্ঞদানতপঃকর্ম ন ত্যাজ্যমিতি চাপরে ॥১৮-০৩॥

["| ত্যাজ্যং | দোষ + বৎ + ইতি + একে | কর্ম | প্রাহুঃ + মনীষিণঃ |
| যজ্ঞ + দান + তপঃ + কর্ম | ন | ত্যাজ্যম্ + ইতি | চ + অপরে |"]

নিশ্চয়ং শৃণু মে তত্র ত্যাগে ভরতসত্তম ।

ত্যাগো হি পুরুষব্যাঘ্র ত্রিবিধঃ সম্প্রকীর্তিতঃ ॥১৮-০৪॥

["| নিশ্চয়ং | শৃণু | মে | তত্র | ত্যাগে | ভরত + সৎ + তম |
| ত্যাগো | হি | পুরুষ + ব্যাঘ্র | ত্রি + বিধঃ | সম্প্রকীর্তিতঃ |"]

যজ্ঞদানতপঃকর্ম ন ত্যাজ্যং কার্যমেব তৎ ।

যজ্ঞো দানং তপশ্চৈব পাবনানি মনীষিণাম্ ॥১৮-০৫॥

["| যজ্ঞ + দান + তপঃ + কর্ম | ন | ত্যাজ্যং | কার্যম্ + এব | তৎ |
| যজ্ঞো | দানং | তপঃ + চ + এব | পাবনানি | মনীষিণাম্ |"]

এতান্যপি তু কর্মাণি সঙ্গং ত্যক্ত্বা ফলানি চ ।

কর্তব্যানীতি মে পার্থ নিশ্চিতং মতমুত্তমম্ ॥১৮-০৬॥

["| এতানি + অপি | তু | কর্মাণি | সঙ্গং | ত্যক্ত্বা | ফলানি | চ |
| কর্তব্যানি + ইতি | মে | পার্থ | নিশ্চিতং | মতম্ + উত্তমম্ |"]

–: ॐ :–

नियतस्य तु सन्न्यासः कर्मणो नोपपद्यते ।
मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः ॥१८-०७॥

["| नियतस्य | तु | सन्न्यासः | कर्मणो | न + उपपद्यते |
| मोहात् + तस्य | परित्यागः + तामसः | परिकीर्तितः |"]

दुःखमित्येव यत् कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत् ।
स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत् ॥१८-०८॥

["| दुःखम् + इति + एव | यत् | कर्म | काय + क्लेश + भयात् + त्यजेत् |
| स | कृत्वा | राजसं | त्यागं | न + एव | त्याग + फलं | लभेत् |"]

कार्यमित्येव यत् कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन ।
सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः ॥१८-०९॥

["| कार्यम् + इति + एव | यत् | कर्म | नियतं | क्रियते + अर्जुन |
| सङ्गं | त्यक्त्वा | फलं | च + एव | स | त्यागः | सात्त्विको | मतः |"]

न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते ।
त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः ॥१८-१०॥

["| न | द्वेष्टि + अकुशलं | कर्म | कुशले | न + अनुषज्जते |
| त्यागी | सत्त्व + समाविष्टो | मेधावी | छिन्न + संशयः |"]

–: ॐ :–

নিয়তস্য তু সন্ন্যাসঃ কর্মণো নোপপদ্যতে ।
মোহাত্তস্য পরিত্যাগস্তামসঃ পরিকীর্তিতঃ ॥১৮-০৭॥

["| নিয়তস্য | তু | সন্ন্যাসঃ | কর্মণো | ন + উপপদ্যতে |
| মোহাৎ + তস্য | পরিত্যাগঃ + তামসঃ | পরিকীর্তিতঃ |"]

দুঃখমিত্যেব যৎ কর্ম কায়ক্লেশভয়াত্ত্যজেৎ ।
স কৃত্বা রাজসং ত্যাগং নৈব ত্যাগফলং লভেৎ ॥১৮-০৮॥

["| দুঃখম্ + ইতি + এব | যৎ | কর্ম | কায় + ক্লেশ + ভয়াৎ + ত্যজেৎ |
| স | কৃত্বা | রাজসং | ত্যাগং | ন + এব | ত্যাগ + ফলং | লভেৎ |"]

কার্যমিত্যেব যৎ কর্ম নিয়তং ক্রিয়তেঽর্জুন ।
সঙ্গং ত্যক্ত্বা ফলং চৈব স ত্যাগঃ সাত্ত্বিকো মতঃ ॥১৮-০৯॥

["| কার্যম্ + ইতি + এব | যৎ | কর্ম | নিয়তং | ক্রিয়তে + অর্জুন |
| সঙ্গং | ত্যক্ত্বা | ফলং | চ + এব | স | ত্যাগঃ | সাত্ত্বিকো | মতঃ |"]

ন দ্বেষ্ট্যকুশলং কর্ম কুশলে নানুষজ্জতে ।
ত্যাগী সত্ত্বসমাবিষ্টো মেধাবী ছিন্নসংশয়ঃ ॥১৮-১০॥

["| ন | দ্বেষ্টি + অকুশলং | কর্ম | কুশলে | ন + অনুষজ্জতে |
| ত্যাগী | সত্ত্ব + সমাবিষ্টো | মেধাবী | ছিন্ন + সংশয়ঃ |"]

–: ॐ :–

न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः ।
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते ॥१८-११॥

["| न | हि | देह + भृता | शक्यं | त्यक्तुं | कर्माणि + अशेषतः |
| यः + तु | कर्म + फल + त्यागी | स | त्यागी + इति + अभिधीयते |"]

अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम् ।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु सन्न्यासिनां क्वचित् ॥१८-१२॥

["| अनिष्टम् + इष्टं | मिश्रं | च | त्रि + विधं | कर्मणः | फलम् |
| भवति + अत्यागिनां | प्रेत्य | न | तु | सन्न्यासिनां | क्वचित् |"]

पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे ।
सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम् ॥१८-१३॥

["| पञ्च + एतानि | महा + बाहो | कारणानि | निबोध | मे |
| सांख्ये | कृत + अन्ते | प्रोक्तानि | सिद्धये | सर्व + कर्मणाम् |"]

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् ।
विविधाश्च पृथक् चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् ॥१८-१४॥

["| अधिष्ठानं | तथा | कर्ता | करणं | च | पृथक् + विधम् |
| विविधाः + च | पृथक् | चेष्टा | दैवं | च + एव + अत्र | पञ्चमम् |"]

–: ওঁ :–

ন হি দেহভৃতা শক্যং ত্যক্তুং কর্মাণ্যশেষতঃ ।

যস্তু কর্মফলত্যাগী স ত্যাগীত্যভিধীয়তে ॥১৮-১১॥

["| ন | হি | দেহ + ভৃতা | শক্যং | ত্যক্তুং | কর্মাণি + অশেষতঃ |
| যঃ + তু | কর্ম + ফল + ত্যাগী | স | ত্যাগী + ইতি + অভিধীয়তে |"]

অনিষ্টমিষ্টং মিশ্রং চ ত্রিবিধং কর্মণঃ ফলম্ ।

ভবত্যত্যাগিনাং প্রেত্য ন তু সন্ন্যাসিনাং ক্কচিৎ ॥১৮-১২॥

["| অনিষ্টম্ + ইষ্টং | মিশ্রং | চ | ত্রি + বিধং | কর্মণঃ | ফলম্ |
| ভবতি + অত্যাগিনাং | প্রেত্য | ন | তু | সন্ন্যাসিনাং | ক্কচিৎ |"]

পঞ্চৈতানি মহাবাহো কারণানি নিবোধ মে ।

সাংখ্যে কৃতান্তে প্রোক্তানি সিদ্ধয়ে সর্বকর্মণাম্ ॥১৮-১৩॥

["| পঞ্চ + এতানি | মহা + বাহো | কারণানি | নিবোধ | মে |
| সাংখ্যে | কৃত + অন্তে | প্রোক্তানি | সিদ্ধয়ে | সর্ব + কর্মণাম্ |"]

অধিষ্ঠানং তথা কর্তা করণং চ পৃথগ্বিধম্ ।

বিবিধাশ্চ পৃথক্ চেষ্টা দৈবং চৈবাত্র পঞ্চমম্ ॥১৮-১৪॥

["| অধিষ্ঠানং | তথা | কর্তা | করণং | চ | পৃথক্ + বিধম্ |
| বিবিধাঃ + চ | পৃথক্ | চেষ্টা | দৈবং | চ + এব + অত্র | পঞ্চমম্ |"]

–: ॐ :–

शरीरवाङ्मनोभिर्यत् कर्म प्रारभते नरः ।
न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः ॥१८-१५॥

["| शरीर + वाक् + मनोभिः + यत् | कर्म | प्रारभते | नरः |
| न्याय्यं | वा | विपरीतं | वा | पञ्च + एते | तस्य | हेतवः |"]

तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः ।
पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः ॥१८-१६॥

["| तत्र + एवं | सति | कर्तारम् + आत्मानं | केवलं | तु | यः |
| पश्यति + अकृत + बुद्धित्वात् + न | स | पश्यति | दुर्मतिः |"]

यस्य नाहङ्कृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते ।
हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते ॥१८-१७॥

["| यस्य | न + अहङ्कृतो | भावो | बुद्धिः + यस्य | न | लिप्यते |
| हत्वा + अपि | स | इमान् + लोकान् + न | हन्ति | न | निबध्यते |"]

ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना ।
करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः ॥१८-१८॥

["| ज्ञानं | ज्ञेयं | परिज्ञाता | त्रि + विधा | कर्म + चोदना |
| करणं | कर्म | कर्ता + इति | त्रि + विधः | कर्म + संग्रहः |"]

–: ॐ :–

শরীরবাঙ্মনোভির্যৎ কর্ম প্রারভতে নরঃ ।

ন্যায্যং বা বিপরীতং বা পঞ্চৈতে তস্য হেতবঃ ॥১৮-১৫॥

["| শরীর + বাক্ + মনোভিঃ + যৎ | কর্ম | প্রারভতে | নরঃ |
| ন্যায্যং | বা | বিপরীতং | বা | পঞ্চ + এতে | তস্য | হেতবঃ |"]

তত্রৈবং সতি কর্তারমাত্মানং কেবলং তু যঃ ।

পশ্যত্যকৃতবুদ্ধিত্বান্ন স পশ্যতি দুর্মতিঃ ॥১৮-১৬॥

["| তত্র + এবং | সতি | কর্তারম্ + আত্মানং | কেবলং | তু | যঃ |
| পশ্যতি + অকৃত + বুদ্ধিত্বাৎ + ন | স | পশ্যতি | দুর্মতিঃ |"]

যস্য নাহঙ্কৃতো ভাবো বুদ্ধির্যস্য ন লিপ্যতে ।

হত্বাপি স ইমাঁল্লোকান্ন হন্তি ন নিবধ্যতে ॥১৮-১৭॥

["| যস্য | ন + অহঙ্কৃতো | ভাবো | বুদ্ধিঃ + যস্য | ন | লিপ্যতে |
| হত্বা + অপি | স | ইমান্ + লোকান্ + ন | হন্তি | ন | নিবধ্যতে |"]

জ্ঞানং জ্ঞেয়ং পরিজ্ঞাতা ত্রিবিধা কর্মচোদনা ।

কারণং কর্ম কর্তেতি ত্রিবিধঃ কর্মসংগ্রহঃ ॥১৮-১৮॥

["| জ্ঞানং | জ্ঞেয়ং | পরিজ্ঞাতা | ত্রি + বিধা | কর্ম + চোদনা |
| কারণং | কর্ম | কর্তা + ইতি | ত্রি + বিধঃ | কর্ম + সংগ্রহঃ |"]

–: ॐ :–

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः ।
प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि ॥१८-१९॥

["| ज्ञानं | कर्म | च | कर्ता | च | त्रिधा + एव | गुण + भेदतः |
| प्रोच्यते | गुण + संख्याने | यथा + वत् + श्रृणु | तानि + अपि |"]

सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते ।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम् ॥१८-२०॥

["| सर्व + भूतेषु | येन + एकं | भावम् + अव्ययम् + ईक्षते |
| अविभक्तं | विभक्तेषु | तत् + ज्ञानं | विद्धि | सात्त्विकम् |"]

पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान् पृथग्विधान् ।
वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम् ॥१८-२१॥

["| पृथक्त्वेन | तु | यत् + ज्ञानं | नाना + भावान् | पृथक् + विधान् |
| वेत्ति | सर्वेषु | भूतेषु | तत् + ज्ञानं | विद्धि | राजसम् |"]

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन् कार्ये सक्तमहैतुकम् ।
अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम् ॥१८-२२॥

["| यत् + तु | कृत्स्न + वत् + एकस्मिन् | कार्ये | सक्तम् + अहैतुकम् |
| अतत्त्व + अर्थ + वत् + अल्पं | च | तत् + तामसम् + उदाहृतम् |"]

–: ॐ :–

জ্ঞানং কর্ম চ কর্তা চ ত্রিধৈব গুণভেদতঃ ।

প্রোচ্যতে গুণসংখ্যানে যথাবচ্ছৃণু তান্যপি ॥১৮-১৯॥

["| জ্ঞানং | কর্ম | চ | কর্তা | চ | ত্রিধা + এব | গুণ + ভেদতঃ |
| প্রোচ্যতে | গুণ + সংখ্যানে | যথা + বৎ + শৃণু | তানি + অপি |"]

সর্বভূতেষু যেনৈকং ভাবমব্যয়মীক্ষতে ।

অবিভক্তং বিভক্তেষু তজ্জ্ঞানং বিদ্ধি সাত্ত্বিকম্ ॥১৮-২০॥

["| সর্ব + ভূতেষু | যেন + একং | ভাবম্ + অব্যয়ম্ + ঈক্ষতে |
| অবিভক্তং | বিভক্তেষু | তৎ + জ্ঞানং | বিদ্ধি | সাত্ত্বিকম্ |"]

পৃথক্ত্বেন তু যজ্জ্ঞানং নানাভাবান্ পৃথগ্বিধান্ ।

বেত্তি সর্বেষু ভূতেষু তজ্জ্ঞানং বিদ্ধি রাজসম্ ॥১৮-২১॥

["| পৃথক্ত্বেন | তু | যৎ + জ্ঞানং | নানা + ভাবান্ | পৃথক্ + বিধান্ |
| বেত্তি | সর্বেষু | ভূতেষু | তৎ + জ্ঞানং | বিদ্ধি | রাজসম্ |"]

যত্তু কৃৎস্নবদেকস্মিন্ কার্যে সক্তমহৈতুকম্ ।

অতত্ত্বার্থবদল্পং চ তত্তামসমুদাহৃতম্ ॥১৮-২২॥

["| যৎ + তু | কৃৎস্ন + বৎ + একস্মিন্ | কার্যে | সক্তম্ + অহৈতুকম্ |
| অতত্ত্ব + অর্থ + বৎ + অল্পং | চ | তৎ + তামসম্ + উদাহৃতম্ |"]

–: ॐ :–

नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम् ।
अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते ॥१८-२३॥

["| नियतं | सङ्ग + रहितम् + अराग + द्वेषतः | कृतम् |
| अफल + प्रेप्सुना | कर्म | यत् + तत् + सात्त्विकम् + उच्यते |"]

यत्तु कामेप्सुना कर्म साहङ्कारेण वा पुनः ।
क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥१८-२४॥

["| यत् + तु | काम + ईप्सुना | कर्म | स + अहङ्कारेण | वा | पुनः |
| क्रियते | बहुल + आयासं | तत् + राजसम् + उदाहृतम् |"]

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनपेक्ष्य च पौरुषम् ।
मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते ॥१८-२५॥

["| अनुबन्धं | क्षयं | हिंसाम् + अनपेक्ष्य | च | पौरुषम् |
| मोहात् + आरभ्यते | कर्म | यत् + तत् + तामसम् + उच्यते |"]

मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः ।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते ॥१८-२६॥

["| मुक्त + सङ्गो + अनहं + वादी | धृति + उत्साह + समन्वितः |
| सिद्धि + असिद्ध्योः + निर्विकारः | कर्ता | सात्त्विक | उच्यते |"]

–: ওঁ :–

নিয়তং সঙ্গরহিতমরাগদ্বেষতঃ কৃতম্ ।

অফলপ্রেপ্সুনা কর্ম যত্তৎসাত্ত্বিকমুচ্যতে ॥১৮-২৩॥

["| নিয়তং | সঙ্গ + রহিতম্ + অরাগ + দ্বেষতঃ | কৃতম্ |

| অফল + প্রেপ্সুনা | কর্ম | যৎ + তৎ + সাত্ত্বিকম্ + উচ্যতে |"]

যত্তু কামেপ্সুনা কর্ম সাহঙ্কারেণ বা পুনঃ ।

ক্রিয়তে বহুলায়াসং তদ্রাজসমুদাহৃতম্ ॥১৮-২৪॥

["| যৎ + তু | কাম + ঈপ্সুনা | কর্ম | স + অহঙ্কারেণ | বা | পুনঃ |

| ক্রিয়তে | বহুল + আয়াসং | তৎ + রাজসম্ + উদাহৃতম্ |"]

অনুবন্ধং ক্ষয়ং হিংসামনপেক্ষ্য চ পৌরুষম্ ।

মোহাদারভ্যতে কর্ম যত্তত্তামসমুচ্যতে ॥১৮-২৫॥

["| অনুবন্ধং | ক্ষয়ং | হিংসাম্ + অনপেক্ষ্য | চ | পৌরুষম্ |

| মোহাৎ + আরভ্যতে | কর্ম | যৎ + তৎ + তামসম্ + উচ্যতে |"]

মুক্তসঙ্গোঽনহংবাদী ধৃত্যুৎসাহসমন্বিতঃ ।

সিদ্ধ্যসিদ্ধ্যোর্নির্বিকারঃ কর্তা সাত্ত্বিক উচ্যতে ॥১৮-২৬॥

["| মুক্ত + সঙ্গো + অনহং + বাদী | ধৃতি + উৎসাহ + সমন্বিতঃ |

| সিদ্ধি + অসিদ্ধ্যোঃ + নির্বিকারঃ | কর্তা | সাত্ত্বিক | উচ্যতে |"]

–: ॐ :–

राागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः ।
हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः ॥१८-२७॥

["| रागी | कर्म + फल + प्रेप्सुः + लुब्धो | हिंसा + आत्मको + अशुचिः |
| हर्ष + शोक + अन्वितः | कर्ता | राजसः | परिकीर्तितः |"]

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठो नैष्कृतिकोऽलसः ।
विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते ॥१८-२८॥

["| अयुक्तः | प्राकृतः | स्तब्धः | शठो | नैष्कृतिको + अलसः |
| विषादी | दीर्घ + सूत्री | च | कर्ता | तामस | उच्यते |"]

बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं श‍ृणु ।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनञ्जय ॥१८-२९॥

["| बुद्धेः + भेदं | धृतेः + च + एव | गुणतः + त्रि + विधं | श‍ृणु |
| प्रोच्यमानम् + अशेषेण | पृथक्त्वेन | धनञ्जय |"]

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये ।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥१८-३०॥

["| प्रवृत्तिं | च | निवृत्तिं | च | कार्य + अकार्ये | भय + अभये |
| बन्धं | मोक्षं | च | या | वेत्ति | बुद्धिः | सा | पार्थ | सात्त्विकी |"]

–: ॐ :–

রাগী কর্মফলপ্রেপ্সুর্লুব্ধো হিংসাত্মকোঽশুচিঃ ।

হর্ষশোকান্বিতঃ কর্তা রাজসঃ পরিকীর্তিতঃ ॥১৮-২৭॥

["| রাগী | কর্ম + ফল + প্রেপ্সুঃ + লুব্ধো | হিংসা + আত্মকো + অশুচিঃ |
| হর্ষ + শোক + অন্বিতঃ | কর্তা | রাজসঃ | পরিকীর্তিতঃ |"]

অযুক্তঃ প্রাকৃতঃ স্তব্ধঃ শঠো নৈষ্কৃতিকোঽলসঃ ।

বিষাদী দীর্ঘসূত্রী চ কর্তা তামস উচ্যতে ॥১৮-২৮॥

["| অযুক্তঃ | প্রাকৃতঃ | স্তব্ধঃ | শঠো | নৈষ্কৃতিকো + অলসঃ |
| বিষাদী | দীর্ঘ + সূত্রী | চ | কর্তা | তামস | উচ্যতে |"]

বুদ্ধের্ভেদং ধৃতেশ্চৈব গুণতস্ত্রিবিধং শৃণু ।

প্রোচ্যমানমশেষেণ পৃথক্ত্বেন ধনঞ্জয় ॥১৮-২৯॥

["| বুদ্ধেঃ + ভেদং | ধৃতেঃ + চ + এব | গুণতঃ + ত্রি + বিধং | শৃণু |
| প্রোচ্যমানম্ + অশেষেণ | পৃথক্ত্বেন | ধনঞ্জয় |"]

প্রবৃত্তিং চ নিবৃত্তিং চ কার্যাকার্যে ভয়াভয়ে ।

বন্ধং মোক্ষং চ যা বেত্তি বুদ্ধিঃ সা পার্থ সাত্ত্বিকী ॥১৮-৩০॥

["| প্রবৃত্তিং | চ | নিবৃত্তিং | চ | কার্য + অকার্যে | ভয় + অভয়ে |
| বন্ধং | মোক্ষং | চ | যা | বেত্তি | বুদ্ধিঃ | সা | পার্থ | সাত্ত্বিকী |"]

–: ॐ :–

यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च ।
अयथावत् प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी ॥१८-३१॥

["| यया | धर्मम् + अधर्मं | च | कार्यं | च + अकार्यम् + एव | च |
| अयथा + वत् | प्रजानाति | बुद्धिः | सा | पार्थ | राजसी |"]

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता ।
सर्वार्थान् विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ॥१८-३२॥

["| अधर्मं | धर्मम् + इति | या | मन्यते | तमस + आवृता |
| सर्व + अर्थान् | विपरीतान् + च | बुद्धिः | सा | पार्थ | तामसी |"]

धृत्या यया धारयते मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः ।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥१८-३३॥

["| धृत्या | यया | धारयते | मनः + प्राण + इन्द्रिय + क्रियाः |
| योगेन + अव्यभिचारिण्या | धृतिः | सा | पार्थ | सात्त्विकी |"]

यया तु धर्मकामार्थान् धृत्या धारयतेऽर्जुन ।
प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी ॥१८-३४॥

["| यया | तु | धर्म + काम + अर्थान् | धृत्या | धारयते + अर्जुन |
| प्रसङ्गेन | फल + आकाङ्क्षी | धृतिः | सा | पार्थ | राजसी |"]

–: ॐ :–

যয়া ধর্মমধর্মং চ কার্যং চাকার্যমেব চ ।

অযথাবৎ প্রজানাতি বুদ্ধিঃ সা পার্থ রাজসী ॥১৮-৩১॥

["| যয়া | ধর্মম্ + অধর্মং | চ | কার্যং | চ + অকার্যম্ + এব | চ |
| অযথা + বৎ | প্রজানাতি | বুদ্ধিঃ | সা | পার্থ | রাজসী |"]

অধর্মং ধর্মমিতি যা মন্যতে তমসাবৃতা ।

সর্বার্থান্ বিপরীতাংশ্চ বুদ্ধিঃ সা পার্থ তামসী ॥১৮-৩২॥

["| অধর্মং | ধর্মম্ + ইতি | যা | মন্যতে | তমস + আবৃতা |
| সর্ব + অর্থান্ | বিপরীতান্ + চ | বুদ্ধিঃ | সা | পার্থ | তামসী |"]

ধৃত্যা যয়া ধারয়তে মনঃপ্রাণেন্দ্রিয়ক্রিয়াঃ ।

যোগেনাব্যভিচারিণ্যা ধৃতিঃ সা পার্থ সাত্বিকী ॥১৮-৩৩॥

["| ধৃত্যা | যয়া | ধারয়তে | মনঃ + প্রাণ + ইন্দ্রিয় + ক্রিয়াঃ |
| যোগেন + অব্যভিচারিণ্যা | ধৃতিঃ | সা | পার্থ | সাত্বিকী |"]

যয়া তু ধর্মকামার্থান্ ধৃত্যা ধারয়তেঽর্জুন ।

প্রসঙ্গেন ফলাকাঙ্ক্ষী ধৃতিঃ সা পার্থ রাজসী ॥১৮-৩৪॥

["| যয়া | তু | ধর্ম + কাম + অর্থান্ | ধৃত্যা | ধারয়তে + অর্জুন |
| প্রসঙ্গেন | ফল + আকাঙ্ক্ষী | ধৃতিঃ | সা | পার্থ | রাজসী |"]

–: ॐ :–

यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च ।
न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी ॥१८-३५॥

["| यया | स्वप्नं | भयं | शोकं | विषादं | मदम् + एव | च |
| न | विमुञ्चति | दुर्मेधा | धृतिः | सा | पार्थ | तामसी |"]

सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ ।
अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति ॥१८-३६॥

["| सुखं | तू + इदानीं | त्रि + विधं | शृणु | मे | भरत + ऋषभ |
| अभ्यासात् + रमते | यत्र | दुःख + अन्तं | च | निगच्छति |"]

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥१८-३७॥

["| यत् + तत् + अग्रे | विषम + इव | परिणामे + अमृत + उपमम् |
| तत् + सुखं | सात्त्विकं | प्रोक्तम् + आत्म + बुद्धि + प्रसाद + जम् |"]

विषयेन्द्रिय संयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ।
परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम् ॥१८-३८॥

["| विषय + इन्द्रिय | संयोगात् + यत् + तत् + अग्रे + अमृत + उपमम् |
| परिणामे | विषम् + इव | तत् + सुखं | राजसं | स्मृतम् |"]

–: ॐ :–

যয়া স্বপ্নং ভয়ং শোকং বিষাদং মদমেব চ ।

ন বিমুঞ্চতি দুর্মেধা ধৃতিঃ সা পার্থ তামসী ॥১৮-৩৫॥

["| যয়া | স্বপ্নং | ভয়ং | শোকং | বিষাদং | মদম্ + এব | চ |
| ন | বিমুঞ্চতি | দুর্মেধা | ধৃতিঃ | সা | পার্থ | তামসী |"]

সুখং ত্বিদানীং ত্রিবিধং শৃণু মে ভরতর্ষভ ।

অভ্যাসাদ্রমতে যত্র দুঃখান্তং চ নিগচ্ছতি ॥১৮-৩৬॥

["| সুখং | তু + ইদানীং | ত্রি + বিধং | শৃণু | মে | ভরত + ঋষভ |
| অভ্যাসাৎ + রমতে | যত্র | দুঃখ + অন্তং | চ | নিগচ্ছতি |"]

যত্তদগ্রে বিষমিব পরিণামেঽমৃতোপমম্ ।

তৎসুখং সাত্ত্বিকং প্রোক্তমাত্মবুদ্ধিপ্রসাদজম্ ॥১৮-৩৭॥

["| যৎ + তৎ + অগ্রে | বিষম্ + ইব | পরিণামে + অমৃত + উপমম্ |
| তৎ + সুখং | সাত্ত্বিকং | প্রোক্তম্ + আত্ম + বুদ্ধি + প্রসাদ + জম্ |"]

বিষয়েন্দ্রিয় সংযোগাদ্যত্তদগ্রেঽমৃতোপমম্ ।

পরিণামে বিষমিব তৎসুখং রাজসং স্মৃতম্ ॥১৮-৩৮॥

["| বিষয় + ইন্দ্রিয় | সংযোগাৎ + যৎ + তৎ + অগ্রে + অমৃত + উপমম্ |
| পরিণামে | বিষম্ + ইব | তৎ + সুখং | রাজসং | স্মৃতম্ |"]

–: ॐ :–

यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः ।
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम् ॥१८-३९॥

["| यत् + अग्रे | च + अनुबन्धे | च | सुखं | मोहनम् + आत्मनः |
| निद्रा + आलस्य + प्रमाद + उत्थं | तत् + तामसम् + उदाहृतम् |"]

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः ।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः ॥१८-४०॥

["| न | तत् + अस्ति | पृथिव्यां | वा | दिवि | देवेषु | वा | पुनः |
| सत्त्वं | प्रकृति + जैः + मुक्तं | यत् + एभिः | स्यात् + त्रिभिः + गुणैः |"]

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परन्तप ।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥१८-४१॥

["| ब्राह्मण + क्षत्रिय + विशां | शूद्राणां | च | परन्तप |
| कर्माणि | प्रविभक्तानि | स्वभाव + प्रभवैः + गुणैः |"]

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च ।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ॥१८-४२॥

["| शमो | दमः + तपः | शौचं | क्षान्तिः + आर्जवम् + एव | च |
| ज्ञानं | विज्ञानम् + आस्तिक्यं | ब्रह्म + कर्म | स्वभाव + जम् |"]

–: ওঁ :–

যদগ্রে চানুবন্ধে চ সুখং মোহনমাত্মনঃ ।

নিদ্রালস্যপ্রমাদোত্থং তত্তামসমুদাহৃতম্ ॥১৮-৩৯॥

["| যৎ + অগ্রে | চ + অনুবন্ধে | চ | সুখং | মোহনম্ + আত্মনঃ |
| নিদ্রা + আলস্য + প্রমাদ + উত্থং | তৎ + তামসম্ + উদাহৃতম্ |"]

ন তদস্তি পৃথিব্যাং বা দিবি দেবেষু বা পুনঃ ।

সত্ত্বং প্রকৃতিজৈর্মুক্তং যদেভিঃ স্যাৎত্রিভির্গুণৈঃ ॥১৮-৪০॥

["| ন | তৎ + অস্তি | পৃথিব্যাং | বা | দিবি | দেবেষু | বা | পুনঃ |
| সত্ত্বং | প্রকৃতি + জৈঃ + মুক্তং | যৎ + এভিঃ | স্যাৎ + ত্রিভিঃ + গুণৈঃ |"]

ব্রাহ্মণক্ষত্রিয়বিশাং শূদ্রাণাং চ পরন্তপ ।

কর্মাণি প্রবিভক্তানি স্বভাবপ্রভবৈর্গুণৈঃ ॥১৮-৪১॥

["| ব্রাহ্মণ + ক্ষত্রিয় + বিশাং | শূদ্রাণাং | চ | পরন্তপ |
| কর্মাণি | প্রবিভক্তানি | স্বভাব + প্রভবৈঃ + গুণৈঃ |"]

শমো দমস্তপঃ শৌচং ক্ষান্তিরার্জবমেব চ ।

জ্ঞানং বিজ্ঞানমাস্তিক্যং ব্রহ্মকর্ম স্বভাবজম্ ॥১৮-৪২॥

["| শমো | দমঃ + তপঃ | শৌচং | ক্ষান্তিঃ + আর্জবম্ + এব | চ |
| জ্ঞানং | বিজ্ঞানম্ + আস্তিক্যং | ব্রহ্ম + কর্ম | স্বভাব + জম্ |"]

–: ॐ :–

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् ।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥१८-४३॥

["| शौर्यं | तेजो | धृतिः + दाक्ष्यं | युद्धे | च + अपि + अपलायनम् |
| दानम् + ईश्वर + भावः + च | क्षात्रं | कर्म | स्वभाव + जम् |"]

कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् ।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥१८-४४॥

["| कृषि + गो + रक्ष्य + वाणिज्यं | वैश्य + कर्म | स्वभाव + जम् |
| परिचर्या + आत्मकं | कर्म | शूद्रस्य + अपि | स्वभाव + जम् |"]

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु ॥१८-४५॥

["| स्वे | स्वे | कर्मणि + अभिरतः | संसिद्धिं | लभते | नरः |
| स्व + कर्म + निरतः | सिद्धिं | यथा | विन्दति | तत् + शृणु |"]

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ॥१८-४६॥

["| यतः | प्रवृत्तिः + भूतानां | येन | सर्वम् + इदं | ततम् |
| स्व + कर्मणा | तम् + अभ्यर्च्य | सिद्धिं | विन्दति | मानवः |"]

–: ॐ :–

শৌর্যং তেজো ধৃতির্দাক্ষ্যং যুদ্ধে চাপ্যপলায়নম্ ।
দানমীশ্বরভাবশ্চ ক্ষাত্রং কর্ম স্বভাবজম্ ॥১৮-৪৩॥

["| শৌর্যং | তেজো | ধৃতিঃ + দাক্ষ্যং | যুদ্ধে | চ + অপি + অপলায়নম্ |
| দানম্ + ঈশ্বর + ভাবঃ + চ | ক্ষাত্রং | কর্ম | স্বভাব + জম্ |"]

কৃষিগোরক্ষ্যবাণিজ্যং বৈশ্যকর্ম স্বভাবজম্ ।
পরিচর্যাত্মকং কর্ম শূদ্রস্যাপি স্বভাবজম্ ॥১৮-৪৪॥

["| কৃষি + গো + রক্ষ্য + বাণিজ্যং | বৈশ্য + কর্ম | স্বভাব + জম্ |
| পরিচর্যা + আত্মকং | কর্ম | শূদ্রস্য + অপি | স্বভাব + জম্ |"]

স্বে স্বে কর্মণ্যভিরতঃ সংসিদ্ধিং লভতে নরঃ ।
স্বকর্মনিরতঃ সিদ্ধিং যথা বিন্দতি তচ্ছৃণু ॥১৮-৪৫॥

["| স্বে | স্বে | কর্মণি + অভিরতঃ | সংসিদ্ধিং | লভতে | নরঃ |
| স্ব + কর্ম + নিরতঃ | সিদ্ধিং | যথা | বিন্দতি | তৎ + শৃণু |"]

যতঃ প্রবৃত্তির্ভূতানাং যেন সর্বমিদং ততম্ ।
স্বকর্মণা তমভ্যর্চ্য সিদ্ধিং বিন্দতি মানবঃ ॥১৮-৪৬॥

["| যতঃ | প্রবৃত্তিঃ + ভূতানাং | যেন | সর্বম্ + ইদং | ততম্ |
| স্ব + কর্মণা | তম্ + অভ্যর্চ্য | সিদ্ধিং | বিন্দতি | মানবঃ |"]

–: ॐ :–

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात् ।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥१८-४७॥

["| श्रेयान् | स्व + धर्मो | विगुणः | पर + धर्मात् | सु + अनुष्ठितात् |
| स्वभाव + नियतं | कर्म | कुर्वन् + न + आप्नोति | किल्बिषम् |"]

सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत् ।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥१८-४८॥

["| सह + जं | कर्म | कौन्तेय | स + दोषम् + अपि | न | त्यजेत् |
| सर्व + आरम्भा | हि | दोषेण | धूमेन + अग्निः + इव + आवृताः |"]

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः ।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां सन्न्यासेनाधिगच्छति ॥१८-४९॥

["| असक्त + बुद्धिः | सर्वत्र | जित + आत्मा | विगत + स्पृहः |
| नैष्कर्म्य + सिद्धिं | परमां | सन्न्यासेन + अधिगच्छति |"]

सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे ।
समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा ॥१८-५०॥

["| सिद्धिं | प्राप्तो | यथा | ब्रह्म | तथा + आप्नोति | निबोध | मे |
| समासेन + एव | कौन्तेय | निष्ठा | ज्ञानस्य | या | परा |"]

–: ॐ :–

শ্রেয়ান্ স্বধর্মো বিগুণঃ পরধর্মাৎ স্বনুষ্ঠিতাৎ ।
স্বভাবনিয়তং কর্ম কুর্বন্নাপ্নোতি কিল্বিষম্ ॥১৮-৪৭॥

["| শ্রেয়ান্ | স্ব + ধর্মো | বিগুণঃ | পর + ধর্মাৎ | সু + অনুষ্ঠিতাৎ |
| স্বভাব + নিয়তং | কর্ম | কুর্বন্ + ন + আপ্নোতি | কিল্বিষম্ |"]

সহজং কর্ম কৌন্তেয় সদোষমপি ন ত্যজেৎ ।
সর্বারম্ভা হি দোষেণ ধূমেনাগ্নিরিবাবৃতাঃ ॥১৮-৪৮॥

["| সহ + জং | কর্ম | কৌন্তেয় | স + দোষম্ + অপি | ন | ত্যজেৎ |
| সর্ব + আরম্ভা | হি | দোষেণ | ধূমেন + অগ্নিঃ + ইব + আবৃতাঃ |"]

অসক্তবুদ্ধিঃ সর্বত্র জিতাত্মা বিগতস্পৃহঃ ।
নৈষ্কর্ম্যসিদ্ধিং পরমাং সন্ন্যাসেনাধিগচ্ছতি ॥১৮-৪৯॥

["| অসক্ত + বুদ্ধিঃ | সর্বত্র | জিত + আত্মা | বিগত + স্পৃহঃ |
| নৈষ্কর্ম্য + সিদ্ধিং | পরমাং | সন্ন্যাসেন + অধিগচ্ছতি |"]

সিদ্ধিং প্রাপ্তো যথা ব্রহ্ম তথাপ্নোতি নিবোধ মে ।
সমাসেনৈব কৌন্তেয় নিষ্ঠা জ্ঞানস্য যা পরা ॥১৮-৫০॥

["| সিদ্ধিং | প্রাপ্তো | যথা | ব্রহ্ম | তথা + আপ্নোতি | নিবোধ | মে |
| সমাসেন + এব | কৌন্তেয় | নিষ্ঠা | জ্ঞানস্য | যা | পরা |"]

–: ॐ :–

बुद्ध्या विशुद्ध्या युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च ।
शब्दादीन् विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च ॥१८-५१॥

["| बुद्ध्या | विशुद्ध्या | युक्तो | धृत्य + आत्मानं | नियम्य | च |
| शब्द + आदीन् | विषयान् + त्यक्त्वा | राग + द्वेषौ | व्युदस्य | च |"]

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः ।
ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥१८-५२॥

["| विविक्त + सेवी | लघु + आशी | यत + वाक् + काय + मानसः |
| ध्यान + योग + परो | नित्यं | वैराग्यं | समुपाश्रितः |"]

अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥१८-५३॥

["| अहङ्कारं | बलं | दर्पं | कामं | क्रोधं | परिग्रहम् |
| विमुच्य | निर्ममः | शान्तो | ब्रह्म + भूयाय | कल्पते |"]

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥१८-५४॥

["| ब्रह्म + भूतः | प्रसन्न + आत्मा | न | शोचति | न | काङ्क्षति |
| समः | सर्वेषु | भूतेषु | मत् + भक्तिं | लभते | पराम् |"]

–: ॐ :–

বুদ্ধ্যা বিশুদ্ধয়া যুক্তো ধৃত্যাত্মানং নিয়ম্য চ ।
শব্দাদীন্ বিষয়াংস্ত্যক্ত্বা রাগদ্বেষৌ ব্যুদস্য চ ॥১৮-৫১॥

["| বুদ্ধ্যা | বিশুদ্ধয়া | যুক্তো | ধৃত্য + আত্মানং | নিয়ম্য | চ |
| শব্দ + আদীন্ | বিষয়ান্ + ত্যক্ত্বা | রাগ + দ্বেষৌ | ব্যুদস্য | চ |"]

বিবিক্তসেবী লঘ্বাশী যতবাক্কায়মানসঃ ।
ধ্যানযোগপরো নিত্যং বৈরাগ্যং সমুপাশ্রিতঃ ॥১৮-৫২॥

["| বিবিক্ত + সেবী | লঘু + আশী | যত + বাক্ + কায় + মানসঃ |
| ধ্যান + যোগ + পরো | নিত্যং | বৈরাগ্যং | সমুপাশ্রিতঃ |"]

অহঙ্কারং বলং দর্পং কামং ক্রোধং পরিগ্রহম্ ।
বিমুচ্য নির্মমঃ শান্তো ব্রহ্মভূয়ায় কল্পতে ॥১৮-৫৩॥

["| অহঙ্কারং | বলং | দর্পং | কামং | ক্রোধং | পরিগ্রহম্ |
| বিমুচ্য | নির্মমঃ | শান্তো | ব্রহ্ম + ভূয়ায় | কল্পতে |"]

ব্রহ্মভূতঃ প্রসন্নাত্মা ন শোচতি ন কাঙ্ক্ষতি ।
সমঃ সর্বেষু ভূতেষু মদ্ভক্তিং লভতে পরাম্ ॥১৮-৫৪॥

["| ব্রহ্ম + ভূতঃ | প্রসন্ন + আত্মা | ন | শোচতি | ন | কাঙ্ক্ষতি |
| সমঃ | সর্বেষু | ভূতেষু | মৎ + ভক্তিং | লভতে | পরাম্ |"]

–: ॐ :–

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः ।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥१८-५५॥

["| भक्त्या | माम् + अभिजानाति | यावान् + यः + च + अस्मि | तत्त्वतः |
| ततो | मां | तत्त्वतो | ज्ञात्वा | विशते | तत् + अनन्तरम् |"]

सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः ।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥१८-५६॥

["| सर्व + कर्माणि + अपि | सदा | कुर्वाणो | मत् + व्यपाश्रयः |
| मत् + प्रसादात् + अवाप्नोति | शाश्वतं | पदम् + अव्ययम् |"]

चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः ।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥१८-५७॥

["| चेतसा | सर्व + कर्माणि | मयि | संन्यस्य | मत् + परः |
| बुद्धि + योगम् + उपाश्रित्य | मत् + चित्तः | सततं | भव |"]

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि ।
अथ चेत्त्वमहङ्कारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि ॥१८-५८॥

["| मत् + चित्तः | सर्व + दुर्गाणि | मत् + प्रसादात् + तरिष्यसि |
| अथ | चेत् + त्वम् + अहङ्कारात् + न | श्रोष्यसि | विनङ्क्ष्यसि |"]

–: ॐ :–

ভক্ত্যা মামভিজানাতি যাবান্যশ্চাস্মি তত্বতঃ ।

ততো মাং তত্বতো জ্ঞাত্বা বিশতে তদনন্তরম্ ॥১৮-৫৫॥

["| ভক্ত্যা | মাম্ + অভিজানাতি | যাবান্ + যঃ + চ + অস্মি | তত্বতঃ |
| ততো | মাং | তত্বতো | জ্ঞাত্বা | বিশতে | তৎ + অনন্তরম্ |"]

সর্বকর্মাণ্যপি সদা কুর্বাণো মদ্ব্যপাশ্রয়ঃ ।

মৎপ্রসাদাদবাপ্নোতি শাশ্বতং পদমব্যয়ম্ ॥১৮-৫৬॥

["| সর্ব + কর্মাণি + অপি | সদা | কুর্বাণো | মৎ + ব্যপাশ্রয়ঃ |
| মৎ + প্রসাদাৎ + অবাপ্নোতি | শাশ্বতং | পদম্ + অব্যয়ম্ |"]

চেতসা সর্বকর্মাণি ময়ি সংন্যস্য মৎপরঃ ।

বুদ্ধিযোগমুপাশ্রিত্য মচ্চিত্তঃ সততং ভব ॥১৮-৫৭॥

["| চেতসা | সর্ব + কর্মাণি | ময়ি | সংন্যস্য | মৎ + পরঃ |
| বুদ্ধি + যোগম্ + উপাশ্রিত্য | মৎ + চিত্তঃ | সততং | ভব |"]

মচ্চিত্তঃ সর্বদুর্গাণি মৎপ্রসাদাত্তরিষ্যসি ।

অথ চেৎত্বমহঙ্কারান্ন শ্রোষ্যসি বিনঙ্ক্ষ্যসি ॥১৮-৫৮॥

["| মৎ + চিত্তঃ | সর্ব + দুর্গাণি | মৎ + প্রসাদাৎ + তরিষ্যসি |
| অথ | চেৎ + ত্বম্ + অহঙ্কারাৎ + ন | শ্রোষ্যসি | বিনঙ্ক্ষ্যসি |"]

–: ॐ :–

यदहङ्कारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे ।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति ॥१८-५९॥

["| यत् + अहङ्कारम् + आश्रित्य | न | योत्स्य | इति | मन्यसे |
| मिथ्या + एष | व्यवसायः + ते | प्रकृतिः + त्वां | नियोक्ष्यति |"]

स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा ।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात् करिष्यस्यवशोऽपि तत् ॥१८-६०॥

["| स्वभाव + जेन | कौन्तेय | निबद्धः | स्वेन | कर्मणा |
| कर्तुं | न + इच्छसि | यत् + मोहात् | करिष्यसि + अवशो + अपि | तत् |"]

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढ़ानि मायया ॥१८-६१॥

["| ईश्वरः | सर्व + भूतानां | हृत् + देशे + अर्जुन | तिष्ठति |
| भ्रामयन् | सर्व + भूतानि | यन्त्र + आरूढ़ानि | मायया |"]

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।
तत्प्रसादात् परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥१८-६२॥

["| तम् + एव | शरणं | गच्छ | सर्व + भावेन | भारत |
| तत् + प्रसादात् | परां | शान्तिं | स्थानं | प्राप्स्यसि | शाश्वतम् |"]

–: ওঁ :–

যদহঙ্কারমাশ্রিত্য ন যোৎস্য ইতি মন্যসে ।

মিথ্যৈষ ব্যবসায়স্তে প্রকৃতিস্ত্বাং নিযোক্ষ্যতি ॥১৮-৫৯॥

["| যৎ + অহঙ্কারম্ + আশ্রিত্য | ন | যোৎস্য | ইতি | মন্যসে |
| মিথ্যা + এষ | ব্যবসায়ঃ + তে | প্রকৃতিঃ + ত্বাং | নিযোক্ষ্যতি |"]

স্বভাবজেন কৌন্তেয় নিবদ্ধঃ স্বেন কর্মণা ।

কর্তুং নেচ্ছসি যন্মোহাৎ করিষ্যস্যবশোঽপি তৎ ॥১৮-৬০॥

["| স্বভাব + জেন | কৌন্তেয় | নিবদ্ধঃ | স্বেন | কর্মণা |
| কর্তুং | ন + ইচ্ছসি | যৎ + মোহাৎ | করিষ্যসি + অবশো + অপি | তৎ |"]

ঈশ্বরঃ সর্বভূতানাং হৃদ্দেশেঽর্জুন তিষ্ঠতি ।

ভ্রাময়ন্ সর্বভূতানি যন্ত্রারূঢ়ানি মায়য়া ॥১৮-৬১॥

["| ঈশ্বরঃ | সর্ব + ভূতানাং | হৃৎ + দেশে + অর্জুন | তিষ্ঠতি |
| ভ্রাময়ন্ | সর্ব + ভূতানি | যন্ত্র + আরূঢ়ানি | মায়য়া |"]

তমেব শরণং গচ্ছ সর্বভাবেন ভারত ।

তৎপ্রসাদাৎ পরাং শান্তিং স্থানং প্রাপ্স্যসি শাশ্বতম্ ॥১৮-৬২॥

["| তম্ + এব | শরণং | গচ্ছ | সর্ব + ভাবেন | ভারত |
| তৎ + প্রসাদাৎ | পরাং | শান্তিং | স্থানং | প্রাপ্স্যসি | শাশ্বতম্ |"]

–: ॐ :–

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया ।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ॥१८-६३॥

["| इति | ते | ज्ञानम् + आख्यातं | गुह्यात् + गुह्य + तरं | मया |
| विमृश्य + एतत् + अशेषेण | यथा + इच्छसि | तथा | कुरु |"]

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः ।
इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् ॥१८-६४॥

["| सर्व + गुह्य + तमं | भूयः | शृणु | मे | परमं | वचः |
| इष्टो + असि | मे | दृढम् + इति | ततो | वक्ष्यामि | ते | हितम् |"]

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥१८-६५॥

["| मत् + मना | भव | मत् + भक्तो | मत् + याजी | मां | नमः + कुरु |
| माम् + एव + एष्यसि | सत्यं | ते | प्रतिजाने | प्रियो + असि | मे |"]

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥१८-६६॥

["| सर्व + धर्मान् | परित्यज्य | माम् + एकं | शरणं | व्रज |
| अहं | त्वां | सर्व + पापेभ्यो | मोक्षयिष्यामि | मा | शुचः |"]

–: ॐ :–

ইতি তে জ্ঞানমাখ্যাতং গুহ্যাদ্গুহ্যতরং ময়া ।

বিমৃশ্যৈতদশেষেণ যথেচ্ছসি তথা কুরু ॥১৮-৬৩॥

["| ইতি | তে | জ্ঞানম্ + আখ্যাতং | গুহ্যাৎ + গুহ্য + তরং | ময়া |

| বিমৃশ্য + এতৎ + অশেষেণ | যথা + ইচ্ছসি | তথা | কুরু |"]

সর্বগুহ্যতমং ভূয়ঃ শৃণু মে পরমং বচঃ ।

ইষ্টোঽসি মে দৃঢ়মিতি ততো বক্ষ্যামি তে হিতম্ ॥১৮-৬৪॥

["| সর্ব + গুহ্য + তমং | ভূয়ঃ | শৃণু | মে | পরমং | বচঃ |

| ইষ্টো + অসি | মে | দৃঢ়ম্ + ইতি | ততো | বক্ষ্যামি | তে | হিতম্ |"]

মন্মনা ভব মদ্ভক্তো মদ্যাজী মাং নমস্কুরু ।

মামেবৈষ্যসি সত্যং তে প্রতিজানে প্রিয়োঽসি মে ॥১৮-৬৫॥

["| মৎ + মনা | ভব | মৎ + ভক্তো | মৎ + যাজী | মাং | নমঃ + কুরু |

| মাম্ + এব + এষ্যসি | সত্যং | তে | প্রতিজানে | প্রিয়ো + অসি | মে |"]

সর্বধর্মান্ পরিত্যজ্য মামেকং শরণং ব্রজ ।

অহং ত্বাং সর্বপাপেভ্যো মোক্ষয়িষ্যামি মা শুচঃ ॥১৮-৬৬॥

["| সর্ব + ধর্মান্ | পরিত্যজ্য | মাম্ + একং | শরণং | ব্রজ |

| অহং | ত্বাং | সর্ব + পাপেভ্যো | মোক্ষয়িষ্যামি | মা | শুচঃ |"]

–: ॐ :–

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन ।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति ॥१८-६७॥

["| इदं | ते | न + अतपस्काय | न + अभक्ताय | कदाचन |
| न | च + अशुश्रूषवे | वाच्यं | न | च | मां | यो + अभ्यसूयति |"]

य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥१८-६८॥

["| य | इमं | परमं | गुह्यं | मत् + भक्तेषु + अभिधास्यति |
| भक्तिं | मयि | परां | कृत्वा | माम् + एव + एष्यति + असंशयः |"]

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥१८-६९॥

["| न | च | तस्मात् + मनुष्येषु | कश्चित् + में | प्रिय + कृत् + तमः |
| भविता | न | च | मे | तस्मात् + अन्यः | प्रिय + तरो | भुवि |"]

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥१८-७०॥

["| अध्येष्यते | च | य | इमं | धर्म्यं | संवादम् + आवयोः |
| ज्ञान + यज्ञेन | तेन + अहम् + इष्टः | स्याम् + इति | मे | मतिः |"]

–: ॐ :–

ইদং তে নাতপস্কায় নাভক্তায় কদাচন ।

ন চাশুশ্রূষবে বাচ্যং ন চ মাং যোঽভ্যসূয়তি ॥১৮-৬৭॥

["| ইদং | তে | ন + অতপস্কায় | ন + অভক্তায় | কদাচন |
| ন | চ + অশুশ্রূষবে | বাচ্যং | ন | চ | মাং | যো + অভ্যসূয়তি |"]

য ইদং পরমং গুহ্যং মদ্ভক্তেষ্বভিধাস্যতি ।

ভক্তিং ময়ি পরাং কৃত্বা মামেবৈষ্যত্যসংশয়ঃ ॥১৮-৬৮॥

["| য | ইদং | পরমং | গুহ্যং | মৎ + ভক্তেষু + অভিধাস্যতি |
| ভক্তিং | ময়ি | পরাং | কৃত্বা | মাম্ + এব + এষ্যতি + অসংশয়ঃ |"]

ন চ তস্মান্মনুষ্যেষু কশ্চিন্মে প্রিয়কৃত্তমঃ ।

ভবিতা ন চ মে তস্মাদন্যঃ প্রিয়তরো ভুবি ॥১৮-৬৯॥

["| ন | চ | তস্মাৎ + মনুষ্যেষু | কশ্চিৎ + মে | প্রিয় + কৃৎ + তমঃ |
| ভবিতা | ন | চ | মে | তস্মাৎ + অন্যঃ | প্রিয় + তরো | ভুবি |"]

অধ্যেষ্যতে চ য ইমং ধর্ম্যং সংবাদমাবয়োঃ ।

জ্ঞানযজ্ঞেন তেনাহমিষ্টঃ স্যামিতি মে মতিঃ ॥১৮-৭০॥

["| অধ্যেষ্যতে | চ | য | ইমং | ধর্ম্যং | সংবাদম্ + আবয়োঃ |
| জ্ঞান + যজ্ঞেন | তেন + অহম্ + ইষ্টঃ | স্যাম্ + ইতি | মে | মতিঃ |"]

–: ॐ :–

श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान् प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम् ॥१८-७१॥

["| श्रद्धा + वान् + अनसूयः + च | शृणुयात् + अपि | यो | नरः |
| सो + अपि | मुक्तः | शुभान् + लोकान् | प्राप्नुयात् | पुण्य + कर्मणाम् |"]

कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा ।
कच्चिदज्ञानसम्मोहः प्रनष्टस्ते धनञ्जय ॥१८-७२॥

["| कच्चित् + एतत् + श्रुतं | पार्थ | त्वया + एक + अग्रेण | चेतसा |
| कच्चित् + अज्ञान + सम्मोहः | प्रनष्टः + ते | धनञ्जय |"]

अर्जुन उवाच :—
नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥१८-७३॥

["| अर्जुन | उवाच | नष्टो | मोहः | स्मृतिः + लब्धा | त्वत् + प्रसादात् + मया + अच्युत |
| स्थितो + अस्मि | गत + सन्देहः | करिष्ये | वचनं | तव |"]

–: ॐ :–

শ্রদ্ধাবাননসূয়শ্চ শৃণুয়াদপি যো নরঃ ।

সোঽপি মুক্তঃ শুভাঁল্লোকান্ প্রাপ্নুয়াৎ পুণ্যকর্মণাম্ ॥১৮-৭১॥

["| শ্রদ্ধা + বান্ + অনসূয়ঃ + চ | শৃণুয়াৎ + অপি | যো | নরঃ |
| সো + অপি | মুক্তঃ | শুভান্ + লোকান্ | প্রাপ্নুয়াৎ | পুণ্য + কর্মণাম্ |"]

কচ্চিদেতচ্ছ্রুতং পার্থ ত্বয়ৈকাগ্রেণ চেতসা ।

কচ্চিদজ্ঞানসম্মোহঃ প্রনষ্টস্তে ধনঞ্জয় ॥১৮-৭২॥

["| কচ্চিৎ + এতৎ + শ্রুতং | পার্থ | ত্বয়া + এক + অগ্রেণ | চেতসা |
| কচ্চিৎ + অজ্ঞান + সম্মোহঃ | প্রনষ্টঃ + তে | ধনঞ্জয় |"]

অর্জুন উবাচ :—

নষ্টো মোহঃ স্মৃতির্লব্ধা ত্বৎপ্রসাদান্ময়াচ্যুত ।

স্থিতোঽস্মি গতসন্দেহঃ করিষ্যে বচনং তব ॥১৮-৭৩॥

["| অর্জুন | উবাচ | নষ্টো | মোহঃ | স্মৃতিঃ + লব্ধা | ত্বৎ + প্রসাদাৎ + ময়া + অচ্যুত |
| স্থিতো + অস্মি | গত + সন্দেহঃ | করিষ্যে | বচনং | তব |"]

–: ॐ :–

सञ्जय उवाच :—

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।
संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥१८-७४॥

["| सञ्जय | उवाच | इति + अहं | वासुदेवस्य | पार्थस्य | च | महा + आत्मनः |
| संवादम् + इमम् + अश्रौषम् + अद्भुतं | रोम + हर्षणम् |"]

व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं परम् ।
योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम् ॥१८-७५॥

["| व्यास + प्रसादात् + श्रुतवान् + एतत् + गुह्यम् + अहं | परम् |
| योगं | योग + ईश्वरात् + कृष्णात् + साक्षात् + कथयतः | स्वयम् |"]

राजन् संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् ।
केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥१८-७६॥

["| राजन् | संस्मृत्य | संस्मृत्य | संवादम् + इमम् + अद्भुतम् |
| केशव + अर्जुनयोः | पुण्यं | हृष्यामि | च | मुहुः + मुहुः |"]

–: ॐ :–

সঞ্জয় উবাচ :—

ইত্যহং বাসুদেবস্য পার্থস্য চ মহাত্মনঃ ।

সংবাদমিমমশ্রৌষমদ্ভুতং রোমহর্ষণম্ ॥১৮-৭৪॥

["| সঞ্জয় | উবাচ | ইতি + অহং | বাসুদেবস্য | পার্থস্য | চ | মহা + আত্মনঃ |
| সংবাদম্ + ইমম্ + অশ্রৌষম্ + অদ্ভুতং | রোম + হর্ষণম্ |"]

ব্যাসপ্রসাদাচ্ছ্রুতবানেতদ্‌গুহ্যমহং পরম্ ।

যোগং যোগেশ্বরাৎকৃষ্ণাৎসাক্ষাৎকথয়তঃ স্বয়ম্ ॥১৮-৭৫॥

["| ব্যাস + প্রসাদাৎ + শ্রুতবান্ + এতৎ + গুহ্যম্ + অহং | পরম্ |
| যোগং | যোগ + ঈশ্বরাৎ + কৃষ্ণাৎ + সাক্ষাৎ + কথয়তঃ | স্বয়ম্ |"]

রাজন্ সংস্মৃত্য সংস্মৃত্য সংবাদমিমমদ্ভুতম্ ।

কেশবার্জুনয়োঃ পুণ্যং হৃষ্যামি চ মুহুর্মুহুঃ ॥১৮-৭৬॥

["| রাজন্ | সংস্মৃত্য | সংস্মৃত্য | সংবাদম্ + ইমম্ + অদ্ভুতম্ |
| কেশব + অর্জুনয়োঃ | পুণ্যং | হৃষ্যামি | চ | মুহুঃ + মুহুঃ |"]

–: ॐ :–

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः ।
विस्मयो मे महान् राजन् हृष्यामि च पुनः पुनः ॥१८-७७॥

["| तत् + च | संस्मृत्य | संस्मृत्य | रूपम् + अति + अद्भुतं | हरेः |
| विस्मयो | मे | महान् | राजन् | हृष्यामि | च | पुनः | पुनः |"]

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥१८-७८॥

["| यत्र | योग + ईश्वरः | कृष्णो | यत्र | पार्थो | धनुः + धरः |
| तत्र | श्रीः + विजयो | भूतिः + ध्रुवा | नीतिः + मतिः + मम |"]

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि
श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जूनसंवादे
मोक्षयोगो नाम अष्टादशोऽध्यायः॥१८॥

["| ॐ | तत् + सत् + इति | श्री + महाभारते | शत + साहस्र्यां | संहितायां | वैयासिक्यां |
| भीष्म + पर्वणि | श्रीमत् + भगवत् + गीतासु + उपनिषत्सु | ब्रह्म + विद्यायां | योग + शास्त्रे |
| श्रीकृष्ण + अर्जून + संवादे | मोक्ष + योगो | नाम | अष्टादशो + अध्यायः |"]

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीता समाप्ता ॥

-: ॐ तत्सत् ॐ :-

* * * * * * *

–: ॐ :–

তচ্চ সংস্মৃত্য সংস্মৃত্য রূপমত্যদ্ভুতং হরেঃ ।
বিস্ময়ো মে মহান্ রাজন্ হৃষ্যামি চ পুনঃ পুনঃ ॥১৮-৭৭॥

["| তৎ + চ | সংস্মৃত্য | সংস্মৃত্য | রূপম্ + অতি + অদ্ভুতং | হরেঃ |
| বিস্ময়ো | মে | মহান্ | রাজন্ | হৃষ্যামি | চ | পুনঃ | পুনঃ |"]

যত্র যোগেশ্বরঃ কৃষ্ণো যত্র পার্থো ধনুর্ধরঃ ।
তত্র শ্রীর্বিজয়ো ভূতির্ধ্রুবা নীতির্মতির্মম ॥১৮-৭৮॥

["| যত্র | যোগ + ঈশ্বরঃ | কৃষ্ণো | যত্র | পার্থো | ধনুঃ + ধরঃ |
| তত্র | শ্রীঃ + বিজয়ো | ভূতিঃ + ধ্রুবা | নীতিঃ + মতিঃ + মম |"]

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীষ্মপর্বণি
শ্রীমদ্ভগবদ্‌গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে
মোক্ষযোগো নাম অষ্টাদশোঽধ্যায়ঃ ॥১৮॥

["| ওঁ | তৎ + সৎ + ইতি | শ্রী + মহাভারতে | শত + সাহস্র্যাং | সংহিতায়াং | বৈয়াসিক্যাং |
| ভীষ্ম + পর্বণি | শ্রীমৎ + ভগবৎ + গীতাসু + উপনিষৎসু | ব্রহ্ম + বিদ্যায়াং | যোগ + শাস্ত্রে |
| শ্রীকৃষ্ণ + অর্জুন + সংবাদে | মোক্ষ + যোগো | নাম | অষ্টাদশো + অধ্যায়ঃ |"]

॥ ইতি শ্রীমদ্ভগবদ্‌গীতা সমাপ্তা ॥

-: ওঁ তৎসৎ ওঁ :-

* * * * * * *

–: ॐ :–

श्री श्री गीता माहात्म्यम्

अथ (श्री वराह-पुराणोक्त) गीता माहात्म्यं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

****

धरोवाच :—

भगवन् परमेशान भक्तिरव्यभिचारिणी ।

प्रारब्धं भुज्यमानस्य कथं भवति हे प्रभो ॥०१॥

["| धरा + उवाच | भगवन् | परम + ईशान | भक्तिः + अव्यभिचारिणी |
| प्रारब्धं | भुज्यमान् + अस्य | कथं | भवति | हे | प्रभो |"]

श्रीविष्णुरुवाच :—

प्रारब्धं भुज्यमानो हि गीताभ्यासरतः सदा ।

स मुक्तः स सुखी लोके कर्मणा नोपलिप्यते ॥०२॥

["| श्री + विष्णुः + उवाच | प्रारब्धं | भुज्यमानो | हि | गीता + अभ्यासरतः | सदा |
| स | मुक्तः | स | सुखी | लोके | कर्मणा | न + उपलिप्यते |"]

–: ওঁ :–

শ্রী শ্রী গীতা মাহাত্ম্যম্

অথ (শ্রী বরাহ-পুরাণোক্ত) গীতা মাহাত্ম্যং

ওঁ নমো ভগবতে বাসুদেবায়

****

ধরোবাচ :—

ভগবন্ পরমেশান ভক্তিরব্যভিচারিণী ।

প্রারব্ধং ভুজ্যমানস্য কথং ভবতি হে প্রভো ॥০১॥

["| ধরা + উবাচ | ভগবন্ | পরম + ঈশান | ভক্তিঃ + অব্যভিচারিণী |
| প্রারব্ধং | ভুজ্যমান্ + অস্য | কথং | ভবতি | হে | প্রভো |"]

শ্রীবিষ্ণুরুবাচ :—

প্রারব্ধং ভুজ্যমানো হি গীতাভ্যাসরতঃ সদা ।

স মুক্তঃ স সুখী লোকে কর্ম্মণা নোপলিপ্যতে ॥০২॥

["| শ্রী + বিষ্ণুঃ + উবাচ | প্রারব্ধং | ভুজ্যমানো | হি | গীতা + অভ্যাস + রতঃ | সদা |
| স | মুক্তঃ | স | সুখী | লোকে | কর্ম্মণা | ন + উপলিপ্যতে |"]

–: ॐ :–

महापापातिपापानि गीताध्यानं करोति चेत् ।
क्वचित्स्पर्शं न कुर्वन्ति नलिनीदलमम्बुवत् ॥०३॥

["| महा + पाप + अति + पापानि | गीता + ध्यानं | करोति | चेत् |
| क्वचित् + स्पर्शं | न | कुर्वन्ति | नलिनी + दलम् + अम्बुवत् |"]

गीतायाः पुस्तकं यत्र यत्र पाठः प्रवर्तते ।
तत्र सर्वाणि तीर्थानि प्रयागादीनि तत्र वै ॥०४॥

["| गीतायाः | पुस्तकं | यत्र | यत्र | पाठः | प्रवर्तते |
| तत्र | सर्वाणि | तीर्थानि | प्रयाग + आदीनि | तत्र | वै |"]

सर्वे देवाश्च ऋषयः योगिनः पन्नगाश्च ये ।
गोपाला गोपिकावाऽपि नारदोद्धवपार्षदैः ॥०५॥

["| सर्वे | देवाः + च | ऋषयः | योगिनः | पन्नगाः + च | ये |
| गोपाला | गोपिका + वा + अपि | नारद + उद्धव + पार्षदैः |"]

सहायो जायते शीघ्रं यत्र गीता प्रवर्तते ।
यत्र गीता विचारश्च पठनं पाठनं श्रुतम् ।
तत्राहं निश्चितं पृथ्वि निवसामि सदैव हि ॥०६॥

["| सहायो | जायते | शीघ्रं | यत्र | गीता | प्रवर्तते | यत्र | गीता | विचारः + च |
| पठनं | पाठनं | श्रुतम् | तत्र + अहं | निश्चितं | पृथ्वि | निवसामि | सदा + एव | हि |"]

–: ॐ :–

মহাপাপাতিপাপানি গীতাধ্যানং করোতি চেৎ ।

ক্বচিৎস্পর্শং ন কুর্বন্তি নলিনীদলমম্বুবৎ ॥০৩॥

["| মহা + পাপ + অতি + পাপানি | গীতা + ধ্যানং | করোতি | চেৎ |
| ক্বচিৎ + স্পর্শং | ন | কুর্বন্তি | নলিনী + দলম্ + অম্বুবৎ |"]

গীতায়াঃ পুস্তকং যত্র যত্র পাঠঃ প্রবর্ততে ।

তত্র সর্বাণি তীর্থানি প্রয়াগাদীনি তত্র বৈ ॥০৪॥

["| গীতায়াঃ | পুস্তকং | যত্র | যত্র | পাঠঃ | প্রবর্ততে |
| তত্র | সর্বাণি | তীর্থানি | প্রয়াগ + আদীনি | তত্র | বৈ |"]

সর্বে দেবাশ্চ ঋষয়ো যোগিনঃ পন্নগাশ্চ যে ।

গোপালা গোপিকাবাঽপি নারদোদ্ধবপার্ষদৈঃ ॥০৫॥

["| সর্বে | দেবাঃ + চ | ঋষয়ো | যোগিনঃ | পন্নগাঃ + চ | যে |
| গোপালা | গোপিকা + বা + অপি | নারদ + উদ্ধব + পার্ষদৈঃ |"]

সহায়ো জায়তে শীঘ্রং যত্র গীতা প্রবর্ততে ।

যত্র গীতা বিচারশ্চ পঠনং পাঠনং শ্রুতম্ ।

তত্রাহং নিশ্চিতং পৃথ্বি নিবসামি সদৈব হি ॥০৬॥

["| সহায়ো | জায়তে | শীঘ্রং | যত্র | গীতা | প্রবর্ততে | যত্র | গীতা | বিচারঃ + চ |
| পঠনং | পাঠনং | শ্রুতম্ | তত্র + অহং | নিশ্চিতং | পৃথ্বি | নিবসামি | সদা + এব | হি |"]

–: ॐ :–

गीताश्रयेऽहं तिष्ठामि गीता मे चोत्तमं गृहम् ।
गीताज्ञानमुपाश्रित्य त्रीन् लोकान् पालयाम्यहम् ॥०७॥

["| गीता + आश्रये + अहं | तिष्ठामि | गीता | मे | च + उत्तमं | गृहम् |
| गीता + ज्ञानम् + उप + आश्रित्य | त्रीन् | लोकान् | पालयामि + अहम् |"]

गीता मे परमा विद्या ब्रह्मरूपा न संशयः ।
अर्धमात्राक्षरा नित्या सानिर्वाच्यपदात्मिका ॥०८॥

["| गीता | मे | परमा | विद्या | ब्रह्म + रूपा | न | संशयः |
| अर्ध + मात्रा + अक्षरा | नित्या | स + अनिर्वाच्य + पद + आत्मिका |"]

चिदानन्देन कृष्णेन प्रोक्ता स्वमुखतोऽर्जुनम् ।
वेदत्रयी परानन्दा तत्त्वार्थज्ञानसंयुता ॥०९॥

["| चित् + आनन्देन | कृष्णेन | प्रोक्ता | स्व + मुखतो + अर्जुनम् |
| वेद + त्रयी | परा + आनन्दा | तत्त्व + अर्थ + ज्ञान + संयुता |"]

योऽष्टादशः जपेन्नित्यं नरो निश्चलमानसः ।
ज्ञानसिद्धिं स लभते ततो याति परं पदम् ॥१०॥

["| यो + अष्टादशः | जपेत् + नित्यं | नरो | निश्चल + मानसः |
| ज्ञान + सिद्धिं | स | लभते | ततो | याति | परं | पदम् |"]

–: ॐ :–

গীতাশ্রয়েঽহং তিষ্ঠামি গীতা মে চোত্তমং গৃহম্ ।

গীতাজ্ঞানমুপাশ্রিত্য ত্রীন্ লোকান্ পালয়াম্যহম্ ॥০৭॥

["| গীতা + আশ্রয়ে + অহং | তিষ্ঠামি | গীতা | মে | চ + উত্তমং | গৃহম্ |
| গীতা + জ্ঞানম্ + উপ + আশ্রিত্য | ত্রীন্ | লোকান্ | পালয়ামি + অহম্ |"]

গীতা মে পরমা বিদ্যা ব্রহ্মরূপা ন সংশয়ঃ ।

অর্দ্ধমাত্রাক্ষরা নিত্যা সানির্বাচ্যপদাত্মিকা ॥০৮॥

["| গীতা | মে | পরমা | বিদ্যা | ব্রহ্ম + রূপা | ন | সংশয়ঃ |
| অর্দ্ধ + মাত্রা + অক্ষরা | নিত্যা | স + অনির্বাচ্য + পদ + আত্মিকা |"]

চিদানন্দেন কৃষ্ণেন প্রোক্তা স্বমুখতোঽর্জুনম্ ।

বেদত্রয়ী পরানন্দা তত্ত্বার্থজ্ঞানসংযুতা ॥০৯॥

["| চিৎ + আনন্দেন | কৃষ্ণেন | প্রোক্তা | স্ব + মুখতো + অর্জুনম্ |
| বেদ + ত্রয়ী | পরা + আনন্দা | তত্ত্ব + অর্থ + জ্ঞান + সংযুতা |"]

যোঽষ্টাদশঃ জপেন্নিত্যং নরো নিশ্চলমানসঃ ।

জ্ঞানসিদ্ধিং স লভতে ততো যাতি পরং পদম্ ॥১০॥

["| যো + অষ্টাদশঃ | জপেৎ + নিত্যং | নরো | নিশ্চল + মানসঃ |
| জ্ঞান + সিদ্ধিং | স | লভতে | ততো | যাতি | পরং | পদম্ |"]

–: ॐ :–

पाठेऽसमर्थः सम्पूर्णे ततोऽर्धं पाठमाचरेत् ।
तदा गोदानजं पुण्यं लभते नात्र संशयः ॥११॥

["| पाठे + असमर्थः | सम्पूर्णे | ततो + अर्धं | पाठम् + आचरेत् |
| तदा | गो + दान + जं | पुण्यं | लभते | न + अत्र | संशयः |"]

त्रिभागं पठमानस्तु गङ्गास्नानफलं लभेत् ।
षड़ंशं जपमानस्तु सोमयागफलं लभेत् ॥१२॥

["| त्रि + भागं | पठ + मानः + तु | गङ्गा + स्नान + फलं | लभेत् |
| षड़ंशं | जप + मानः + तु | सोम + याग + फलं | लभेत् |"]

एकाध्यायन्तु यो नित्यं पठते भक्तिसंयुतः ।
रुद्रलोकमवाप्नोति गणो भूत्वा वसेच्चिरम् ॥१३॥

["| एक + अध्यायं + तु | यो | नित्यं | पठते | भक्ति + संयुतः |
| रुद्र + लोकम् + अवाप्नोति | गणो | भूत्वा | वसेत् + चिरम् |"]

अध्यायं श्लोकपादं वा नित्यं यः पठते नरः ।
स याति नरतां यावन्मन्वन्तरं वसुन्धरे ॥१४॥

["| अध्यायं | श्लोक + पादं | वा | नित्यं | यः | पठते | नरः |
| स | याति | नरतां | यावत् + मन्वन्तरं | वसुन्धरे |"]

–: ॐ :–

পাঠেঽসমর্থঃ সম্পূর্ণে ততোঽর্ধং পাঠমাচরেৎ ।

তদা গোদানজং পুন্যং লভতে নাত্র সংশয়ঃ ॥১১॥

["| পাঠে + অসমর্থঃ | সম্পূর্ণে | ততো + অর্ধং | পাঠম্ + আচরেৎ |
| তদা | গো + দান + জং | পুন্যং | লভতে | ন + অত্র | সংশয়ঃ |"]

ত্রিভাগং পঠমানস্তু গঙ্গাস্নানফলং লভেৎ ।

ষড়ংশং জপমানস্তু সোমযাগফলং লভেৎ ॥১২॥

["| ত্রি + ভাগং | পঠ + মানঃ + তু | গঙ্গা + স্নান + ফলং | লভেৎ |
| ষড়ংশং | জপ + মানঃ + তু | সোম + যাগ + ফলং | লভেৎ |"]

একাধ্যায়ন্তু যো নিত্যং পঠতে ভক্তিসংযুতঃ ।

রুদ্রলোকমবাপ্নোতি গণো ভূত্বা বসেচ্চিরম্ ॥১৩॥

["| এক + অধ্যায়ং + তু | যো | নিত্যং | পঠতে | ভক্তি + সংযুতঃ |
| রুদ্র + লোকম্ + অবাপ্নোতি | গণো | ভূত্বা | বসেৎ + চিরম্ |"]

অধ্যায়ং শ্লোকপাদং বা নিত্যং যঃ পঠতে নরঃ ।

স যাতি নরতাং যাবন্মন্বন্তরং বসুন্ধরে ॥১৪॥

["| অধ্যায়ং | শ্লোক + পাদং | বা | নিত্যং | যঃ | পঠতে | নরঃ |
| স | যাতি | নরতাং | যাবৎ + মন্বন্তরং | বসুন্ধরে |"]

–: ॐ :–

गीतायाः श्लोकदशकं सप्त पञ्च चतुष्टयम् ।
द्वौ त्रीनेकं तदर्धं वा श्लोकानां यः पठेन्नरः ॥१५॥

["| गीतायाः | श्लोक + दशकं | सप्त | पञ्च | चतुष्टयम् |
| द्वौ | त्रीं + एकं | तत् + अर्धं | वा | श्लोकानां | यः | पठेत् + नरः |"]

चन्द्रलोकमवाप्नोति वर्षाणामयुतं ध्रुवम् ।
गीतापाठसमायुक्तो मृतो मानुषतां व्रजेत् ॥१६॥

["| चन्द्र + लोकम् + अवाप्नोति | वर्षाणाम् + अयुतं | ध्रुवम् |
| गीता + पाठ + समायुक्तो | मृतो | मानुषतां | व्रजेत् |"]

गीताभ्यासं पुनः कृत्वा लभते मुक्तिमुत्तमाम् ।
गीतेत्युच्चारसंयुक्तो म्रियमाणो गतिं लभेत् ॥१७॥

["| गीता + अभ्यासं | पुनः | कृत्वा | लभते | मुक्तिम् + उत्तमाम् |
| गीता + इति + उच्चार + संयुक्तो | म्रियमाणो | गतिं | लभेत् |"]

गीतार्थश्रवणासक्तो महापापयुतोऽपि वा ।
वैकुण्ठं समवाप्नोति विष्णुना सह मोदते ॥१८॥

["| गीता + अर्थ + श्रवण + आसक्तो | महा + पाप + युतो + अपि | वा |
| वैकुण्ठं | सम् + अवाप्नोति | विष्णुना | सह | मोदते |"]

–: ॐ :–

গীতায়াঃ শ্লোকদশকং সপ্ত পঞ্চ চতুষ্টয়ম্ ।
দ্বৌ ত্রীনেকং তদর্ধং বা শ্লোকানাং যঃ পঠেন্নরঃ ॥১৫॥

["| গীতায়াঃ | শ্লোক + দশকং | সপ্ত | পঞ্চ | চতুষ্টয়ম্ |
| দ্বৌ | ত্রীং + একং | তৎ + অর্ধং | বা | শ্লোকানাং | যঃ | পঠেৎ + নরঃ |"]

চন্দ্রলোকমবাপ্নোতি বর্ষাণামযুতং ধ্রুবম্ ।
গীতাপাঠসমাযুক্তো মৃতো মানুষতাং ব্রজেৎ ॥১৬॥

["| চন্দ্র + লোকম্ + অবাপ্নোতি | বর্ষাণাম্ + অযুতং | ধ্রুবম্ |
| গীতা + পাঠ + সমাযুক্তো | মৃতো | মানুষতাং | ব্রজেৎ |"]

গীতাভ্যাসং পুনঃ কৃত্বা লভতে মুক্তিমুত্তমাম্ ।
গীতেত্যুচ্চারসংযুক্তোং ম্রিয়মাণো গতিং লভেৎ ॥১৭॥

["| গীতা + অভ্যাসং | পুনঃ | কৃত্বা | লভতে | মুক্তিম্ + উত্তমাম্ |
| গীতা + ইতি + উচ্চার + সংযুক্তোং | ম্রিয়মাণো | গতিং | লভেৎ |"]

গীতার্থশ্রবণাসক্তো মহাপাপযুতোঽপি বা ।
বৈকুন্ঠং সমবাপ্নোতি বিষ্ণুনা সহ মোদতে ॥১৮॥

["| গীতা + অর্থ + শ্রবণ + আসক্তো | মহা + পাপ + যুতো + অপি | বা |
| বৈকুন্ঠং | সম্ + অবাপ্নোতি | বিষ্ণুনা | সহ | মোদতে |"]

–: ॐ :–

गीतार्थं ध्यायते नित्यं कृत्वा कर्माणि भूरिशः ।
जीवन्मुक्तः स विज्ञेयो देहान्ते परमं पदम् ॥१९॥

["| गीता + अर्थं | ध्यायते | नित्यं | कृत्वा | कर्माणि | भूरिशः |
| जीवत् + मुक्तः | स | विज्ञेयो | देह + अन्ते | परमं | पदम् |"]

गीतामाश्रित्य बहवो भूभुजो जनकादयः ।
निर्धूतकल्मषा लोके गीता याताः परं पदम् ॥२०॥

["| गीताम् + आश्रित्य | बहवो | भू + भुजो | जनक + आदयः |
| निर्धूत + कल्मषा | लोके | गीता | याताः | परं | पदम् |"]

गीतायाः पठनं कृत्वा माहात्म्यं नैव यः पठेत् ।
वृथा पाठो भवेत्तस्य श्रम एव ह्यूदाहृतः ॥२१॥

["| गीतायाः | पठनं | कृत्वा | माहात्म्यं | न + एव | यः | पठेत् |
| वृथा | पाठो | भवेत् + तस्य | श्रम | एव | ह्यूदाहृतः |"]

एतन्माहात्म्यसंयुक्तं गीताभ्यासं करोति यः ।
स तत् फलमवाप्नोति दुर्लभां गतिमाप्नुयात् ॥२२॥

["| एतत् + माहात्म्य + संयुक्तं | गीता + अभ्यासं | करोति | यः |
| स | तत् | फलम् + अवाप्नोति | दुर्लभां | गतिम् + आप्नुयात् |"]

–: ॐ :–

গীতার্থং ধ্যায়তে নিত্যং কৃত্বা কর্মাণি ভূরিশঃ ।
জীবন্মুক্তঃ স বিজ্ঞেয়ো দেহান্তে পরমং পদম্ ॥১৯॥

["| গীতা + অর্থং | ধ্যায়তে | নিত্যং | কৃত্বা | কর্মাণি | ভূরিশঃ |
| জীবৎ + মুক্তঃ | স | বিজ্ঞেয়ো | দেহ + অন্তে | পরমং | পদম্ |"]

গীতামাশ্রিত্য বহবো ভূভুজো জনকাদয়ঃ ।
নির্ধূতকল্মষা লোকে গীতা যাতাঃ পরং পদম্ ॥২০॥

["| গীতাম্ + আশ্রিত্য | বহবো | ভূ + ভুজো | জনক + আদয়ঃ |
| নির্ধূত + কল্মষা | লোকে | গীতা | যাতাঃ | পরং | পদম্ |"]

গীতায়াঃ পঠনং কৃত্বা মাহাত্ম্যং নৈব যঃ পঠেৎ ।
বৃথা পাঠো ভবেৎতস্য শ্রম এব হ্যুদাহৃতঃ ॥২১॥

["| গীতায়াঃ | পঠনং | কৃত্বা | মাহাত্ম্যং | ন + এব | যঃ | পঠেৎ |
| বৃথা | পাঠো | ভবেৎ + তস্য | শ্রম | এব | হ্যুদাহৃতঃ |"]

এতন্মাহাত্ম্যসংযুক্তং গীতাভ্যাসং করোতি যঃ ।
স তৎ ফলমবাপ্নোতি দুর্লভাং গতিমাপ্নুয়াৎ ॥২২॥

["| এতৎ + মাহাত্ম্য + সংযুক্তং | গীতা + অভ্যাসং | করোতি | যঃ |
| স | তৎ | ফলম্ + অবাপ্নোতি | দুর্লভাং | গতিম্ + আপ্নুয়াৎ |"]

–: ॐ :–

सूत उवाच :—

माहात्म्यमेतद्‌गीतायाः मया प्रोक्तं सनातनम् ।

गीतान्ते च पठेद्‌यस्तु यदुक्तं तत् फलं लभेत् ॥२३॥

["| सूत | उवाच | माहात्म्यम् + एतत् + गीतायाः | मया | प्रोक्तं | सनातनम् |
| गीता + अन्ते | च | पठेत् + यः + तु | यत् + उक्तं | तत् | फलं | लभेत् |"]

॥ इति श्री वराह-पुराणोक्तं श्री श्री गीता-माहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥

-: ॐ तत्सत् ॐ :-

* * * * * * *

॥ ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॥

–: ॐ :–

সূত উবাচ :—

মাহাত্ম্যমেতদ্‌গীতায়াঃ ময়া প্রোক্তং সমাতনম্ ।

গীতান্তে চ পঠেদ্‌যস্তু যদুক্তং তৎ ফলং লভেৎ ॥২৩॥

["| সূত | উবাচ | মাহাত্ম্যম্ + এতৎ + গীতায়াঃ | ময়া | প্রোক্তং | সমাতনম্ |
| গীতা + অন্তে | চ | পঠেৎ + যঃ + তু | যৎ + উক্তং | তৎ | ফলং | লভেৎ |"]

॥ ইতি শ্রী বরাহ-পুরাণোক্তং শ্রী শ্রী গীতা-মাহাত্ম্যং সম্পূর্ণম্ ॥

-: ওঁ তৎসৎ ওঁ :-

* * * * * * *

॥ ওঁ শান্তিঃ ওঁ শান্তিঃ ওঁ শান্তিঃ ॥

আচার্য্য ভক্তি প্রসন্ন ন্যাস

ভক্তিনিকেতন,ইন্দ্রনগর,আগরতলা,ত্রিপুরা

Aacharya Bhakti Prasanna Foundation

Bhaktiniketan, Indranagar, Agartala, Tripura

ISBN 978-93-5469-187-4

9 789354 691874

আচার্য্য ভক্তি প্রসন্ন ন্যাস

ভক্তিনিকেতন,ইন্দ্রনগর,আগরতলা,ত্রিপুরা

Aacharya Bhakti Prasanna Foundation

Bhaktiniketan, Indranagar, Agartala, Tripura

ISBN 978-93-5469-187-4

9 789354 691874